श्री जैन श्वे० स्था० शिक्षा समिति द्वारा

संचालित

एस० एस० जैन सुबोध महाविद्यालय

एवम्

विद्यालयों की स्वर्ण जयन्ती

के

अवसर पर प्रकाशित

स्वर्ण-जयन्ती स्मारिका



प्रकाशक :

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा-समिति, जयपुर

जनवरी, १९७६

- मुद्रक

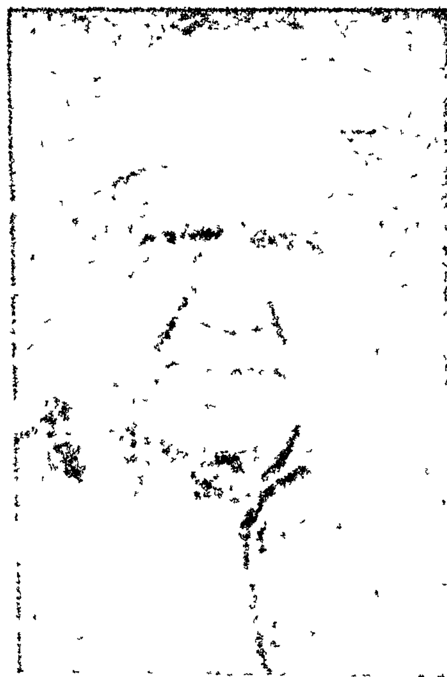
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स,
जयपुर-३

राष्ट्रपति सचिवालय,

राष्ट्रपति भवन,

नई दिल्ली–110004

पत्रावली सं० 8-एम/75 | अक्तूबर 25, 1975



सन्देश

प्रिय महोदय,

राष्ट्रपति जी के नाम दिनांक 22 अक्तूबर, 1975 का आपका पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति के स्वर्ण-जयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित करने का आयोजन किया गया है। समारोह एवं स्मारिका की सफलता के लिए राष्ट्रपति जी अपनी शुभकामनायें भेजते हैं।

भवदीय

[illegible] गुप्ता

[illegible]

उप राष्ट्रपति, भारत
नई दिल्ली

अक्टूबर 25, 1975



सन्देश

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनाक 22 अक्टूबर, 1975 का प्राप्त हुआ, धन्यवाद ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति के अन्तर्गत सचालित शिक्षण सस्थाओं का स्वर्ण-जयन्ती समारोह मनाने जा रहे हैं । इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है । मैं आपके इस समारोह तथा स्मारिका की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाएँ भेजता हूँ ।

आपका,
ब० दा० जत्ती

संदेश

राज भवन,
हैदराबाद

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं की स्वर्ण जयन्ती आगामी जनवरी महीने में आयोजित की गई है। गत 50 वर्षों में समिति के विद्यालयों ने शिक्षा के क्षेत्र में जो प्रगति की है, वह महत्वपूर्ण है। मैं आशा करता हूँ कि समिति का महाविद्यालय अपने नये भवन में जनता की महत्वपूर्ण सेवा करेगा। स्वर्ण जयन्ती की सफलता के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाये भेजता हूँ।

मोहनलाल सुखाड़िया
राज्यपाल, आन्ध्र-प्रदेश

संदेश

मुख्य मंत्री, राजस्थान
जयपुर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं का स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है।

मैं शिक्षा समिति को बधाई देना चाहता हूँ जो 50 वर्ष से शिक्षा क्षेत्र में कार्य कर रही है।

मैं आपके स्वर्ण जयन्ती समारोह की सफलता के लिए हार्दिक शुभ-कामनायें प्रगट करता हूँ।

सं

दे

श

शिक्षा मन्त्री राजस्थान
जयपुर

अ शा पत्र सख्या 1059 — 27 अक्टूबर, 1975

श्रीमान् नवलखा सा०

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आपकी शिक्षा समिति के अन्तर्गत सचालित शिक्षण सस्थाओ का स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है, तथा इस शुभावसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जावेगा।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनायें प्रकट करता हूँ।

आपका सद्भावी,
खेतसिंह राठौड

Mr Justice S N Modi

Ph 20707
Sardarpura Road 3, Jodhpur

30 Oct, 1975

सं

दे

श

My dear Shri Navlakha Sahib,

I was much pleased to receive your affectionate letter of 24th October, 1975 Our association for over a week at Madras etc provided us an opportunity to know each other closely Your firm determination to bring Subodh College into eminence is praise-worthy For its betterment, I am also prepared to lend my services as and when they are required

With best compliments

Yours sincerely,

SN MODI

सम्पादकीय

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति द्वारा सचालित शिक्षण संस्थाओं के स्वर्ण-जयन्ती समारोह के अवसर पर समस्त शिक्षण संस्थाओं की यह समन्वित पत्रिका एक स्मारिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। किसी भी संस्था द्वारा संचालित विद्यालयों की स्वर्णजयन्ती एक महत्त्वपूर्ण अवसर होता है। सुबोध महाविद्यालय एवं विद्यालयों को भी यह सौभाग्य मिला है कि वे अपनी स्वर्णजयन्ती मनावे और उस अवसर पर देश के सर्वोच्च प्रशासक महामहिम राष्ट्रपतिजी को आमंत्रित करें। शिक्षा समिति के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध समाजसेवी श्री सिरहमलजी नवलखा, उनके सहयोगियों और महाविद्यालय के भू० पू० प्राचार्य श्री बालचन्द्रजी वैद्य ने संस्थाओं की इस आकांक्षा को पूर्ण किया। जब यह एक हाई स्कूल था और उसकी रजत-जयन्ती मनायी गयी थी तब तत्कालीन उपराष्ट्रपति पधारे थे।

स्वर्णजयन्ती पर एक अच्छी स्मारिका प्रकाशित करने का भी निश्चय किया गया। इसके लिए प्रकाश्य सामग्री का संकलन प्रारम्भ किया गया। देशभर के अनेक शिक्षा शास्त्रियों से विभिन्न विषयों पर उनके लेख आमंत्रित किये गये, जिनमें से कुछ ने अपनी रचनायें भेजने की कृपा की, उन्हें 'ज्ञान-विज्ञान' भाग में प्रकाशित किया गया है। महाविद्यालय, विद्यालय एवं बालिका विद्यालय के शिक्षकों की रचनाएँ भी इसी भाग में प्रकाशित की गयी हैं। 'स्वर्णजयन्ती' सभी छात्रों एवं छात्राओं के लिए एक उल्लास का अवसर है, इसलिये उन्होंने बड़े उत्साह से अपनी रचनाएँ तैयार की हैं, जिन्हें 'छात्र-रचनाएँ' भाग में प्रकाशित किया गया है। अन्त में विज्ञापन विभाग प्रकाशित किया गया है।

इस स्मारिका के प्रकाशन कार्य मे प्रमुख सबल शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री सिरहमलजी नवलखा सा० का मिला है, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से रुचि लेकर इसका प्रकाशन सम्भव कराया है। स्मारिका समिति के दिशादर्शक श्री उमरावमलजी चोरडिया, श्री बालचन्द्रजी वैद्य एव श्री सन्तोषचन्द्रजी कर्णावट ने कृपा पूर्वक अपने अमूल्य सुझावो से इसके स्वरूप निर्धारण हेतु दिशा प्रदान की है। महाविद्यालय के प्राचार्य श्री नथमलजी गोलेछा व अन्य सस्था प्रधानों ने स्मारिका प्रकाशन के कार्य को अपना कार्य समझ कर सम्पन्न कराया है। विज्ञापन समिति के सदस्यो के सत्प्रयास ने स्मारिका को जो सहयोग दिया है, उसके महत्त्व को हम कैसे भुला सकते हैं? सम्पादक-मण्डल उक्त सभी महानुभावो का आभारी है। इसी प्रकार जिन विद्वान् लेखको, शिक्षक बन्धुओ एव छात्रो ने अपनी रचनाएँ देकर जो सहयोग दिया है, उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स के सचालको ने रात-दिन कार्य करके इसे समय पर प्रकाशित किया, उनकी तत्परता और निष्ठापूर्ण सेवाओ को हम कभी भुला नही सकेंगे।

'स्मारिका' का कलेवर जैसा भी बन पडा है, आपकी सेवा मे प्रस्तुत है। इतने बडे काम मे कई प्रकार की त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है, हम उनके लिये क्षमा प्रार्थी हैं।

स्वर्णजयन्ती समारोह समिति

१ श्री बालचन्द्र वैद्य (सयोजक)
२ श्री सिरहमल नवलखा
३ श्री जतनमल कर्णावट
४ श्री कीर्तिचन्द ढड्ढा
५ श्री सतोषचन्द कर्णावट
६ श्री चन्द्रराज सिंघवी
७ श्री सुमेरसिंह बोथरा
८ सुश्री विमलाकुमारी वैद्य
९ श्री राजमल चोरडिया
१० श्री विनयचन्द नवलखा
११ श्री उमरावमल चोरडिया
१२ श्री लाभचन्द लोढा
१३ श्री ज्ञानचन्द कोठारी
१४ श्री विनयचन्द बम्ब
१५ श्री इन्दरचन्द हीरावत
१३ श्री हीराचन्द हीरावत
१७ श्री विजयलाल शर्मा
१८ श्री नथमल गोलेछा, प्राचार्य
१९ श्री लक्ष्मण चतुर्वेदी, प्र० अ०
२० श्रीमती विजयलक्ष्मी चोरडिया, प्र० अ०
२१ श्रीमती कमलेश सेठी, प्र० अ०

कार्यालय

१ श्री गोकुलदास आचार्य-सगठन सचिव
२ श्री बद्रीनारायण शर्मा
३ श्री निहालचन्द मोदी
४ श्री गोपालकृष्ण गौड

स्वर्णजयन्ती के मुख्य अतिथि—

महामहिम राष्ट्रपति



देश को नयी दिशा प्रदान करने वाली लोकप्रिय

प्रधान मंत्री



राजस्थान के महामहिम राज्यपाल



सम्माननीय सरदार श्री जोगेन्द्रसिंह

सुबोध शिक्षण संस्थाओं के उदार शुभचिन्तक
आन्ध्र प्रदेश के महामहिम राज्यपाल



आदरणीय श्री मोहनलाल सुखाड़िया

राजस्थान के मुख्यमन्त्रित्व काल मे महाविद्यालय के नवीन भवन का शिलान्यास आपही के करकमलो से सम्पन्न हुआ था । श्री जैन सुबोध शिक्षण सस्थाओ को आपका आशीर्वाद सदैव मिलता रहा है ।

राजस्थान के लोकप्रिय मुख्य मंत्री



माननीय श्री हरिदेव जोशी

राजस्थान विधान सभा के यशस्वी अध्यक्ष



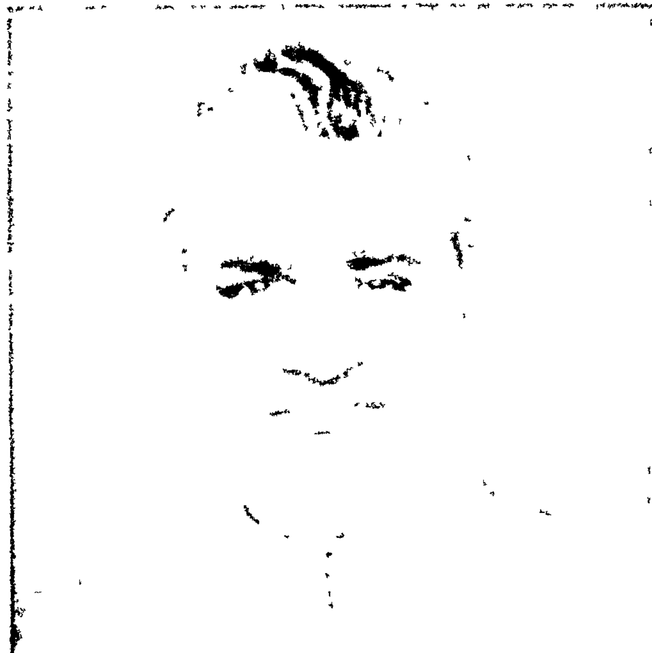
श्री रामकिशोर व्यास

सुबोध शिक्षण संस्थाओ को शैशवकाल से ही श्री व्यास का आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है। जयपुर नगर के चहुँमुखी विकास मे आपका योगदान विस्मृत नही किया जा सकेगा।

राजस्थान के शिक्षा मंत्री

श्री खेतसिंह राठौड़

शिक्षा पद्धति में क्रांतिकारी परिवर्तन के हामी श्री खेतसिंहजी का सुबोध शिक्षण संस्थाओं को पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है।



हमारे पोषक व शुभचिन्तक

शिक्षा सचिव

श्री जगन्नाथसिंह मेहता

सुबोध शिक्षण संस्थाओं के सम्पूर्ण [illegible]
[illegible]



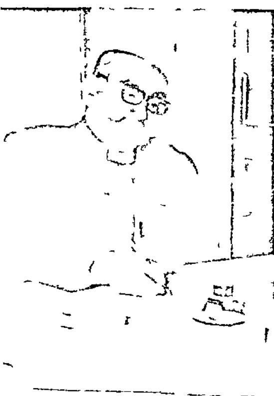


सघ अध्यक्ष

श्री इन्दरचन्द हीरावत

सफल रत्न व्यवसायी श्री हीरावत
सौम्य-प्रकृति के मूधन्य
समाज-सेवी हैं ।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, जयपुर के पदाधिकारी



सघ मत्री

श्री सरदारमल चोपडा

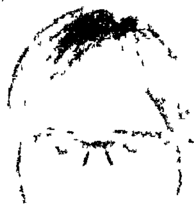
श्री चोपडा ने विगत कुछ समय से
ममाज-सेवा को ही अपना
कायक्षेत्र वना लिया है ।
आप मिलनसार एवम्
सामजस्यवादी व्यक्ति हैं ।

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति के

अध्यक्ष



श्री सिरहमल नवलखा



मंत्री

शिक्षा समिति के युवा सक्षम उत्साही पदाधिकारी



कोषाध्यक्ष

सदस्य-परिचय

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा-समिति
द्वारा
संचालित शिक्षण संस्थाओं की स्वर्णजयन्ती

• प्रधान सम्पादक

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं के स्वर्ण जयन्ती समारोह का शुभारम्भ दिनांक 21 जनवरी, 1976 को एक विशाल रैली निकालने के साथ हुआ। समाज संघ के पदाधिकारियों, शिक्षा समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों की अगुवाई में महाविद्यालय, हायर सैकण्डरी विभाग, बालिका विद्यालय एवं प्राथमिक शाला के समस्त शिक्षकों, छात्रों और अन्य कर्मचारियों की विशाल रैली लाल-प्रकाश भवन से प्रारम्भ होकर जौहरी बाजार, त्रिपोलिया बाजार व चौड़ा रास्ता होती हुई रामनिवास बाग के यूनियन मैदान पर पहुँची। वहाँ एक समारोह का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि विधायक श्री श्रीराम गोटेवाला थे और अध्यक्ष डॉ० रमेन्द्रनाथ चौधरी, निदेशक कॉलेज शिक्षा राजस्थान, थे।

श्री श्रीराम गोटेवाला ने स्वर्णजयन्ती समारोह के प्रथम चरण की सफलता पर बधाई देते हुए कहा कि सुबोध शिक्षण संस्थाओं का जयपुर और राजस्थान में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्री गोटेवाला ने आने वाले सभी समारोहों के लिए अपनी शुभ-कामनाएँ भी प्रकट कीं। डॉ० आर० एन० चौधरी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में शिक्षा के स्तर पर प्रकाश डालते हुए बताया कि राजस्थान में शिक्षा पर कितना ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने सुबोध महाविद्यालय के अनुशासन व परीक्षा परिणामों पर सन्तोष व्यक्त करते हुए आश्वासन दिया कि शिक्षा विभाग की ओर से इस शिक्षण संस्था को अधिक से अधिक सहायता देने का प्रयास किया जायगा। श्री चौधरी ने संस्था संचालकों को बधाई देते हुए कहा कि उनकी सेवाएँ सराहनीय हैं।

आशीर्वाद प्रदान किया और समारोह की अध्यक्षता राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय श्री हरिदेव जोशी ने की। राष्ट्रपति जी के शुभागमन पर विद्यालय विभाग के एन०सी०सी० जूनियर डिविजन के कैडेट्स ने प्रथम आफीसर श्री डी० एन० शैली के नेतृत्व मे गार्ड ऑफ ऑनर दिया। देश मे सभवत यह प्रथम अवसर था जबकि जूनियर डिविजन के छात्रो ने राष्ट्रपति जी को गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

महामहिम राष्ट्रपति जी ने उद्घाटन शिला का अनावरण किया तथा सुबोध बालिका विद्यालय की छात्राओ द्वारा राजस्थानी परम्परा के अनुसार मगल तिलक लगाकर किये गये स्वागत को स्वीकार किया और शिक्षा समिति के पदाधिकारियो व सदस्यो का परिचय प्राप्त किया। शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री सिरहमल नवलखा ने शिक्षा समिति का परिचय कराया और विभिन्न सस्थाओ के प्रधानो का परिचय भी राष्ट्रपति महोदय को कराया। राष्ट्रपति जी के शुभागमन पर सुबोध बालिका विद्यालय की छात्राओ द्वारा स्वागत गान किया गया। शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नवलखा सा० ने स्वागत भाषण किया और उसमे विभिन सस्थाओ का सक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। प्राचार्य श्री नथमल गोलेछा ने सदेश वाचन किया।

महामहिम राज्यपाल महोदय ने सुबोध महाविद्यालय एव विद्यालयो के स्तर की सराहना करते हुए इनके विकास के प्रति अपनी शुभकामनाएँ प्रकट की। महामहिम राष्ट्रपति जी ने अपने वक्तव्य मे सुबोध शिक्षण सस्थाओ की स्वर्णजयन्ती पर अपनी शुभकामनाएँ प्रकट करते हुए प्रेरणा दी कि इन शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से देश मे किसी महान् काय का शुभारम्भ होना चाहिये। आपने महाविद्यालय एव विद्यालयो की प्रगति एव अनुशासन की सराहना करते हुए इस बात पर जोर दिया कि छात्रो के लिये खेल कूद की विशेष व्यवस्था की जानी चाहिये। महामहिम राष्ट्रपति ने सुबोध शिक्षण सस्थाओ के सचालकों को अपनी ओर से बधाई देते हुए छात्रों से अनुरोध किया कि वे देश की आवश्यकता के अनुसार सुयोग्य नागरिक बनकर अपना और देश का हित-सम्पादन करें। शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष श्री सन्तोषचन्द्र कर्णावट ने राष्ट्रपति जी, राज्यपाल महोदय और मुख्य मन्त्री जी को स्मारिका भेंट की।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे माननीय मुख्य मन्त्री जी ने कहा कि वे सुबोध महाविद्यालय और विद्यालयो के स्तर से सुपरिचित हैं और जानते हैं कि प्रत्येक अच्छा अभिभावक इन्ही सस्थाओ मे अपने बच्चो को प्रवेश दिलाना चाहता है। शिक्षण सस्थाओ की लोकप्रियता का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है? मुख्य मन्त्री जी ने विश्वास दिलाया कि इन शिक्षण सस्थाओ के विकास के लिये राज्य सरकार अधिक से अधिक ध्यान देगी। स्वर्णजयन्ती के सयोजक श्री बालचन्द्र वैद्य ने आभार प्रदर्शित किया। उद्घाटन समारोह के कार्यक्रम का सचालन महाविद्यालय के प्राध्यापक हजारीलाल शर्मा ने किया।

23 जनवरी को प्रात 11 बजे राजस्थान के भू० पू० मुख्य मत्री व आंध्रप्रदेश

के वर्तमान राज्यपाल श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने छात्र-छात्राओं द्वारा लगायी गई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। श्री सुखाड़िया जी के कार्यकाल में ही महाविद्यालय के नये भवन के लिए भूखण्ड प्राप्त हुआ था। नवीन भवन का शिलान्यास भी माननीय श्री सुखाड़िया जी ने ही किया था। प्रदर्शनी का उद्घाटन करके आपने रुचिपूर्वक उनके सभी कक्षों का अवलोकन किया और उनके आयोजकों के परिश्रम की सराहना की। विज्ञान कक्षों के चमत्कारों से श्री सुखाड़िया बहुत प्रसन्न हुए। प्रदर्शनी का अवलोकन करने बाद महाविद्यालय प्रांगण में लगे एक विशाल पंडाल में उपस्थित अतिथियों, शिक्षकों और छात्र-छात्राओं की सभा में आप पधारे। सभा स्थल पर आपका स्वागत शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नवलखा सा० ने किया। वर्धमान श्रावक संघ की ओर से श्री उमरावमल जी चोरड़िया ने सुखाड़िया जी का स्वागत किया और शिक्षण संस्थाओं की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि जयपुर का स्थानकवासी समाज शिक्षा और चिकित्सा सेवाओं में सदैव अगुवा रहा है।

इस दिन के समारोह में पद्मश्री गेनशंकर दुर्लभ जी ने भी अपने विचार प्रकट किये। मुख्य अतिथि के भाषण से पूर्व समारोह के अध्यक्ष श्री जसवन्तसिंह नाहर, निदेशक, कृषि विपणन बोर्ड, राजस्थान ने अपने वक्तव्य में संस्था सञ्चालकों और छात्रों तथा शिक्षकों को एक नयी प्रेरणा दी। माननीय सुखाड़िया जी ने शिक्षा समिति और समाज के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि सुबोध कॉलेज व विद्यालयों की उन्नति से उनका घनिष्ठ परिचय रहा है। आपने शिक्षण संस्थाओं के विकास की भूरि-भूरि प्रशंसा की और शिक्षा-समिति को हार्दिक धन्यवाद दिया। शिक्षा-समिति के सदस्य श्री रतनलाल कर्णावट ने मुख्य अतिथि और अध्यक्ष को स्वर्णजयन्ती स्मारिका भेंट की। इस दिन के उक्त समारोह के कार्यक्रम का सञ्चालन प्राध्यापक हजारीलाल शर्मा ने किया।

राजस्थान विश्वविद्यालय के डॉ० फजले इमाम। कवि सम्मेलन और मुशायरा रात के डेढ बजे तक चलता रहा।

दिनाक 24 जनवरी को महाविद्यालय प्रागण मे श्री स्वरूपचन्द चोरडिया स्मृति अन्तमहाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता मे राजस्थान के लगभग पन्द्रह-बीस महाविद्यालयो के प्रतियोगियो ने भाग लिया। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि श्री उमरावमल चोरडिया थे और अध्यक्षता श्री बालचन्द्र वैद्य कर रहे थे। भाषण प्रतियोगिता की पूर्व व्यवस्था प्रो० शैलेन्द्र सहाय सक्सेना ने की, जो कि इसके एक सयोजक भी थे। प्रतियोगिता का सचालन अध्यक्ष जी की अनुमति से सयोजक हजारीलाल शर्मा ने किया। परिणाम इस प्रकार रहे—चलविजयोपहार राज ऋषि कॉलेज अलवर ने प्राप्त किया। इसी कॉलेज के एक प्रतियोगी श्री मधुकर श्याम ने प्रथम, सेठ मोतीलाल कॉलेज झुझुनू के श्री विनोदकुमार शर्मा ने द्वितीय व महारानी श्री जया गर्ल्स कॉलेज भरतपुर की कुमारी मोनिका अरोडा ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। मुख्य अतिथि श्री चोरडिया सा० और अध्यक्ष श्री वैद्य ने विजेताओ को बधाई दी और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

विद्यालय विभाग की ओर से जयपुर नगर के हायर सैकण्डरी व सैकण्डरी विद्यालयो के छात्रो व छात्राओ की एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता का नाम स्व० श्री दौलतमल कर्णावट स्मृति अन्तर्विद्यालय भाषण प्रतियोगिता था, जिसका आरम्भ करने की प्रेरणा स्व० श्री दौलतमल जी कर्णावट के सुपुत्र श्री जतनमल जी कर्णावट ने दी। उन्होने ही कृपापूर्वक इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता भी की। मुख्य अतिथि के रूप मे राजस्थान के जेल मन्त्री श्री बनवारीलाल पधारे थे। प्रतियोगिता का सचालन वरिष्ठ अध्यापक श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल व श्री आर० के० मदान साहब ने किया। परिणाम इस प्रकार रहे—चलविजयोपहार वीर बालिका विद्यालय ने प्राप्त किया। प्रथम पुरस्कार राजकीय गर्ल्स हायर सैकण्डरी विद्यालय, बनी पार्क की छात्रा कुमारी ज्योति ने, द्वितीय पुरस्कार वीर बालिका विद्यालय की सुमीता बोथरा ने तथा तृतीय पुरस्कार वीर बालिका विद्यालय की कुमारी प्रमिला गोलेछा ने प्राप्त किया।

उपर्युक्त दोनो भाषण प्रतियोगिताओ का सफल आयोजन स्वर्णजयन्ती के कार्यक्रमो की एक उल्लेखनीय विशेषता रही।

इसी दिन सायकाल महाविद्यालय प्रागण मे सास्कृतिक कार्यक्रम रखे गये। इन कार्यक्रमो का पूर्वाभ्यास लगभग एक माह से चल रहा था। महाविद्यालय, हायर सैकण्डरी तथा बालिका विद्यालय के छात्र-छात्राओं का सयोजित सास्कृतिक कार्यक्रम निदेशक श्री डी० एन० शैली ने अपनी देखरेख और अपने निर्देशन में तैयार कराया। उनके सहयोगी श्री शैलेन्द्र सहाय सक्सेना, श्री शरद्मोहन शर्मा तथा श्रीमती निर्मला भारद्वाज व सुश्री रेखा माथुर थे। दिनाक 24 जनवरी को साय 8 बजे से सास्कृतिक कार्यक्रमो का आरम्भ महाविद्यालय प्रागण मे निर्मित मच पर किया गया। सास्कृतिक कार्य-

वर्षों के समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय युवक कांग्रेस के नेता व राजस्थान विधान-सभा के सदस्य श्री जनार्दनसिंह गहलोत पधारे थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में जैन सुबोध शिक्षण संस्थाओं की शिक्षा सेवा का उल्लेख करते हुए बताया कि प्रधान मंत्री जी के बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में इन संस्थाओं का पर्याप्त सहयोग रहा है। आपने इन संस्थाओं को अधिक से अधिक सरकारी सहयोग दिलाने का आश्वासन भी दिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में एकांकी, नृत्य और वाद्य-वादन के बेजोड़ दृश्यों ने दर्शकों के मन को मोह लिया। लगभग दस हजार दर्शकों से खचाखच भरे हुए इस पंडाल में पूर्ण शान्ति और सुव्यवस्था के साथ कार्यक्रम चलते रहे। बीच-बीच में श्री बी०एल० सैनी अपने मनोरञ्जक चुटकुले सुनाकर दर्शकों को हँसा रहे थे। उनके द्वारा निर्देशित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की दर्शकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दिनांक 25 जनवरी को श्री जैन सुबोध शिक्षण संस्थाओं के सभी छात्र-छात्राओं की खेलकूद प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। खेलकूद प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ श्री सत्यप्रकाश [illegible], अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के शुभाशीर्वाद के साथ हुआ। सभी शिक्षण संस्थाओं के शिक्षक व छात्र बड़ी संख्या में महाराजा कॉलेज के खेल के प्रांगण में उपस्थित थे। खेलकूद प्रतियोगिताओं का संचालन महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षक श्री नरेश माथुर ने किया। उनके सहयोगी थे—विद्यालय विभाग के पी० टी० आई० श्री [illegible]सिंह एवं बालिका विद्यालय की सहा०-अध्यापिका श्रीमती प्रेम [illegible] व अन्य अध्यापक व [illegible]।

वार्षिक [illegible] के [illegible] में [illegible] भी [illegible] रहे। समारोह के अध्यक्ष श्री [illegible] जी ने छात्र-छात्राओं के उत्साह की प्रशंसा की और प्रेरणा दी कि उन्हें शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद में भी सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।

पूव छात्र व वतमान शिप्ता समिति के उपाध्यक्ष श्री सन्तोषचन्द्र करणावट ने भी अपने विचार प्रकट किये ।

इसी दिन साय 7 बजे मे एक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती प्रेमबाई जी नवलखा ने की । महिला सम्मेलन का सचालन बालिका विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती विजयलक्ष्मी चोरडिया ने किया। सम्मेलन मे नारी शिक्षा और नारी जीवन की उन्नति मे सम्बन्धित अनेक विचार विभिन्न वक्ताओ द्वारा प्रकट किये गये । इस अवसर पर सास्कृतिक कायक्रमो का आयोजन केवल महिलाओ के लिये ही किया गया था । श्री डी० एन० शैनी के निर्देशन मे इस दिन अभिनय के साथ-साथ वाद्य-वादन तथा राजस्थानी, गुजराती और बगाली लोक-नृत्य प्रस्तुत किये गये । इस दिन के सास्कृतिक कार्यक्रम भी पूर्ण सफल रहे और दशको द्वारा बहुत सराहे गय । महाविद्यालय प्रागण मे इस दिन साय 8 बजे एक फिल्म प्रदर्शन की व्यवस्था प्रो० आर० एल० नवलखा ने की, जिसे बहुत से छात्रा व दशको ने देखा ।

दिनाक 26 जनवरी को महाविद्यालय प्रागण मे सभी सुबोध शिक्षण सस्थाओ की ओर से गणतन्त्र दिवस मनाया गया । ध्वजारोहण जयपुर के प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी श्री राजरूप जी टाक ने किया । इसी दिन नागरिक सुरक्षा का भी एक शानदार प्रदशन किया गया, जिसका उद्घाटन श्रीमती प्रेमबाई जी नवलखा ने किया । महाविद्यालय के राष्ट्रीयसेवा-योजना के निदेशक प्रो० राधामोहनलाल गुप्ता ने इस प्रदशन की व्यवस्था की । महा-विद्यालय के छात्रो को नागरिक सुरक्षा विभाग की ओर से प्रशिक्षण दिया गया था और रैडक्रास समिति के अधिकारियो ने अपनी सेवाएँ उपलब्ध करायी थी । रैडक्रास की ओर से श्री मानसिंह जी तथा नागरिक सुरक्षा दल की ओर से श्री पाराशर सा० ने बहुत समय देकर छात्रो को सम्बन्धित प्रशिक्षण दिया । उपस्थित जनसमूह ने नागरिक सुरक्षा के प्रदशन की बहुत सराहना की ।

दिनाक 27 जनवरी को स्वर्ण जयन्ती के विभिन्न कायक्रमो मे उत्साहपूवक भाग लेने वाले तथा सभी शिक्षण सस्थाओ के प्रतिभाशाली छात्रो एवम् प्रतियोगिताओ मे विजयी होने वाले छात्रो का पुरस्कार वितरण समारोह महाविद्यालय प्रागण मे सम्पन्न हुआ । समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय सचार मन्त्री डॉ० शकरदयाल शर्मा थे और अध्यक्ष राजस्थान के वित्तमन्त्री श्री चदनमल बैद थे । इस दिन भी छात्र-छात्राओ के अतिरिक्त आगन्तुको से पण्डाल भरा हुआ था । प्रारम्भ मे स्वर्ण जयन्ती के सयोजक श्री बालचन्द्र जी वैद्य ने विभिन्न शिक्षण सस्थाओ के विकास पर प्रकाश डाला तथा महाविद्यालय के प्राचाय श्री नथमल जी गोलेछा ने शिक्षण सस्थाओ के वतमान स्वरूप का परिचय देते हुए महाविद्यालय की भावी योजना को प्रस्तुत किया । पुरस्कार वितरण के बाद मुख्य अतिथि डॉ० शर्मा ने अपना विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया । आपने भारत की मूलभूत सस्कृति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अनुशासन पक्ष की महत्ता को समझाया । डॉ० शर्मा ने शिक्षा मे सम्बन्धित अनेक पहलुओ पर अपने विचार प्रकट किये उपस्थित

श्रोताओं ने बहुत शान्तिपूर्वक आपके विचारों को सुना। इस अवसर पर अनेक प्रसिद्ध पत्रकारों व पत्र प्रतिनिधियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

वित्त मन्त्री श्री वैद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति एक लम्बे समय से शिक्षा व समाज निर्माण की दिशा में अपनी सेवाएं दे रही है। सुबोध शिक्षण संस्थाओं की स्वर्ण जयन्ती पर अपनी शुभकामनायें प्रकट करते हुए वित्तमन्त्री जी ने आश्वासन दिलाया कि जो निजी शिक्षण संस्थाएं समाज की अच्छी सेवा कर रही हैं, जिनका स्तर राजकीय शिक्षण संस्थाओं से भी ऊंचा है, उनको राज्य सरकार की ओर से अधिक से अधिक सहयोग दिया जायगा।

मुख्य अतिथि, अध्यक्ष एवं अन्य आगुन्तकों के प्रति आभार प्रकट करते हुए शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री विजयमल जी नवलखा ने स्वर्ण जयन्ती समारोहों में निष्ठा और परिश्रमपूर्वक कार्य करने वाले सभी शिक्षकों, छात्रों एवं अन्य कर्मचारियों के प्रति भी आभार प्रकट किया। श्री नवलखा सा० ने स्वर्ण जयन्ती के इस अवसर पर दो महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं—पहली घोषणा यह थी कि सुबोध शिक्षण संस्थाओं से सेवा निवृत्त होने वाले शिक्षकों तथा अन्य कर्मचारियों को पेन्शन दी जायगी। दूसरी महत्वपूर्ण घोषणा मेडिकल सहायता की थी। इन दोनों घोषणाओं की क्रियान्विति शीघ्र ही किये जाने का आश्वासन भी दिया। श्री नवलखा सा० द्वारा की गयी इन घोषणाओं का तालियों से स्वागत किया गया। पुरस्कार वितरण के कार्यक्रम के बाद जलपान का आयोजन किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह का समापन [illegible] से किया।

दर्शकों के अनुरोध पर प्रदर्शनी का समय तीन दिन और बढ़ा दिया गया। प्रदर्शनी की लोकप्रियता को देखते हुए जयपुर नगर की अन्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं ने पूरे दिन और [illegible] लाभ उठाया।

पत्र-प्रतिनिधियों को अवलोकन कराया गया। दिनाक 28 जनवरी को दैनिक राष्ट्रदूत, राजस्थान पत्रिका, नवज्योति, अमर राजस्थान ने समापन एव पुरस्कार वितरण समारोह तथा प्रदशनी के समाचार प्रकाशित किये। आकाशवाणी (जयपुर) ने 27 जनवरी को साय 7 05 पर प्रसारित होने वाले बुलैटिन मे इस समाचार को मुख्य समाचारो मे प्रसारित किया।

इस लेख मे उन्ही पत्रो का उल्लेख किया गया है, जिनकी प्रतियाँ हमे उपलब्ध हो सकी हैं। हम इन सभी समाचार समितियो, समाचार पत्रो एव आकाशवाणी के आभारी हैं। राजस्थान पत्रिका, अमर राजस्थान, हिन्दुस्तान समाचार, समाचार भारती एव आकाशवाणी को उनके सहयोग के लिये विशेष धन्यवाद प्रेषित करते हैं। समाचारों को आकाशवाणी, समाचार समितियो एव समाचार पत्रो तक पहुचाने के लिए केन्द्रीय कार्यालय के सगठन सचिव श्री गोकुलदास आचाय एव अन्य सदस्य तथा श्री रसिक चौहान (व लि) एव श्री भवर तथा सीताराम (दोनो चतुर्थ श्रेणी) धन्यवाद के पात्र हैं।

——

आभार प्रदर्शन

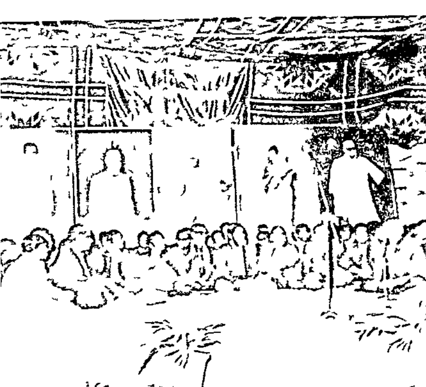
स्मारिका के लिए अपनी रचनाएँ भेजने वाले लेखको, विज्ञापन दाताओ, सहयोगी शिक्षक बन्धुओ, छात्रो, अन्य कर्मचारियो एव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसके प्रकाशन की सफलता मे सहयोग देने वाले सभी महानुभावो के प्रति हम आभार व्यक्त करते है।

आशा है कि उनका अमूल्य सहयोग भविष्य मे भी इसी प्रकार मिलता रहेगा।

—सम्पादक मण्डल



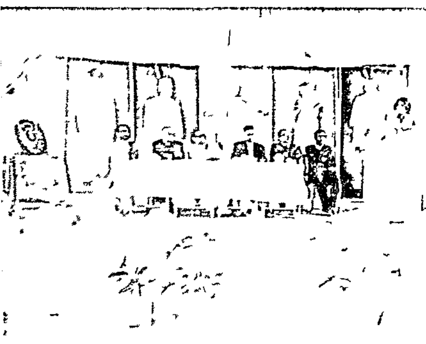




स्वर्ण जयन्ती पर कवि सम्मेलन

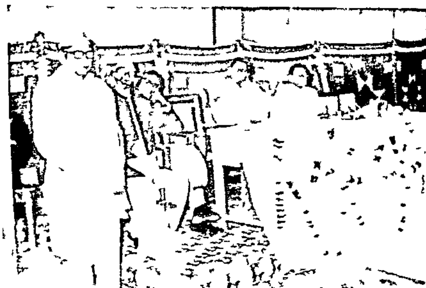
मंच पर काका हाथरसी विश्वनाथ विमलेश, अध्यक्ष श्री शिवचरण माथुर खाद्य मंत्री राज. तथा अन्य कवि बैठे हुए

कवि सम्मेलन के संचालक श्री गोपालकृष्ण कौल थे, जो माइक पर बोलते हुए दिखाई दे रहे हैं कवि सम्मेलन का आरम्भ प्रसिद्ध गीतकार श्री हरिराम आचार्य ने अपने एक मधुर गीत के साथ किया



भाषण प्रतियोगिता आयोजित

महाविद्यालय प्रांगण में आयोजित श्री स्वरूपचंद चोरड़िया स्मृति भाषण प्रतियोगिता का एक दृश्य मंच पर मुख्य अतिथि श्री उमरावमल चोरड़िया अध्यक्ष श्री डी० सी० वैद्य शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नवलखा सा० प्राचार्य श्री गोलछा सा० प्रतियोगिता के संयोजक हजारीलाल शर्मा



विद्यालय प्रांगण में श्री दौलतमल स्मृति भाषण प्रतियोगिता आरम्भ हुई, श्री नवलखा सा० आगन्तुकों का स्वागत करते हुए मंच पर जेल राज्य मंत्री श्री बनवारी लाल शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द कर्णावट प्र० अ० श्री चतुर्वेदी तथा प्रतियोगिता के संरक्षक श्री जतनमल कर्णावट

इस प्रतियोगिता में जयपुर नगर के कई विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने भाग लिया









स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर आयोजित
महिला–सम्मेलन मे

अध्यक्षीय भाषण करते हुए

श्रीमती प्रेमबाई नवलखा

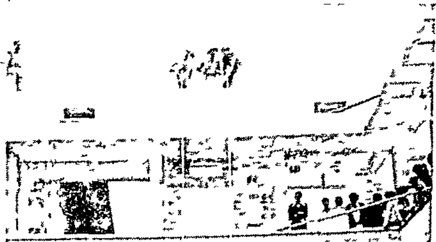
आपने गणतंत्र दिवस पर आयोजित
नागरिक सुरक्षा प्रदर्शन का उद्घाटन किया।

श्रीमती प्रेमबाईजी नवलखा ने स्वण जयन्ती के विभिन्न कायक्रमो मे सम्मिलित होकर काय-कर्ताओ का उत्साह बढाया

नागरिक सुरक्षा प्रदर्शन

गणतंत्र दिवस पर
महाविद्यालय प्रागण मे आयोजित
नागरिक सुरक्षा प्रदर्शन का एक दृश्य

सुरक्षा दल के सदस्य एक घायल को दुघटनाग्रस्त मकान से रस्सियो के सहारे नीचे उतारने का प्रदशन करत हुए

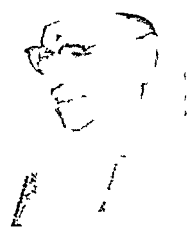












स्व० श्री विनयचंद दुर्लभजी
कालेज प्रबन्ध समिति के
भू पू अध्यक्ष व प्रसिद्ध
रत्नव्यवसायी



डा अनूपचन्द [illegible]
[illegible]





वि
द्या
ल
य
के
प्र
ति
भा
शा
ली
भू
पू
छा

श्री विमलचन्द गोलेछा [illegible]

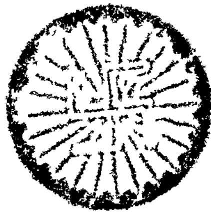
सुपुत्र श्री धीरचन्द गोलेछा

सन् 1946 में विद्यालय में प्रवेश प्राप्त कर आपने 1955 में इंटरमीडिएट प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया [illegible] प्रधान मास्टर श्री [illegible] स्वर्ण पदक प्राप्त किया [illegible] प्रथम श्रेणी [illegible] प्राप्त कर [illegible] प्रवृत्तियों में आपने [illegible] भाग लिया श्री गोलेछा [illegible] सुप्रसिद्ध रत्नव्यवसायी, श्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता व प्रगतिशील विचारक हैं

डॉ० रविदत्त शर्मा

सुपुत्र [illegible] श्री जगदीशचन्द्रजी शास्त्री

विज्ञान विषय लेकर आपने सुबोध विद्यालय में हाई स्कूल उत्तीर्ण की एम एससी तक शिक्षा प्राप्त कर आप अमेरिका विज्ञान के उच्च अध्ययन के लिये गये वहां पीएच डी की प्रोफेसर पद पर कार्य किया और [illegible] उच्चकोटि के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आये इस समय आप [illegible] National Remote Sensing Agency के Planning &



श्री जैन श्वे. स्था. शिक्षा-समिति जयपुर द्वारा संचालित शिक्षण-संस्थाओं का संक्षिप्त इतिहास

भारत की शैक्षणिक परम्पराओं में [illegible] [illegible] विकास प्रमुख आधार स्वरूप रहा है। जयपुर में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन समाज की [illegible] शिक्षा सम्बन्धी अभ्युदय [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] में [illegible] था, उस समय [illegible] [illegible] [illegible] शिक्षा के माध्यम से, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थे।

सन् 1925 के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुआ है। इसी समय श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन समाज द्वारा 'श्री जैन सुबोध प्राथमिक शाला' की स्थापना की गयी। स्वनाम-धन्य स्व० श्री [illegible] [illegible], स्व० श्री [illegible] [illegible], स्व० श्री [illegible] [illegible] और श्रीमान् [illegible] [illegible] एस विद्यालय के प्रारम्भिक कार्यकर्ता थे। श्री जैन सुबोध प्राथमिक विद्यालय, [illegible] [illegible] के [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में प्रारम्भ किया गया था।

इस वर्ष की प्रारम्भिक शिक्षा सेवा में इतना बल था कि सन् 1934 में इसे क्रमोन्नत करना आवश्यक हो गया। प्रारम्भिक प्रधानाध्यापक श्री दौलतसिंहजी थे, जिनकी कार्यकुशलता ने इस संस्था को विकासोन्मुखी बनाया। उनके पश्चात् प्रधानाध्यापक पद पर श्री ओ० सी० दुग्ग व श्री वी० डी० सिंह ने कुछ-कुछ समय के लिए कार्य किया। आप सभी महानुभावों के सत्प्रयासों से इस संस्था को शीघ्र ही मिडिल स्कूल के रूप में परिणत किया गया। स्व० श्री मूलचन्दजी कोठारी का तो यह संकल्प था कि चाहे कुछ भी हो, संस्था को विकसित रूप देना ही है।

विद्यालय के लिए एक नये भवन की आवश्यकता भी हुई। प्रशंसनीय परीक्षा परिणामों ने इस संस्था की लोकप्रियता में वृद्धि की, फलस्वरूप प्रवेशार्थियों की संख्या इतनी बढ़ने लगी कि सांगानेरी दरवाजे के निकट वाला भवन विद्यालय के लिए तैयार कराया गया और उसी में कुछ निर्माण कार्य कराने के पश्चात् कक्षायें स्थानान्तरित करदी गयी। मिडिल स्कूल के निर्माण और संचालन के लिए प्रारम्भिक व्यय के रूप में स्व० श्री केसरीमलजी चोरडिया, स्व० श्री दुर्लभजी त्रिभुवनजी तथा स्व० श्री जतनमलजी नवलखा ने उदारतापूर्वक राशि प्रदान की जिससे भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया। स्व० श्री रतनचन्दजी नवलखा, स्व० श्री कन्हैयालालजी ढागा व स्व० श्री भौरीलालजी मूसल ने अपने दैनिक कार्यों में से अधिकांश समय निकाल कर भवन का निर्माण कराया। वर्तमान 'श्री ज्ञान प्रकाश भवन', जहां विद्यालय चल रहा है, उन महानुभावों की अमूल्य सेवाओं का प्रतीक है।

सन् 1934 से यह संस्था एक मिडिल स्कूल के रूप में समाज की लोकप्रिय संस्थाओं में प्रमुख बनकर शिक्षा सेवा करने लगी। यहां के परीक्षा परिणाम अतीव प्रशंसनीय होते थे, उन्हीं को देखकर यहां प्रवेश लेने वालों की बाढ़ सी आ जाती थी। किसी भी शिक्षण संस्था में सुयोग्य शिक्षकों का होना उन्नतिकारक होता है। श्री जैन सुबोध मिडिल स्कूल को उस समय प्रधानाध्यापक के रूप में श्री सौभाग्यमल जी श्री श्रीमाल उपलब्ध हुए। आपके कार्यकाल में संस्था ने बहुत उन्नति की। उनके राज्य सेवा में चले जाने के बाद श्री बालचन्द्रजी वैद्य को उस पद पर नियुक्त किया गया। श्री वैद्यजी ने अपनी सेवाओं से मिडिल स्कूल को और आगे बढ़ाया और अपने सुयोग्य शिक्षक बन्धुओं के सहयोग से यहां के परीक्षा परिणामों तथा यहां की प्रशासन व्यवस्था में नवजीवन डाल दिया।

दस-ग्यारह वर्ष तक मिडिल स्कूल के रूप में सेवा करने वाली इस संस्था में अनेक प्रतिभाशाली छात्रों ने अध्ययन लाभ प्राप्त किया जो आज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आदरणीय स्थान प्राप्त किए हुए हैं। स्व० श्री दुलभजी त्रिभुवनजी, स्व० श्री केसरीमलजी लालहाथी वाले, श्रीमान् श्रीचन्दजी गोलेछा, श्रीमान् गुलाबचन्दजी योयरा, श्रीमान् सिरहमलजी कोठारी, श्रीमान् पूनमचन्दजी बडेर, स्व० श्री स्वरूपचन्दजी चोरडिया और स्व० श्री प्रेमचन्दजी लोढा जैसे प्रमुख समाजसेवी और दानवीर महानुभावों का संरक्षण प्राप्त करके सन् 1944 में यह संस्था हाई स्कूल के रूप में क्रमोन्नत हुई। स्थानाभाव की समस्या का आना स्वाभाविक था। किन्तु उक्त महानुभावों की उत्कट समाज सेवा की भावना और श्री बालचन्दजी वैद्य जैसे सुयोग्य, कर्मठ व उत्साही प्रधानाध्यापक की कार्य कुशलता के कारण ज्ञान प्रकाश भवन के पीछे वाली भूमि को भी प्राप्त किया गया, जहां इस समय विशाल चौक, दस बड़े-बड़े कमरे और एक भव्य सभा-भवन है।

श्री एस० एम० जैन सुबोध हाई स्कूल के लिये वह समय बहुत अनुकूल रहा, क्योंकि वर्तमान

श्री खेलशंकर दुलभजी व स्व० श्री सिरहमलजी बम्ब के अथक प्रयासो से यह सस्था हायर सैकण्डरी और डिग्री कॉलेज इन दो भागों मे सुचारु रूप से काय करने लगी । शिक्षा-समिति के अन्तगत चलने वाली इन सस्थाओं के अतिरिक्त श्री सुबोध बालिका माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय और नैतिक शिक्षण शाला अलग से काय कर रही थी । इस प्रकार जयपुर के श्री वधमान स्थानकवासी जैन समाज की शिक्षा सेवाओ ने राजस्थान मे अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया ।

शिक्षा-समिति के अन्तर्गत चलने वाली विभिन्न शिक्षण सस्थाओ के सचालन काय मे समाज के अनक उत्साही महानुभावो का सहयोग प्राप्त हुआ जिनमे स्व० श्री सागरमलजी डागा, श्रीमान् उमरावमलजी चोरडिया और श्रीमान् चन्द्रसिहजी बोथरा के नाम भी उल्लेखनीय हैं । सन् 1971 तक कॉलेज के प्रधानाचाय पद पर श्री बालचदजी वद्य काय करते रहे । उसके बाद आप राजस्थान सरकार द्वारा नगर विकास न्यास के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किये गये । राजकीय नियमानुसार आपका प्रधानाचार्य के रूप मे कायकाल भी पूर्ण होने वाला था, किन्तु अधिक व्यस्तता के कारण समय मे पूर्व ही आपने त्याग-पत्र दे दिया और महाविद्यालय के उस महत्त्वपूर्ण प्रधानाचार्य पद पर वर्तमान प्राचार्य श्री नथमलजी गालेढ़ा को नियुक्त किया गया । हायर सैकण्डरी और कॉलेज दोनो का एक ही भवन मे अधिक समय तक चलते रहना सम्भव नही था ।

इन्ही वर्षों मे पूज्य श्री नानालालजी महाराज सा० का चातुर्मास जयपुर मे हुआ । आपकी प्रेरणा से शिक्षा समिति को नया रूप दिया गया । उस समय अस्थायी रूप से श्री बालचन्द्रजी वैद्य के सयोजकत्व मे एक तदथ समिति प्रबन्ध सचालन कर रही थी जिसके अन्य दो सदस्य थे—पद्मश्री खेलशकर दुलभजी और श्रीमान् श्रीचन्दजी गालेढ़ा । महाराज श्री की प्रेरणा से आपने अपने त्यागपत्र प्रस्तुत कर दिये और शिक्षा-समिति की नयी कार्यकारिणी का गठन सन् 1972 मे हुआ । प्रबन्ध सचालन मे यह परिवतन ऐतिहासिक था, क्योकि रामबाग सर्किल के निकटस्थ भूखण्ड पर नवीन भवन के निर्माण का सुविचार कई महानुभावो का था, जिसके लिये वे किसी सुयोग्य व्यक्ति की खोज मे थे ।

भवन निर्माण का काय सहज नही था, उसे सम्भालने म अनेक कठिनाइया आ रही थी । किन्तु शिक्षण सस्थाओं मे स्वर्णिम युग को आना था, इसलिये समाज के प्रबुद्ध चेता महानुभावो ने ऐसे एक मजे हुए व्यक्तित्व की उपलब्धि कर ही ली । शिक्षा-समिति के नव गठन म श्रीमान् सिरहमलजी नवलखा जैसे दूरदर्शी और सेवाभावी महानुभाव को चुनकर तथा उन्हे अध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित करके वस्तुत एक महान् व विवेकपूर्ण काय किया गया । श्री नवलखा साहब का जीवन कार्यकुशलता, उत्साह और जिन्दादिली जैसे गुणों से परिपूर्ण है, वे चुप कैसे रह सकते थे ? उन्होने अध्यक्ष पद को कॉलेज के नवीन भवन निर्माण का पद समझ कर कार्यारम्भ कर दिया ।

श्रीमान् सिरहमलजी नवलखा और स्व० श्री सिरहमलजी बम्ब तथा श्रीमान् कीर्तिचन्दजी ढड्ढा जसे महानुभावो ने जहा हायर सैकण्डरी, बालिका विद्यालय और प्राथमिक शाला को सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया, वही कॉलेज के नवीन भवन निर्माण का कार्य भी उन्होंने अपने हाथो मे लिया । शिक्षा-समिति की नयी कायकारिणी ने शिक्षण सस्थाओ को विकास के पथ पर अग्रसर करने के क्रम मे सबसे पहला कदम बालिका विद्यालय को सैकण्डरी स्तर मे उन्नत करके बढाया । इस काय म राज्य शिक्षा विभाग की ओर से अनुदान न मिलने पर भी समाज के इन उत्साही महानुभावो ने कला विषय की नवम कक्षा

18	श्री रतनलाल नोलखा, एम कॉम	व्याख्याता
19	„ नरेशकुमार भार्गव, एम कॉम	„
20	„ रमेशचन्द्र चौबे एम ए (अंग्रेजी)	„
21	„ अखिलानन्द शर्मा एम ए (समाजशास्त्र व हिन्दी)	„
22	„ प्रभुनारायणसिंह, एम कॉम	„
23	„ कैलाशचन्द्र शर्मा, „	„
24	„ मानचन्द जैन „	„
25	„ बालूराम सैनी „	„
26	„ गुरुशरण भटनागर „	„
27	„ आर सी मलिन्दा „	„
28	„ नरेशकुमार माथुर	शारीरिक प्रशिक्षक

मंत्रालयिक कर्मचारी

1	श्री कैलाशचन्द्र कंवर	पुस्तकाध्यक्ष
2	„ लालचन्द सैनी	वरिष्ठ लिपिक
3	„ नेमीचन्द चोरडिया	„
4	„ अभयकुमार नाहर	कनिष्ठ लिपिक
5	रिक्त	„
6	श्री सन्तोषकुमार दीक्षित	प्रयोगशाला स
7	„ रामकरण शुक्ला	„

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

1	श्री रामेश्वर प्रसाद	प्रयोगशाला सेवक
2	„ ब्रजमोहन	चौकीदार
3	„ कल्याण	जलधारी
4	„ नन्दकिशोर माथुर	च क
5	„ तेजसिंह	„
6	„ रामकिशोर	„
7	„ श्यामलाल	„
8	„ रामनारायण	च क
9	„ रतनलाल	„
10	„ मदनलाल	„
11	„ सुरेन्द्रसिंह	„
12	„ किशनलाल	„
13	श्री बाबूलाल	च क
14	„ भैरोंसिंह	„
15	„ सुमेरसिंह	„
16	„ रामलाल	स क

हायर सैकण्डरी विभाग

इस समय हायर सैकण्डरी विभाग में भी लगभग एक हजार छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

हायर सैकण्डरी विभाग में कक्षा 6 से 8 तक व कला, विज्ञान और वाणिज्य इन तीनों विषयों की सैकण्डरी तथा हायर सैकण्डरी कक्षाओं के अध्ययन की सुव्यवस्था है। शिक्षकों व अन्य कर्मचारियों का विवरण निम्नांकित है—

1	श्री लक्ष्मण चतुर्वेदी एम ए बी एड शास्त्री	प्रधानाध्यापक
2	„ उत्तमसिंह करनावट बी एस-सी बी एड	स प्रधानाध्यापक
3	„ चिरंजीलाल जैन एम कॉम शिक्षाशास्त्री	वरिष्ठ अध्यापक
4	„ ताराचन्द चौरडायत, एम ए शिक्षाशास्त्री	„
5	„ रतीराम यादव, एम ए जी काम बी एड	„
6	„ सुभाषचन्द्र पारीक, एम ए बी एड	„
7	„ महावीर प्रसाद अग्रवाल, एम ए बीएड	„
8	„ राजकुमार मदान, एम ए बी एड	„
9	„ लाभचन्द माहेश्वरी, एम कॉम	„
10	„ नवरत्नसिंह भण्डारी, एम एस-सी	„
11	„ हरिश्चन्द्र गुप्त, एम एस-सी	„
12	„ नरेन्द्रकुमार काला, एम कॉम	„
13	„ हरिनारायण कुमावत एम ए बी एड	„
14	„ प्रेमचन्द गरवाल बी ए बी एड	सहायक अध्यापक

प्राथमिक विद्यालय

प्राथमिक शाला मे कक्षा 5 तक के अध्यापन की व्यवस्था है। इसमे लगभग 300 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। माण्टेसरी पद्धति से सचालित कक्षाए भी इसी के अन्तगत चलती है। प्राथमिक शाला की अध्यापिकाओ एव अन्य कर्मचारियो का परिचय इस प्रकार है—

1 श्रीमती कमलेश सेठी प्र० अ०
2 कुमारी रखा माथुर स० अ०
3 श्रीमती विनोद तोमर ,,
4 श्रीमती सुधा शर्मा ,,
5 कुमारी राधा खण्डेलवाल स०अ०
6 कुमारी मोहनकौर रामवानी ,,
7 कुमारी सन्तोष स्वामी ,,
8 श्रीमती सरदारदेवी जैन ,,

चतुर्थ श्रेणी

1 श्रीमती गुलाबदेवी

माण्टेसरी विभाग

1 कुमारी माया सिन्हा म० अ०
2 श्रीमती शकुन्तलादेवी च० श्रे०

—गोकुलदास आचाय
सगठन सचिव

ऐसा कुछ होता है

—जयन्ती प्रसाद माथुर 'बादल'

शब्दों ने जीवन मागा,
अर्थो की दुनिया ने,
जाने क्यो, सपनों को
रीतापन दे डाला !
रीतापन दे डाला !

ऐसा कुछ होता है,
उकताहट चुपके से कमरे मे आती है।
बन्द गली दरवाजे भटकी सी कोई
मलयज ही थपकाती है।
चौकोरे आँगन की,
चारो दीवारो की
पाडौसी सम्बन्धों ने
नीलापन दे डाला।
नीलापन दे डाला।

शिक्षा-समिति कार्यकारिणी के उत्साही सदस्य



सुश्री विमलाकुमारी जैन

श्री [illegible]







शिक्षा समिति की कार्यकारिणी के सदस्यगण



श्री वालचन्द्र वैद्य

श्री गुमानमल चोरडिया



श्री सत्यप्रसन्नसिंह भण्डारी

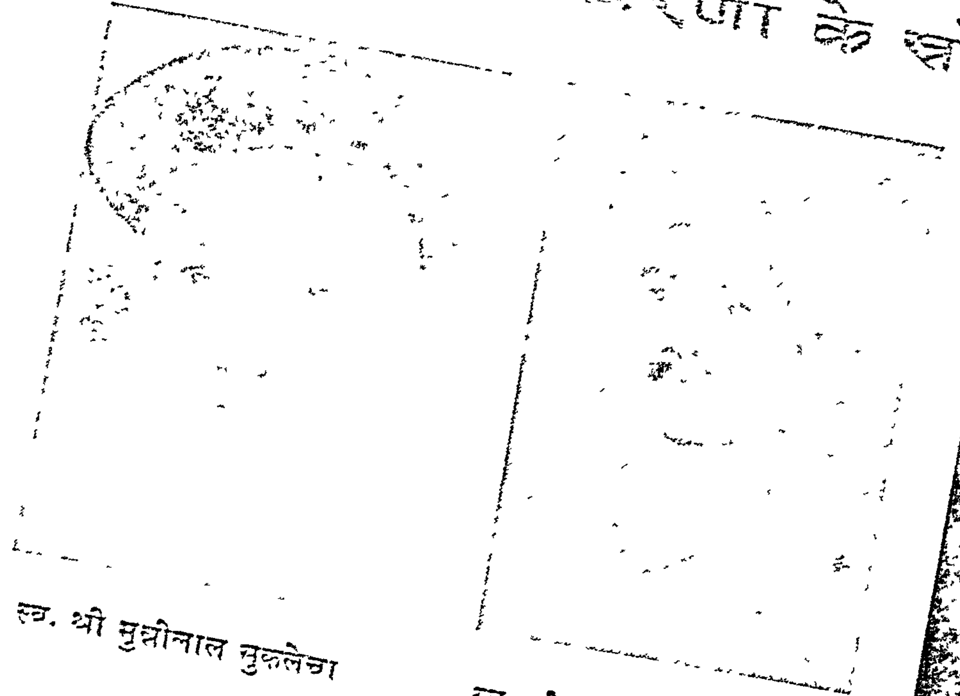


श्री विनयचन्द वम्ब



श्री सुमेरसिंह वोथरा

हमारी प्रेरणा के स्रोत



स्व. श्री मुन्नीलाल सुकलेचा

स्व. श्री मूलचन्द कोठारी



स्व. श्री केसरी

संस्था के प्रारम्भिक आधार स्तम्भ



स्व. श्री भँवरलाल मूसल



स्व. श्री दुर्लभजी

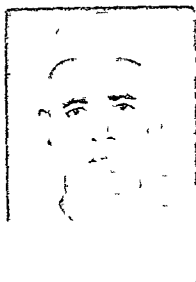
सुबोध शिक्षण संस्थाओं के पोषक —

भूतपूर्व मन्त्री



श्री सिरहमल कोठारी

भूतपूर्व मन्त्री



श्री श्रीचन्द गोलेछा

भवन निर्माण के सहयोगी



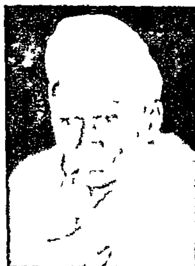
स्व० श्री मोतीचन्दजी हीरावत

आप शिक्षण संस्थाओं
के विकास में सदैव
सहयोग देते रहते हैं।

सुबोध शिक्षण संस्थाओं के सहयोगी



स्व० श्री धीसीलाल कोठारी



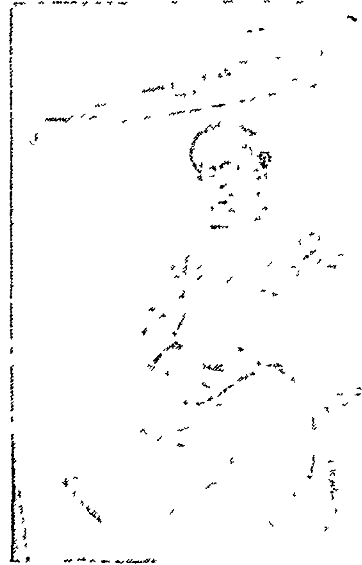
स्व० श्री रतनचन्द नवलखा



स्व० श्री कन्हैयालाल ढागा

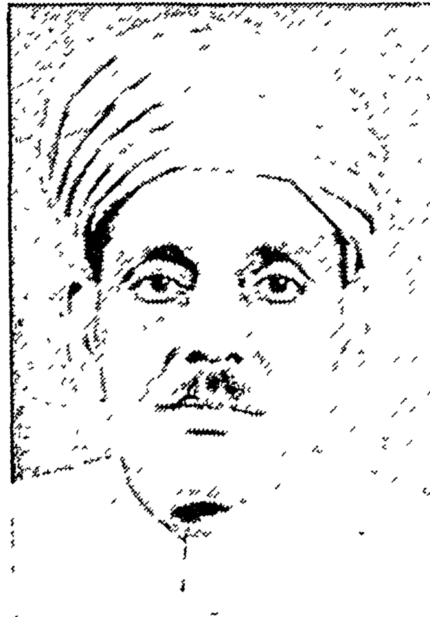


स्व. श्री केसरीचन्द
कोठारी



स्व. श्री रतनलाल
सुखलेचा

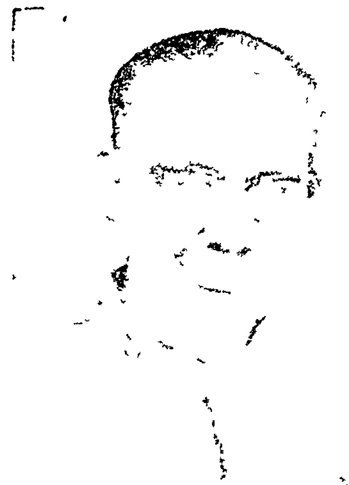
जिनकी सेवाओं से
सुबोध संस्थाएं

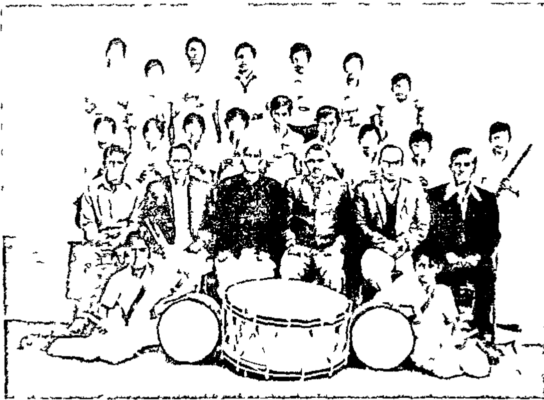


स्व. श्री सरूपचद चोरडिया

अनुप्राणित
होती रहीं







विद्यालय मे वैड की नई व्यवस्था का एक दृश्य

प्रशिक्षणार्थी छात्र वाद्य यत्रो के साथ
कुर्सियो पर प्र० अ० श्री चतुर्वेदी एव स्टाफ के अन्य सदस्य

हायरसैकण्डरी भवन



वापू वाजार की ओर का दृश्य

वालिका विद्यालय भवन



वाग्ह गणगौर के रास्ते मे स्थित सवसे पुराना भवन

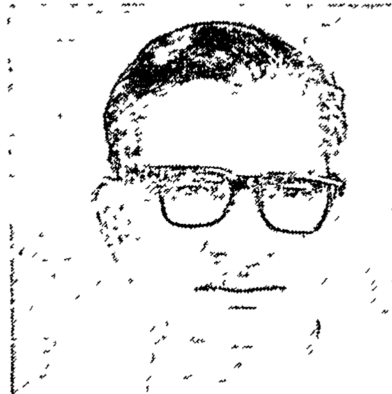
शिक्षा समिति के भूतपूर्व पदाधिकारी

जिनके निरंतर प्रयासों से संस्थाएं उत्तरोत्तर प्रगति करती रहीं

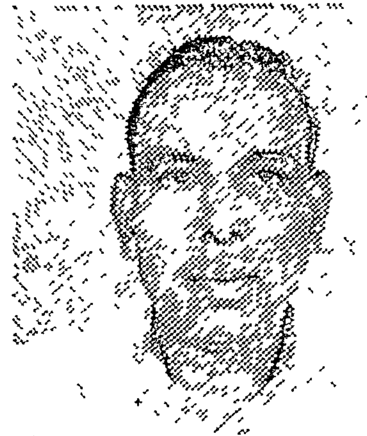


पद्मश्री खेलशंकर दुर्लभजी
अध्यक्ष

उपाध्यक्ष

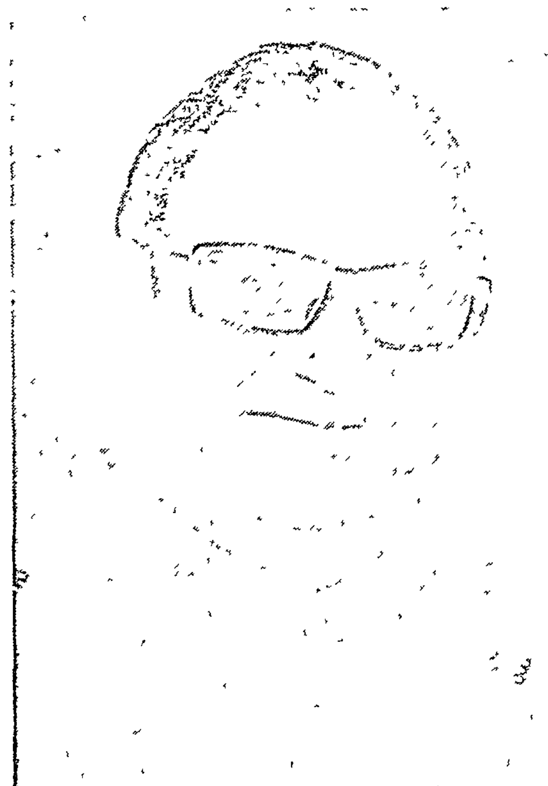


स्व० श्री सागरमल डागा



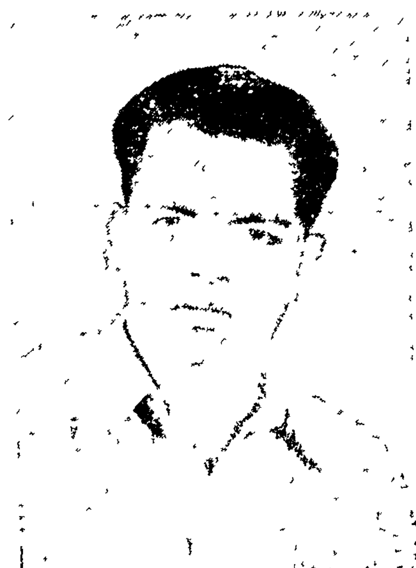
स्व० श्री सिरहमल द
अवै० मंत्री

संयुक्त मंत्री



श्री उमरावमल चोरड़िया

अवै० मंत्री



श्री ज्ञानचन्द्र चोरड़िया

जिनका स्नेहिल वरद्हस्त प्राप्त कर सस्थाए प्रगति पथ पर अग्रसर है



महाविद्यालय के एक समारोह में पधारते हुए राजस्थान के वित्त मंत्री श्री चन्दनमल बैद
प्रबन्ध समिति के अवै० मंत्री स्व० श्री वम्र एवम् अन्य सदस्यों ने आपका स्वागत किया।

श्री नथमल ढढ्ढा

(जिला शिक्षाधिकारी, जयपुर)



राज्य सेवा से डेपुटेशन पर पधार कर आपने दो वर्ष तक उ० मा० विद्यालय का प्रधानाध्यापक पद सम्भाला एवम् संस्था

कुशल प्रशासक



श्री गोकुलदास आचार्य

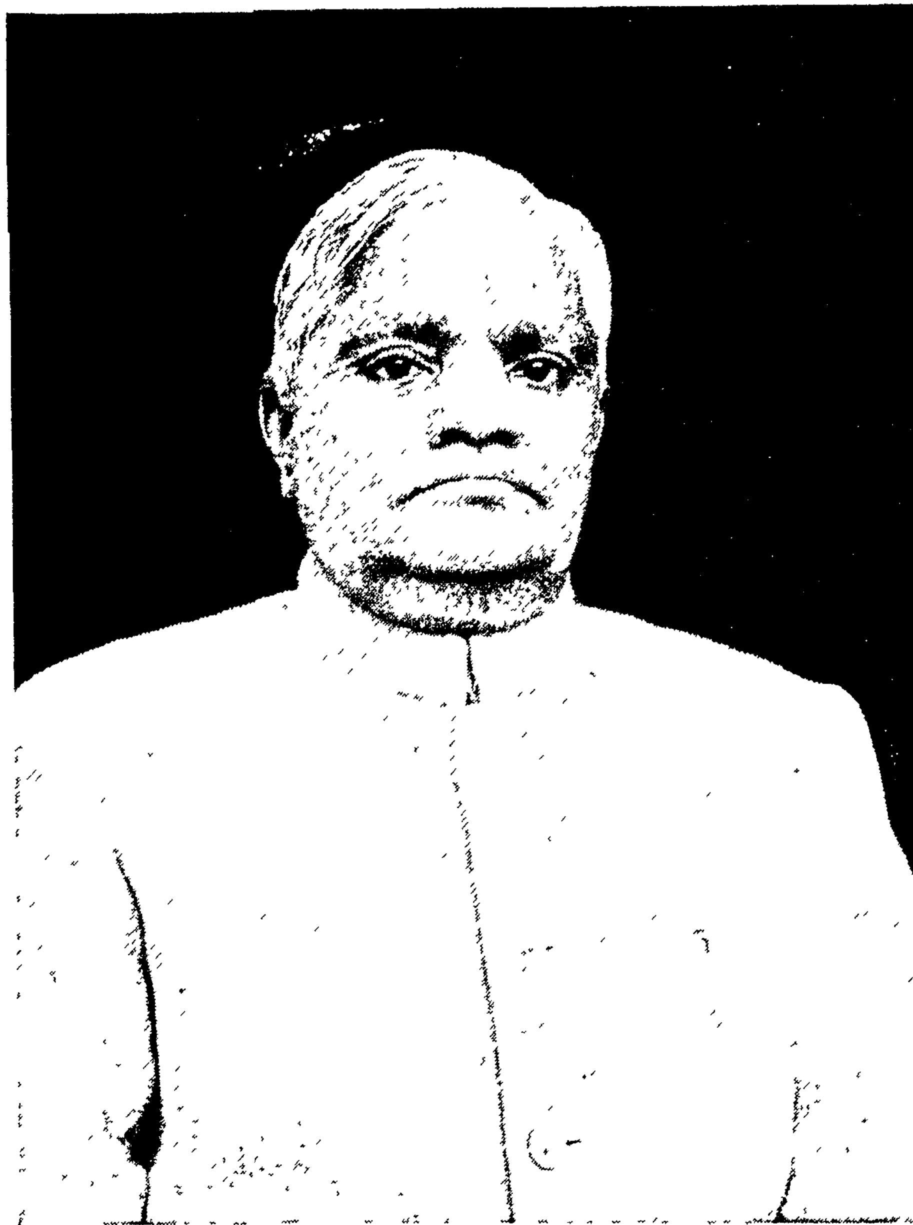
(संगठन मंत्री [illegible] शिक्षा समिति)



आपके कुशल नेतृत्व में केन्द्रीय कार्यालय के कर्मचारी पूर्ण निष्ठा एवम् लगन से स्वर्ण जयन्ती समारोह [illegible]

स्वर्ण जयन्ती के संयोजक :—

* भूतपूर्व प्राचार्य *

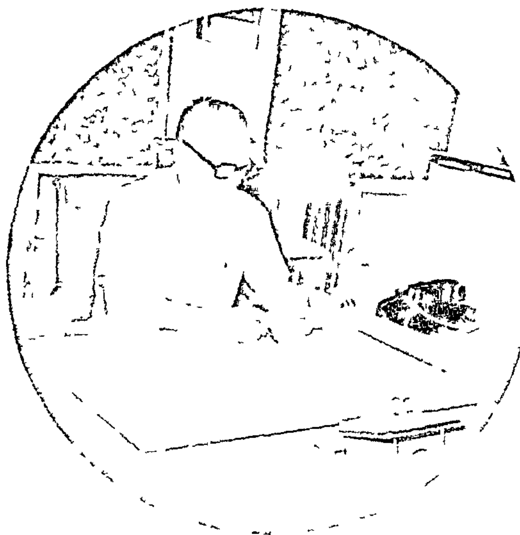


श्री बालचन्द्र वैद्य

आपके अथक प्रयासों से विद्यालय और महाविद्यालय की बहुमुखी उन्नति हुई है। आप जयपुर नगर के सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता भी है और अब भी सुबोध शिक्षण संस्थाओं की प्रगति के लिये प्रयत्नशील रहते हैं।

परम उत्साही एव यशस्वी

प्राचार्य

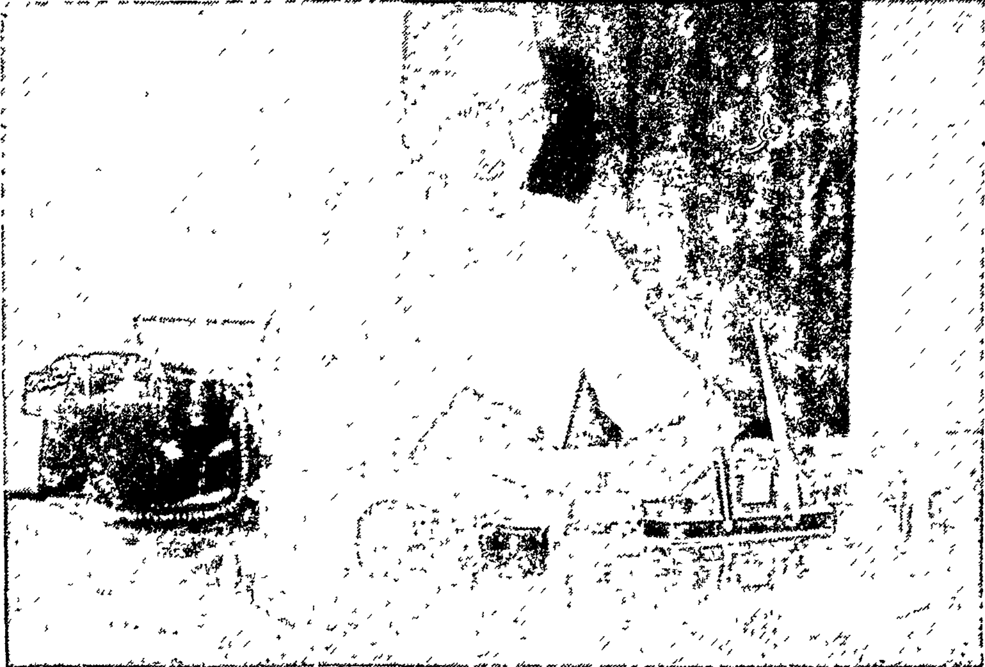


श्री नथमल गोलेछा

आपने प्रधानाचार्य का पद ग्रहण करने के बाद महाविद्यालय को निरन्तर विकसित किया है और राजस्थान के निजी महाविद्यालयों मे श्री जैन सुबोध महाविद्यालय को एक विशिष्ट स्थिति तक पहुँचाया है

हायर सैकराडरी के

प्रधानाध्यापक



श्री लक्ष्मण चतुर्वेदी

श्री जैन सुबोध हाई-स्कूल मे आप सन् १९५० में स. अ. के पद पर नियुक्त हुए। उस समय से आप निरन्तर कार्य कर रहे है। इस समय आपके नेतृत्व मे विद्यालय-विभाग की उल्लेखनीय प्रगति हो रही है।

श्री जैन सुबोध बालिका मा विद्यालय की

प्रधानाध्यापिका



श्रीमती विजयलक्ष्मी चौरडिया

आपके प्रधानाध्यापिका पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद बालिका विद्यालय की बहुमुखी उन्नति हुई है। श्रीमती चोरडिया एक व्यवहारकुशल, उत्साही अध्यापिका और प्रगतिशील विचारों वाली महिला है। आपके उत्साहपूर्ण कार्यों का ही परिणाम है कि बालिका विद्यालय सैकण्डरी स्तर तक उन्नत हुआ।

श्री जैन सुबोध प्राथमिक विद्यालय की

प्रधानाध्यापिका



श्रीमती कमलेश सेठी

आपने प्राथमिक कक्षाओ मे अध्यापन का एक श्रेष्ठ स्तर बनाया है और तत्परता के साथ आप प्राथमिक कक्षाओ व माण्टेसरी विभाग के अध्यापन कार्य का संचालन कर रही है । श्रीमती सेठी शिशुओ के प्रति वात्सल्य रखती हुई अपने कार्य के प्रति पूर्ण सजग रहती है ।

भूतपूर्व प्रधानाध्यापक

श्री बालचन्द्र वैद्य

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री सौभाग्यमल श्रीमाल

राज्य स्तर पर पुरस्कृत

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री

श्री [illegible]

मू० पू० [illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री गुप्ता [illegible]

मू० पू० [illegible]

[illegible] १० वर्ष [illegible]

[illegible]



श्री [illegible] गुप्ता



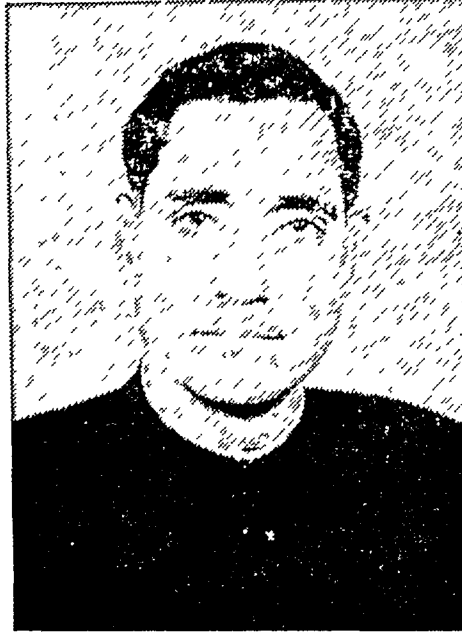
श्री [illegible]

[illegible]

[illegible]

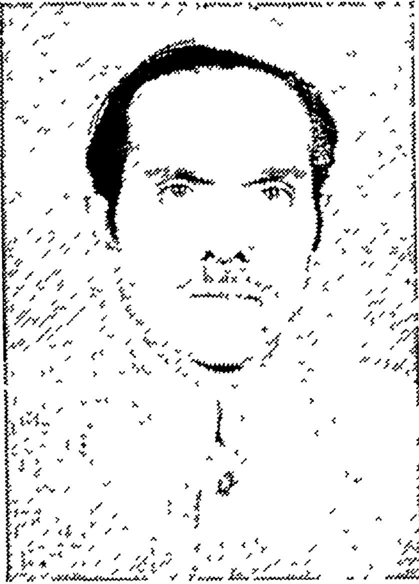
सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक



हजारीलाल शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
सुबोध महाविद्यालय

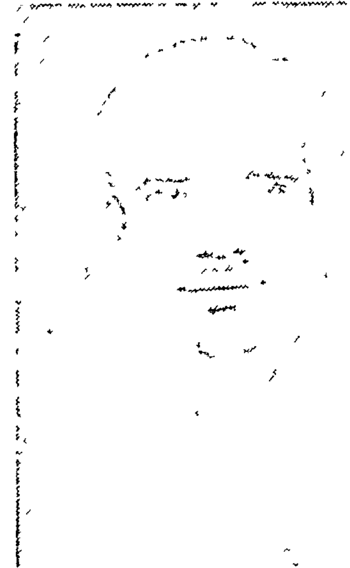
विद्यालय के वरिष्ठ अध्य



प्रो० रमेशचन्द्र चौबे
अंग्रेजी विभाग



श्री गोकुलदास आचार्य
प्रबन्ध सम्पादक



श्री महावीर प्रसाद
हिन्दी

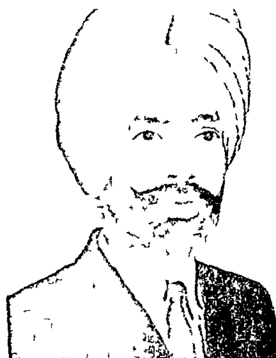
सहायक सम्पादक



श्रीमती कुसुम पाटनी
स. अ.
सुबोध बालिका मा. विद्यालय

श्री हरिनारायण कुमावत
वरिष्ठ अध्यापक
सुबोध विद्यालय





महाविद्यालय के प्रथम यशस्वी स्नातक

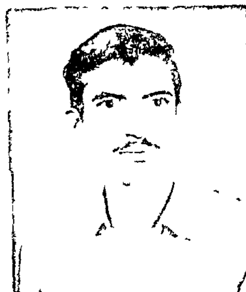
श्री मनजीतसिंह कैम्बो

श्री कैम्बो ने इस महाविद्यालय की बी एस सी परीक्षा
सत्र 1963–64 में उत्तीर्ण की

महाविद्यालय के गौरव के प्रतीक



कान्तिलाल पोरवाल
(1968–69)



कान्तिचन्द्र स्वामी
(1969–70)



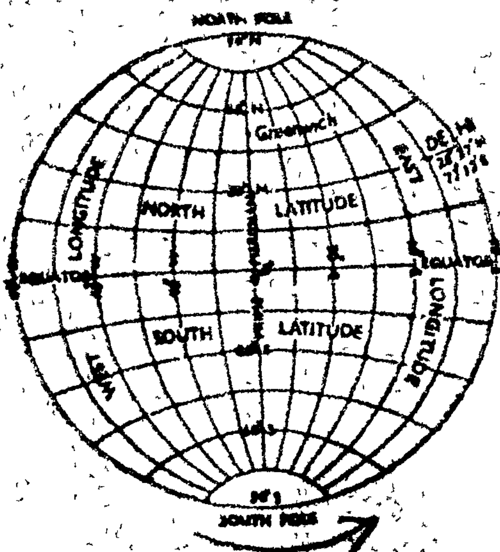
मानप्रकाश शर्मा
(1971–72)



महाविद्यालय
के
स्वर्ण-पदक विजेता
प्रतिभाशाली
स्नातक






NORTH POLE
Greenwich
NORTH
LATITUDE
LONGITUDE
EQUATOR
SOUTH
LATITUDE
WEST
LONGITUDE
EAST
DELHI
SOUTH POLE

ज्ञान - विज्ञान

आर्थिक विकास के पच्चीस वर्ष

• पो० एन० सिंह
व्याख्याता, आर्थिक प्रशासन
व वित्तीय प्रवन्ध विभाग

ब्रिटिश शासन के अन्तिम दिनों में शोषण व दोषपूर्ण नीतियों से स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थ-व्यवस्था लगभग निष्क्रिय हो गयी थी। दूध-घी की नदिया बहाने वाले तथा सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय गरीवी, अशिक्षा, अन्धविश्वास, आर्थिक विषमता तथा शोषण का साम्राज्य व्याप्त था। लघु एवं कुटीर उद्योगों का लगभग पतन हो गया था। कृषि मे विकास की वार्षिक दर 0.5% तथा उद्योगो में केवल 2 5% रह गयी थी। दोषपूर्ण भूमि-व्यवस्था ने जागीरदारी और जमीदारी प्रथा को चरम सीमा पर पहुचा दिया था। देश की भोली-भाली जनता निर्धनता, वेकारी व शोषण से त्रस्त थी। आर्थिक विषमता, अन्धविश्वास व अशिक्षा का बोलवाला था।

किन्तु सैकडो वर्षों की गुलामी की जजीर तोडने के वाद जव 15 अगस्त, 1947 को देश स्वतन्त्र हुआ, तव देश की राष्ट्रीय सरकार ने अर्थ-व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रो का तीव्र गति से आर्थिक विकास करने का प्रयत्न किया, जिससे अर्थ-व्यवस्था के सभी क्षेत्रों मे पिछले पच्चीस वर्षों मे तेजी से विकास हुआ है जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :

1. कृषि-विकास :

भारत एक कृषि-प्रधान देश है। देश की कुल जनसख्या का लगभग 70% भाग अपनी जीविका के लिये कृषि पर निर्भर है। देश की कुल राष्ट्रीय आय का लगभग आधा भाग कृषि तथा सहायक क्रियाओ से उत्पन्न होता है। कृषि व्यवसाय भारत के प्रमुख उद्योगो के लिए कच्चा माल प्रदान करता है तथा देश के निर्यात व्यापार मे महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

1950 के बाद कृषि के विकास के लिए सरकार द्वारा महत्त्वपूर्ण प्रयत्न किये गये है जिनसे कृषि के विकास में आशातीत सफलता मिली है। जमीदारी और जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन कर दिया गया है, काश्तकारी सुधार किये है। चकवन्दी के माध्यम से किसानों के छोटे-छोटे व दूर-दूर विखरे हुए खेतों को केन्द्रित करने का प्रयत्न किया गया है। आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व मे सन् 1951 से ही 'भूदान आन्दोलन' चलाया गया है जिससे लगभग 43 लाख एकड भूमि सरकार को प्राप्त हुई है। विभिन्न राज्यों मे भूमि की जोत की अधिकतम सीमा का निर्धारण कर दिया गया है और इस निर्धारित सीमा से अधिक प्राप्त भूमि को भूमिहीनो मे वितरित किया जा रहा है। कृषि मे सभी वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने के लिये कृषि के यन्त्रीकरण पर जोर दिया जा रहा है। उत्तम किस्म के बीजों, रासायनिक



युग-युग के दिनमान

• तारादत्त "निर्विरोध"

'वर्द्धमान' थे तुम बचपन मे,
कहलाए 'सन्मति' यौवन मे,
साम्यवाद औ सर्वोदय के सकल गुणों की खान थे !

सत्य-शाति के अमर प्रवर्त्तक,
अपरिग्रह वृत्ति के उन्मेषक,
मानवता के ज्योतिपुञ्ज तुम, निर्भय अमिट निशान थे !

हर समाज की घोर विषमता,
हर विभेद की निरी विफलता,
हर पीडा के अन्तराल की तह मे उगे विहान थे !

तुम्ही वेद थे, तुम्हीं ऋचाएँ,
एक ग्रथ अनगिन रचनाएँ,
साहित्य-कला-विज्ञान और तुम सस्कृति के सोपान थे !

समता का सदेश अमरवर,
दिया तुम्हीं ने हे तीर्थङ्कर,
सकल सृष्टि के लिए अहिंसा के तुम एक पुरान थे !

तम मे ज्योति ज्योति मे जीवन,
यही तुम्हारा जीवन-दर्शन,
जग-जीवन के परिवेशो मे गीता और कुरान थे !

शब्द ब्रह्म तो निर्मल भाषा,
तुम परिभाषा की परिभाषा,
हर बोली के अर्थ एक तुम सबमे एक समान थे !

दिशा बोध दे गए जगत को,
वर्तमान, गत को, आगत को,
सब धर्मों के एक धर्म तुम, युग-युग के दिनमान थे !

स्वतंत्र भारत के विकास में नारी अग्रणी



श्रीमती विजयलक्ष्मी चौरड़िया
एम. ए. बी. एड.
प्रधानाध्यापिका
एस. एस. जैन सुबोध बालिका मा. विद्यालय,
जयपुर

काल के बदलते परिवेश के अनुरूप समाज और जीवन के अनेक पहलू तथागम्य हो ढलते जाते हैं। जिस गति से समय बदलता है, उससे तीव्र गति से परम्परागत आदर्श तथा हमारे मूलभूत सिद्धान्त बदलते जाते है। कभी राजतंत्र, कभी तानाशाही, तो कभी प्रजातत्र के सांचे में मानव प्रतिरूपित हो जाता है और हम उस नवीन परिधान के साथ इतने समान्तर होकर चलने लगते है कि हमे अपने बदलाव का आभास भी नहीं होने पाता। हमारा तारतम्य उस अधिशासन से इतना अधिक हो जाता है कि हम उससे विलग अपने आपको प्रतिरूपित करने मे सर्वथा असमर्थ होते है। जीवन की वाहिनी मे नाव खेते चले जाते हैं—हम, परन्तु पाटलिपुत्र से कब पटना पहुँचे और हस्तिनापुर से कब दिल्ली, नही जान पाते। हम तो बस बहना जानते है धारा के साथ, धारा चाहे तो मिटा दे और चाहे तो पहुंचा दे गन्तव्य तक।

एक समय था जब भारतीय नारी स्वतंत्र थी, विचार विनिमय मे, शासन मे, सामाजिक कार्यो मे तथा शास्त्रचर्चा में। परन्तु दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ। हम विदेशियों के हस्तगत हुए, एक बार नही, अनेक बार। कितनी ही विदेशी जातियों के आक्रमण हुए देश पर। प्रतिवाद व प्रतिक्रमण हेतु पौरुष चाहिए था, पुरुष खड़े हुए। यह नहीं कि स्त्रियां पीछे रह गई, पर शासन पुरुष ने ही किया, नारी 'अबला' है और अबला घोषित कर दी गयी। समय की मांग थी, जिसे पूर्ण करना व्यक्तिगत स्वार्थ तक ही सीमित न था वरन् देशोद्धार और आह्वान हेतु भी यही आवश्यक था। आगे यही से चलती है कहानी। परम आदर्श पर गठित हिन्दू व्यवस्था से पूर्ण जागृत समाज ने समय के साथ अंगड़ाई ली तो सुरमय खचित वीणा के कई तार असामंजस्य के साथ भनभना कर क्षत-विक्षत हो गये, स्वरहीन तारतम्य रहित समय सधि बंधों के पुनर्गठन मे अधोगमन के फलस्वरूप ऊर्ध्वारोहण के मूल अंधकार की वीथियों मे अनजाने अनचाहे ही भटक गये और शेष रहा झनकता रौरव व त्रासदायी संध्या का शुभागमन, साथ ही मुगल सल्तनत के पर्दानशीन तोहफे के बतौर राजरानियों के अतिरिक्त सामान्य भारतीय नारी आकुंठित हो प्राचीरो में बंधी पंजर-बद्ध मृगी के समान हो गयी। वह नारी से 'गृहिणी', केवल मात्र घर की बन गयी। उसकी उन्मुक्त स्वच्छन्दता पुरुष के आधिपत्य से अधिशासित हो दुरूह पराकाष्ठा में बंध गयी, समस्त दोषारोपण पुरुष शिर नही मढ़ा जा सकता, क्योंकि नारी को भी परित्राण चाहिए था, रक्षण चाहिए था और वह अधिशासित होकर जीने मे ही जीवन को

श्रेयस्कर समझने लगी। यह परिवर्तन आरोपित न होकर अनुमानित था और उसकी अवमानना देशकाल के अनुपयुक्त थी। 'चक्रवत् परिवर्तन्ते' की उक्ति कालाधीन है तथा वही संस्कृति का मार्ग निर्धारित करती है। सरिता वेग में ही तो बहती है, सोची, परन्तु यदि मार्ग अवरुद्ध हुआ तो वेग अवरोध हटाने में लगता है मार्ग बदल लिया जाता है। संस्कृति सरिता है, उसमें नम्रता है, वह फलभार से झुकी शाखा है, वह वन्य है, वह झुक सकती है, नवीन मार्ग अपना सकती है और यही वह गुण है जो उसे विनष्टता से बचा सकता है, यही वह स्तम्भ है जिसके सहारे सभ्यता और इतिहास की अमरबेल पोषित हो ऊपर चढ़ सकती है। संस्कृति का अर्ध पुरुष में स्थापित है तो अर्ध ही स्त्री का है। उसी अर्ध की भावना हेतु भारतीय नारी ने एक सांजस्य पूर्ण दिग् वचन स्वीकार किया।

परन्तु सुप्त ज्वालामुखी मर नहीं जाते उनको स्थितियां चाहिए पुनः विस्फोटित हो जाने के लिए, और वह विस्फोट हुआ स्वतन्त्रता के बाद नहीं, वरन् पहले ही। परन्तु स्वराज्य से पूर्व की जागृति यदि चिनगारी थी तो स्वाधीनता के पश्चात् वही वनवह्नि की तरह प्रज्ज्वलित हो उठी। इस चिनगारी के प्रस्फुटन के पितामह थे दयानन्द सरस्वती और राजा राममोहनराय एवं मातृत्व और वात्सल्य की चिरदीप शिखा उद्बोधित की थी सरोजिनी नायडू ने। नारी ने नर के कंधे से कंधा मिलाकर 'सुराज' हासिल किया।

अन्ततः भारत स्वतन्त्र हुआ। उस नवशिशु को सत्ताईस वर्ष के नवयुवक बनने तक पोषित करने के लिए समग्र राष्ट्र जुट गया। यहीं से परिरक्षिता नारी जीवन संग्राम हेतु परीक्षिता बन प्रस्तुत हुई। जब राष्ट्र उन्नति करता है, उत्थान के आलोकित पथ पर अग्रसर होता है तो हर नागरिक को जुट जाना होता है—उस निर्माण में। नवीन रूप की महत्त्वाकांक्षा भी क्या कम होती है? और वह भी तब जब व्यक्ति अपने हस्त कौशल के चिर प्रतीक्षित रूप को अपने सान्निध्य में पाने हेतु आतुर हो। तथैव नारी ने अपने कदम को बहुविधि सींचा। नवीन समाज की स्थापना की, जो कि स्वाधीनता के पश्चात् एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी, नारी ने ही मूर्त अथवा अमूर्त रूप दिया। नवीनतम नयी समाज व्यवस्था का प्रतिरोपण नारी ने ही किया। भारतीय समाज की कुंठाओं एवं वर्गीकृत वैषम्य को एक अभिलषित सूत्र में ग्रथित करने में नारी ने अतिशय सहयोग प्रदान किया। वैषम्य के बीजांकुर नारी के हृदय में ही अतिशीघ्र प्रस्फुटित होते हैं। यदि वहीं से उन्हें प्रताड़ित किया जाये तो भला उस कुटिल कथन को कहां स्थान मिल सकता है? यही निर्माण राष्ट्रीय चरित्र के संस्थापन में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुआ।

स्खलित भारत के जीवन मूल्यों के नवीनतम संस्करण में स्त्री समाज का सहयोग चिरस्मरणीय रहेगा। अभिशप्त निषेधात्मकता को त्याग कर सामाजिक क्षेत्र में परावर्तित होने का यह अनूठा प्रयोग था। नारी ने शिक्षा से लेकर शासन तक हर क्षेत्र में कदम बढ़ाये।

नारी ने साक्षरता के सोपान पर चरण रखे। साहित्य सिद्धि और नवीन सृजन हेतु वह तत्पर होकर उपस्थित हुई। इसी बुद्धिपोषण ने नारी को जागृति एवं जीवन की अनेक विधाओं में समजीविन होने का तन्त्र प्रदान किया। एक सैद्धान्तिक प्रारूप का प्रादुर्भाव हुआ जो कि आज कल्पित आदर्श के रूप में आलोकित हुआ।

नारी केवल मात्र 'गृहिणी' ही न रहकर जीवन के विविध क्षेत्रों में कमर कसकर उतर आयी है। उसने अपनी मानसिक विधाओं को गृह संयोजन में ही आमुख न रखा वरन् वह नौकरी के लिए भी तत्पर हुई। घूंघट में लिपटी कोमलांगी निधड़क होकर कार्यालयों या अन्यान्य कार्यों में प्रवृत्त हुई।

नारी ने कार्य-शीलता में कोई भी क्षेत्र अधूरा न छोड़ा। शिक्षा हो, तकनीकी क्षेत्र हो, प्रशासन हो, कुछ भी हो, यहा तक कि सेना ही क्यो न हो, प्रत्येक क्षेत्र में महिलायें आगे आयी। इस प्रवृत्ति के दो मुख्य कारण थे—पहला देश चरम शिखर पर था और उसे अधिक से अधिक मानव शक्ति की आवश्यकता थी, और दूसरा नारी की स्वतन्त्र भावना।

इस स्वतन्त्र विचारधारा की उषा का प्रस्फुटन अनेकानेक आह्वानों का तथा तटस्थ विलोकन का परिणाम था। भारतीय संस्कृति का लचीलापन नव कोपलो का सा रहा है, और उसने अपने गौरव को कभी भी पद दलित नही होने दिया है। यह शासित रही है दूसरो से, विदेशियों से, परन्तु उसने कभी भी अपनी मौलिकता का त्याग नही किया है। उसने दु.ख को अपनाया है, उसकी गुणग्राहकता ने वास्तव मे दूसरी संस्कृतियो का शोषण किया है। दूसरो के आदर्शो को उसने उदरस्थ किया है और अपने आप को विवर्ण होने से सदैव बचाया है। पाश्चात्य सस्कृति के इन्ही आदर्शो को अपना कर हमारी सस्कृति ने नारी को अग्रसर होने की प्रेरणा ही थी। वही एक उद्बोधन था, जिसने जीवन प्रागण मे नारी को उचित स्थान की व्यवस्था एवं उसके व्यक्तित्व निर्माण मे सहयोग प्रदान किया।

विज्ञान के जटिल पहलू को भी नारी ने विस्मृत न रखा। चिकित्सक, अभियन्ता, शिल्पी एवं आगामी शोध ही क्यों न हो, नारी अप्रत्याशित रूप से आगे आयी। संगीत और अभिनय की आमोद सरिता के निर्बाध प्रवाह में भी नारी ने अर्घ्य दिया है। उसने संगीत एवं गायन की भारतीय शास्त्रीयता को चिरस्मरणीय बनाये रखा है।

क्या शासक और क्या शासित, नारी ने हर रूप में अपने आपको एक कर्तव्यनिष्ठ सुभग, सुगढ़ नागरिक के रूप में परिभाषित एवं प्रभासित किया है। नारी की ईश्वर प्रदत्त संयोजनशीलता ने निर्माण के नये आयामों के प्रस्तुतीकरण में अतुलनीय सहयोग प्रदान किया है। आज देश की हर गतिविधि में नारी प्रस्तुत है। हर प्रभाग-विभाग में नारी कटिबद्ध हो संलग्न है। देश की दिव्य नौका के निर्दिष्ट परिवहन में नारी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। नारी ने समग्र भारत और भारतीय नीतियों को प्रोत्साहित एवं प्रपोषित करने मे अंशतः भी कमी नहीं रखी है। देश के आमूलचूल परिवर्तन में नारी का इस प्रकार प्रवृत्त होना अवश्य ही स्पृहणीय एव श्लाघनीय है। यह नारी मुख की कोई अतिशयोक्ति नही अपितु एक यथार्थ का समवलोकन है। □

महिलाओं के लिये किसी भी राष्ट्रीय योजना का प्रमुख तत्व एक शक्तिशाली तथा बहुमुखी शैक्षिक कार्यक्रम ही हो सकता है। महिला शिक्षा के कार्यक्रम समाज में महिला की विशेष स्थिति को ध्यान में रखकर ही बनाये जाने चाहिये।

—केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री
डी० पी० यादव

नारी जागरण

—विमलाकुमारी वैद्य, एम ए

[सुश्री विमलाकुमारी वैद्य इस समय शिक्षा समिति की कार्यकारिणी की एक मात्र महिला सदस्य हैं। आप सुबोध बालिका विद्यालय की भू०पू० छात्रा भी हैं।]

वर्तमान युग जन-जागरण का युग है, इस जन-जागरण के युग मे नारी जाति के जागरण का होना भी सर्वथा स्वाभाविक ही है। यह ससार फूलो की सेज नही, यहाँ पग-पग पर अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडता है। हमारे देश मे नारियो ने सदियो से गुलामी और पिछडापन झेला है जो आजादी के बाद बहुत हद तक दूर हुआ है। एक युग था, जबकि नारी केवल भोग विलास और मनोरजन का साधन मात्र समझी जाती थी। इतना ही नही नारी को अबला समझ ऐसी हीन दृष्टि से देखा जाता था 'मानो पैर की जूती हो' विवाहित होकर घर मे आने से लेकर मृत्यु तक घर की चारदीवारी ही नारी का कार्य क्षेत्र था। बच्चो का पालन-पोषण करना ही उसका कर्त्तव्य था। इस प्रकार का जीवन जीते जी मरे के समान होता था उस समय कौन था उसकी आवाज सुनने वाला? सहसा हवा का एक झोका आया—यह जागरण का युग है चारो ओर से 'जागो जागो' की पुकार उठने लगी। शासित नारी भी इस जागरण मे आखें मलने लगी। उसे जो हीन अवस्था प्राप्त थी उसके विरोध मे आवाज उठने लगी, आन्दोलन होने लगे। युगों से सिसकती आत्मा विद्रोह कर उठी और अपनी परतन्त्रता की बेडियो को टूक-टूक करके तथा जीर्णशीर्ण मान्यताओ को तोडकर नारी नाहरी के रूप मे सचेष्ट हो उठी। आज उसके जीवन को एक एक कडी काव्य बनकर भारतीय इतिहास का गौरव बढा रही है। गुप्तजी ने तो यहा तक कहा है —

"नर कृत शास्त्रो के बन्धन है,
सब नारी ही को लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाए
पहले ही कर बैठे नर।।"

जनता को स्त्री शिक्षा का महत्त्व बताते हुए भी ठीक ही कहा गया है कि —

"नारी निन्दा मत करो,
नारी गुण की खान।
नारी से नर ऊपजे,
ध्रुव प्रहलाद समान।।"

कवियों और साहित्यकारो ने तो नारी की महिमा का गुणगान करते हुए नारी को ही ऊँचा बताया है —

"कुछ भी स्वत्व नही रखती है,
क्या अर्धाङ्गिनी तुम्हारी?
एक नही दो दो मात्राएँ,
नर से भारी नारी।।"

इतना ही नही, प्रसाद ने पुरुष जाति को चेतावनी दी कि वह नारी के महत्त्व को समझे —

"तुम भूल गये पुरुषत्व मोह मे,
कुछ सत्ता है नारी की।

समरसता है सम्वन्ध वनी,
अधिकार और अधिकारी की ।।"

आज के जन प्रतिनिधि कवि के कल कठ से आज की नारी मुक्ति बोल उठी है :—

"मुक्त करो नारी को,
मानव चिर वन्दिनी नारी को ।
युग-युग की निर्मम कारा से जननी,
सखी प्यारी को ।।"

अँगड़ाई लेती हुई नारी को प्रकाश मिला और वह अपने अधिकारो के लिए आग्रह करने लगी। इन अधिकारो की लालसा, लिप्सा इतनी अधिक वढ गई कि वह अपनी वास्तविक सीमा पार कर पुरुष को ललकारने लगी, उससे होड लेने लगी। आधुनिक नारी जागरण का अत्यन्त ही यथार्थ चित्र खीचा गया है :—

"देखो नई नारी वह खडी है
नई नारी वह खडी है,
पुरुपो मे अपनी जगह माँगती हुई
समाज से न्याय वसूल करती हुई,
ससार को चुनौती देती हुई
आज तक मुझसे आँखे लड़ाया किये
अव आओ मुझसे हाथ मिलाओ
देखो वह नई नारी सामने,
अन्तरिक्ष पर जगमग कर रही है।

वर्तमान समय मे नारी की स्थिति मे परिवर्तन तो वहुत कुछ हुआ परन्तु गहराई से देखा जाय तो वास्तव मे नारी अभी पूर्ण रूपेण जगी नही, न ही अपने अधिकारों को समझ पाई है। वह अपने अधिकारो का दुरुपयोग करती है। कारण स्पष्ट ही है कि वह समाज से डरती है कि समाज हमें क्या कहेगा ? आधुनिक शिक्षिता नारी के लिए ऐसा सोचना उसकी कमजोरी है। जीवन का रहस्य यही है कि स्वयं को जो उचित लगे, करे। अपमान-जनक कार्य न करे, तभी उस का उत्थान हो सकता है।

नि.सन्देह आधुनिक नारी एक उच्च स्तरीय नारी है। सामाजिक एव राजनैतिक प्रवृत्तियों में भाग लेने, सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रूप से प्रवेश करने तथा राष्ट्र पुनर्निर्माण के यज्ञ से योगदान देने मे वह नि·सन्देह आगे है, उसकी धमनियों मे इतना वल भी है यदि कोई गुडा उसे छेड़े तो चप्पलो से उसकी मरम्मत कर दे।

राजा राममोहनराय, स्वामी दयानन्द, महात्मा गाधी आदि महापुरुपो ने नारी जीवन को उन्नत बनाने के लिए वड़ा परिश्रम किया। वाल विवाह की प्रथा दूर करने के लिए एक्ट वनाये गये। शिक्षा का प्रचार वढ़ा। पुन: इस युग मे सरोजनी नायडू, कमला नेहरू, विजयलक्ष्मी जैसी उच्च कोटि की महिलाएँ हुई, जिन्होने देश की स्वतन्त्रता मे पुरुपो के समान ही परिश्रम और त्याग किया। इस युग मे पर्दा प्रथा को कुरीति मानकर वन्द करने की आवाज उठाई गई।

हर्ष का विपय है कि कुछ समय से स्त्रियो के अधिकार पुन: उन्हे दिये जा रहे है, शिक्षित समाज उन्हें पुरुपो के साथ समानता का पद देने का प्रयत्न भी कर रहा है। अधिकाधिक सख्या में उन्हे सुशिक्षित वनाया जा रहा है। ऐसी स्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है कि अव पुरुप वर्ग की प्रगति की दौड़ मे नारी का योगदान भी कम न रहेगा। हम देखते हैं कि आधुनिक युग मे नारी के लिए पुन: विविध कार्य क्षेत्र खुल गये। वे पढ़-लिखकर अध्यापिका, डाक्टर, नर्स, मन्त्री आदि सभी पदों पर प्रतिष्ठित हैं। समाज मे उनका मान वढ गया। पर्दा प्रथा समाप्त होने से आधुनिक नारी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय, सभी क्षेत्रो मे कुशलता से कार्य कर रही है। अर्थोपार्जन के शुभ कार्य भी वे अपने हाथ मे लेने लगी है। अव तक इस कार्य मे केवल स्वप्न ही देख रही थी लेकिन आज की नारियों ने इस स्वप्न को साकार करके दिखा दिया है।

आज हमारा देश स्वतन्त्र है उसके विकास के द्वार खुले हुए हैं हर वर्ग मे, हर प्राणी मे, नई चेतना है, कार्य करने की उमंग है, आज की नारी प्रगति की राह पर खड़ी है। पुरुषो के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करने मे किसी क्षेत्र मे पीछे नही है। भावी स्थिति को देखते हुए हमे यह भी न भूलना चाहिए कि आज की भारतीय नारी ने तो पुरुष वर्ग के पलड़े को हल्का कर यह भी सिद्ध कर दिखा दिया कि जो काम आज हजार पुरुष मिलकर भी नही कर सकते वह काम एक नारी कर सकती है। यही कारण है कि अतीत की अपेक्षा वर्तमान नारी का स्वरूप अधिक उज्ज्वल है। देश की पूर्ण सत्ता तक नारी के हाथो मे है। यह उसकी असीम शक्ति का प्रतीक है कि उसने अपने धैर्य और पुरुषार्थ के बल पर समाज, देश और राष्ट्र मे एक ऐसी क्रान्ति का स्वर फूका है जिससे मूर्छित हृदय भी जागृत हो उठे। आज हमारे देश की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने यह साबित कर दिया है कि महिलाओ को बढ़ने का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरुषो को। यदि महिलाएँ इस प्रकार प्रतियोगिता के क्षेत्र मे दीर्घकाल तक पुरुषो के साथ कार्य करेंगी तो उनमे स्वभावत स्त्री सुलभ कोमलता के बदले पुरुष सुलभ दृढ़ता आ सकती है।

भारत का वास्तविक कल्याण नारी जाति के उत्थान मे ही है। हमारे देश की नारियां पढ़-लिख कर विदुषी बनें, उन्हे हर क्षेत्र मे उनका हिस्सा मिले, तो वे पुरुषो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश सेवा मे अपना योग दे सकती हैं। ऐसी नारियो की ही देश को आवश्यकता है।

नारी जगत की पवित्र ज्योति है, स्वर्गीय सुषमा है, त्याग उसका स्वभाव, समर्पण उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है। यदि नारी त्याग, क्षमाशीलता, उदारता, सहजता आदि गुणों का आत्मसात् करती हुई प्रशिक्षिता बन कर समाज और राष्ट्र को अपना सक्रिय योगदान दे सकी तो निश्चित ही धरा पर स्वर्ग उतर आयेगा। आज युग जागरण के साथ नारी के रोम-रोम मे व्याप्त पुरुषार्थ, धैर्य और शौर्य के भाव गूंज उठे हैं—

"कौन कहता है हमको अबला ?
आजाद देश की, हम है सबला ॥"



महिला शिक्षा का वर्तमान स्तर, निर्धारित लक्ष्य तथा इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उलझी हुई समस्याओं पर काबू पाने के लिये एक रूढ़िवादिता से परे ऐसी कल्पनात्मक स्टेट्जी बनानी होगी, जिसका कि वजनी प्रभाव हो।

—श्री डी० पी० यादव
केन्द्रीय शिक्षा उप मंत्री



शिक्षा जगत में भारतीय महिलाएँ

—श्रीमती प्रतिभा सक्सेना
सहायक अध्यापिका

प्राचीनकाल से ही शिक्षा जगत मे भारतीय महिलाये अपना योगदान देती रही है । विश्वतारा, अपाला, मैत्रेयी, गार्गी एव विद्योत्तमा आदि महिलाओ ने भारत को ही नही, समूचे विश्व के शिक्षा जगत को अपनी विद्वत्ता से आलोकित किया है । मध्यकाल में राजनीतिक एवं सामाजिक विषमताओ के कारण भारतीय महिला अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करने मे असमर्थ रही । लेकिन वर्तमान काल में अनुकूल सुविधाओ को उपलब्ध कर वह अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करने मे नही चूकी । आज हम सभी सरोजनी नायडू, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि के नाम गर्व के साथ लेते है ।

फिर भी, आज शिक्षित महिलाओ की दृष्टि से भारत अन्य विकसित राष्ट्रो की अपेक्षा पिछड़ा हुआ है । स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व भारतीय महिलाओ को सामान्यत शैक्षणिक क्षेत्र की ओर कम ही प्रोत्साहित किया जाता था । निस्सन्देह स्वाधीनता प्राप्ति के साथ-साथ महिला शिक्षा की ओर भी विशेप ध्यान दिया गया । ऐसा विश्वास किया जाता है कि आज भी भारत मे स्त्री संख्या का केवल तीन प्रतिशत भाग शिक्षित है । इस प्रतिशत मे महिलाओं का वह वर्ग भी सम्मिलित है जिनके पास कोई डिप्लोमा या डिग्री नही है । इसका मूल कारण महिलाओं के प्रति भारत का परम्परागत दृष्टिकोण रहा है । आज जबकि मानव चन्द्रमा पर चरण रख चुका है, भारत में, ऐसे व्यक्ति मौजूद है जो महिलाओं को विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रो मे बढने देना हृदय से स्वीकार नही करते । वे लोग महिलाओ को घर की चारदीवारी का ही एक अग मानते है । लेकिन बदलते हुए परिवेश मे अब दृष्टिकोण बदल रहा है ।

आज अब यह स्वीकार किया जाने लगा है कि भारतीय नारी प्रत्येक क्षेत्र मे पुरुष के साथ कधे से कधा मिलाकर अपना योगदान दे सकती है । यही नही अब तो यह भी समझा जाता है कि महिलाए पुरुषों की अपेक्षा अधिक संयम, धैर्य और साहस का परिचय दे सकती है । भारत की प्रधान मत्री इस तथ्य का अपने आप मे एक उदाहरण है । 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान श्रीमती इन्दिरा गांधी ने जिस साहस व धैर्य के साथ युद्ध की चुनौतियो का सामना किया, वह अविस्मरणीय है । इस प्रकार वर्तमान में भी उन्होने देश की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को विशेष सूझ-बूझ के साथ सभाला है, वह सराहनीय है ।

शिक्षा जगत के सदर्भ मे यदि पिछले 10 वर्षों का इतिहास देखा जाय तो हाई स्कूल एवं विश्वविद्यालय स्तर पर महिलाओं ने कई

सर्वोच्च स्थान प्राप्त किये हैं। अब तो यह एक सवविदित तथ्य है कि स्नातकोत्तर कक्षाओ मे पुरुषो की अपेक्षा महिलाओ की सख्या अधिक है चाहे वह विज्ञान वग हो अथवा कला। यहा तक कि वाणिज्य वग मे भी महिलायें अब रुचि लेने लगी हैं। वे स्टनो-टाइपिस्ट एव बैंकिग पद्धति मे भी विशिष्ट योग्यता अर्जित करना चाहती हैं। प्रशासनिक सेवा म भी महिलाए पीछे नही हैं। अभी हाल ही मे आयोजित अखिल भारतीय प्रशासनिक एव विदेश सेवा मे दिल्ली की कुमारी किरण बतुरा ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर एक बार पुन इस तथ्य को उजागर कर दिया है कि वे कठिन से कठिन प्रतियोगिता मे भी पुरुषो की अपेक्षा अधिक स्थान प्राप्त कर सकती हैं।

आज की भारतीय शिक्षित महिलाएँ विभिन्न सेवाओ मे कायरत हैं। दिल्ली मे हाल ही मे एक अनूठा प्रयोग किया गया है। वहाँ पार्लियामेंट स्ट्रीट स्थित डाकखाने को महिलायें ही सचालित करती हैं अर्थात् पोस्टमास्टर मे लेकर चतुर्थ श्रेणी कमचारी तक महिलायें ही हैं। अभी तक के विवरण से ऐसा पता चलता है कि यह डाकखाना अन्य डाकखानो की अपक्षा अधिक कायकुशलता का परिचय दे रहा है। यही नही, आज भारतीय शिक्षित महिलाएँ सेना म भी करिश्मे दिखा रही हैं। अभी हाल मे हुए छाताधारी सैनिक प्रदशन मे एक भारतीय महिला ने नया कीर्तिमान स्थापित किया है। पुलिस सवा मे भी भारतीय महिला इन्सपेक्टर पद तक पहुँच चुकी है। गुप्तचर सेवा मे भी उनका उल्लेखनीय योगदान है। यही नही, जहा तक यातायात नियमो का सबध है, प्रबुद्ध वग की महिलायें सामान्यत दुघटनाओ के लिये उत्तर-दायी नही होतीं। कारण, वे यातायात नियमा का पूणत पालन करती हैं और पुरुष वग की अपक्षा अधिक सावधानी बरतती हैं।

यूरोप व अमेरिका जैसे राष्ट्रो मे "नारी स्वतन्त्रता" आन्दोलन चल पडा है। भारत मे भी महिलाओ ने समान अधिकारो की माग की है। वास्तविकता यह है कि भारतीय महिला अब 'अबला' नही रह सकती, वह 'सबला' बनना चाहती हैं। वह निम्न पक्तियो को भुठला देना चाहती है—

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आचल मे है दूध और आखो मे पानी॥"

अथवा, वे दिन अब समाप्त हो गये हैं जब कि भारतीय महिला की खिल्ली उडाने के लिये निम्न पक्तियाँ कही जाती थी—

"ढोल, शूद्र, गवार, पशु, नारी।
ये सब ताडन के अधिकारी॥"

शिक्षा-जगत मे भारतीय महिलायें एक प्रकार से एक नया आयाम आरभ कर रही हैं। अभी तक भारतीय महिलाएँ शिक्षा जगत मे अपने आपको पूणत खपा नही पाई थी। परन्तु अब वे विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। उदाहरणाथ मॉण्टेसरी शिक्षा, बी एड प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एव एम एड प्रशिक्षण। साथ ही मेडिकल व इजीनिय-रिंग मे भी महिला प्रशिक्षार्थी की सख्या उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो रही है। आज महिलायें विभिन्न तकनीकी शिक्षाओ मे सक्रियता मे भाग ले रही हैं और सामाजिक जीवन को लाभान्वित कर रही हैं। यही नही, विश्वविद्यालय स्तर पर तो भारतीय महिलायें पुरुष वग को भी शिक्षा देती हैं। शिक्षा जगत का महत्त्वपूण पहलू अनुशासनबद्धता है। अब यह विश्वास किया जाता है कि जहाँ महिलायें अध्यापन कार्य करती हैं अथवा जिन विद्यालयो, महाविद्यालयो एव विश्वविद्यालयो मे सह शिक्षा है वहा उच्च कोटि का अनुशासन दिखाई देता है। शिक्षा जगत मे महिलाओ का सर्वाधिक प्रशसनीय योगदान उनके द्वारा प्रदत्त सवेदनशीलता है। सामान्यत ऐसा विश्वास किया जाता है कि शिक्षा की सफलता और विफलता सवेदनात्मक प्रवृत्ति पर अधिक निभर करती है। यह भी माना जाता है

कि विशेषतः भारतीय महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होती है। इस दृष्टि से वे शिक्षा जगत में एक अनूठा योगदान दे सकती है। शिक्षा जीवन का एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा न केवल व्यक्ति अपितु समाज का निर्माण होता है। भारतीय महिला ने इसे इसी रूप में स्वीकारा है और यही कारण है कि स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय शिक्षा जगत में महिलाओं का विशेष योगदान रहा है। शिक्षा जगत और भारतीय महिला को लेकर निम्न पंक्तियों में साराश प्रस्तुत किया जा सकता है।

"क्या नही कर सकती,
यदि हों सुशिक्षित नारिया।
धर्म, अर्थ, कर्म हेतु,
कर चुकी कुर्बानियां।।"

इस प्रकार शिक्षा जगत और भारतीय महिलाओं के योगदान का संक्षिप्त चित्रण प्रस्तुत किया जा सकता है। आज धीरे-धीरे पुरातन रूढियां समाप्त हो रही है और इन रूढ़ियों को बदलने में भारतीय शिक्षित महिलाओं का विशिष्ट योगदान हो सकता है। इसी प्रकार अनेक सामाजिक बुराइयों को दूर करने में भारतीय शिक्षित महिलाएं अनुकरणीय योगदान दे सकती हैं। इसीलिये अभी हाल ही में राजस्थान सरकार ने विशेषतः छात्राओं के लिये "स्कूल चलो अभियान" आरंभ किया है। जिसका लक्ष्य है—कम से कम प्रत्येक महिला पत्र लिखना व पढ़ना अवश्य सीख जाय। हमें आशा है कि आने वाले वर्षों मे शिक्षा जगत में भारतीय महिलायें और अधिक रचनात्मक योगदान दे सकेंगी।



- पवित्र नारी सृष्टिकर्ता की सर्वोत्तम कृति होती है। वह सृष्टि के सम्पूर्ण सौन्दर्य को आत्मसात् किये रहती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

× × ×

- संसार में एक नारी को जो कुछ करना है, वह पुत्री, बहिन और माता के पावन कर्तव्यों के अन्तर्गत आ जाता है।

—स्टील

× × ×

- मां के ममत्व की एक बूंद अमृत से ज्यादा मीठी होती है।

—नागोची

कीमत वृद्धि की सभावना रहती है। परन्तु कार्यक्रम के अ तगत उठाये गये कदमो के कारण कीमतो पर मौसमी दबावो को रोकने मे सफलता मिली है एव थोक सूचकाक 312 के आस पास स्थिर रहा है। नवम्बर 1975 मे सामान्य सूचकाक गत वष की तुलना मे 4 6% कम रहा है। कीमत के क्षेत्र मे प्राप्त यह सफलता यद्यपि एक बडी सीमा तक गत वित्त वर्ष मे उठाये गये कदमो का परिणाम है, फिर भी कायक्रम के अन्तगत इस प्रवृत्ति को जारी रखा गया है। इससे अनुकूल बाजार प्रवृत्ति को सृजित करन मे मदद मिली है। जमाखोरी एव मुनाफाखोरी पर बडी सीमा तक नियत्रण, निर्बाध उत्पादन, पूर्वपिक्षा आवश्यक वस्तुओ की अधिक मात्रा मे उपलब्धि ने कीमतो को नियत्रण मे लाने मे पर्याप्त योग दिया है। यहाँ दो तीन बातो पर ध्यान देना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रथम कीमतो मे गिरावट का असर थोक कीमतो पर ही पडा है, अधिकाश खुदरा कीमतें लगभग स्थिर हैं। अत ऐसे प्रयास आवश्यक हैं जिनसे थोक कीमतो मे कमी मे खुदरा कीमतो मे कमी आये। द्वितीय कीमता मे गिरावट की प्रवृत्ति अनिवाय आवश्यकता की वस्तुओ पर ही प्रकट हुई है। दैनिक जीवन मे काम आने वाली वस्तुएँ, उदाहरणाथ सब्जियाँ, साबुन, अच्छा कपडा इत्यादि की कीमतें लगभग स्थिर रही हैं इनमे गिरावट नही आइ हैं। तृतीय कीमतो मे गिरावट सम्बधी प्रयासा को अब लागू करते समय यह ध्यान रखना अति आवश्यक है कि कही यह कमी आर्थिक सुस्ती (Economic Recession) को जन्म न दे दे। मदी की प्रारभिक अवस्था का सामना ऑटोमोबाइल उद्योग, रासायनिक उवरक उद्योग, एव इस्पात उद्योग कर रहे हैं। इनमे उत्पादन मे विविधता लाना आवश्यक है।

II वितरण प्रणाली मे सुधार कीमतो की समस्या से आवश्यक उपभोक्ता पदार्थों के वितरण की समस्या घनिष्ठ रूप से जुडी हुई है। आर्थिक कायक्रम मे वितरण प्रणाली में सुधार पर बल देते हुये आवश्यक उपभोक्ता पदार्थों के उत्पादन में वृद्धि, वितरण व्यवस्था को प्रभावी बनाने, जनता कपडे की किस्म में सुधार करने, समस्त छात्रावासो में रहने वाले छात्रो को नियत्रित मूल्य पर आवश्यक वस्तुयें तथा पाठ्य पुस्तकों एव स्टेशनरी को नियन्त्रित मूल्य पर उपलब्ध कराने सम्बधी सूत्र सम्मिलित किये गये हैं। इस दिशा में राशन व्यवस्था में पर्याप्त सुधार किये गये हैं। पूर्वपिक्षा उपभोक्ता को अब वस्तुयें सुगमता से अधिक मात्रा मे उपलब्ध होने लगी हैं। आवश्यक वस्तुओ के अ तर्गत अधिक से अधिक वस्तुओ के वितरण की व्यवस्था उचित मूल्य की दुकानो, सहकारी उपभोक्ता भण्डारो अथवा ऐसी ही अ य ऐजेंसियो के माध्यम से की जा रही है। इस दिशा मे जनता कपडे की किस्म सुधारने की दिशा मे अधिक ध्यान दिया जा रहा है। एक योजना के अ तगत जनता कपडे को टिकाऊ एव आकपक बनाने के लिये इसकी कीमत मे 50% तक की वृद्धि करने एव उत्पादन 8,000 लाख वर्ग मीटर से बढाकर 12,000 लाख वग मीटर करने तथा इसका 25% भाग हाथकरघा उद्योग के लिये सुरक्षित करन पर विचार किया जा रहा है।

उपभोक्ताओ के हितो की रक्षा के लिये भी अनेक उपाय विचाराधीन है। एक ऐसा अधिनियम बनाने का विचार है जिसके तहत प्रत्येक वस्तु की पैकिंग पर वजन व कीमत लिखना अनिवाय होगा। वस्तु की घोषित किस्म एव वास्तविक किस्म मे अ तर, तथा विज्ञापनो मे गुणो को बढा चढा कर बताना धोखा धडी माना जायगा। इन उपायो को अपनान से उपभोक्ता को उचित मूल्य पर, उचित किस्म की निश्चित तौल की वस्तु प्राप्त हो सकेगी। जनता को उचित मूल्य पर वस्तुयें उपलब्ध कराने की दिशा मे अनेक वस्तुओ की वितरण व्यवस्था मे मध्यस्थो की सख्या का यूनतम किया जा रहा है। इसी के अ तगत अनेक वस्तुओ से सोल ऐजेन्सी व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया है एव

थोक विक्रय भण्डारों की स्थापना पर जोर दिया जा रहा है ।

उचित मूल्य पर वस्तुये उपलब्ध कराने की दिशा मे यह आवश्यक है कि जन उपभोग की वस्तुओं एव अन्य आवश्यक वस्तुओ से 'पैटेट' एवं 'ब्रांड' की व्यवस्था समाप्त की जाय । इनके कारण उत्पादक 4-5 गुना तक मुनाफा कमाते है एवं विज्ञापनों पर सामाजिक अपव्यय करते है । आधारभूत दवाइयों, साबुन, वनस्पति, विद्युत उपकरण इत्यादि से पेटेट एव 'ब्राड' व्यवस्था को 'समाप्त' कर 'प्रमापीकृत' वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहन दिया जाये । इससे एक ओर जहाँ कीमतों मे कमी से उपभोक्ता लाभान्वित होगे वही दूसरी ओर छोटे-छोटे उद्यमी भी उत्पादन में प्रवेश पा सकेंगे एव 'पूंजी गहन' के स्थान पर 'श्रम गहन' इकाइयों की स्थापना को बल मिलेगा ।

वितरण व्यवस्था एवं छात्र समुदाय : विगत कुछ वर्षो में छात्रावासों मे रहने वाले छात्रों का व्यय तेजी से बढ़ा है । कागज संकट का लाभ उठा कर प्रकाशकों ने पाठ्य पुस्तको की कीमतो मे भारी वृद्धि की है । स्टेशनरी की कीमतो मे भी असाधारण वृद्धि हुई है । इन कठिनाइयो पर ध्यान देते हुये आर्थिक कार्यक्रम मे छात्र समुदाय को विशेष रूप से राहत प्रदान करने वाले कार्यक्रम सम्मिलित किये गये है । छात्रावासो मे आवास को सस्ता बनाने की दिशा मे छात्रावासो एव अन्य मान्यता प्राप्त आवासीय गृहो को सार्वजनिक वितरण प्रणाली मे शामिल करके नियंत्रित मूल्यो पर अनिवार्य आवश्यकता की वस्तुओं को उपलब्ध कराने की योजना लागू की जा चुकी है । पाठ्य पुस्तकों एव स्टेशनरी की कीमतो मे कमी हेतु प्रकाशको एव स्टेशनरी निर्माताओ को नियत्रित मूल्य पर कागज उपलब्ध कराया गया है । वितरण प्रणाली मे इस सुधार के पाठ्य पुस्तकों एवं कापियों की कीमतो को कम करने मे उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है । इनकी पूर्ति मे भी काफी वृद्धि हुई है । इनके अतिरिक्त लगभग दो हजार कालेजों में 'पुस्तक बैंक' स्थापित किये जा रहे है जिनके माध्यम से निर्धन छात्रों को मुफ्त पुस्तक प्राप्त हो सकेगी । स्कूलों में भी पुस्तक कोष स्थापित किये जा रहे है जिनके माध्यम से 80 लाख छात्रों को पुस्तक सहायता उपलब्ध कराई जा सकेगी ।

III. सामाजिक न्याय एव आर्थिक विषमता में कमी के उपाय : ग्रामीण क्षेत्रों मे कृषक मजदूरों, हरिजनों इत्यादि का ऋण ग्रस्तता एव बंधक मजदूरी के माध्यम से अनवरत शोषण होता रहा है । इनके आवास की समस्या, निर्धनता एव आर्थिक उत्थान के कम अवसरो की उपलब्धि ने सामाजिक न्याय में बाधा पहुचाई है । ग्रामीण क्षेत्रो के विकास कार्यक्रमों से भी स्थिति मे विशेष सुधार नही हो सका है । 40% जन सख्या गरीबी के स्तर से भी नीचे जीवन यापन करती है । कड़े एवं क्रांतिकारी उपायो को अपनाये बिना इनकी गरीबी को मिटाना, आर्थिक विषमता मे कमी करना एव सामाजिक न्याय करना सभव नहीं होगा । कार्यक्रम में इस दिशा मे ही पहल की गई है । निर्धन एवं पिछड़े किसानों, हरिजनो, अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के लोगों को शोषण से मुक्ति प्रदान करने की दिशा मे बधक मजदूरी के उन्मूलन एव ऋण ग्रस्तता से मुक्ति दिलाने का कार्यक्रम हाथ में लिया गया है । ग्रामीण क्षेत्रों मे अब तक मामूली से ऋण के पीछे एक अलिखित समझौते के अन्तर्गत कर्जदार को ऋणदाता के यहाँ मामूली सी मजदूरी पर कार्य करना पड़ता है । लगभग सभी राज्यो मे बधक मजदूरी के उन्मूलन सम्बन्धी कानून बनाये गये है एव इसे दण्डनीय अपराध घोषित किया गया है । सभी बधक मजदूरों को ऐसे समझौतों से मुक्त कर दिया है । इसका उल्लघन करने वाले व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है । राजस्थान में ही ऐसी अनेक गिरफ्तारियाँ हुई है ।

बंधक मजदूरी का मूल कारण ऋण ग्रस्तता है । कार्यक्रम मे निर्धनों को सूदखोरो के चगुल से

निकालने के अनेक उपाय किये गये हैं। ऋण ग्रस्तता को क्रमिक रूप में समाप्त करने की दिशा में ऋणों की वसूली पर दो वर्षों के लिये प्रतिबन्ध लगा दिया गया है एवं वसूली आदेशों को विलम्बित कर दिया गया है। सहकारी बैंकों, व्यापारी बैंकों एवं सरकारी ऋणों को इस व्यवस्था के बाहर रखा गया है। इस दिशा में प्रारंभिक कदम के रूप में लगभग सभी राज्य सरकारों ने ऋणों की वसूली को दो वर्ष के लिये स्थगित कर दिया है। अनेक राज्य सरकारों ने अत्यंत निर्धन एवं भूमिहीन किसानों के कर्जे पूरी तरह से समाप्त कर दिये हैं। ऋणग्रस्तता की समस्या को स्थायी रूप से हल करने के लिये इन दो वर्षों में ऋण समझौता बोर्डों का गठन किया जाना चाहिये।

कार्यक्रम में सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग को सामाजिक न्याय प्रदान करने की दिशा में आवासीय भूखण्ड आवंटित करने का कार्य प्रारंभ किया गया है। वे कृषि श्रमिक जो मालिकों की भूमि पर रह रहे हैं उनकी बेदखली पर रोक लगाकर, उन्हें उस भूमि का स्वामित्व प्रदान किया जा रहा है। एक सरकारी अनुमान के अनुसार लगभग 1 5 करोड़ निर्धन परिवारों को आर्थिक कार्यक्रम के अंतर्गत भूखण्ड दिये जाने हैं। गत कुछ माहों में ही ऐसे 25% परिवारों को भूखण्ड दिये जा चुके हैं एवं 10% व्यक्ति इन पर मकान बना चुके हैं। 15 राज्यों एवं 3 केन्द्र शासित प्रदेशों में इस दिशा में कानूनी व्यवस्था की जा चुकी है। केवल अगस्त माह तक ही 2 9 लाख से अधिक मकानों का निर्माण किया जा चुका है। केवल भूखण्ड प्रदान करने से ही समस्या हल नहीं हो सकती है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये निर्णय किया गया है कि ऐसे व्यक्तियों को मकान बनाने हेतु केन्द्र सरकार वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। यह उल्लेखनीय है कि राज्य सरकारों ने आवासीय भूखण्ड करने के कार्यक्रम को केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रखा है वरन् नगरीय क्षेत्रों में गंदी बस्तियों के उन्मूलन, एवं इन बस्तियों की दशा सुधारने की दिशा में यहाँ बिजली एवं पेयजल सुविधायें उपलब्ध कराने एवं निवासियों को पट्टे प्रदान करने के कार्यक्रम भी प्रारंभ किये हैं। गन्दी बस्ती के निवासियों को अन्य सुविधाजनक स्थानों पर बसाने की भी योजना है। नगरों में किरायेदारों को मकान मालिकों की ज्यादतियों से बचाने की व्यवस्था की जा रही है।

कृषि अर्थव्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग कृषि श्रमिक हैं। इनकी ओर अभी तक बहुत कम ध्यान दिया गया है जिससे इनका काफी शोषण हुआ है। आर्थिक कार्यक्रम में इनकी न्यूनतम मजदूरी एवं कार्य की दशाओं की समीक्षा कर एवं मजदूरी में वृद्धि का लक्ष्य है। इस दिशा में सभी लगभग राज्य सरकारों ने कृषि श्रमिकों की मजदूरी को बढ़ाने एवं लागू करने की वैधानिक व्यवस्था की है। अनेक राज्यों में इनके काम के घंटे भी निश्चित किये गये हैं।

इनके अतिरिक्त भूमिहीनों में भूमि वितरित करने, निर्धन किसानों और कारीगरों को रोजगार के अवसर प्रदान करने एवं वित्तीय सहायता करने सम्बन्धी कार्यक्रम लागू किये जाने हैं जिनका विश्लेषण ग्रामीण विकास सम्बन्धी उपायों के अंतर्गत किया गया है।

मध्यम आय वर्ग को मुद्रा प्रसार से भारी कष्ट उठाने पड़े हैं। कीमत वृद्धि से इनकी वास्तविक आय में कमी के कारण जीवन स्तर में गिरावट आई है। सामाजिक न्याय के कार्यक्रम के अंतर्गत इन्हें आयकर में कुछ छूट प्रदान की गई है। आयकर में करमुक्त आय की न्यूनतम सीमा 6000 से बढ़ाकर 8000 कर दी गई है। सरकार की कड़ी कर वसूली नीति से कर राजस्व में आशाजनक वृद्धि हुई है। ऐसी दशा में छूट की इस सीमा को आगामी वित्त वर्ष में यदि 10,000 कर दिया जाय

तो मध्यम वर्ग वास्तव मे राहत की साँस ले सकेगा ।

IV. **ग्रामीण विकास हेतु उपाय** : कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ है । भारत मे आर्थिक विकास की उच्चतर अवस्था तब तक प्राप्त नही की जा सकती है जब तक कि कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रो का सतुलित विकास नही किया जाता है । निसदेह नियोजित आर्थिक विकास के फलस्वरूप कृषि एव ग्रामीण क्षेत्र की स्थिति मे काफी सुधार हुआ है । परन्तु इस विकास का लाभ सभी वर्गो को समान रूप से प्राप्त नहीं हो सका है । भूमि सुधार के कार्यक्रमो को लागू करने मे शिथिलता, भूमिहीन किसानों की विशाल संख्या, सिचाई की सुविधाओ एवं अन्य कृषिगत आगतों (Inputs) का अभाव वित्तीय साख सुविधाओ की अपर्याप्त एवं अवाछित स्थिति एवं साधनो का असमान वितरण इत्यादि ऐसे बाधक तत्व है, जिनके कारण ग्रामीण विकास के कार्यक्रमो का पूरा लाभ प्राप्त नही हो सका है एव विषमता घटने के स्थान पर बढ़ी है । नवीन कार्यक्रम में इन बाधक तत्वो को समाप्त करने की त्वरित योजनाये बनाई गई है ।

भारत मे भूमि सुधारो का कार्यक्रम कृषि विकास कार्यक्रमो का महत्वपूर्ण अग रहा है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इस दिशा मे अनेक महत्वपूर्ण कानून बनाये गये है । भूमि का वितरण इनमे एक महत्व का मुद्दा है । भूमिहीनो की समस्या का हल भूमि की अधिकतम सीमा के निर्धारण द्वारा ही हो सकता है । अधिकतम सीमा से अधिक भूमि का पुनर्ग्रहण कर भूमिहीनों मे इसका वितरण अति आवश्यक है । आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य सरकारो ने इस दिशा मे द्रुतगति से कार्य प्रारभ किया है । विभिन्न राज्यो के अनुमानानुसार 15.32 लाख हैक्टर भूमि इस प्रकार से प्राप्त हो सकेगी । विभिन्न राज्यो मे 6 लाख हैक्टर से अधिक भूमि वितरित की जा चुकी है । कृषि भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारित करने के अतिरिक्त भूमि सुधारों की दिशा मे भूमि से बेनामी व्यवस्था समाप्त करने, भूमि विकास के कार्यक्रमो (यथा राजस्थान नहर कमांड एरिया विकास तथा चंबल के खारो को कृषि योग्य बनाने सम्बन्धी कार्यक्रम) को लागू करने, चकबन्दी की गई जमीन के पुनर्विभाजन पर रोक एवं रहन रखे गये खेतो पर ऋणदाता का कब्जा न होने देने, भूमि लेखों को पूरा करने सम्बन्धी अन्य कार्यक्रमो पर भी शीघ्रता से अमल आवश्यक एवं अपेक्षित है । राज्य सरकारो ने जून 1976 तक भूमिसुधारों को पूर्णतः लागू करने का लक्ष्य निश्चित किया है ।

कृषि उत्पादन वृद्धि में सिचाई व्यवस्था का अपना ही विशिष्ट स्थान है । इस महत्व को स्वीकारते हुये ही कार्यक्रम मे भूमिगत जल के अधिकाधिक उपयोग हेतु राष्ट्रीय योजनायें बनाने पर जोर दिया गया है । 50 लाख हैक्टर अतिरिक्त भूमि को सिचाई सुविधाएँ प्रदान करने का कार्य तेजी से पूरा किया जाना है । इसके अतिरिक्त पेयजल की व्यवस्था करने एव सूखे से प्रभावित क्षेत्रो मे भूमिगत जल के स्रोतों का पता लगाने हेतु अधिक सर्वेक्षण करने तथा प्राप्त जल का तुरन्त उपयोग करने की व्यवस्था की जा रही है ।

कृषि एव ग्रामीण क्षेत्रो के विकास कार्यक्रमो का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अग ग्रामीणो को ऋण ग्रस्तता से मुक्ति दिलाने एव उनकी ऋण आवश्यकताओ की पूर्ति की वैकल्पिक व्यवस्था करना है । इस दिशा मे दोहरे उपाय काम मे लिए जाते है एक ओर तो धीरे-धीरे ऋण ग्रस्तता से मुक्ति दिलाना है तो दूसरी ओर भूमिहीन श्रमिको, ग्रामीण शिल्पियो तथा छोटे और सीमान्त कृषको (जिनके पास दो हैक्टर से कम भूमि है) को संस्थागत साख उपलब्ध कराने के लिये वैकल्पिक व्यवस्था करने वाली योजनायें बनाने एवं कार्यान्वित करने का लक्ष्य है । ऋण ग्रस्तता से मुक्ति दिलाने की दिशा में प्रारंभिक कदम ग्रामीण कर्जों की वसूली पर दो वर्ष के लिये रोक लगाकर उठाया गया है ।

वैकल्पिक ऐजेन्सियो की दिशा मे ग्रामीण बैको की योजना बनाई है। केन्द्र सरकार की योजना बनाई गई हैं। केन्द्र सरकार की योजनानुसार 1 अप्रैल 1977 तक 50 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की स्थापना की जानी है। प्रत्येक बैक की पूजी 1 करोड रुपये की होगी जिसका 50% भाग केन्द्र सरकार 15% राज्य सरकार एव शेष 35% इस बैक को स्थापित करने वाला व्यापारिक बैक प्रदान करेगा। इन बैको का उद्देश्य निर्धन किसानो, दस्तकारो, भूमिहीनो, मजदूरो इत्यादि की सहायता करना है। इनकी स्थापना अपेक्षाकृत पिछडे एव आदिवासी क्षेत्रो मे करने का भी विचार है। इनके द्वारा दिये जाने वाले ऋणो पर ब्याज दर भी कम होगी, प्रति व्यक्ति ऋण की सीमा भी निश्चित होगी एव कुल ऋणो का कुछ भाग शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी अन्य आवश्यकताओ के लिये भी दिया जायेगा 12 अक्टूबर 1975 से ऐसी 5 बैको ने पश्चिम बगाल, उत्तर प्रदेश, हरियाणा व राजस्थान में कार्य करना प्रारभ कर दिया है। इनके अतिरिक्त लघु कृषक विकास ऐजेन्सी एव सीमान्त कृषक विकास ऐजेन्सियो के माध्यम से भी अधिकाधिक वित्तीय एव तकनीय सहायता उपलब्ध कराने का भी लक्ष्य है।

ग्रामीण विकास के सभी कार्यक्रम यद्यपि समन्वित रूप में एक प्रभावी कार्यक्रम है। इनकी सफलता का समस्त दारोमदार इनके समय पर निष्ठा पूर्वक कार्यान्वित करने पर निर्भर करता है। यह सभी कार्यक्रम आपात कालीन स्थिति मे सफलतापूर्वक लागू किए जा सकते हैं। साथ ही इस बात का विशेष ध्यान रखना पडेगा कि जिन भूमिहीन किसानो को भूमि उपलब्ध कराई जाती है, उन्हें कृषि उत्पादन हेतु आवश्यक सभी साधनों की व्यवस्था भी साथ ही साथ की जाय, जिस भूमि को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाये वहाँ इसका पूर्ण उपयोग हो, तथा ऋण ग्रस्तता एव बधक मजदूरी से मुक्त व्यक्तियो को उनकी आवश्यकतानुसार साख व्यवस्था करने एव उन्हें स्वावलम्बी बनाने की योजनाओ पर कार्य भी आवश्यक है। विशाल निर्धन ग्रामीण कृषको को केवल ग्रामीण बैको के भरोसे ही नही छोडा जाय वरन् ग्रामीण गरीबी को दूर करने के लिये व्यापारिक बैको एव सहकारी समितियो एव स्वय सरकार द्वारा बडे पैमाने पर साख की व्यवस्था की जाय।

V **औद्योगिक उत्पादन मे वृद्धि सम्बन्धी उपाय** 1970 मे आर्थिक स्थिति को चिन्तनीय बनाने में सर्वाधिक उत्तरदायी कारण औद्योगिक अर्थव्यवस्था मे व्याप्त शिथिलता है। औद्योगिक क्षेत्र मे व्याप्त शिथिलता के मुख्य कारण औद्योगिक कच्चे माल का अभाव, विद्युत उत्पादन मे गिरावट, परिवहन सुविधाओ मे गत्यावरोध औद्योगिक विवादो मे वृद्धि एव पूजी विनियोजन म कतिपय बाधायें रही हैं। आर्थिक कार्यक्रम म इन बाधाओ को दूर कर उद्योगो म पूजी विनियोजन को बढावा देने एव उत्पादन वृद्धि की दर को बढाने सम्बन्धी उपाय अपनाये गये हैं।

इस दिशा म विद्युत उत्पादन को बढाने हेतु सुपरताप विद्युत ग्रह बनाने की योजना है। इनमे भारत को विद्युत के क्षेत्र मे आत्म निर्भरता प्राप्त करने मे मदद मिलेगी। ये छटी योजना के मध्य तक स्थापित हो जायेंगे। इनकी स्थापना नेवेली (तमिलनाडु), रायगुण्डम (आन्ध्र प्रदेश) कोरबा (मध्य प्रदेश) फरक्का (प बगाल) तथा सिंगरोली (उ प्र) मे की जानी है। इनके निर्माण पर 5,000 हजार करोड रुपये व्यय होने का अनुमान है। विश्व बैंक ने इनके लिये वित्तीय सहायता देना स्वीकार कर लिया है। सडक परिवहन को निर्बाध चलते रहने देने के लिये 5000 राष्ट्रीय परमिट जारी करने का लक्ष्य है। आशा है कि इससे देश के विभिन्न भागो मे माल को बिना विलम्ब के भेजा जा सकेगा। औद्योगिक विवादो को न्यूनतम करने एव श्रमिको की उत्पादन व्यवस्था के प्रति अधिक उत्तरदायी बनाने की दृष्टि से श्रमिको को प्रबन्ध व्यवस्था मे समुचित स्थान देने की

घोपणा की गई है। इस दिशा मे केन्द्रीय उद्योग मन्त्री कारखानो मे श्रमिको को एक तिहाई का हिस्सेदार बनाने का मत व्यक्त किया है। वास्तव में औद्योगिक उत्पादन मे वृद्धि के लिये यह आवश्यक है कि इनमे से व्यवस्था एवं श्रम के परस्पर विरोधी हितो का अस्तित्व समाप्त होना ही चाहिए। श्रमिको का कठोर परिश्रम तभी सफल हो सकता है, जब प्रबन्ध कुशल हो। श्रमिको की प्रबन्ध मे हिस्सेदारी सुनिश्चित रूप उद्योगो के कुशल सचालन में योग दे सकेगा। भारत सरकार की औद्योगिक एव लाइसैंसिग नीति मे कई खामियो की ओर कई विशेष समितियो ने इगित किया है। इनके सुझावो की दिशा मे ही कदम उठाकर ही सरकार ने उद्योगो मे पूंजी विनियोजन को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। हाल ही मे घोपित नीति के अनुसार अनेक उद्योगो को लाइसंस लेने की अनिवार्यता से मुक्त कर दिया गया है एवं अनेक क्षेत्रों में पूंजी विनियोगों को आकर्षक बनाया गया है। चीनी उद्योग को ऐसी ही कुछ आकर्पक छूट प्रदान की गयी है। लाइसेंस वाले उद्योगो के आवेदन पत्रो की जाँच इत्यादि से सम्बन्धित कार्य यथा सम्भव एक ही विभाग द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिये। लाइसेंस शुदा उद्योगो की स्थापना एवं सचालन मे वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जानी चाहिये। बडे उद्योग समूहों को उत्पादन से वृद्धि के लक्ष्य की पूर्ति हेतु पूंजी विनियोजन के अधिक अवसर प्रदान करने चाहिये। सयुक्त क्षेत्र के विचार को भी कार्यान्वित करना चाहिये। काले धन की स्वैच्छिक घोपणा के अन्तर्गत व्यक्तियो के पास बचने वाले शेप धन को उद्योगो मे लगाने, आकर्षक योजना बनाने आदि मे लागू करना चाहिये। हाथ करघा उद्योग एक ऐसा प्रमुख उद्योग है जिसमे एक करोड व्यक्तियो को रोजगार मिला हुआ है। कार्यक्रम मे इस उद्योग के विकास के लिये विशिष्ट कदम उठाने की घोषणा की गयी है। इनके अन्तर्गत इन्हे कच्चा माल उपलब्ध कराने, सहकारिता के आधार पर विपणन की व्यवस्था करने एवं कारीगरों को प्रशिक्षण प्रदान करने, हाथ करघों को नया रूप देने इत्यादि की योजना है। हाथकरघा उद्योग के लिये विकास आयुक्त नियुक्त करने की भी प्रधान मंत्री ने घोषणा की है।

VI. रोजगार के अवसरों में वृद्धि के उपाय

शिक्षितो में बढ़ती हुई बेरोजगारी का सामना करने के लिये अप्रेन्टिस कानून मे परिवर्तन का कार्यक्रम मे प्रावधान है। इसके अन्तर्गत 61 व्यवसायो एवं 201 संगठित उद्योगों में क्रमश: 40 नये व्यवसायों एवं 16 नये उद्योगो को लाये जा रहे हैं। अप्रेन्टिसशिप अधिनियम के अन्तर्गत मालिको का यह वैधानिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि वे निर्धारित मानको (Standard) एव पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न व्यवसायो अप्रेन्टिसो को प्रशिक्षण प्रदान करे। अप्रेन्टिसो की भर्ती मे अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। राज्य सरकारो ने सभी स्थानों का सितम्बर 1975 तक भरने का प्रयास किया है।

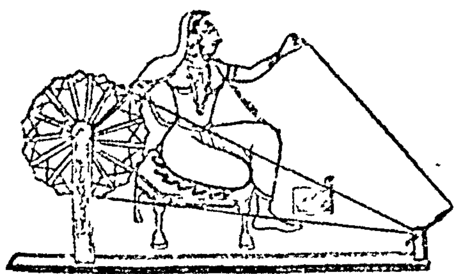
VII. आर्थिक अपराधों पर रोक के उपाय.

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जिस गति से आर्थिक अपराधों में वृद्धि हुई है, वह अकल्पनीय है। करवचन एवं कालेधन की विशालता, तस्कर-व्यापार मे भारी वृद्धि, आयात लाइसेंसो का दुरुपयोग, शहरी सम्पत्ति का अनुचित केन्द्रीकरण इत्यादि ने सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को ही गहरे सकट मे डाल दिया। अभी तक इनकी रोकथाम के लिये समुचित व्यवस्था नही थी। अब इस कमी को दूर करने की ओर कदम उठाये जा रहे है। तस्कर व्यापार को समूल नष्ट करने के लिये तस्करो द्वारा अनुचित रूप से एकत्रित की गई सम्पत्ति को जब्त करने के लिये विशेप कानून बनाया जा रहा है। इसी प्रकार शहरी सम्पत्ति की सीमा निर्धारित करने की दिशा मे भी प्रयास जारी है। यद्यपि वर्तमान मे विद्यमान शहरी सम्पत्ति की सीमा निर्धारण मे अनेक कठि-

नाइया हो सकती है, परन्तु शहरी सम्पत्ति एव भवन निर्माण की भावी नीति को सुनिश्चित किया जा सकता है। इस हेतु शहरी भूमि का समाजीकरण, भूमि की सट्टेबाजी को रोकना आवश्यक है। कार्यक्रम मे खाली नगर के आस पास की भूमि के समाजीकरण एव शहरी सम्पत्ति के मूल्याकन एव इसमे लगे काले धन को ज्ञात करने के लिये विशेष दस्तों के गठन का भी लक्ष्य है। इस हेतु आयकर विभाग ने 'Operation Flat' कार्यक्रम के अन्तगत दिल्ली, बम्बई, मद्रास व कलकत्ता मे कुछ आलीशान भवनों एव फ्लैटो का मूल्याकन किया है। एक अन्य आर्थिक अपराध आयात लाइसेंसो का दुरुपयोग है। इससे वास्तविक उत्पादन कर्ता को न केवल वित्तीय हानि ही होती है वरन् अनेक कठिनाइयाँ भी उठानी पडती हैं। इनके दुरुपयोग के लिये कडे दण्ड की व्यवस्था अति आवश्यक है। इस प्रकार कडे उपायो एव दण्ड व्यवस्था की सहायता आर्थिक क्षेत्र मे पर्याप्त ईमानदारी एव अनुशासित लाया जा सकेगा।

VIII सरकारी व्यय में कमी के उपाय अनेक राज्य सरकारो आर्थिक कायक्रम को लागू करने मे सरकारी व्यय मे कमी के उपायो को भी शामिल किया है। यह एक स्वागत योग्य कदम है। जिस प्रकार फिजूलखर्ची व्यक्ति के लिये बुरी है, उसी प्रकार एक सरकार के लिये भी बुरी है। विकास की उच्चतर गति प्राप्ति के मार्ग मे वित्तीय साधनो का अभाव एक बडी बाधा है। इसे सरकार अनुत्पादक व्यय मे कमी करके दूर कर सकती है। परन्तु इस दिशा मे सरकार को यह सावधानी विशेषतौर से बरतनी चाहिये कि इन कटौतियो से विकास कार्यक्रमो पर अमल न रुके।

निष्कर्ष एव कुछ सुझाव इसमे सदेह नहीं होना चाहिये कि आर्थिक कार्यक्रम हमारी भारतीय अथव्यवस्था के अनेक दोषो को दूर करने मे समर्थ होगा। इसके समयबद्ध क्रियान्वयन से न केवल कीमतो मे स्थिरता ही प्राप्त होगी वरन् समाज के विभिन्न वर्गों में व्याप्त असमानता को कम करने, गरीबी एव सामाजिक न्याय उपलब्ध कराने में भी मदद मिलेगी। कृषि एव औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हो सकेगी एव अथव्यवस्था को तस्करी, कर-चोरी, कालेधन इत्यादि जैसे आर्थिक अपराधो से मुक्ति मिल सकेगी। परन्तु इस दिशा मे सबसे बडा प्रश्न चिह्न इसके क्रियान्वयन का है। यह एक बडी चुनौती है, जिसे प्रधानमन्त्री ने स्वीकार किया है। इस पर अमल के लिये प्रशासन मे चुस्ती ईमानदारी एव कायक्रम के प्रति निष्ठा अपेक्षित है। इसकी सफलता के लिये व्यक्तिगत, दलगत हितों एव क्षेत्रिय सकीर्णता का परित्याग करना होगा। इन सबसे भी अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह हो सकती है कि इस कार्यक्रम पर अमल से आर्थिक स्थिति मे जो स्थायित्व आये, उसका उपयोग दीघकालीन नियोजन मे किया जाये। देश मे तृतीय पचवर्षीय योजना पश्चात् आर्थिक नियोजन का भविष्य जो अधरझूल मे लटका है, अब उसे एक सुनिश्चित दिशा प्रदान की जा सकेगी। जैसा प्रधानमन्त्री ने कहा कि यह कायक्रम स्वय मे कुछ प्रदान नही कर सकता है। वास्तविक आर्थिक कमजोरियो यथा गरीबी, बेरोजगारी, इत्यादि को कडी महनत, लगन एव उत्पादन वृद्धि द्वारा ही मिटाया जा सकता है। इस प्रकार कार्यक्रम पर अमल से अथव्यवस्था मे जो अनुशासन उत्पन्न हो रहा है, उसका उपयोग दीघकालीन नियोजन के लिये किया जाना चाहिये।



अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष

श्रीमती आशा जैन, एम० ए०
स० अध्यापिका

1975 का वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के नाम से मनाया जा रहा है। इसका निर्णय समय की एक मांग है। नारी के सार्वजनिक एव आर्थिक क्षेत्र के स्तर पर देर से ध्यान दिया गया और यह आज के दिन की एक महत्त्वपूर्ण समस्या है।

नारी की सामाजिक समानता का प्रश्न, हालाकि एक साथ ही नही उठा, यह सदियों से लडाई का विषय रहा है। नारी, जो वचपन से एक वच्चे को पालती है, महत्त्व को अनदेखा करना उसकी वेइज्जती करना है। नारी पर कविताएं लिखी जाती है, उन्हे फूल भेंट किए जाते है, लेकिन यह पता लगाने के लिए कि समाज कितना उन्नत है, हमें नारियों के सामाजिक स्तर को देखना होगा।

वैज्ञानिक युग मे उन्नत समाज उस समाज को माना गया है, जहा स्त्री को राजनैतिक एव सामाजिक समानता पूर्ण रूप से प्राप्त हो। लेनिन का कहना है कि हम नया समाज तव तक नही वना सकते जब तक कि हम नारियो को सामाजिक कार्यो मे साथ नही लेगे।

आज यह माना जाता है कि नारी ने मानव जाति के विकास मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है लेकिन समाज नारी के इस योगदान के वदले उसे क्या देता है, हम आज भी देखते है कि स्त्री को एक ही काम के लिए पुरुषों से कम वेतन मिलता है, उन्हे हेय दृष्टि से देखा जाता है और अन्य कई असमानताएं भी हैं। स्त्री का सामाजिक स्तर आज वैज्ञानिक एवं तकनीकि उन्नति से अधिक जुड़ता जा रहा है। हम देखते हैं कि सोवियत रूस ने इस क्षेत्र मे काफी प्रगति कर ली है।

रूस की समाजवादी क्रान्ति से पहले यह इलाका काफी पिछड़ा हुआ था, दलित व उत्पीड़ित था। उसमें सबसे बुरी हालत नारियों की थी। उन्हे इन्सान का कोई भी हल प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त नही था। नई दुनिया की नारी का चरित्र साहित्य मे सबसे पहले प्रस्तुत किया—सोवियत नाटककार जफार जवारली ने, और यही नाटक वहां की नारी की मुक्ति, इन्सान का हक पाने के लिए सघर्ष का प्रतीक वन गई।

महिला वर्ष नारी मुक्ति वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। सदियों से नारी ने गुलामी और पिछडापन झेला है जो कई मुल्कों मे काफी वर्षों की आजादी के वाद भी दूर नही हो पाया है। हाल ही मे हम इसका उदाहरण ईरान को देखते है, जहा कुछ ही दिनो पूर्व नारियों को मताधिकार व सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व वे इन सवसे वचित थी। हमारे देश मे भी नारियो की हालत ठीक है। हालाँकि हमारे देश मे भी सदियों से नारीमुक्ति व उन्हें पुरुषों की समानता दिलाने का प्रयत्न किया गया है। इसका उदाहरण हम राजा राममोहन राय से अव तक पा सकते है। जिन्होने सती प्रथा, वाल-विवाह दहेज प्रथा आदि के विरुद्ध आवाज उठाई व कई कानून भी पास करवाए। हमारे सविधान मे भी उन्हें समानता का अधिकार दिया गया है। हालांकि नारियो को नौकरियो मे पुरुषों के समान अधिकार मिलने लगा है, देखने मे इससे यह लगता है नारी जाति

स्वतत्र हो गई है, परन्तु यह पूर्ण सत्य नही है। अभी भी वह परपराओ, रूढियो मे घिरी है। हमारे देश मे ही आज भी देखते हैं स्त्री कही भी स्वतत्र नही है। वह अपनी पसन्द से न विवाह कर सकती है न अन्य काय। आज भी स्त्री पर कई अत्याचार किये जाते हैं। दहेज न मिलने पर उसका वध तक कर दिया जाता है और तरह-तरह की यातनाए दी जाती हैं। गावो मे तो और भी बुरी हालत है। जबकि हमारा सविधान नारी जीवन की समानता का पूर्ण समर्थन करता है।

कई अज्ञानी लोगो ने कहा है कि स्त्री स्वतत्रता के योग्य नही है। उनसे यह प्रश्न पूछने योग्य है कि क्या वह स्त्री जो तलाक प्राप्त करके भी अपने बच्चो का पालन पोषण करती है, विधवा हो जाने पर भी गृहस्थी की गाडी चलाती है तथा आर्थिक परेशानिया म भी पुरुष के कधे से कन्धा मिलाकर सहयोग देती है, उनकी स्वतत्रता व समानता का प्रश्न कहा चला जाता है? हम देखते हैं कि कन्यादान को महत्त्व दिया जाता है, विशेषकर गावा मे। इसमे नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है, परन्तु नारी के महत्त्व को बहुत कम लोग देख पाए हैं, जान पाए हैं। प्रश्न यह है कि भारत, जो एक धर्म परायण देश है जहा विभिन्न जातियो व धर्मो के लोग हैं किन्तु शिक्षित महिलाए नगण्य सी हैं, क्या वे स्वतत्रता व समानता के लिए लड सकती हैं?

जो कामकाजी महिलाए हैं, उन्हे नौकरी के साथ ही घर का समस्त काम भी करना पडता है, पति की उसे बहुत कम सहायता मिलती है ऐसी स्थिति मे ऐसी कोई सामाजिक सस्था नही है जो उसकी मदद कर सके। रूस मे इस तरह की सुविधाए प्राप्त हैं। इस तरह कुठाओ से मुक्ति की भावना हमारे देश मे नारियो के लिये अन्य देशो की अपेक्षा धीमी है। हमारे देश की इतने वर्षों के बाद की स्वतत्रता के बाद भी यह दूर नही हो पाई। जबकि हम इसकी गति अन्य पश्चिमी देशो मे तीव्र देखते हैं।

ससार के करीब-करीब सभी देशो मे नारी की पराधीनता समाप्त हो चुकी है। सारे विश्व मे स्त्रियाँ पुरुषो की प्रधानता के विरुद्ध आवाज उठा रही हैं स्त्रियो ने पुरुषो का हर क्षेत्र मे योगदान किया है फिर भी वह इतनी हेय दृष्टि से क्यो देखी जाती है?

सयुक्त राष्ट्र सघ द्वारा आयोजित महिला वर्ष मनाए जाने का प्रमुख ध्येय है कि स्त्रियो को उनके अधिकारों के प्रति उनके साथ होने वाले अपमान-जनक व्यवहार के विरुद्ध उन्हे आवाज उठाने का अवसर मिले। ऐसा लगता है कि नारी स्वतत्रता का यह आन्दोलन स्त्री पर मे पुरुषो का अधिकार हटाने के बजाय स्त्री के साथ मानवीय एव मित्रता पूर्ण व्यवहार की माग तक ही सीमित रह जाएगा। पुरुष समाज के हजारो वर्षों मे प्रधान होने के कारण यह बात उसके रक्त मे समा गई है कि स्त्री गौण है। उधर स्त्री मे इतनी गुलामी भर गई है कि उसे पुरुष के व्यवहार मे कोई बुराई प्रतीत नहीं होती।

साम्यवादी देशो मे जहाँ वर्षों मे चली आ रही स्त्री-पुरुषो की वृत्ति को बदलने का प्रयोग चल रहा है, वहा हम देखते हैं कि स्त्रिया खेती करती हैं टैक्सी चलाती हैं। उन्हें सरकार की तरफ से भी समान अधिकार प्राप्त हैं। वहा स्त्रियाँ महत्त्वपूर्ण मामलो मे पुरुषो के समान अनेक कार्यों म सक्रिय भाग लेती हैं।

अतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष का प्रमुख उद्देश्य यह है कि स्त्री को राजनतिक व सामाजिक समानता मिले। वह काम में, शिक्षा में तथा सदियो से मिली असमानता के विरुद्ध आवाज उठा सके।

□

नारी जीवन : एक वरदान

—सुश्री राजलक्ष्मी प्रधान
सहायक अध्यापिका

नारी पुरुष की जननी है। यदि नारी न हो तो सृष्टि का निर्माण ही रुक जाये, फिर नारी को तुच्छ क्यो समझा जाता है ? पुरुष जाति उसे केवल मनोरंजन का साधन, दासी और मात्र भोग-विलास का साधन क्यों समझते है ? किसी कवि ने नारी की करुण दशा का चित्रण ऐसे किया है:—

अविश्वास ही, अविश्वास ही नारी के प्रति नर का,
नर के तो सौ दोष क्षमा है, स्वामी है वह घर का।
उपजा हर अविश्वास नर हाय तुझी से नारी,
जाया होकर जननी भी है, तू है पाप पिटारी ॥

ऐसी दयनीय दशा थी नारी की, उस अबोध बाला की जो सासारिकता से अनभिज्ञ थी, जो जीने की इच्छा रखती थी परन्तु उसे जीने नही दिया जाता था। उसे जबरन पति के साथ जलने को विवश कर दिया जाता था और यदि वह जलना नही चाहती तो उसे 'कलंकिनी' कहा जाता था। पुरुष जाति नारी को इतनी हेय दृष्टि से देखती है जिसके कारण वह सबला होती हुई भी अबला समझी जाती रही है।

नारी विधाता की अनुपम सृष्टि है, जो शिशु सी सुकुमार, सूर्य के समान प्रकाशवान, सागर सी गम्भीर व अनन्त आकाश सी विशाल है, जिसमे पवन की सी चंचलता, पृथ्वी की सी सहिष्णुता तथा निशानाथ की सी शालीनता विद्यमान है। इन्हीं समस्त गुणो के कारण वह अनादि काल से समय-समय पर समाज मे उच्चासन पर प्रतिष्ठित होती आ रही है। वह माँ, बहिन, पुत्री व पत्नी के रूप मे मानव जाति का कल्याण करती आ रही है। अतः यदि समाज नारी की पूजा करता है, उसे सम्मान देता है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति की बात नही है। नारी ही मानव जीवन के लिये हर रूप में, हर क्षेत्र में, वरदान है। सच बात तो यह है कि सारी मानवता का निर्माण करने का श्रेय नारी जाति को ही है। उसके अभाव में समस्त मानव वर्ग का जीवन मरुभूमि के सदृश शुष्क और नीरस है। जयशंकर प्रसाद ने नारी के स्वरूप का अति मनोहर दृश्य प्रस्तुत किया है—

नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत सी पगतल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल मे।

नारी की सहनशीलता का गुणगान करते हुए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी ने समाज में उसका सही चित्रण प्रस्तुत किया है : —

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आंखों मे पानी ॥

नारी गुणों की खान होती है। उसमे एक से एक बढ़कर गुण पाये जाते हैं। इन गुणों के कारण ही वह सीता जैसी पवित्र, गार्गी व मैत्रेयी जैसी विदुषी, रानी लक्ष्मीबाई व पद्मिनी जैसी वीर और पन्नाधाय जैसी स्वामिभक्त व त्यागी मानी जाती है। परन्तु आज पुरुषो की दृष्टि मे गुणो के खान के स्थान पर अवगुणो की खान, छली, कपटी, पाखण्डी आदि की कल्पना से तिरस्कृत होती है।

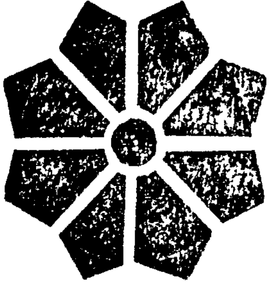
मानव के स्वार्थमय व वासनामय जीवन का क्या करना ? उसने तो सदैव महिमामयी की मुक्ति के माहात्म्य को समझने में भूल की है। यहाँ तक कि तुलसीदास जैसे महात्मा ने भी इसे कोसा है। उन्होंने तो यहाँ तक कहा है "ढोर गवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।" इसी प्रकार समय-समय पर नारी के गुणों को समझने में भूल हुई है। उसे अविश्वास और हीन दृष्टि से देखा जाता रहा है। किसी कवि ने नारी के स्वरूप का चित्रण किया है —

नारी प्रकृति की कन्या है, उसे बुरी दृष्टि से मत देखो।
उसका हृदय कोमल है, इस पर विश्वास रखो॥

यह सत्य है कि काफी लम्बे समय से नारी को अबला समझा जाने लगा है। नारी को पुरुष अपना एकाधिकार मान, संरक्षण देता रहा है। यह स्थिति न केवल भारतवर्ष में है, वरन् पूरे विश्व में यही स्थिति बनी हुई है। योरोप में हुआ नारियों के प्रति अत्याचार, किसी से छिपा नहीं है। इसी प्रकार अमेरिका में भी ऊंचे पदों पर आसीन महिलाओं की नियुक्ति पुरुष सहन न कर सके। रूस, ब्रिटेन, युगाण्डा, सगार के अधिकांशत देशों में नारियों को बहुत अच्छी दृष्टि से नहीं देखा गया। इन्हीं तथ्यों की आवाजों ने एकजुट होकर सर्वप्रथम अमेरिका में नारी मुक्ति आन्दोलन का श्रीगणेश किया। लेकिन श्री गणेश कर देना मात्र नारी मुक्ति नहीं है।

पूर्व गहराई से दृष्टि पसार कर देखो तो अवश्य ही प्रतीत होगा कि नारी को ही मानव जीवन के परमाणु का श्रेय है। मैं तो यहां तक कहूँगी कि जब तक नारी के अधिकारों की रक्षा और उसकी शिक्षा की ओर ध्यान न दिया जायेगा तब तक समाज में नारी प्रगति की दिशा व्यर्थ होगी। अत नारी की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। समुन्नत रहा है जिस देश में नारियों तथा उसकी पूजा होती रही है। नारी की पराक्रमता, उनके अधिकारों की रक्षा पर ही राष्ट्र, अन्ततोगत्वा सारे विश्व का कल्याण है। अत कहा भी गया है—'यत्र नार्यस्तु रमन्ते तत्र देवता।' नारी से इसीलिये प्रेम न क्योंकि विधाता ने उसे सुन्दर बनाया है वरन् इसलिये प्रेम करो क्योंकि प्रेम करने के उसकी सृष्टि की गई है।

अत मे मैं यही कहना चाहूँगी कि नारी जिस क्षेत्र मे प्रवेश कर जाये उसे नारी सुलभ का परित्याग नहीं करना चाहिये। उसे कर्त्तव्य, अपनी भूमिका, अपनी सीमा को दृष्टि रखते हुये कार्य करने में तथा किसी का आधि स्वीकार किये विना पुरुष एव नारी दोनों को परस्पर प्रेम व सहयोग से अपना जीवन, राष्ट्र को समुन्नत करने मे लगा देना चाहिये महादेवी वर्मा ने समस्त नारी जाति को चुनौती दी है। उनके शब्दों में, 'आज नारी ने जो पाया है, वह मूल्यवान अवश्य है लेकिन जो खोया है, वह बहुमूल्य है।' एक नारी ने समस्त नारी जाति को कितनी बडी चुनौती दी है। अत इस ओर ध्यान रखते हुए नारी जाति को भी एकजुट होकर नव-निर्माण के लिये एक ठोस कदम उठाना होगा। उसे स्वय अपना मूल्य समझना होगा। जिस प्रकार तारे आकाश के गीत हैं, उसी प्रकार नारी धरती का सगीत है। नारी के मूल्यों को समझना होगा। उसका आदर सही दृष्टि से करना होगा तभी वह मानव कल्याण हेतु वरदान सिद्ध हो सकती है।



परम्परा बनाम आधुनिकता

• डॉ० ज्वालादत्त शर्मा एम.ए.बी.एड.,पी-एच.डी.
व्याख्याता, हिन्दी विभाग

गत दो दशकों में 'परम्परा' और 'आधुनिकता' के प्रश्न ने अधिकांश बुद्धिजीवियों को झकझोरा है। बदलती परिस्थितियों और जीवन की बढ़ती हुई जटिलताओं ने उसे परम्पराओं और आधुनिकता की सीमाओ के बीच अपना जीवन-क्रम निर्धारित करने को विवश कर दिया है। ऐसी स्थिति मे प्रगतिशील मानव के समक्ष अपने व्यक्तित्व की गरिमा बनाये रखने का अहम् प्रश्न आया। परिणामस्वरूप एक ओर उसकी आसक्ति परम्पराओं के प्रति प्रकट हुई तो दूसरी ओर आधुनिकताबोध ने उसे सहज भाव से आकृष्ट किया। परम्परा पालन और आधुनिकताबोध के बीच सतुलन बनाये रखने के प्रयास मे वह अनेक स्तरो पर टूट गया। टूटन और बिखराव के इस निरन्तर क्रम ने उसे अकेलेपन का अहसास कराया और निरन्तर शून्यता की स्थिति ने उसे आक्रोश, असंतोष, कुंठाओ और दमित वासनाओं का शिकार बना दिया। उसने अनुभव किया कि उसकी निजी एकान्त वैयक्तिकता और सामाजिक परम्पराओं के बीच भारी अन्तर्विरोध एवं अन्तराल है जिसे बटोर पाने मे वह पूर्णतया असफल रहा है।

'परम्परा' और 'आधुनिकता' के अन्तः-संघर्षों को समझने के लिए दोनों के मूल स्वरूप को समझना परमावश्यक है। मोटे रूप मे परम्परा हमारे अतीत की ऐसी विचारधारा है जो नैतिक मूल्यों, सामाजिक मान्यताओं एवं धार्मिक नीति-निर्देशक तत्वों की वकालत करते हुए मनुष्य को तज्जनित प्रतिपादित मूल्यों से बाँधती है। यह मनुष्य को एक ओर निश्चित जीवन-क्रम में ढालती हुई परम्परा-प्रिय बनाती है तो दूसरी ओर उसमे अपने देश की सभ्यता सस्कृति से प्रेम करने का सस्कार विकसित करती है। जबकि 'आधुनिकता' जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण है। यह एक ओर हमारी सभ्यता की व्याख्या करती है और दूसरी ओर हमारे परम्परावादी जीवन का पुनर्मूल्यांकन प्रस्तुत करती है। आधुनिकता के कोई निश्चित मूल्य नही होते, यह तो समय-सापेक्ष्य धर्म होता है जिसके मूल्य समय बदलने के साथ-साथ बदलते रहते है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को अन्ध विश्वासो से बाहर निकाल कर नैतिकता मे उदारता बरतने और अपेक्षाकृत अधिक बुद्धिजीवी बनने की प्रेरणा देती है। आधुनिकता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध वर्तमान जीवन-बोध से है। यह एक ऐसी विचारधारा है जो मनुष्य को किसी भी जीवन पद्धति से बाँधती नही अपितु उसको रूढिगत बन्धनो से मुक्त करके विवेक के आधार पर अपना जीवन-क्रम चुनने और तदनुरूप मान्यताओ को निर्धारित करने की प्रेरणा देती है।

आधुनिकता किसी भी स्तर के सामाजिक वर्ग-भेदो, अन्ध विश्वासों, धार्मिक कर्म-कांडों, विगलित

रूढियो, पुनर्जन्म एव स्वर्ग-नरक सम्बन्धी मान्यताओ मे विश्वास नही करती, यह भाग्यवाद के स्थान पर कर्मवाद पर बल देती हुई, मनुष्य को अधिक यथार्थवादी बनाती हुई, जीवन सघर्षों मे सम्पूर्ण क्षमताओ के साथ जूझने की प्रेरणा देती है।

सच्चे अर्थों मे 'आधुनिक' बनना इतना सरल कार्य नही जितना लोगो ने इसे मान लिया है, क्योकि यह तो निरन्तर प्रयास की साधना है। आज पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव और महानगरीय बोध ने भारतीय संस्कृति मे पले लोगो के समक्ष अनेक जटिल समस्याओ को ला खडा किया है। भौतिकवाद के निरन्तर बढते प्रभाव और तज्जन्य समस्याओ के समाधान मे वह कुछ ऐसा खो गया है कि न तो वह 'आधुनिकता' को वैचारिक धरातल पर ही सही अर्थों मे ग्रहण कर पाया है और न ही उसके अनुरूप जीवन के क्रम को ढाल पाया है। सुविधा और संतोष के लिये आज सामान्य मानव ने 'आधुनिकता' को फैशन के रूप मे अगीकार कर लिया है। आज लोग जिसे भूल से आधुनिकता समझ बैठे हैं, वह वास्तव मे आधुनिकता नही आधुनिक-फैशन मात्र है। नित नये व बदलते फैशन के अनुरूप अपने परिधान और वाह्य साज सज्जा मे परिवर्तन लाना—ऊँची एडी के जूते, बैल बॉटम, लम्बी कालर की शर्ट, गले मे टाई और छाया मे भी आँखो पर धूप का चश्मा धारण किये रखना, नये-नये क्लबो और सोसाइटियो की सदस्यता ग्रहण करके विभिन्न आयोजनो मे शरीक होकर अत्यधिक व्यस्त दिखाई देने का अभिनय करना, अपनी मा, पत्नी और पुत्री को साथ लेकर यौन-भावनाओ को उत्तेजित करने वाली फिल्मे देखना या 'बीयर' 'काकटेल' और डासिंग पार्टियो मे आधी रात गये तक उन्मुक्त विहार करना, लोगो को अपनी भौतिक समृद्धि से चौंधिया देने के लिये छोटे-छोटे अवसरो पर भी प्रतिस्पर्धा मे आकर एक से एक बढ कर 'एटहोम' का आयोजन करना, घर को 'रेफ्रीजिरेटर', 'टेलीविजन सेट', 'टेपरिकार्डर', 'रेडियोग्राम', 'सोफासेट' कीमती कालीन और फर्नीचरो से सुसज्जित रखना, ड्राइग-रूम को भित्ति चित्रो, माडर्न आर्ट एव कलात्मक वस्तुओ का सग्रहालय बनाये रखना, लॉन को हरी भरी घास, फव्वारो, झूले, स्वीमिंग पुल, गार्डन चेयर्स एव तरह-तरह के देशी विदेशी पेड पौधो से सजाये रखना हर साल नये नये मॉडल की कार खरीदना, गर्मी के दिनो मे परिवार सहित ठडे-पहाडो पर चले जाना, बच्चो को पब्लिक स्कूलो मे भर्ती करा देना, दिन भर धूप मे बैठे-बैठे मूगफली खाते हुये 'क्रिकेट', 'टेनिस' या 'बैडमिंटन' की कमेन्ट्री सुनना, शहर के विभिन्न छविगृहो मे चल रहे विभिन्न चलचित्रों के निर्माताओ, निर्देशको, सगीतकारो और पात्रो को मुह जुबानी याद रखना, फिल्म जगत् मे चल रहे स्कैंडलो' के प्रति रुचि दिखाना, सफर मे लेटेस्ट 'मैगजीन' को हाथ मे लिये चलना, उधार माँग कर अखबार पढ़ना, 'बिनाका गीतमाला' मे आने वाले गानें के क्रमो को कठस्थ याद रखना, बेवजह ठहाके लगाना, जीवन को अधिक गम्भीरता से न लेना, बाजार भावो, राजनीतिक पदो और दावपेचो के सम्बन्ध मे कोई न कोई भविष्यवाणी करते रहना, सत्ताधारियो और तथाकथित ऊँचे कहे जाने वाले लोगो के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपना सम्बन्ध जोडे रहना, भविष्य म चुनाव लडने की योजना से लोगों को प्रभावित किये रहना, यह सब कुछ आधुनिकता की श्रेणी मे नही आता। क्योकि आधुनिकता का वास्तविक स्वरूप तो वाह्य जीवन की अपेक्षा उसके यथार्थवादी विचारो, जीवन के प्रति बदलते मूल्यो और उससे प्राप्त अनुभवो में ही देखा जा सकता है।

सन् 1960 के पश्चात् भारतीय जन-जीवन मे आधुनिकता और परम्परा को लेकर यह सघर्ष अनेक स्तरो पर उभरा है, उदाहरण के लिये टूटते

हुए सयुक्त परिवार, रिश्तो की अर्थहीनता, रक्त सम्बन्धो मे अलगाव एव तटस्थता, पति-पत्नी के सम्बन्धो मे सामंजस्य के स्थान पर वैयक्तिकता को लेकर टकराव, नैतिकता और मानसिक शाति के स्थान पर अर्थ, पद और प्रचार को प्राथमिकता, परम्परागत मूल्यो के प्रति अनास्था का स्वर आदि इसके अनेक ज्वलंत प्रमाण है। यही कारण है कि आज अधिकाश परिवारों मे गृह-कलह, वाक्युद्ध, अन्तर्विरोध, मानसिक तनाव का पाया जाना एक आम बात हो गई है। आधुनिकता ने हमे विगलित रूढियो एव अनुपयोगी सामाजिक प्रतिमानो के विरुद्ध आक्रोश-विरोध की मुद्रा मे ला खडा किया है। ऐसी विषम स्थिति मे भी आज के मानव का आधुनिकता से पूर्ण लगाव तभी हो सकता है जबकि हम धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यो का परिष्कार कर नये जीवन मूल्यों एव प्रतिमानो की स्थापना करे। जब कि वास्तविकता यह है कि आज का आदमी न तो नये स्थानापन्न मूल्यो का सृजन ही कर पा रहा है और न परम्परावादी मूल्यों के प्रति नि स्पृह भाव से अपना मोह-भग ही कर पाया है। हाँ, आज समाज मे परिवर्तन की प्रक्रिया का क्रम अवश्य प्रारम्भ हो गया है, जो निश्चय ही एक शुभ सकेत कहा जा सकता है। किन्तु दुर्भाग्यवश वह आधुनिकता के साथ पूरी तरह से जुड़ नही पाया है। ऐसी स्थिति मे आधुनिक कहे जाने वाले लोगो के उखडे हुये चेहरे ही अधिक दिखलाई पड़ते है। उनकी आँखो मे न तो वर्तमान जीवन जीने के प्रति संतोष की कोई झलक ही दिखाई पडती है और न निश्चित भविष्य की कोई दृढ़ता ही। परिणाम स्वरूप आधुनिक मानव भीतर से व्यथित, उदास, अपने ही विचारो मे खोया तथा आस्था और विश्वासो की खंडित मुद्रा मे दिखलाई पड़ रहा है।

परम्परा के साथ जो सवसे बडी असंगति है, वह है गतिशीलता का अभाव। परम्पराओं के साथ रूढ़ियाँ अनिवार्य रूप से जुड़ी होती हैं। आधुनिकता का प्रमुख कार्य यही होता है कि वह परम्पराओं के साथ अनावश्यक रूप से जुड़ी रूढ़ियो को समूल उखाड कर परम्परा की धारा को स्वच्छ करती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि इस दिशा मे आधुनिकता ने मनुष्य के मन मे पड़ी अनेक गाँठो को खोला है। किन्तु इसके साथ सबसे वड़ी विडम्बना यह है कि इसने मनुष्य को दोहरा व्यक्तित्व प्रदान किया है। उदाहरण के लिये घर पर हम प्राय. धार्मिक और परम्परा-प्रिय होते है और घर से वाहर हम प्रगतिशीलता, मानवतावाद, नारी-स्वतन्त्रता, जातीय सम्वन्धो की अर्थहीनता आदि का राग अलापते हैं। मानव के 'भीतर' और 'वाहर' जो एक द्वन्द्व है वह परम्परा और आधुनिकता को लेकर है जिसमे सतुलन कायम करके ही 'जीवन' को सही अर्थों मे जिया जा सकता है। अब यह अलग-अलग मनुष्य की स्वतन्त्र विवेक शक्ति और निर्णय करने की क्षमता पर निर्भर करता है कि वह परम्पराओ के साथ सामजस्य स्थापित करता हुआ आधुनिकता के आलोक मे विकास की धाराओ को कहाँ तक खोज पाता है!

एक पगडण्डी जो सड़क बन गई

—डी० एन० शैली

[राजस्थान राज्य सहकारी विभाग द्वारा आयोजित नाट्य प्रतियोगिता मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त रचना]

पात्र-परिचय—

1 ताऊ (चौधरी रामभरोसे, आयु 50 वर्ष)
2 भागीरथ दादा (चौधरी के बचपन का मित्र, समय के साथ चलने वाला वृद्ध, आयु 52 वर्ष)
3 श्यामू (अच्छे स्वभाव का काश्तकार, आयु 25 वर्ष)
4 मन्सुखा चमार (गाव का चमार और खेत का मजदूर, आयु 30 वर्ष)
5 हरिया (चिडचिडे स्वभाव का काश्तकार, आयु 25 वर्ष)
6 करोडीमल (गाव का साहूकार, आयु 35 वर्ष)
7 कल्लू पहलवान (गाव का गुण्डा, आयु 30 वर्ष)
8 विनोद पण्डित (अच्छे विचारों वाला सामाजिक कार्यकर्ता, आयु 30 वर्ष)
9 रधिया (चौधरी रामभरोसे की पुत्री, आयु 20 वर्ष)

पुरुष पात्र 8 स्त्री पात्र 1

स्थान—चौधरी रामभरोसे की झोपडी के बाहर का दृश्य।

समय—गर्मी की एक शाम।

(पर्दा खुलते समय मच पर एक खाट, दो-एक मुडिढया, दो एक स्टूलें रखी हैं। चौधरी रामभरोसे और भागीरथ दादा एक खाट पर बैठे हैं और हुक्का पी रहे हैं। श्यामू एक मुढिया पर बैठा अखबार पढ रहा है। मन्सुखा एक कोने मे बैठा ऊन के धागे मे बल दे रहा है। मच पर धीरे-धीरे प्रकाश आता है। कुछ देर बिलकुल खामोशी रहती है और फिर मन्सुखा खामोशी तोडता है।)

मन्सुखा—(ऊन की तकली कातते हुए) ताऊ! (और फिर तकली कातने लगता है।)

ताऊ—हू!

मन्सुखा—(जोर से) ताऊ

ताऊ—अरे ताऊ, ताऊ की रट लगाये रखेगा या कुछ बोलेगा भी?

मन्सुखा—ताऊ, नाराज नही होओ तो एक बात कहू?

ताऊ—(जरा जोर से) अरे तो क्या मैं हर वक्त ही गरम रहता हू, क्या?

मन्सुखा—देखो ताऊ फिर नाराज हो गये!

ताऊ—(हँसने की कोशिश करते हुये) अच्छा, बोल क्या बात है?

मन्सुखा—ताऊ, यह विनोद पण्डित है ना, कैलाशो पडित का लडका?

ताऊ—हाँ ! है तो।

मन्सुखा—बारह महीने में इसने भाग्य की काया पलट दी। कमाल कर दिया है, ताऊ।

ताऊ—(लापरवाही से हुक्का पीते हुए) इसमें कमाल की क्या बात है रे ? जो काम होने को होते हैं, वे तो होते ही हैं। हाँ, यह बात है कि देर-सवेर हो ही जाती है।

मन्सुखा—कमाल कैसे नहीं ताऊ ? अब तुम ही देखो हम लोग फसल होने तक मेहनत मजदूरी करके कुछ खाना-पानी कमाते थे और फिर फसल के चार महीने बाद, [illegible] की छुट्टी हो जाती थी। अब तुम जानो भाई, हम कमीन लोग जाति के [illegible] क्या ? और कुछ काम तो हमारे [illegible] नहीं।

श्यामू—(अखबार एक तरफ रखते हुए) मन्सुखा भाई, मैं तुम्हें कितनी बार समझा चुका हूँ कि अब हम गुलाम नहीं हैं, आजाद हैं। अब जाति-पाँति और छुआछूत को कोई नहीं मानता।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ताऊ—हमारे खानदान पर, भला क्यो होने लगी इसकी जिम्मेदारी ?

मसुखा—तुम पर नहीं तो क्या हम चमारो पर होगी, ताऊ ? ना छोट चौधरी विनोद पडित की बहन से कुछ कहते, ना वह कुए मे कूदकर मरती, ना विनोद पडित को मालूम पडता और ना ही उनकी गर्दन कुल्हाडे से खच्च होती ।

ताऊ—चुप रह, चमार के बच्चे ! अब तू भी बोलने लगा, क्यो ?

भागीरथ—रामभरोसे नाराज क्या होते हो ? सच्चाई कडवी जरूर होती है । अब तुम ही सोचो कि किसी के खानदान मे सिफ दो ही आदमी हो और उनमे से एक कुए मे कूदकर मर जाये तो क्या दूसरा इस अन्याय को सह सकता है ?

ताऊ—लेकिन भागीरथ भाई, हम गावो के चौधरी हैं हमारा ऊचा खानदान है उसमे ऐसा होता ही आया है

श्यामू—(बात काटकर) कि गाव की मा को मा बहन को बहन और बेटी को बेटी न समझे, क्यो ?

भागीरथ—जमाना बहुत बदल गया है, रामभरोसे! अब हम बूढे लोगो को अपनी अकड कुछ कम कर देनी चाहिए वरना एक दिन नई हवा के तेज झोंके से हम सूखे पेड की तरह टूट जायेंगे ।

ताऊ—(लकडी लेकर खडा हो जाता है) अरे मर गये भागीरथ मुझे तोडने वाले । कोई माई का लाल सामने आये तो जरा ।

भागीरथ—(कधे पर हाथ रखकर) गुस्सा करने और लकडी उठाने मे काम नही चलेगा, रामभरोसे ! भया, बात समझने से काम चलेगा । आओ शाति से बैठो और मेरी बात सुनो ।

ताऊ—क्या सुनू भागीरथ भाई, मैं तो बहुत दुखी हो गया हू इस छोकरे विनोद से । कभी कहता है ताऊ, सब मिलकर काश्तकारी करो । इकट्ठा अनाज बेचने से आमदनी अच्छी होगी और कभी नीच जाति मे जाकर कहता है कि खाली वक्त मे बैठ-बैठे चरखा कातो, पापड बेलो, मगोडी तोडो और पायदान बुनो

श्यामू—लेकिन ताऊ, यह तो नही कहता कि चोरी करो, डाका दो और गाव की मा-बहनो की इज्जत लूटो

ताऊ—(बात काटकर) चुप रह ब फितूरी, बडा आया है नेता कही का ।

भागीरथ—धीरज रखो रामभरोसे, धीरज । बात को ध्यान से सुनो और सोचो ।

ताऊ—क्या सुनू और क्या सोचू ? सबसे ज्यादा जमीन मरी, बैलो की जोडिया मेरी, नौकर मेरे और कहता है, मिलकर खेती करो । मेरा दिमाग खराब हो गया है, क्या ?

श्यामू—मगर ताऊ, क्या तुमने उससे पूछा कि उसम तुम्हारा फायदे का हिस्सा क्या होगा ?

ताऊ—अरे, मैं पागल हू क्या ? जो ऐसी ऐरी-गैरी बातो मे दिमाग लडाता फिरू ? अब तुम ही देखो, भागीरथ ! (भागीरथ की तरफ मुडकर) मेरे नौकर-चाकर मेरे घर मे रहते थे साल भर तक और अब फसल कटी कि सब अपनी अपनी झोपडियो में जाकर कोई ऊन कात रहा है, कोई चटाइया बना रहा है तो कोई खिलौने बना रहा है ।

भागीरथ—लेकिन इसमे बुराई क्या है ? बैठे बैठे तमाखू पीने से तो काम करना अच्छा है ना ?

ताऊ—क्या खाक अच्छा है ? आखिर इतना सब खरीदेगा कौन ?

मन्सुखा—सारे गाव का बनाया हुआ सामान विक गया है, ताऊ ! सब की अन्टी मे नकद नारायण आ गये है । जरा बाहर निकल कर तो देखो, सबकी महरियाए नये-नये लहगे और लूगडी पहने घूम रही है ।

ताऊ—यह सब बहारे चार दिन की है । मैं बता दूगा, इन पापड, मंगोडी, चटाई और पायदानो को खलियान मे सडते हुये ।

श्यामू—जहा तक इन सब चीजो का सवाल है ताऊ, यह कभी नहीं सडेगी क्योंकि शहर की औरतों को इतना समय ही नही कि वो ये सब काम कर सके ।

ताऊ—अरे, शहर की औरते कौन-सी कलक्ट्री करने जाती है जो उन्हे समय नही मिलता ?

श्यामू—गाव से जरा बाहर निकल कर देखो, ताऊ कि जमाना कितना आगे निकल गया है । शहर मे औरते मर्दो के कधे से कधा लगाकर काम करती है ।

मन्सुखा—और सुनते है, ताऊ कि इसीलिए वो लोग भूखो नही मरते । अच्छा खाते है और अच्छा पहनते है और....

भागीरथ—(बात काटकर) बुढ़ापे मे भी खुश होते है, अच्छी चीजों को देखकर उनकी तारीफ करते है । गाव तो दूर रहा तुम जरा अपनी झोंपड़ी से बाहर निकल कर देखो रामभरोसे! सारा गाव इन्द्र धनुप हो रहा है ।

ताऊ—तुम्हारा दिमाग इस बुढापे मे सटिया गया है, भागीरथ इस उम्र मे ऐसी बाते करते हुए तुम्हें शर्म नही आती ? अरे, क्या तुम्हे सभी जाति-पाति के लोग एक साथ खेलते-खाते अच्छे लगते है ?

भागीरथ—भई, मुझे तो अच्छे लगते है ।

मन्सुखा—ताऊ, मुझे भी अच्छे लगते है । (लोक गीत गाने लगता है ... .अबकी बुलायले म्हारी माई बटेउ आयो लेवा नै)

ताऊ - अबे चुप कँवारे हत्यारे ! बडा आया है लूगडियो की तारीफ करने वाला ।

मन्सुखा—अरे ताऊ, ब्याह नही रचाया तो क्या, बरातो मे तो गया हूं और खूबसूरती की तारीफ करने का तो सबको हक है । हमारे मुहल्ले की चमारिनों को देखो ताऊ. रंग-बिरगे कपडे पहनकर छम.... छम.... छम .. छम....

(हरिया का मच पर प्रवेश)

हरिया—हाँ, ताऊ ! छम ... छम.... छम ... और विनोद पडित की शहर से लाई हुई साड़ी । राम कसम ताऊ, पिछले जनम मे बड़े पुण्य किये थे विनोद पडित ने, जिसे रधिया जैसा साथी मिला ।

मन्सुखा—(गुस्से में) देख हरिया ! हजार बार कह दिया है कि रधिया चमारन का नाम लिया तो खून-खच्चर हो जायेगे, हा ।

हरिया—अरे, तू लाल-ताता काहे को हो रहा है, मन्सुखा । मै तो रधिया, चौधरी की बेटी की बात कर रहा हूं ।....

ताऊ—(गुस्से से) बन्द कर अपना ये भाड़ सा मुंह वरना कैंची की तरह चलती हुई इस जुबान को खीच लूगा ।

हरिया—किस-किस की जुबान खीचोगे, ताऊ ? गाव के बच्चे की जुबान पर विनोद और रधिया का नाम है । हर जगह मर्दों को विनोद बहकाता रहता है और औरतो को चौधरी तेरी लडकी पट्टी पढ़ाती रहती है ।

श्यामू—हरिया, तुझे इन सब बातो से क्या मतलब ?

हरिया—मतलब क्यो नही ? और तुम बोलो इस बात के बीच मे । जब देखो तब समझाता रहता है । मुझे कहता है, हरिया तुम अपनी जिन्दगी बिगाड रहे हो । रात को पढ़ने आया करो ।

श्यामू—यह तो अच्छी बात है।

हरिया—अरे, अच्छी बात होगी तेरे लिए, मेरे लिए नहीं। अब भागीरथ दादा, तुम्ही न्याय करो कि सारे दिन खेत मे काम करते-करते आदमी थक कर रात को घडी दो घडी आराम करना तो चाहता ही है?

भागीरथ—हो, यह तो है ही।

हरिया—लेकिन दादा, विनोद पण्डित दो चार बिजली के कुयें लगवाकर और गाव तक सडक की बात सरकार मे करके अपने आपको गाव का मुखिया ही समझने लगा है।

मसुखा—यह एक तरह से तो गाव का मुखिया ही है।

ताऊ—अबे चुप, मुखिया के बच्चे! बडा आया है, पटेलगिरी छाटन। (मसुखा को मारने बढता है)

मसुखा—(अपने आपको बचाते हुये) ताऊ, गरम काहे को होते हो। अब कसम ले लो जो सच बोलू।

ताऊ—(मसुखा की नकल करते हुये) कसम ले लो जो सच बोलू बडा आया धमराज का बेटा! (हरिया की तरफ देखकर) हा, हरिया! क्या कह रहा था तू? कहा देखा तैंने रधिया को?

हरिया—अरे ताऊ, एक जगह हो तो बताऊ भी! हरिजनो के मुहल्ले मे, कोलियो के मुहल्ले मे, चमारों मे, कसाइयो मे ब्राह्मणों मे। हर जगह औरतो को इकट्ठा किया और नगी पडताइन की तरह क्या कहने।

ताऊ—(चीखकर) खबरदार! नीच! जो कभी चौधरी रामभरोसे की लडकी को पडताइन कहा। सिर के टुकडे-टुकडे कर दूगा, हा।

हरिया—मेरे सिर के टुकडे करने से काम नही चलेगा ताऊ, अब तो सारे गाव के सिर के टुकडे करो या उनकी जीभ खीचो—तभी यह बात खतम होगी।

श्यामू—हरिया, पागल हो गया है क्या? जो गाँव की बेटी के लिए उल्टी-सीधी बातें बक रहा है। मालूम है तुझे, वह हमारी बहन है।

हरिया—बहन होगी तेरी। गँदी, खूनी और बाजीगरनुमा विनोद पडित के साथ रहने वाली और रग बिरगे कपडे पहन कर मोहल्ले घूमने वाली बदरिया मेरी बहन काहे को होने लगी?

ताऊ—(क्रोध मे) अरे, ओ धनिया गूजर के छोरे! बद कर अपना मुह और निकल जा मेरे घर से।

(ताऊ हरिया को मारने के लिए बढता है, श्यामू और भागीरथ दादा उसे रोकने हैं)

श्यामू—हरिया, तुम यहा से चले जाओ।

ताऊ— और खबरदार जो इस घर मे पाव रखा तो टागें तोड दूगा, कम्बख्त की।

हरिया—मैं तो जाता हू ताऊ! मगर टागें तोडनी ही है तो अपनी बेटी की तोडो। मालूम है दोनो बदजात मिल गये हैं और उसका कही पता नही। हम गाव मे रह कर कब तक अधे बने रहेंगे। (श्यामू उसे बाहर निकालने की कोशिश करता है और हरिया हाथ को झटककर कहता है) अरे हा हा, जा रहा हू। कोई चोर उचक्का या खूनी नही हू।

(हरिया चला जाता है। कुछ देर मच पर खामोशी रहती है और फिर ताऊ हाथो से मुह छिपाकर सिसकने लगता है)

भागीरथ—क्यो रामभरोसे कल के नादान छोकरे की दो बातो से इतने दुखी हो गये। अरे, बचपन मे तो तुम बहुत हिम्मत वाले थे।

ताऊ—(सिसकते हुए) भागीरथ, जमाने ने कमर

तोड दी है मेरे भाई। मेरे घर मे जवान लडकी बैठी है और छोटे चौधरी की करतूत से इसे कोई अपने घर मे नही लेता। सब यही कहते है कि जब काका ऐसा था तो भतीजी कैसी होगी ? मैं बडी दुविधा मे हू।

भागीरथ—तू इतना दुःखी क्यो होता है ? रधिया तेरी अकेली की ही नही बल्कि मेरी भी बेटी है, सारे गाव की बेटी है।

श्यामू—(खड़े होते हुए).... और वह मेरी ही बहन नही, ताऊ—वह सारे गाव की बहन है। एक हरिया तो क्या अगर हजार हरिया भी इस गाव मे पैदा हो जाये तो विश्वास करो, ताऊ—तेरी और हम सबकी रधिया पर आच आ गई तो हम अपनी जान लडा देगे।

मन्सुखा—श्यामू भैया, मेरा नाम भी तो ले लो इस बीच मे। रधिया बहन पर मेरा हक नही है, क्या ?

श्यामू—(मन्सुखा के कधे पर हाथ रखकर) क्यो नही, भैया। तेरा भी उतना ही हक है, जितना मेरा। (ताऊ की तरफ मुडकर) ताऊ, तुमसे हम कुछ नही चाहते, बस एक ही चीज चाहते है और वह आशीर्वाद।

ताऊ—अरे, मैने आशीर्वाद देने से कब मना किया है, मेरे बच्चो। मै तो थोड़े दिनो का और हूं, दो-चार दिन बाद मर जाऊगा....

(करोडीमल का घबराते हुये प्रवेश)

करोडीमल लेकिन मै तो मर चुका हू, ताऊ! (ताऊ के पाव पकडकर रोता है) चौधरी, अब मेरे बच्चो का क्या होगा ?

भागीरथ—(शाति से) क्या हुआ करोडीमल ?

करोडीमल—(ताऊ के पाव छोडकर भागीरथ दादा के पाव पकड़ता है) अब करोड़ीमल मत कहो, दादा। अब दो करोडीमल कहो। दादा, मै मर गया—मैं लुट गया। हत्या हो गई, खून हो गया। और श्यामू तो यहां बैठा है और वहा अत्याचार पर अत्याचार हो रहा है। वो कैलाशो पण्डित का छोकरा है ...

सब—कैलाशो पण्डित.... खून हो गया, किसका खून हो गया ? (सब खडे हो जाते है)

करोडीमल—मेरा। मेरे बाप का। मेरे बाप के बाप का। मेरे बेटे के बाप का। मेरे खानदान का, मेरे बच्चो का, मेरी इज्जत का। (रोता है)

ताऊ—अरे, यह सब कैसे हो गया ? कुछ बोलेगा भी या यो ही रोता रहेगा ?

भागीरथ—(ढाढस देते हुए) हा, हां करोडीमल, बोलो क्या बात है ? धीरज रखो, बताओ क्या बात है ?

करोडीमल—ताऊ, दादा, श्यामू भैया।

मन्सुखा—और मन्सुखा।

करोडीमल—(घबराकर) अरे हा और भैया मन्सुखा। यह विनोद पण्डित है ना।

सब—हा, क्या बात है ?

करोडीमल—अभी-अभी खलियान मे एक मीटिंग करके गया है और और.... (फूट-फूट कर रोने लगता है)

भागीरथ—(चुप करते हुए) हा, हा। क्या हुआ उसमे।

करोडीमल—(हिचकियां लेते हुए) उसमे, उसने सब गाव वालो से कहा कि अब वह लोग करोडीमल से रुपया पैसा उधार ना ले। ताऊ, मै लुट गया। दादा, मै लुट गया। श्यामू भैया, तुम यहा बैठे-बैठे क्या कर रहे हो ? अरे, तुम्ही समझाओ उस विनोद पडित को। वरना मैं क्या करूगा, मेरे बच्चे क्या करेंगे....

मन्सुखा—और मैं क्या करूंगा अपने ब्याह पर ? किससे करज लूंगा।

करोडीमल—अरे, आगे तो सुनो। उसने सबसे कहा कि अगर उन्हें पैसा-धेला चाहिए तो वह एक अर्जी रविया को देदें और वह उन्हें कर्ज दिलवा देगा, कम वियाज पर यानि आठ या दस आने सैंकडा और वह भी एक साल का। भला यह भी कोई ब्याज हुआ। ऐसी कौन-सी गड्डी है उसके पास ? (ताऊ के पास आकर) ताऊ जरूर वो कहीं से डाका डाल कर यह रुपया लाया है और इस रुपये को उसने रविया के पास छुपा दिया है।

श्यामू—ना तो उसने कहीं डाका ही डाला है और ना ही उसने कहीं पैसा छुपाया है। यह सरकारी पैसा है, जो सरकार से आयेगा और गाव वालों को कम ब्याज पर दिया जायेगा। जिससे उनकी दशा सुधरेगी। करोडीमल, अब वह दिन दूर नहीं जब हम सब खुशी से नाचेंगे, गायेंगे।

करोडीमल—(हवा में हाथों को नचाते हुए) हा, हा, खूब नाचो, खूब गावो और बनादो गाव को नोटकी का तख्ता, क्या समझे ?

श्यामू—(गुस्से में) खामोश ! करोडीमल। अब हमारे गाव की इज्जत से खेलना एक सपना हो गया है। अब वो दिन हवा हो गये हैं, जब तुम साहूकार लोग मूल धन को सात पीढी तक बनाये रखते थे और किसान ब्याज के बोझ में पैदा होता, जिन्दगी भर तक भूखा रहकर तुम्हारी तिजुरिया भरता और आखिर में सर्दी-गर्मी बरसात और भूख से परेशान होकर, इस कर्ज की धरोहर को अपने बच्चा को सौंप कर चला जाता था और तुम पानी की जोक की तरह फिर उसके बदन पर चिपक जाते थे, उसका नया खून पीने के लिए।

मन्सुखा—लेकिन, भैया, जोक तो ज्यादा पीने से फट जाती है ?

श्यामू—हा मन्सुखा, अब उसके फटने का वक्त आ गया। (वह मन्सुखा को उठाकर अपने पास बठा लेता है) देख मन्सुखा, तने कभी राम-राज्य का नाम सुना है ?

मन्सुखा—हा भैया ! (नीचे जमीन पर बैठते हुए) शेर, गाय और बकरी एक ही घाट पर पानी पीते थे। दूध की नदिया बहती थी, कभी कलह नहीं होता था—ऐसा कहते थे कैलाशो पडित कथा में।

श्यामू—(सबकी ओर देखकर) क्या तुम्हें मालूम है कि वो गाय, बकरी और शेर कौन थे ?

भागीरथ—कौन थे बेटा ?

श्यामू—दादा, गाय, बकरी तो केवल फलस्वरूप मात्र थे और हमारे पूर्वज उनके प्रतीक थे और शेर प्रतीक थे करोडीमलजी के पूर्वज।

करोडीमल—हा, हा। हमारे पूर्वज तो ताकतवर थे ही, इसमें क्या शक है ?

श्यामू हा करोडीमल ताकतवर थे ही, इसमें क्या शक है ?

श्यामू—हा करोडीमल ताकतवर तो थे ही तेरे पूर्वज। मगर जबसे उनके मुह खून लगा वो पटरी से उतर गये और समाज पर एक कलक बन गये। जिससे जयचन्द पैदा हुए और देश गुलाम हो गया। आजाद होने के बाद भी इस कलक को साफ करना मुश्किल हो गया है। (कल्लू पहलवान का डरे हुए और गुस्से में प्रवेश)

कल्लू—(घबराया हुआ) कलक तो साफ हो गया है, ताऊ ! लाओ पैसे निकालो।

ताऊ—(चौंक कर) कल्लू, क्या तूने

कल्लू—हा ताऊ, मैंने अपना काम ठीक तरीके से कर दिया है। अब तुम्हारा काम रह गया है।

निकालो पैसे। (करोड़ीमल की तरफ घूर कर देखता है)

करोड़ीमल—(ताऊ के पीछे छुपते हुए) देख कल्लू भैया, मेरी तरफ यो क्यो घूर रहा है। देख मैंने तो तेरे से पैसे नही मागे, ब्याज नही मागा, मूल नही मागा—फिर क्यो ऐसे घूर-घूर कर देख रहा है, रे। भैया, नजरें उधर फेर ले, मुझे डर लगता है।

कल्लू—(आगे बढ़ते हुए) डर? डर काहे का लगता है, करोडीमल सेठ। मौत से डरता है, क्या?

करोड़ीमल—हां। हा, भैया। (थूक निगलता है)

कल्लू—फिर भूख और बीमारी से तड़प-तड़प कर मरते किसानो की मौत पर तुझे दया क्यो नही आती है, सेठ?

करोड़ीमल—आती है। कल्लू आती है। तू धीरज रख भैया, मै सबका ब्याज छोड दूंगा और तेरा तो मूल भी घर मे ही है, तू उसे भी मत देना, बस।

भागीरथ—(बात काटकर) भाड मे जाय तेरा मूल और सूद। (कल्लू की तरफ मुडकर) कल्लू, तूने किसको मारा है? जल्दी बोल।

कल्लू—(चुपचाप रहता है)

श्यामू—कल्लू, चुप क्यो है, बोलता क्यो नही? तूने क्या किया है, किसे मारा है, कहा फैंका है?

(कल्लू सबको चुपचाप डरावनी आखो से देखता है, कभी वह ताऊ को कभी करोडीमल को घूरता है। करोड़ीमल नीची निगाह किये बैठा है।)

भागीरथ—कल्लू बेटा! बोल न ये क्या बचपना है?

कल्लू—इस सवाल का जवाब तो ताऊ और करोड़ीमल से पूछो, दादा।

(रधिया का प्रवेश—बाल बिखरे है, क . . . अस्त-व्यस्त है, हाथ मे लकड़ी है।)

रधिया—मैं देती हू, इस सवाल का जवाब।

ताऊ—(बनावटी प्यार दिखाते हुए) रधिया बिटिया, कहां गई थी इतनी देर से। देख मुझे बडी जोर से भूख लगी है। (बढ़ता है)

रधिया—वही खड़े रहो, बापू। बिटिया का रिश्ता अब खत्म हो चुका है।

भागीरथ—(पास आकर) क्या बात है, रधिया बिटिया? इतनी नाराज क्यों हो?

रधिया—क्या बताऊ, दादा। अपने मुंह से अपने बापू की कालख बयान करते हुए शर्म आती है। (सिसकने लगती है)

(श्यामू खड़ा हो जाता है और करोड़ीमल बाहर जाने लगता है)

रधिया—करोडीमल काका, अब तुम बाहर क्यो जा रहे हो? अब यहां कोई खतरा नही है। तुम्हारा काटा तो साफ हो चुका है।

भागीरथ—क्या बात है, मेरी बच्ची! तू अगर अपने बापू से नाराज है तो अपने भागीरथ दादा से तो बात कर। क्या हो गया आखिर?

रधिया—दादा, अगर आदमी कोई अच्छा काम करना चाहे तो रास्ते के रोडे, समाज का अन्याय, जाति के रीति-रिवाज उसकी कमर तोड़ देते है और जब वह टूट जाता है तो तुम्हारा यह समाज उसके प्रति बनावटी सहानुभूति दिखाता है। लेकिन दादा, टूटने के बाद भी अच्छा आदमी हर वक्त अच्छा आदमी रहता है।

श्यामू—बहन पहेलिया मत बुझा। साफ-साफ बता क्या बात है?

रधिया—(एक ओर देखते हुए) अभी सब कुछ मालूम हो जायेगा, श्यामू भैया। अगर वह

ताऊ—अब इस बुढापे मे भी क्या तुझे इम्तहान देना पडेगा ? पूछ क्या बात है ?

रधिया—अगर विनोद पण्डित की बहन की जगह मैं होती और भोलू बाबा की जगह विनोद पण्डित होता तो तुम क्या करते बापू ?

ताऊ—(गुस्से मे खडा हो जाता है) खामोश। करता क्या, मैं तलवार मे उस कमीने की गदन काट देता।

रधिया—बापू, जब तुम्हें गदन काटने का हक है तो विनोद पण्डित को क्यो नही ? उसने अपने घर की इज्जत बचाने के लिए ठीक वही किया जो कि तुम करते। इसमे उसका क्या दोप है ? क्या वह किलकारियो के बीच म आँखें मू दन की इच्छा नही रखता ?

ताऊ—बगर सोचे समझे बिना सिर-पैर की बातें करती है।

रधिया—(पलटकर) क्या, यह जरूरी है कि जो आप सोचें वह ठीक है और दूसरे सोचें वो गलत है। (रुककर) वह इसान सात साल कद मे रहकर जो कुछ अच्छे काम सीखकर आया है, वह उसने सब गाव वालो को सिखाया, दादा जानत हो क्यो ?

भागीरथ—किसलिए बेटी ?

रधिया—इसलिए भागीरथ दादा, कि उसने सात साल के एकाकी जीवन मे खूब सोचा और वह इस नतीजे पर पहुचा कि इस जीवन मे जितनी दूसरो की भलाई कर सकते हो, करो। क्योकि वह जीवन के मूल्य को समझ गया था कि जिन्दगी लेना कितना आसान होता है और बख्शना नामुमकिन। बस यही सोच कर उसने इस गाव को एक बगिया बनाना चाहा और उसने इसकी कोशिश की।

(कुछ रुक कर)

जेल से छूटने के बाद वह कुछ दिन शहर मे घूमा और उसने वह सब कुछ समझा जिसमे यह बगिया फूले। गाव बहुत पिछडा हुआ था और वह गाव की औरतो के बीच मे नही जा सकता था। इसलिए उसने वह सब कुछ मुझे समझाया। मैं उसके विचारो से प्रभावित हुई और मैंने उसका साथ दने का निश्चय किया।

(चौधरी बोलने की कोशिश करता है किन्तु रधिया फिर बोलने लगती है)

अगर उसने गाव मे पम्प लगवाये और सडक बनवाई तो क्या उसने कोई अपराध किया है ? खाली बैठे काश्तकारो को उसने जेल मे सीखा हुआ गृह-उद्योग सिखाया और उनसे बनाया गया माल, वह शहर मे जाकर बेच आया जिससे गाव वालो को अच्छा खाना और पहनना मिला तो क्या उसने पाप किया ? मुझे बताओ कि इन सब अच्छे कामो के बदले उसे क्या मिला ? लाठियों की मार, (चौधरी की तरफ बढती है) तुम समझते हो कि वह मर गया होगा ? नही, जब तक रधिया जिन्दा है, इस गाव का देवता नही मर सकता। मैं उसे सडक वाले अस्पताल पहुँचाकर आई हू।

श्यामू—सडक वाला अस्पताल। (वह दौडकर बाहर जाता है)

रधिया—(कल्लू की तरफ देखकर) मालूम है कल्लू भैया, बेहोश होने से पहले उसने क्या कहा था ?

कल्लू—क्या कहा था, बहन ?

रधिया—उसने कहा था, कि अगर (सिसकियां लेते हुए) अगर मैं मर जाऊ तो रधिया मेरा काम तू अपने हाथ म ले लेना और पुलिस वालो से कह देना कि कल्लू का इसमे कोई दोप नहीं।

भागीरथ—(चौधरी और करोड़ीमल की ओर देखकर) तुम लोगो को इस उम्र मे, ऐसी हरकते करते हुए शर्म नही आती। रधिया वेटी, वैठ जा। थक गई होगी, थोड़ी सास लेले।

रधिया—(एक ओर देखकर) हां दादा, थोडी सी सासे और रह गई होगी और उनके खत्म होते ही मेरा एक लड़के का स्वरूप होगा। विनोद पडित तुम्हारा काम नही रुकेगा। तुम्हारी वगिया, एक दिन जरूर महकेगी। (ताऊ की की तरफ मुडकर) बोलो बापू, तुमने उसे समझने की कोशिश क्यो नही की?

(बैसाखी की सहायता से विनोद का मंच पर प्रवेश। श्यामू उसको सहारा दे रहा है।)

विनोद—यह लोग नही समझेगे। अपना समय मत खोओ, रधिया बहन! मुझे सहारा दो।

सब—बहन!

ताऊ—(आश्चर्य से) क्या कहा, विनोद पडित तुमने? वहन?

रधिया—(क्रोध में घूमकर) और नही तो क्या?

विनोद—ताऊ, रधिया मेरे गाव की बेटी है, मेरी बहन है।

रधिया—(व्यंग से) लेकिन तुम तो भोलू काका के बडे भाई हो ना? तुम्हारे दिल और दिमाग पर तो गन्दगी की इतनी मोटी चादर ढकी हुई है कि तुम अच्छी बात सोच ही नही सकते और दुर्भाग्य से कोई अच्छी वात आ भी जाती है तो उस चादर की गन्दी परतों में फसकर असहाय और बेमतलब हो जाती है। (विनोद की तरफ मुडकर) चलो भैया, हम मन्सुखा के यहाँ चल कर रहेंगे, वह अकेला रहता है।

मन्सुखा—(तकली एक ओर रखते हुए आंखें मलते हुए) अरे, धन भाग मन्सुखा चमार के। अरे, तुम लोग मसखरी तो नही कर रहे हो। मसखरी हो तो अभी वता देना वरना मैं दुःख से मर जाऊगा, हा।

विनोद—मसखरी नही है, मन्सुखा। (कल्लू की तरफ देखकर) कल्लू भैया, क्या अब भी तुम मुझसे नाराज हो? मुझे सहारा दो। देखो, मैं कितना कमजोर हो गया हूं।

(कल्लू आसू पोछता है और दोनो के पैर छूता है)

कल्लू—मुझे माफ करदो, भैया! मैं बहक गया था।

विनोद—सुबह का भूला हुआ अगर शाम को घर आ जाये तो वह भूला नही कहलाता। चलो चले। (सब मच से बाहर जाते है)

मन्सुखा—राम राम ताऊ! आज मेरे घर भगवान् आ रहे हैं, मैं जल्दी मे हूं, चलूं। राम राम। (सबके पीछे-पीछे जाता है।)

(भागीरथ दादा, ताऊ के हाथ जोडकर उनके पीछे-पीछे जाता है। ताऊ दोनो हाथो को मुह पर रखकर सिसकता है और फिर फूट पडता है। पर्दा धीरे-धीरे वन्द होता है। ○

आपातकालीन स्थिति का सदुपयोग

• जतनमल करनावट
एम कॉम साहित्यरत्न

[श्री करनावट शिक्षा समिति कार्यकारिणी के उत्साही युवा सदस्य व यहाँ के भू पू छात्र हैं। आपने अपने सुविचार इस लेख मे प्रस्तुत किये हैं—
—सम्पादक]

आपातकालीन स्थिति से हमे अपने आर्थिक कार्यों को आगे बढाने का एक नया अवसर प्राप्त हुआ है। इससे अनेक वस्तुओ के मूल्य गिरने की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। आपात स्थिति से देश म नयी भावना का उदय हुआ है। देश मे एक नया वातावरण और दृष्टिकोण विकसित होन तथा कीमतो पर नियन्त्रण से देश की अर्थ-व्यवस्था मे सतोपजनक सुधार हुआ है। 26 जून, 1975 को आपात स्थिति लागू किये जाने से राष्ट्र मे नयी भावना के उदय के साथ हमारी सरकार को देश की कुछ वास्तविक समस्याएँ सुलझाने का स्वर्णिम अवसर मिला है। इससे पूव कभी भी देश के जीवन मे विभिन्न पहलुओ मे सुधार के लिए इतना जोश और उमग नही दिखाई दी थी। आर्थिक प्रगति के नये कायक्रम लागू करने से 'गरीबी हटाओ' का स्वप्न साकार होने लगा है, देश के नागरिको का मनोबल बढ गया है तथा राष्ट्रीय आत्मविश्वास व राष्ट्रीय भावना का नये सिरे से विकास हुआ है।

जनता ने एक स्वर से आपात-स्थिति का समथन किया है, यह ज्वलन्त तथ्य भुलाया नही जा सकता। इससे जनता को राहत मिली है। जीवन के लिए आवश्यक वस्तुएँ सुलभ हुई हैं और कीमतें घटी हैं। चोरबाजारी, मुनाफाखोरी जखीरेबाजी, तस्कर व्यापार के विरुद्ध प्रबल अभियान तथा करवचको के विरुद्ध कडी कार्रवाई के बहुत अच्छे परिणाम निकले हैं। आर्थिक स्थिति मे काफी सुधार हुआ है। खेतो तथा कारखानो मे उत्पादन बढा है। जन जीवन तथा प्रशासन-तन्त्र मे अनुशासन आ रहा है। भूमिहीनो को भूमि देन, बधुआ मजदूरी को समाप्त करन, गरीबो को साहूकारो के शोषक चगुल से मुक्त करने आदि कई जनहितकारी कार्य बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अतगत चल रहे हैं।

लोकतन्त्र की रक्षा के लिए तथा जनहित म ही आपात-स्थिति लागू की गई और यह कार्य भी सविधान मे निहित प्रावधान के अनुसार ही हुआ। आपात-स्थिति की घोषणा के पश्चात भी देश मे समाजवाद की सुस्थापना के लिए लोकतन्त्रीय ढग से ही काय हो रहा है। यदि आर्थिक उन्नति तथा सामाजिक न्याय के लिए सविधान मे कुछ परिवतन करना पडे तो वह होना ही चाहिये। सविधान पत्थर की लकीर नही होता। वह जनता के लिए होता है। इस सम्बन्ध मे प्रधानमन्त्री ने यह भी कहा है कि जनता की राय से ही ऐसा परिवतन होगा। परन्तु सविधान के आधारभूत तत्त्व बदलने वाले नही हैं। सबको समान अवसरो की उपलब्धि, सब जातियो तथा वर्गों के प्रति समान भाव, धार्मिक तथा वैचारिक स्वतन्त्रता आदि बातें ही तो लोकतन्त्र के मुख्य उपादान हैं। ये सभी सुरक्षित रहेंगे। आपात-काल मे जो कुछ भी किया जा रहा है वह लोकहित के लिए ही किया जा रहा है।

प्रधान मन्त्री ने कहा है कि देश को नुकसान पहुँचाने तथा लोकतन्त्र को खतरे मे डालन के लिए

कतिपय आन्तरिक तथा बाह्य शक्तियां अब भी घात लगाये बैठी हैं। उन्होने कहा है कि यद्यपि देश की कुछ साम्प्रदायिक व देशद्रोही सस्थाओं पर प्रतिवन्ध है परन्तु छिपे तौर पर उनकी शरारतें अभी जारी है। इस वस्तु स्थिति को देखते हुए कामागाटा मारु नगर में कांग्रेसजनों का यह निर्णय वहुत उचित ही है कि आपात-स्थिति अभी न हटाई जाय।

आपात-स्थिति की घोषणा निहित स्वार्थी तत्त्वो के कुप्रयासो, तोड़-फोड़, हिंसा, वंद, घेराव, आदोलन, हड़ताल, सत्याग्रह आदि पर अंकुश लगाने के लिए की गई और यह संतोष की बात है कि इस दिशा मे अब तक की उपलब्धि उत्साह-वर्द्धक रही है। यह सत्य है कि निहित स्वार्थी तत्त्व अभी पूरी तरह समाप्त नही हुए है, गुप्त रूप से अपने प्रयासो मे सलग्न है। किन्तु इतना अवश्य है कि इनके प्रभाव क्षेत्र मे काफी कमी आई है। आन्दोलन, प्रदर्शन, और वन्दों का कोई नाम लेवा प्रकट में नही रह गया है। कल-कारखानों में शाति व सामान्य गति से कार्य हो रहा है। उत्पादन भी वढ़ा है और उपभोक्ता वस्तुओं का कृत्रिम अभाव समाप्त होकर उनकी उपलब्धिया सरल हुई है। पिछले दिनों देश की राजधानी दिल्ली तथा देश के विभिन्न नगरों में जो विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम हुए हैं उनमें सर्वधर्म समन्वय का एक नया उत्साह जन-जन में परिलक्षित हुआ है। राष्ट्रीय एकता की मजवूती के लिए निश्चित रूप से यह शुभ लक्षण कहा जा सकता है। कुल मिलाकर यह कहने मे संकोच नही होना चाहिए कि आज समूचे राष्ट्र मे शाति व समन्वय, एकता व भाई-चारे का जो वातावरण बना है वह किसी भी रचनात्मक व क्रातिकारी मोड़ के लिए सर्वथा उपयुक्त व उचित है। आवश्यकता इस वात की है कि इस सुअवसर का लाभ उठाया जाय। प्रधान-मन्त्री के शब्दो मे अव राज्यों के मुख्य मन्त्रियो एवं अन्य कांग्रेसजनों को इस सुअवसर का लाभ उठाना चाहिये तथा जनआकांक्षाओं की पूर्ति की दिशा मे अधिक सक्रिय व तत्पर हो जाना चाहिये, तभी आपात स्थिति का सदुपयोग अविकल रूप मे किया जा सकेगा।

बालक की अज्ञानता

वच्चे ने माँ से एक कटोरी आटा माँगा
मदारी की वात को अक्षरशः दुहराया
वंदर का पिचका सा पेट रहेगा अनखाया
अगर वो एक कटोरी आटा नहीं लाया।
माँ ने आनन-फानन में सुनाई गाली अनेक
वच्चे को, वन्दर को और मदारी को भरपेट
हुआ वच्चे का दिल टूक-टूक
रहा सोचता अनखाये वन्दर के वारे में वना मूक
समझ न पाया बड़ों-वड़ों की दुनिया का विचित्र रूप।

—**रमेशचन्द्र चौबे**, व्याख्याता

घडी का काय करते थे (1436)। छात्रावास मे भोजन और नाश्ता बहुत ही सादा दिया जाता था। जिसमे दलिया, दूध, गन्ना, फल, चावल, पापड आदि होते थे। छात्रावासो के नियमो का उल्लघन करने पर छात्र को आवास से या विश्वविद्यालय से भी निकाला जा सकता था। विश्वविद्यालय मे एक निश्चित सख्या मे उपस्थिति होना आवश्यक था अन्यथा छात्र परीक्षा मे नहीं बैठ सकता था। एक जानक कथा (1300) का एक ब्राह्मण छात्र उपस्थिति कम होने से परीक्षा म सात या आठ बार नही बैठ सका—कारण कि उसकी नव-विवाहित पत्नी नित नये बहाने बना उसे विश्वविद्यालय जान से रोक लेती थी। विश्वविद्यालय मे प्रत्यक छात्र को चाहे वह राजपुत्र हो या भिक्षुपुत्र एकसा कपडा व एकसा भोजन मिलता था। चाडाल जाति के छात्र विश्वविद्यालय मे प्रवेश नही पा सकते थे।

छात्रो की सख्या बहुत अधिक होने के कारण विश्वविद्यालय मे रात्रि कक्षायें भी होती थी। छोटी कक्षाओ को कभी कभी उच्च कक्षा के छात्र भी उप आचाय की हैसियत से पढाया करते थे (5457), परन्तु इनको तनख्वाह मिलती थी या नहीं यह अस्पष्ट है।

विश्वविद्यालय में कई विषय पढाये जाते थे—तीनो वद 18 शिल्पकलायें—जैसे हस्तीसुत्त (245), जादू योग (2100), प्रेत विद्या, आखेट पशु विज्ञान, इस्सत्थ सिप्प, युद्ध विद्या, प्राणी शास्त्र, कानून, चिकित्साशास्त्र इत्यादि। यह उल्लेख मिलता है कि स्नातक बनने के बाद इनमे मे किसी एक विषय को चुनकर विशेष अनुसधान करना पडता था तब वह उस विषय का मास्टर बन सकता था। व्यावहारिक शिक्षा के लिये विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र मे जा सकता था—उदाहरणाथ एक विद्यार्थी जो आखेट विषय मे विशेष योग्यता प्राप्त करना चाहता था, आन्ध्र के जगलो मे भेजा गया था (1356), प्रत्येक वर्ष कुछ विद्यार्थी दल के रूप मे (स्नातक बने हुये) विदेशो की यात्रा को भेजा जाता था और विदेश यात्रा के बिना शिक्षा पूर्ण नही मानी थी।

तक्षशिला मे चिकित्सा तथा शल्य विज्ञान की शिक्षा का उल्लेख षोडश महाजनपद के साहित्य मे मिलता है। जैसे—महाराज उदयन जाडिस रोग का विशेषज्ञ था। कानून एव सैन्य प्रशिक्षण भी यहा का एकाधिकार रखने वाला होता था।

नालदा बिहार राज्य मे राजगृह मे 8 मील उत्तर की ओर स्थित है। यह पाचवी श० ई० पू० मे स्थित हुआ था। बौद्ध ससार मे यह विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व का था। गुप्त राजाओ ने इसे राजकीय स्तर पर अपनाया। यह रेजीडेंशियल था। ह्वेनसाग के अनुसार 7वी श० ई० मे यह चरम सीमा पर था। यशोवमन के नालदा अभिलेख से ज्ञात होता है कि विश्वविद्यालय तथा महाविहार के भवन बादलो को छूते नजर आते थे। इत्सिग के अनुसार इसमे दस सहस्र व तीन हजार विद्यार्थी थे। ह्वेनसाग के अनुसार छात्रो को वस्त्र भोजन, निवास, औषधिया पर कुछ खर्च नही करना पडता था। खुदाई से ज्ञात हुआ कि प्रत्येक कमरे मे दो छात्र रहते थे, प्रत्येक कमरे म दो प्रस्तर के आसन, दीपक तथा पुस्तकें रखने के ताक थे। इत्सिग के अनुसार नालदा मे 10 से भी ज्यादा नहाने के तालाब थे। इसे 100 से भी अधिक ग्राम अग्रहार दान के रूप मे मिले हुये थे।

इस सस्था मे प्रवेश निर्धारित परीक्षा पास करने पर ही दिया जाता था। वाटस के अनुसार इस परीक्षा 100 मे से केवल 2 या तीन ही पास हो पाते थे। इस परीक्षा के सचालक विद्वान् को 'द्वार पण्डित' कहा गया है। यह दक्षिण के मुख्य द्वार पर रहता था। ह्वेनसाग के अनुसार इसमे

1500 शिक्षक थे और छात्र 8500 थे। इसी यात्री ने यहां मंगोलिया, चीन, जापान, अफगानिस्तान, तोखारा, तिब्बत, बर्मा आदि के छात्र देखे थे। इसमे कुल 10,510 कर्मचारी व शिक्षक थे। 100 व्याख्यान रोज होते थे। इत्सिग के पुस्तकालय के प्रति विचार देखिये—"वहां का पुस्तकालय तीन विशाल इमारतों मे स्थापित था जिनके नाम क्रमश रत्नसागर, रत्नोदधि तथा रत्नरंजक थे।

दक्षिणी भारत मे भी एक विश्वविद्यालय की झलक मिलती है। तो अभिलेख और ताम्रपत्र सलोतमी महाविद्यालय का जिसमे 27 छात्रावास थे, उल्लेख मिलता है। वल्लभी भी एक रेजीडेशियल विश्वविद्यालय था। यह पूर्णरूपेण राजकीय था। ह्वेनसाग के अनुसार इसकी कुलपति राजकुमारी दुज्ज थी। जातक कथा (न० 243) के अनुसार बनारस मे सगीत विश्वविद्यालय था। विश्वविद्यालय की स्थापना राजा धर्मपाल ने की थी। इन्होने 108 आचार्यों की नियुक्ति की थी व 6 व्यक्तियों की एक कार्यकारिणी समिति की स्थापना की जिसका कार्य छात्रावासो का प्रबन्ध, औषधियों का प्रबन्ध तथा कुलपति व आचार्यों की नियुक्ति करता था। इसका प्रथम कुलपति धर्मपाल ही था। 'राम चरित' के अनुसार बगाल तथा मगध के शासक राजा रामपाल 1084 ई० मे जगददल विश्वविद्यालय करतोया तथा गंगा नदी के तट पर स्थित था।

इन विश्वविद्यालयों मे ब्रह्मचर्य का पालन दृढ़ता से होता था। साथ ही शासक वर्ग इनसे अलग नही रह सकता था। इनमे स्थानीय या राज्यव्यापी ही नही, बल्कि विश्व कल्याण की भावना भरी हुई थी। वर्तमान विश्वविद्यालयो की भाति इनका अपना विस्तृत क्षेत्र होता था।

अन्त मे यह माना जा सकता है कि इतने विकास के बावजूद हम अपने शैक्षणिक जगत मे प्राचीन शिक्षा व्यवस्था व प्रणाली से प्रेरित होकर वर्तमान को ढाले तो हमारी अनेको समस्याओ का समाधान अपेक्षाकृत सरल तरीको से हो सकता है।

समाजवाद (Socialism)

—रतीराम यादव
वरिष्ठ अध्यापक

स्वीडेन के एक राजा ने अपने मत्री से कहा था 'If one is not a socialist up to the age of 25, it shows that he has no heart, but if he cotinues to be a socialist after the age of 25, it shows that he has no head' हम ऐसे ही युग मे विचरण कर रहे हैं, जिसमें एक ओर तो समाजवाद की निन्दा हो रही है तथा दूसरी ओर समाजवाद के आदर्शों के पुल बाधे जा रहे हैं। ऐसी स्थिति मे हम सबका कर्तव्य हो जाता है कि हम सब समाजवाद को परखें कि क्या समाजवाद ही जन, समाज और राष्ट्र का उद्धार कर सकता है ? अथवा इस 'वाद' के बाद क्या दूसरे 'वाद' को लाना होगा ? समाजवाद की यही समस्या आज 55 करोड भारतवासियो की है।

हम प्रो० जोड (Joad) के शब्दो को नही भुला सकते। उन्ही के शब्दो मे "समाजवाद का अपना कोई रूप नही होता, यह एक ऐसी टोपी है जिसका रूप प्रत्येक व्यक्ति के पहनने के कारण बिगड गया है।" यह सच भी है कि कितने प्रतिशत लोग ऐसे है जो समाजवाद को जानते हो और समाजवाद के आदर्शो का पालन करते हो। वास्तव मे यदि देखा जाये तो लोग समाजवाद को एक ही दृष्टि से देखना चाहते है और वह है 'क्रातिकारी समाजवाद', अर्थात् क्राति द्वारा देश मे व्याप्त आर्थिक विषमता को समाप्त करना। किन्तु इसका दूसरा पहलू भी उतना ही आवश्यक है जिसे हम 'विकासवादी समाजवाद' कहते हैं, जिसका उद्देश्य है देश मे आर्थिक विकास को अधिकतम बढाना तथा सामाजिक उद्योगो मे आधारभूत परिवर्तन करना। 1 अप्रैल 1951 स ही स्व० प० जवाहरलाल नेहरू ने प्रथम पचवर्षीय योजना का श्री गणेश इसी द्वितीय पहलू को लेकर किया था तब से निरतर समाजवाद विकसित ही होता जा रहा है। वतमान 21 सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम इसी समाजवाद का चरण है, जिससे राष्ट्र की नीव को सशक्त होना है।

सेलस ने समाजवाद को लोकतन्त्रवादी आन्दोलन कहा और कहा कि जनता को समाजवाद से दो बडे लाभ हैं, प्रथम अधिक से अधिक न्याय और दूसरे स्वतन्त्रता। जहा तक न्याय का प्रश्न हमारे देश से सम्बन्धित है, हमे यह नही भूलना चाहिये कि 'Taxation Enquiry Commission' ने भी यही कहा था कि लोगो की अधिकतम आय कम आय के वग के लोगो की 30 गुनी से अधिक नही होनी चाहिये, लेकिन इस तथ्य को कुछ अधिकतम आय के व्यक्ति भुला बैठे जिससे देश मे भ्रष्टाचार, महगाई, निम्न रहन-सहन का स्तर, बेरोजगारी, हडतालें आदि को बढावा मिला। जहा तक स्वतन्त्रता का प्रश्न है, सविधान मे स्पष्ट

कर दिया है। लेकिन लोगों ने आय कर (Income-Tax) जैसी महत्त्वपूर्ण मदों को अपने तक ही सीमित रखा। जिससे समय-समय पर सरकार को अन्य नियमों में संशोधन करना पड़ा।

सरकार सम्पत्ति के उचित वितरण के लिये निम्न उपायों को कार्य रूप में ला रही है।

1. महत्त्वपूर्ण उद्योगों और सेवाओं को सार्वजनिक नियन्त्रण में लाने का कार्यक्रम,

2. उद्योगो के संचालन मे व्यक्तिगत लाभ को समाप्त करके सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यापक कार्यक्रम, तथा

3. व्यक्तिगत लाभ का उद्देश्य हटाकर उसके स्थान पर सामाजिक सेवा (शिक्षा, अस्पताल, उद्योग, बचत आदि) का उद्देश्य स्थापित करना। इस तरह जहा समाजवाद का आदर्श इतना विशाल है वहां यह भी कहा जाता है कि समाजवाद अनेक फनों वाला सांप है, जब तक एक फन काटो, तब तक दूसरा फन उसके स्थान पर निकल आता है। समाजवाद मे यह भावना स्वतः जागृत हो जाती है कि हर व्यक्ति राज्य का नौकर हो जायेगा तथा उत्पादन, मांग, पूर्ति, कीमतें आदि सभी सरकार के हाथ में हो जायेगी। लेकिन इन सब धारणाओं के पश्चात् (जो कि गौण हैं) भी यदि समाजवाद की ओर सक्रिय कदम न उठाया गया तो देश में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी (शिक्षित, अशिक्षित) भ्रष्टाचार, अन्याय, मिलावट, जमाखोरी आदि आर्थिक कठिनाइयों के सामने देश डगमगा जायेगा। इस तरह से समाजवाद की भावना पूर्णतः ठीक है, और संसार को चाहिये कि वह उसे नष्ट होने से बचाये। तभी जन, समाज और हर राष्ट्र का कल्याण हो सकता है।

महिला समाज को महावीर-दर्शन की देन

—डॉ० शान्ता भानावत, एम ए , पीएच डी
व्याख्याता, वीरबालिका महाविद्यालय, जयपुर

सन् 1975 का वर्ष हम अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप मे मना रहे हैं। इस दौरान महिलाओ की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्वतन्त्रता की क्रियान्विति के विशेष प्रयत्न किये जायेंगे। यह हर्ष का विषय है कि आज के शिक्षित पुरुष वर्ग ने नारी-स्वातन्त्र्य के इस महत्व को समझा है और वह भी इस ओर पहल कर रहा है।

यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि इस समस्या की ओर आज से 2500 वर्ष पूर्व भगवान् महावीर का ध्यान गया था। उन्होने नारी को केवल आर्थिक और सामाजिक स्वतन्त्रता देने की बात ही नही कही, वरन् इससे भी आगे बढ कर नारी को अपने समग्र व्यक्तित्व का विकास करने के लिये आध्यात्मिक स्वतन्त्रता देने की बात भी कही।

महावीर कालीन समाज मे नारी की स्थिति बडी खराब थी। उसे धर्म के बोल सुनने का अधिकार नही था। गाजर, मूली, भेड, बकरियो की भाँति वह चौराहो पर खडी कर बेच दी जाती थी। बडे-बडे सेठ, श्रीमन्त उसे खरीद लेते और उसका उपयोग दासी की तरह करते थे।

इस प्रसग मे कुमारी चदना की उस घटना को हम विस्मृत नही कर सकते, जब एक सारथी ने उसे चाँदी के चद टुकडो के खातिर एक वैश्या के हाथो सौंपा था। वैश्या के घर नित्य नये भरतार करने और रगीले मादक पदार्थ सेवन की बात सुन कुमारी चन्दना का दिल रो पडा। उसने उसके साथ जाने से इन्कार कर दिया। तब वह धन्ना श्रेष्ठी के हाथो बेची गई। वहाँ उसे दासी का काम करना पडा।

चन्दना की भाँति न जाने कितनी नारियो को उस समय दासता की जजीरों मे जकड कर जीवन बिताना पडा होगा। नारी-स्वातन्त्र्य के हामी महावीर को यह सब कहाँ बरदाश्त था? समाज मे पददलित और उपेक्षित समझी जाने वाली नारी जाति के उद्धार के लिये ही तो उन्होंने अपने साधनाकाल के बारहवें वर्ष मे एक कठोर अभिग्रह धारण किया था। कोई राजकुमारी दासी बनी हुई हो, उसके हाथो मे सूप हो, जिसके कोन मे उडद के बाकुले पडे हो, वह देहली के बीच खडी हो, हाथों मे हथकडिया और पैरो मे बेडिया पडी हो, सिर मुंडित हो, आखो मे अश्रु और होठो पर मुस्कान हो, वह स्वय तीन दिन की भूखी हो, भिक्षा का समय बीत गया हो। ऐसी स्थिति मे यदि कोई राजकुमारी मुझे भिक्षा देगी तभी मैं आहार ग्रहण करूँगा, अन्यथा भूखा ही रहूँगा।

महावीर को इसी सकल्प मे निराहार विचरण करते-करते पाच माह पच्चीस दिन बीत गये। इस बीच अनेक राजाओ ने उनकी षटरस व्यजन की खूब मनुहार की, पर उन्हें सिर्फ उदर पूर्ति ही नही करनी थी। वे तो पददलित समझी जाने वाली नारी से भिक्षा लेकर उसके पद को गौरवान्वित करना चाहते थे।

महावीर का यह अभिग्रह दासी बनी राजकुमारी चन्दनबाला के हाथो पूरा हुआ। फिर प्रभु महावीर से प्रतिबोध पाकर चन्दनबाला ने दीक्षा अगीकार की। प्रभु महावीर ने अपने धर्म सघ मे पुरुष की भाति नारी को भी सम्मिलित किया। उन्होंने कहा—नारी व पुरुष की आत्मा एक है।

पुरुषों की भाँति नारियों को भी अपने विकास की पूर्ण स्वतन्त्रता है । नारी को पुरुष से हेय समझना, अज्ञान, अधर्म और अतार्किक है ।

प्रभु महावीर ने कहा—वासना, विकार और कर्मजाल को काटकर नारी मोक्ष की अधिकारिणी बन सकती है । उसे भी नि:सकोच धर्मोपदेश सुनने का वैसा ही अधिकार है जैसा पुरुष को है । प्रभु महावीर की वाणी से प्रेरित हो जयन्ती श्राविका ने उनसे अनेक तात्त्विक प्रश्न पूछे थे । अपने प्रश्नों का सही समाधान पा जयन्ती ने महावीर के पास दीक्षा अंगीकार की ।

प्रभु महावीर की वाणी से प्रभावित हो अनेक नारियो ने साधना का मार्ग अपनाया । यही कारण था कि उनके धर्मसघ मे पुरुष की अपेक्षा स्त्रियो की सख्या अधिक थी । चौदह हजार साधु थे तो छत्तीस हजार साध्वियाँ, उनसठ हजार श्रावक थे तो तीन लाख अट्ठारह हजार श्राविकाएँ ।

महावीर की दृष्टि मे नारी की मातृत्व शक्ति का बडा सम्मान था । उन्होने माता त्रिशला के अपार वात्सल्य भाव को गर्भ काल मे ही अनुभव कर लिया था । इसी कारण वे वैरागी बनकर चुपचाप घर छोड़ कर नही गये । अट्ठाइस वर्ष की उम्र मे दीक्षा लेने की उन्होने अनुमति मागी । जब माता ने अनुमति नही दी तो वे पत्नी, मां, बहन, अबोध पुत्री की मूक भावनाओ का आदर कर दो वर्ष तक और गृहस्थ जीवन मे रहे ।

भगवान् महावीर ने अपने समय मे, स्वातन्त्र्य की दिशा मे नारी को पुरुष के बराबर आत्मकल्याण के अधिकार देकर बहुत बडी क्राति की थी । पर बड़े दु:ख की बात है कि नारी-मुक्ति की दिशा मे महावीर का किया गया प्रयत्न आगे चल कर फिर धूमिल पड गया । मध्ययुग तक आते-आते नारी बालविवाह, पर्दाप्रथा, अधविश्वास, दासत्व, निरक्षरता जैसी कुरीतियो मे फिर कैद हो गई और उसका व्यक्तित्व दब गया ।

18वीं–19वी शती मे नारी-सुधार की दिशा मे फिर अनेक आन्दोलन गतिशील हुए । फलस्वरूप भारतीय सविधान मे नारी और पुरुष के अधिकारों मे किसी प्रकार का भेद नहीं रहा । उसे वयस्क मताधिकार दिया गया जो विश्व-इतिहास मे एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है । बौद्धिक दृष्टि से भारतीय नारी पुरुष की अपेक्षा किसी भी तरह कम नही रही । आज हमारे देश में प्रधान मन्त्री एक महिला है । यहाँ स्त्रियाँ राजदूत, राज्यपाल रह चुकी है । वे मत्री, ससद्-सदस्या, इजीनियर, पायलेट, छाताधारी सैनिक, सभी कुछ है, रोजगार के सभी क्षेत्र उनके लिये खुले है । भारतीय नारी परिश्रम से जी चुराने वाली भी नही है । प्रतियोगिता परीक्षाओ मे वे पुरुषो से भी आगे बढ रही है ।

इतना होने पर भी आज जब हम अपने पारिवारिक. सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन पर दृष्टि डालते है तो हमे चारो ओर अशाति, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, भाई भतीजावाद के दर्शन होते है । आज के मानव का लक्ष्य येनकेन प्रकारेण धन कमाना ही बन गया है । धन की तृष्णा उसके मन मे दिन-रात बढती जा रही है । वह हजारपति है तो लखपति बनना चाहता है और लखपति है तो करोड़पति । व्यक्ति की ये बढती हुई इच्छाएँ उसे अनैतिक कार्य करने की ओर प्रवृत्त करती है । उन्ही के वशीभूत हो वह गरीबो का पेट काट कर अपना घर भरता है । देश मे बढ़ती हुई जनसख्या महगाई, बेकारी विलासप्रियता आदि ने व्यक्ति को पथभ्रष्ट कर दिया है । आज मानव की दृष्टि भी विकारग्रस्त बन गई है । उसे गन्दे व अश्लील चित्र देखने मे आनन्द आता है । आज व्यक्ति के विचार भी विकारग्रस्त बनते जा रहे है । वह स्वय खाना-पीना और मौज करना चाहता है । दूसरे को खाते-पीते देख वह स्वय उससे ईर्ष्या करता है । वृद्ध माता-पिता की सेवा-सुश्रुषा मे उसे लज्जा की अनुभूति होती है । आज का व्यक्ति विनय को तिलाजलि दे, उच्छृखल बनता जा रहा है ।

इन सब दुष्प्रवृत्तिया का परिणाम यह हो रहा है कि हमारे जीवन मे घोर निराशाए, कुण्ठाए व्याप्त हो गई हैं। बौद्धिक और आर्थिक जगत् मे हमने आशातीत प्रगति की है जिससे हमे काफी भौतिक सुख-सुविधाए मिलने लगी हैं। पर हमारे विवेक श्रद्धा और चरित्र का स्रोत सूख जाने से मानसिक शाति नष्ट हो गई है। मानसिक शाति ही सब सुखो का मूल है। दुनिया की समस्त भोग-सामग्री व्यक्ति को उपलब्ध है पर यदि उसकी आत्मा को शाति नहीं तो वह विपुल सामग्री उसके लिए क्लेशकारी होगी। इसी मानसिक शाति को प्राप्त करने के लिये परिवार, समाज और राष्ट्र म व्याप्त सभी कुरीतियो को दूर करना होगा।

इन कुरीतिया को दूर करने म नारी ही विशेष पहल कर सकती है। वही परिवार और समाज की केन्द्र है। प्रकृति मे उसका कार्यक्षेत्र बाहरी नहीं, भीतरी है। वही घर की आतरिक समस्याओ को सुलझाती है। यदि उसकी दृष्टि सम्यक् होगी तो वह कम आमदनी मे घर का खर्च चला लेगी। वह फैशन और विलास की सामग्री तथा अनैतिक तरीके से कमाये गये धन का स्वागत नहीं कर, भ्रष्टाचार की बाढ को रोकने का प्रयत्न करेगी। परिवार का उच्छृखल नही बनने देगी। पारिवारिक सदस्यो म विनय, क्षमा, प्रेम धृति, जैसे गुणो का विकास करेगी। इन गुणो का विकास वह भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रह परिमाण व्रत से कर सकती है।

यहा सक्षेप म उनका परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है—

(1) अहिंसा

नारी को अहिंसा म पूर्ण विश्वास रखना चाहिये। अहिंसा शब्द का अर्थ है—किसी की हिंसा नही करना, किसी को नहीं मारना। हिंसा का मुख्य कारण प्रमाद है। ये प्रमाद पाच प्रकार के होते हैं—(1) इन्द्रिया की विषयासक्ति, (2) क्रोध, मान, माया आदि मनोवेग (3) आलस्य व असावधानी (4) निन्दा, (5) मोह, राग, द्वेष आदि। ये पाचो प्रमाद हृदय को विकृत बनाते हैं जिससे अमैत्री और कलह की वृद्धि होती है। इसलिये नारी को सदैव इन प्रमादों से दूर रहना चाहिये। उसे सोचना चाहिये—सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं। जैसा व्यवहार मुझे अपने लिये पसन्द नही है, वैसा व्यवहार मुझे दूसरो के साथ भी नहीं करना चाहिये।

क्रोध मे आकर बिना कारण बच्चों को मारना-पीटना, दड देना, गाली देना, उनके प्राणो को कष्ट पहुँचाना भी हिंसा है। अपने को दूसरो से बडा मान कर घमण्ड करना, किसी का अपमान करना, किसी के गुप्त रहस्य को प्रकट करना, कपट पूर्वक व्यवहार करना विषय-भोग की वस्तुओ का सग्रह करना, आमोद-प्रमोद और स्वाद के वशीभूत होकर शराब, मास, आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करना या सेवन करने वाले की सराहना करना भी हिंसा है।

मुसीबत से घबराकर, या क्रोध मे आकर आत्मघात करना भी हिंसा है, क्योकि आत्मघाती भय, क्रोध, अपमान, लोभ कायरता आदि दुर्गुणों से प्रेरित होकर हिंसा करता है। ये दुर्गुण सद्गुणो का नाश करते हैं। इसलिये महिलाओ को ऐसे कुकर्म से बचना चाहिये।

(2) सत्य

महिलाओ को सत्य मे पूर्ण निष्ठा रखनी चाहिये। घर मे किसी सदस्य की झूठी प्रशसा करना, जाली हस्ताक्षर करना, घर मे किसी दूसरे की वस्तु रखकर उसे देने से इन्कार करना, किसी की झूठी बात बनाना जैसी दुष्प्रवृत्तिया से नारी को बचाना चाहिये। परिवार को झूठे आचरण से बचाने के लिये स्वय के जीवन को पूर्ण सत्यनिष्ठ

बनाना उसका प्रथम कर्तव्य है ।

(3) अचौर्य :

महिलाओ को किसी प्रकार के चौर्य कर्म मे सहायक नहीं बनना चाहिए। चोरी ही समस्त बुराइयों की जड़ है । इसी से समाज में अनैतिकता फैलती है । किसी पड़ौसी या अन्य किसी की चीज बिना उससे पूछे चोर वृत्ति से लेना, चोरी का माल खरीदना, चोर को चोरी करने मे किसी प्रकार की मदद देना, नकली वस्तु को असली बताना, मिलावट करना, नाप-तोल मे धोखेबाजी करना, टैक्स चोरी करना, ये सब चोरी है । यदि परिवार के व्यक्ति मिलावट या धोखाधड़ी का कार्य करते हो तो उनकी इस वृत्ति को रोकना नारी का प्रथम कर्तव्य है । इस व्रत के पालन से सम्पत्ति का अपहरण मिटकर न्याय-नीति का प्रसार होता है ।

आज महिलाओ मे तस्करवृत्ति से लाई गई विदेशी वस्तुएं खरीदने की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा बढ़ गई है । यह भी बहुत बड़ी राष्ट्रीय चोरी है । इस चोरी से स्वावलम्बन की भावना को ठेस पहुँचती है । अतः इसकी रोकथाम में महिलाओं को प्रभावकारी भूमिका निभानी चाहिए ।

(4) ब्रह्मचर्य :

नारी को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए स्वपति-सन्तोष रखना चाहिये । आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से हमारे देश की नारियों मे भी सेक्स की खुली छूट की माग बढ़ती जा रही है । सस्ते प्रेम के नाम पर कई घृणित और कुत्सित व्यापार चलते है । फलस्वरूप समाज और राष्ट्र मे अनैतिकता पनप रही है । ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाली नारी नग्न नृत्य, अश्लील गायन, वैश्यावृत्ति तथा अन्य कुत्सित चेष्टाओं से सदैव दूर रहती है । उसका एक मात्र लक्ष्य रहता है—प्राण जाय पर शील धर्म न जाय । शील धर्म की रक्षार्थ उसे प्राण भी गँवाने पड़े तो वह हिचकती नही । नारी के शील और सयम-पालन से पूरे परिवार को संस्कारशील बनाने मे बड़ी मदद मिलती है । अपने चरित्र से वह पूरी पीढी को प्रभावित करती है ।

(5) परिग्रह परिमाण :

इस व्रत की पालन करने वाली नारी मे धन के प्रति आसक्ति नही होती । वह धन-धान्य की निश्चित मर्यादा कर लेती है । उससे अधिक धन का सग्रह वह नही करती । यों तो इच्छाएं आकाश के समान अनन्त होती है । पर धन-धान्य, सोना-चादी आदि की निश्चित मर्यादा कर वह बढती हुई इच्छाओं पर अंकुश लगा लेती है । इसके पालन से समाज में आर्थिक विषमता मिटकर समता व शांति का प्रसार होता है । समाज मे व्याप्त अपहरण, शोषण, चोरी आदि बुराइयाँ इससे रुकती है ।

इस प्रकार जीवन मे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रह-परिमाण आदि व्रत धारण करने से परिवार और समाज मे प्रेम, आत्मीयता, सहृदयता, विश्वास, प्रामाणिकता, नैतिकता, समता आदि सद्गुणो की भावना का प्रचार-प्रसार होता है । जीवन अनुशासित, नियमित और कर्तव्यनिष्ठ बनता है ।

नारी सदा से सेवा परायण, सहनशील और त्याग की मूर्ति रही है । इस महिला वर्ष मे जहाँ हमे नारी को बाह्य कुरीतियो से मुक्त करना है, वहाँ उसके आतरिक जगत् को विकसित करने के भी सुनियोजित प्रयत्न करने आवश्यक है । क्योकि सदाचार, नैतिकता, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता जैसे गुण उसके आंतरिक जगत् मे ही स्थिर रहते है । और उसी से विकसित होकर उन्हे बाह्य जगत् मे अन्यत्र फैलने-पनपने का अवसर मिलता है । इसके लिये महिला स्वाध्याय-केन्द्र, महिला नैतिक-शिक्षण शिविर महिला साहित्य-परिषद् जैसे सास्कृतिक सगठन खड़े किये जाने चाहिये ।



राष्ट्रीय सेवा योजना

राधामोहनलाल गुप्ता
एम कॉम, एल एल बी, शिक्षा-शास्त्री
परियोजना अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य देश के युवकों को समाज सेवा के माध्यम से शिक्षित करना है। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य शैक्षिक है और उद्देश्य की पूर्ति का आधार तथा माध्यम है समाज सेवा। परन्तु यह सब आरम्भिक उद्देश्य है। विद्यार्थियों का स्वविकास ही इस योजना का आधारभूत उद्देश्य है।

किसी भी देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए उस देश का युवक ठोस और सुदृढ आधारशिला प्रमाणित होता है। देश के युवकों का व्यक्तित्व-विकास अत्यन्त आवश्यक है। जीवन की यथार्थता और शिक्षा-प्रणाली के बीच एक गहरी खाई है तथा राष्ट्रीय सेवा योजना इस खाई को पाटने का एक महान् प्रयास है।

देश के युवा वर्ग के लिए मूलरूप से 1948–49 में 'राधाकृष्णन् आयोग' द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ हुआ। परन्तु सितम्बर 1969 में भारत सरकार ने चतुर्थ पचवर्षीय योजना के अंतर्गत प्रयोगात्मक योजना के आधार पर, औपचारिक रूप में राष्ट्रीय सेवा योजना शुरू की।

सन् 1970-71 वर्ष के अंत तक 17 राज्यों के 41 विश्वविद्यालयों के लगभग 97,000 विद्यार्थी इस राष्ट्रीय योजना से सम्बद्ध थे। अब तक यह संख्या ढाई लाख तक पहुँच गयी होगी और करीब-करीब 4 करोड 25 लाख रुपये की धन-राशि की व्यवस्था इस योजना के लिए है।

राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध प्रत्येक कॉलिज में यह योजना सफलता के साथ पनप रही है, पर अब भी बहुत कुछ करना शेष है।

कॉलिज स्तर पर योजना का चयन कॉलिज अपने आप करते हैं। विभिन्न कॉलिजो द्वारा शिविर लगाये जाते हैं और इन शिविरो में शारीरिक श्रम के साथ साथ मनोरंजन तथा ज्ञान की बातें भी शामिल रहती हैं।

राष्ट्र के सन्तुलित विकास के लिए यह परम आवश्यक है कि शारीरिक और बौद्धिक श्रमजीवियों में परस्पर समन्वय स्थापित किया जाये। समाजवादी समाज की रचना के लिए तो यह समन्वय पहली शर्त है। इसलिए युवा पीढी को इस दिशा में प्रशिक्षित करना आज के भारत में सर्वाधिक महत्त्व का प्रश्न है ताकि कल का समाज मनोवांछित बन सके। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से युवा छात्र-छात्राओं को ऐसे ही समाज की रचना के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है और वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान से अर्जित सुख-सुविधाओं को अशिक्षित एवं साधनहीन लोगों तक पहुँचाने का यह एक सशक्त माध्यम सिद्ध हो रहा है।

राष्ट्रीय सेवा योजना भारत सरकार की "अनुभूत आवश्यकता है", जिसने राष्ट्रीय सेवा योजना की आधारशिला ही नहीं, वरन् उसके प्रशासनिक ढांचे को कार्यान्वयन के लिए वित्त का प्रबन्ध भी किया है। भारत सरकार, समुदाय तथा

युवा-वर्ग राष्ट्रीय सेवा योजना के सन्दर्भ मे परस्पर बद्ध है ।

राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य

राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रमुख उद्देश्य शैक्षिक है और इस उद्देश्य की पूर्ति का आधार और माध्यम, समाज सेवा है । विद्यार्थियों का स्वविकास ही इस योजना का आधारभूत उद्देश्य है । इसके अतिरिक्त कुछ उद्देश्य इस प्रकार हो सकते है—

(1) लोगों के साथ मिलकर कार्य करना;

(2) समाज के किसी वर्ग-विशेष की 'अनुभूत आवश्यकता की पूर्ति;

(3) विद्यार्थियों में समाज-सेवा के माध्यम से लोकतांत्रिक नेतृत्व, कार्यक्रम संरचना और विकास के क्षेत्रों में निपुणता की प्राप्ति और उसका विकास;

(4) वास्तविकता की आधार भूमि पर कार्य करते हुए विद्यार्थियों तथा समाज के सदस्यों का ज्ञानवर्द्धन;

(5) सृजनात्मक तथा रचनात्मक कार्यो में विद्यार्थियों को प्रवृत्त करना;

(6) विद्यार्थियों मे आत्मानुशासन की भावना को जगाना;

(7) शिक्षा जगत् (विशेष रूप से विद्यार्थी एवं शिक्षक वर्ग) में परस्पर घनिष्ठता, प्रेम और सद्भावना जागृत करना ।

समाज सेवा का मतलब मात्र यह नहीं है कि जयपुर शहर या किसी और शहर के छात्र किसी गांव में जाकर वहां की गलियां साफ करदें या नालियो की सफाई करदें । शिविरार्थियों का कार्य तो मार्ग प्रशस्त करना, कार्य का महत्त्व बताना तथा नये-नये ढंग सुझाना ही है । एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक कार्य में उस क्षेत्र के निवासियों की सहायता अत्यन्त आवश्यक है । इस सहायता एवं सम्पर्क के अभाव मे यह सब समाज सेवा योजनायें नहीं कहलायेंगी, बल्कि कामचोर बनाने वाली योजनायें कहलायेगी ।

जहाँ तक सम्भव हो एन. एस. एस. के शिविर बहुत दूर नहीं लगने चाहिये । केवल राष्ट्रीय संकट, जैसे बाढ़ या अकाल मे सहायता के लिए ही दूर-दूर शिविर आयोजित किये जा सकते है । इसी सन्दर्भ मे सुबोध महाविद्यालय द्वारा भी 'युवा अकाल बनाम' के अन्तर्गत एक शिविर चाकसू में लगाया गया था जिसकी अवधि 27 दिन की थी । यह शिविर अत्यन्त सफल रहा ।

हमारे महाविद्यालय के छात्र इस योजना के अन्तर्गत हो रहे कार्यक्रमों मे बड़े ही उत्साहपूर्वक सक्रिय भाग लेते आ रहे है । अभी तक कई शिविरों का आयोजन किया जा चुका है और ये शिविर चाकसू, सांगानेर, वाटिका एवं कुंडा ग्रामों में सफलता-पूर्वक आयोजित किये जा चुके हैं । इसके अलावा जयपुर शहर में इन छात्रों द्वारा दो बार नागरिक सुरक्षा का प्रदर्शन भी किया जा चुका है जिसको हजारों लोगों ने देखा और उसकी सराहना की है ।

अन्त में मैं तो यही कहूंगा कि आज राष्ट्रीय सेवा योजना की सफलता के लिए प्रत्येक युवक को जागरूक करने की परम आवश्यकता है। छात्रों को तथा समाज को इस योजना का महत्त्व बताना नितान्त जरूरी है । इसके लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता है ।



भूमिहीनो मे फालतू भूमि का वितरण करने के लिए पूरे उत्साह से काय किया जा रहा है। मुद्रा-स्फीति रोकने सबधी हमारी नीति को जारी रखा जा रहा है। विदेशी मुद्रा साधनों के प्रति हमारा दृष्टिकोण उचित रूप से सन्तोषजनक है। आवश्यकता के अनुसार आयात का प्रबन्ध किया जा रहा है ताकि पर्याप्त सप्लाई बनी रहे। राज्य सरकारो से पहले ही कह दिया गया है कि वे मूल्य सूची टागने और भण्डार सबधी सूचना देने के लिए व्यापारियो को सलाह दें। जमाखोरो और नियमो का उल्लघन करने वालो को कडा दण्ड दिया जा रहा है। वस्तुओ के मूल्य गिरने की प्रवृत्ति भी दिखाई दे रही है। अधिक कृषि और उत्पादन के लिए जल और विद्युत की महत्त्वपूर्ण भूमिका के माध्यम से पूरा प्रयास किया जा रहा है। बिजली की स्थिति मे पहिले से सुधार हुआ है। हमारे देश मे लोगो को रोजगार देने के सबध मे कृषि के बाद हाथकरघा उद्योग का दूसरा स्थान है। अत बुनकरो को उचित दाम पर आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई करने के लिए हाथकरघो के लिए अलग से एक विकास आयुक्त की नियुक्ति की जा रही है और बुनकरो को और अधिक सुरक्षा प्राप्त की जा रही है। कारखाना क्षेत्र मे नियन्त्रित कपडा योजना मे सुधार किया जा रहा है ताकि धोतियो, साडियो और कपडो की किस्म मे सुधार हो और इनको देहाती और शहरी क्षेत्रो मे दुकानो के माध्यम से बेचा जा सके। खाली तथा अतिरिक्त भूमि का समाजीकरण करने के लिए कानूनी कदम उठाये गए हैं जिसमे राष्ट्रीय हितो की हानि भविष्य मे न हो सके तथा भूमि के मूल्यों मे सौदेबाजी बन्द हो जाय। कर की चोरी के अपराध को बिल्कुल बन्द करने के लिए कठोर कदम उठाये गये हैं। शिक्षा के क्षेत्र मे एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया गया है। सभी स्कूलो, कॉलेजो और विश्वविद्यालयो के विद्यार्थियो को पाठ्य पुस्तकें और कापियां आदि उचित मूल्यो पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है तथा पुस्तक-कोष, अल्प-बचत-योजना, सचयिका, छात्र सहायता कोष आदि की स्थापना एव व्यवस्था की गई है। इसमे हमारी 'सुबोध' शिक्षण सस्थाएँ अत्यधिक योगदान कर रही हैं तथा किसी से पीछे नही हैं। निर्धन छात्रा तथा छात्राओं को वस्त्र तथा प्रत्येक प्रकार की आर्थिक सहायता दी गई है और यह दृढ़ निर्णय ले लिया गया है कि धन के अभाव मे कोई भी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने से वञ्चित नही होगा। इस प्रकार 'सुबोध' परिवार मे सभी व्यक्तियो की प्रगति के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने की अद्वितीय व्यवस्था की गई है। हमारी मान्यता है कि भारत का भविष्य युवा पीढी के हाथो मे है। अत युवा पीढी देश को सच्चा नेतृत्व प्रदान कर सके और निर्बाध प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके, इसका समुचित प्रबन्ध 'सुबोध' के लिए उपलब्ध है। ❖

अध्यापक जीवन : एक विश्लेषण

—सुभाषचन्द्र पारीक
एम० ए०, बी० एड०
वरिष्ठ अध्यापक (इतिहास)

'अध्यापक' शब्द का उच्चारण करते ही ऋगवेदकालीन गुरु परम्परा का स्मरण अनायास ही हो जाता है जबकि शिक्षण कार्य में रत रहना आश्रम व्यवस्थानुसार जीवन का एक आवश्यक अग तथा अपेक्षित कर्तव्य था । ज्ञानार्जन का उद्देश्य मात्र ज्ञान प्राप्त कर जीविकोपार्जन के योग्य बनना ही नहीं था वरन् व्यक्तिगत, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों की रक्षा, स्थापना एवं वृद्धि करना भी था । तत्कालीन समाज के अध्यापकों की निस्वार्थ भावना, कर्त्तव्यपरायणता एवं वैचारिक-उच्चता आज भी हमारे मन को मोह लेती है किन्तु कोई प्रेरणा नहीं देती, क्योंकि आधुनिक युग के परिवर्तित समाज मे अध्यापक को न तो प्राचीनकाल की भाति सामाजिक संरक्षण प्राप्त है जो उसे नि.स्वार्थ विद्यादान हेतु प्रेरणा देता था, न ही वह राजनैतिक प्रोत्साहन प्राप्त है जो उसकी बौद्धिक गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखता था और न ही वह धार्मिक बन्धन है जो उसे कर्तव्यपरायणता की प्रेरणा देता था । जीवन के चार प्रमुख पक्ष—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से मोक्ष अपनी अस्पष्टता के कारण तथा धर्म अपनी जटिलता के कारण स्वत: ही समाप्तप्राय: से हो गए है । समाज परिवर्तनशील एवं गतिशील है । किन्तु अनुभव स्पष्ट करते हैं कि परिवर्तन और गति की दिशा का झुकाव एवं रुझान जीवन के दो ही पक्षो अर्थात अर्थ एवं काम की ओर ही हुआ है । इस दिशाबोध का मूल प्रेरक तत्व औद्योगिक विकास रहा है जिसने अध्यापन कार्य को सामाजिक कर्त्तव्य के स्थान पर विशेष वर्ग के कर्त्तव्य तक सीमित कर दिया है । अध्यापक एक वर्ग बन गया है ।

आज का अध्यापक वर्ग विभिन्न कुण्ठाओं, अन्तर्द्वन्द्वों एवं मानसिक विकारों का केन्द्र बन गया है । वह एक रचनात्मक विध्वंस को अपने अन्तरंग में संजोये है । किन्तु यह विध्वंस समाज का नही स्वयं उसका अपना है । भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में अध्यापक का स्थान रेत के उस पिरामिड की भांति है जिसके सर्वोच्च शिखर पर वह प्रस्तर बना बैठा है और सम्पूर्ण शिक्षा का ढाँचा उसके नीचे कसमसा रहा है । इसका मूल कारण है अध्यापन कार्य का परिवर्तित स्वरूप । अध्यापन एक व्यवसाय बन गया है तथा अन्य व्यवसायों की भांति धनोपार्जन की एक विधि बन गया है । आज का मध्यम वर्ग अथवा बुद्धिजीवी वर्ग अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए जो सघर्ष कर रहा है, अध्यापक भी उससे किस प्रकार अछूता रह सकता है । वह निम्न- वर्ग मे चले जाने के भय से तथा

उच्च वग के साथ समायोजन बनाए रखने की कामना से प्रत्येक क्षण प्रत्येक अवसर पर समाज मे तिरस्कार, प्रलोभन एव दुराग्रहो का शिकार बनता है। शिक्षा-जगत पर बुद्धिजीवी वग का प्रभाव, हस्तक्षेप एव निर्देशन भी इसके लिए पर्याप्त रूप से उत्तरदायी हैं। ज्ञान पर पूजी का अकुश आज इस सीमा तक बढ गया है कि अध्यापक का वैयक्तिक स्वातन्त्र्य, स्व-चिन्तन एव स्वाध्याय भी डगमगाने लगा है। प्रतिष्ठा की रक्षा एव प्रतिष्ठा प्राप्ति की इच्छा इन दो तत्वो ने शिक्षा के क्षेत्र मे अध्यापक का स्थान गौण बना दिया हैं। आज का अध्यापक अपने थोथे आदर्शों के सहारे, अतीत की दुहाई देकर तथा राष्ट्रनिर्माण का ढोग रचा कर समाज मे अपना स्थान सुरक्षित एव अक्षुण्ण बनाए रखना चाहता है। दूसरी ओर अबुद्धिजीवी वग अन्य समस्त उपादनो को अपने लिए सुरक्षित कर लेने के पश्चात ज्ञान के स्रोतो को भी अपने हाथों मे केन्द्रित कर प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है। अतएव यह अत्यावश्यक है कि राष्ट्रीय स्तर पर निर्णय कर शैक्षणिक उद्देश्यो की सफलता पूवक उपलब्धि प्राप्त करने हेतु, शिक्षा के आधारभूत स्तम्भ अध्यापक वर्ग को अनावश्यक प्रभावो से मुक्त कराने के लिए तथा राष्ट्रीय एकरूपता स्थापित करने के लिए शिक्षा का सभी स्तरो पर राष्ट्रीयकरण हो।

पुनश्च अध्यापको के कतव्यो की महत्ता को ध्यान मे रखते हुए एक समान आचार सहिता का निर्माण कर उसे यथासम्भव शिक्षा के सभी स्तरो पर लागू किया जाए। आज साधारणत अध्यापक की समस्त चारित्रिक एव नैतिक गुणो का अपेक्षा की जाती है जिनका सामान्यत समाज में अभाव है। अध्यापक की दुर्बलताओं की भरसना की जाती है, उसे मानव समाज मे रह कर देवता बनने का उपदेश दिया जाता है। इमसे उसके मन मे खिनता, उदासीनता एव अन्यमनस्कता का प्रवाह होने लगता है जो स्वय शिक्षक, समाज व सामाजिक मूल्यों के लिए घातक है। इसके निराकरण के लिये जहा एक ओर अध्यापक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति मे सुधार करना आवश्यक है वहा दूसरी ओर अध्यापन कार्य मे अनिच्छा पूवक किन्तु परिस्थितिवश प्रविष्ट होने वाले व्यक्तियो पर प्रतिबन्ध लगाया जाना आवश्यक है। योग्य, उत्साही एव स्वप्रेरित —ऐसे व्यक्तियों को ही इस कार्य हेतु प्रविष्ट किया जाए जो शिक्षा को व्यवसाय के स्थान पर कत्तव्य समझ कर अपना सकें। प्राय शिक्षा जगत मे ऐसे असख्य व्यक्ति मिल जायेंगे जो उपाधिया प्राप्त करने मे लगे रहने के पश्चात कोई अन्य उपयुक्त व्यवसाय प्राप्त न कर सकने के कारण अपनी उपाधियो के आधार पर अध्यापक बन जाते हैं। उपयुक्त छात्रो को अध्ययन काल मे ही अध्यापन कार्य हेतु उचित निर्देशन देना तथा परिपक्व हो जाने पर नियुक्त करना आवश्यक है जिसे सुनियोजित एव प्रभावशाली ढग से केवल सरकार ही कर सकती है। इस सन्दभ मे वतमान शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत अध्यापको की नियुक्ति के सम्बन्ध मे व्याप्त विरोधाभासो एव असगतियो पर भी दृष्टिपात कर लेना अनुपयुक्त न होगा। आज विभिन्न प्रशासकीय एव कार्यालय कर्मचारियो के पदो पर प्रतियोगी परीक्षाओ के माध्यम मे नियुक्तिया की जाती है जबकि अध्यापकों की नियुक्तियो मे यह प्रक्रिया नही अपनायी जाती है। जहा अन्य पदों के लिए उपाधिया को योग्यता के मानक मापदड के रूप मे स्वीकार नही किया जाता है, वही अध्यापक के पद के लिए इन्ह ही उपयुक्त व मानक मापदड के रूप मे स्वीकार कर लिया जाता है। क्या इसका यह अथ नही हुआ कि अन्य पदो के लिए तो योग्यता की आवश्यकता है किन्तु अध्यापक के लिए नही? क्या विश्वविद्यालयो की उपाधियां अध्यापन कार्यों के लिए तो उपयुक्त हैं किन्तु अन्य

कार्यो के लिए नहीं ? यदि हम उपाधियों को योग्यता के वास्तविक मूल्यांकन का आधार मानते है तव यह विरोधाभास क्यों ? और यदि हम इन्हें मूल्यांकन के आधार के रूप में स्वीकार नहीं करते है तव इन्हें प्रदान करने की उपयोगिता ही क्या है ? क्यों नही उपाधियां प्रदान करने की प्रणाली को ही समाप्त कर दिया जाये ? ऐसा करने से एक तो शिक्षा पर अनावश्यक व्यय भार मे न्यूनता लाना सुलभ हो सकेगा दूसरे उपाधियों के प्रति व्याप्त सामान्य मोह को समाप्त किया जा सकेगा तथा शिक्षा प्राप्ति का आधार दक्षता एवं योग्यता अर्जित करना सम्भव हो सकेगा । सारांश मे हमें अध्यापको की नियुक्ति सम्बन्धी प्रणाली एव उससे सम्बन्धित शंकाओ पर पुनर्विचार करना आवश्यक है ।

पुन: आज के अध्यापक वर्ग की एक विकट समस्या ज्ञान का क्रमिक ह्रास है । विद्यालय स्तर तथा इससे सम्बन्धित समस्त स्तरो पर अध्यापक का सचित ज्ञान समय की गति के साथ-साथ स्थिरता को प्राप्त करता चला जाता है । उसके ज्ञान का विस्तार उससे सम्बन्धित कक्षाओं के पाठ्यक्रम एवं विषय वस्तु तक सीमित हो जाता है । यही कारण है कि उसे स्वयं की योग्यता पर भी अविश्वास होने लगता है । यह अविश्वास हीन-भावना का जनक है । इसका प्रमुख कारण है अध्यापको मे ज्ञान-विस्तार की प्रेरणा का अभाव तथा अध्यापन कार्य के अतिरिक्त कार्यो मे अत्यधिक व्यस्तता । पुन: अध्यापक को अपने कार्य-सम्वन्धी ज्ञान से अधिक ज्ञानार्जन करने के पश्चात भविष्य मे किसी निश्चित लाभ (भौतिक लाभ) की प्राप्ति की कोई सम्भावना नही होती । वुद्धि-क्षय की इस प्रक्रिया को प्रतिवन्धित करने हेतु मेरा दृढ़ मत है कि कम से कम सत्र मे एक वार प्रत्येक अध्यापक को योग्यता-वृद्धि (उपाधियां वृद्धि नही) के अवसर सुलभ कराये जाये तथा निश्चित स्तर तक की योग्यता अथवा दक्षता प्राप्त करने वाले अध्यापकों को आर्थिक अथवा भौतिक रूप से लाभान्वित करके ज्ञान-विकास के लिये प्रेरित किया जाये ।

पुन: अध्यापक के अध्यापन कार्यो के मूल्यांकन की प्रणाली अत्यन्त दोषपूर्ण एवं अस्वाभाविक है । कितनी आश्चर्यजनक बात है कि अध्यापक के कार्यों के मूल्यांकन का आधार दूसरों के कार्य होते है । अध्यापक स्वयं अपने कार्यो के लिए नहीं वरन् छात्रों के कार्यो के लिए उत्तरदायी होता है । यदि अध्यापक पर किसी छात्र विशेष अथवा समूह विशेष को सम्पूर्ण अध्ययन-काल में निर्देशन अथवा अध्यापन का उत्तरदायित्व होता तव तो शायद यह उपयुक्त था कि अध्यापक उसके विकास की असफलता के लिये दोषी होता जैसा कि प्राचीन-काल में एक गुरु एक गुरुकुल की व्यवस्था थी । किन्तु आज जवकि छात्र विभिन्न श्रेणियों में विभिन्न अध्यापकों के सम्पर्क मे रहकर विकसित होता है, समाज व परिवार के दूषित वातावरण का शिकार बनता हुआ प्रगति के चरणो को लांघता है, मात्र उपाधि प्राप्त करने के लिए अनुचित साधनों का उपयोग करने परीक्षाये उत्तीर्ण करने मे नही हिचकता है—तव किसी निश्चित स्तर पर कोई अध्यापक विशेप उसकी असफलता अथवा शैक्षणिक व्यवधान के लिए कैसे उत्तरदायी हो सकता है ? आज जवकि हमारे यहाँ छात्रों को विद्यालयो में प्रवेश देते समय उसकी वास्तविक रुचियों, उसकी मानसिक वुद्धि-लब्धि, उसके द्वारा अर्जित योग्यता का निश्चित एव निष्पक्ष मूल्यांकन की सुविधाये सुलभ नही है अथवा व्यवहार में लायी जाती है तव अध्यापक से यह अपेक्षा किस प्रकार की जा सकती है कि वह प्रत्येक छात्र को निश्चित अवधि में उपयुक्त स्तर तक पहुँचाने में सक्षम हो सकेगा । इसके लिए वर्तमान परीक्षा प्रणाली सर्वाधिक उत्तरदायी है । यदि विभिन्न

सेवाओ के लिए सरकारी, गैर सरकारी अथवा अर्ध सरकारी सगठन व सस्थायें निश्चित उपाधि अथवा योग्यता प्राप्त प्रत्याशी की पात्रता पर सन्देह कर पुन परीक्षा देने के लिए बाध्य कर सकती हैं तब अध्यापक को क्यो नही यह अधिकार दिया जाता है कि वह केवल उन्ही छात्रो को शिक्षा देने का उत्तरदायित्व ले जिन्हें वह स्तर के अनुकूल अथवा उपयुक्त अनुभव करता है। ऐसी प्रणाली को स्वीकार करने व व्यवहार मे लाने मे कुछ कठिनाइया अवश्य आ सकती हैं किन्तु यह असम्भव नही। साराश मे अध्यापक के कार्यो के उचित एव निष्पक्ष मूल्याकन के लिए उपाधिया का शिक्षा से विच्छेद करना, तथा दायित्वों के साथ-साथ अध्यापक के अधिकारो का भी विस्तार करना आवश्यक है।

अन्त मे वर्तमान परिस्थितियो मे जबकि हमारा देश व राष्ट्र परतन्त्रता व स्वतन्त्रता के सक्रमण काल की सीमाओ मे सघपरत होकर प्रगति व विकास की सीढियाँ लाँघने का भरसक प्रयत्न कर रहा है, पुरानी पीढी और नयी पीढी के मध्य का अन्तर बढता जा रहा है। प्रत्येक क्षेत्र मे नैतिकता के सम्मुख प्रश्नचिह्न लगे हैं, यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपनी सम्पूर्ण शिक्षा-व्यवस्था, शिक्षा-प्रणाली तथा शैक्षिक उद्देश्यों पर पुनर्विचार कर अध्यापक के लिए ऐसी परिस्थितियाँ, सुविधायें तथा प्रेरक स्रोत उपलब्ध करायें जिससे वह राष्ट्र की आकाक्षाओ एव आवश्यकताओ के अनुकूल नागरिकों के राष्ट्रव्यापी निर्माण मे तल्लीन हो सके। राष्ट्र का भविष्य एव वतमान दोनो ही इस तथ्य की अवहेलना नही कर सकते कि आदश नागरिक ही वास्तविक राष्ट्र निर्माता है तथा अध्यापक आदर्श नागरिको के निर्माण म सर्वाधिक योग प्रदान करने म सक्षम ह और रहगा। ●

स्वर्ण-जयन्ती की चकाचौंध में—

कहीं हम इन्हें भुला न दें !

—सन्तोषचन्द्र कर्णावट, एम.ए, एलएल.बी.
उपाध्यक्ष,
श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति

सन् 1925 में पूज्य मुनिराज श्री माधव मुनि जी की सत्प्रेरणा से एक प्राथमिक शाला के रूप में स्थापित श्री जैन सुबोध विद्यालय आज बड़े हर्षोल्लास एव धूम-धाम से अपनी स्वर्ण-जयन्ती मना रहा है तथा इस अवसर पर महाविद्यालय के भूतपूर्व प्राचार्य श्रीयुत् बालचन्द्रजी वैद्य व अन्य महानुभावों का अभिनन्दन भी किया जा रहा है। भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय, राजस्थान व आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल, कतिपय केन्द्रीय मंत्री, राजस्थान के मुख्यमत्री महोदय एवं अन्य मन्त्रीगण तथा अनेक बडे शिक्षाविद्, अधिकारीगण, कवि व शायर तथा गणमान्य नागरिको एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के पदार्पण से न केवल श्री जैन सुबोध महाविद्यालय अपितु उच्च माध्यमिक विद्यालय, बालिका माध्यमिक विद्यालय एवं प्राथमिक शाला भी गौरवान्वित हो उठेगे। इन सबसे भी अधिक गौरव का अनुभव करेगी श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति, जो उपर्युक्त संस्थाओं के अतिरिक्त भी कतिपय अन्य संस्थाओं का सफलतापूर्वक संचालन कर रही है।

केवल जयपुर नगर ही नही बल्कि समूचे राजस्थान की निजी शिक्षण सस्थाओं में सुबोध विद्यालयों का अपना एक विशिष्ठ स्थान है। सामाजिक एवं सरकारी स्तर पर आज जो प्रतिष्ठा एवं सम्मान सुबोध शिक्षण-संस्थाओं को प्राप्त है, उसके इतिहास पर यदि हम दृष्टिपात करे तो अनेक ऐसे अध्यापकों के चित्र हमारे स्मृति-पटल पर उभर कर आते है, जिनकी सेवाओं को स्वर्ण-जयन्ती के इस पुनीत अवसर पर याद न करना उनके साथ तो अन्याय होगा ही, हम स्वयं अपने साथ भी अन्याय करेंगे। अपने साथ अन्याय, मैं इसलिये कहूंगा क्योंकि हममें से अधिकांश ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा सुबोध विद्यालयों मे ही प्राप्त की है और जीवन के क्षेत्र में आज जो कुछ भी हम है उनकी बुनियाद उन्हीं अध्यापकों द्वारा की गई ज्ञान-वर्षा से सिंचित हुई है।

चूँकि मैंने श्री जैन सुबोध हाई स्कूल में सर्वप्रथम सन् 1947 में तृतीय कक्षा में प्रवेश लिया था, अतः उससे पूर्व के इतिहास के बारे में तो मेरी विस्तृत जानकारी नहीं है तथापि 28 वर्षो की अवधि भी एक संस्था के जीवन में कम नही होती। मुझे अच्छी तरह याद है आज भी मेरे स्कूल जीवन के प्रथम अध्यापक श्री मोहनलालजी माथुर की वह सरल व सादगीयुक्त प्रतिमा, जो उन्होने प्रारम्भ से अंत तक बनाये रखी एव इस विद्यालय की प्रारम्भिक पौध को सीचने मे उन्होंने अपना सारा जीवन ही खपा दिया। वे 'मुंशीजी मा'साब' के नाम से मशहूर थे। कुछ ऊँचा-सा

ढीला सफेद पाजामा, लम्बा कोट एवं सिर पर साफा बाँधे मझोले कद व श्याम वर्ण के उन मुंशीजी मा'साब की कक्षा का प्रथम दिन का यह वाक्य आज भी मेरे कानों में गूंज रहा है — "ऐ लड़को ! दो कापियाँ बनाओ एक घर के लिये दूसरी स्कूल के लिये।" तृतीय कक्षा में व ही हमारे कक्षाध्यापक भी थे और गणित के अध्यापक भी। कक्षा अध्यापक होने के नाते वे हर छात्र को अत्यधिक निकटता से जानने की कोशिश किया करते थे और इस प्रयास में वे अधिकांश छात्रों के अभिभावकों से मिलने स्वयं ही उनके घर चले जाते थे। कितने अध्यापकों में है आज यह आत्मीयता ? मुंशीजी मा'साब ने शायद (?) अपना अध्यापन जीवन इसी संस्था में प्रारम्भ किया था और वे यहीं से रिटायर भी हुए। कहने का तात्पर्य यह है कि उन्होंने अपना सारा जीवन इसी संस्था को अर्पित कर दिया। कभी-कभी हाथ में छोटी-सी बेंत रखने वाले, किन्तु उसका छात्रों की पिटाई के लिये कभी उपयोग न करने वाले उन सौम्य व सरल प्रकृति के मुंशीजी मा'साब को स्वर्ण जयन्ती के इस अवसर पर मेरा शत्-शत् नमन।

मुंशीजी मा'साब की भाँति ही एक और व्यक्तित्व, जो इस समय याद आकर आँखें नम कर रहा है, वह है—श्रीयुत् श्यामनारायणजी निगम का। श्यामनारायणजी मा'साब तो आज भी 'ज्ञान प्रकाश भवन' के हर कमरे से झाँक रहे नजर आते हैं। विद्यालय भवन का कोई हिस्सा, ऐसा कमरा या छत नहीं होगी, जहाँ श्यामनारायणजी ने कक्षा न ली हो। यदि यह भी कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सुबोध विद्यालय में सेवारत होने से सेवा निवृत्ति काल तक जिस किसी भी छात्र ने मिडिल स्तर तक विद्याध्ययन किया, वह श्री निगम साहब द्वारा अवश्य पढ़ाया गया होगा। कायस्थ जाति का वंशानुगत प्रभाव लिये सफेद ढीला पाजामा, बन्द गले का कोट, काली टोपी व गले में मफलर तथा हाथ में छाता अथवा बेंत लिये जब श्यामनारायणजी स्कूल में प्रवेश करते थे तो दरवाजे पर ही नारायण बाबा, कल्याण व छाजूराम यंत्रवत खड़े हो जाया करते थे। छात्रों से पुत्रवत प्रेम रखने वाले (उनके अपना कोई पुत्र नहीं था) निगम साहब जितने सहृदय थे, उतने ही पढ़ाई व अनुशासन के मामले में सख्त भी थे। गणित उनका मुख्य विषय था, किन्तु वे प्रायः अंग्रेजी भी पढ़ाया करते थे। होम वर्क न करने वाले छात्रों की ऊपरी बाँह पर वे चिउंटी भरा करते थे जिससे कभी-कभी तो चमड़ी तक उतर जाया करती थी। मिश्रीमावा व बरफी के लिए मशहूर जयपुर की एक अन्य मिठाई मोटे दाणे निगम साहब की सर्वाधिक प्रिय मिठाई थी। यहाँ तक कि कुछ शरारती लड़कों ने मोटे दाणे का नाम उनको चिढ़ के रूप में प्रयुक्त कर दिया था। यदा-कदा अपने कुछ पेट छात्रों को बाजार भेजकर रेजगारी मंगवाना निगम साहब का एक अन्य शौक था क्योंकि उन दिनों रेजगारी पर एक पैसे से तीन पैसे तक का बट्टा मिला करता था। मुझे याद है, कभी-कभी काम न करके लाने वाले छात्र एक दो पैसा अधिक बट्टे के साथ रेजगारी लाकर देने के बहाने निगम साहब से रुपये लेकर बाजार चले जाया करते थे पारिवारिक जिम्मेदारियाँ अधिक होने की वजह से श्यामनारायणजी मा'साब ट्यूशन किया करते थे। मेरे भी वे दो वर्षों तक घर पर ट्यूटर रहे। मुझे आज यह कहने में गर्व का अनुभव होता है कि उनके द्वारा पढ़ाई गई इंगलिश ग्रामर व ट्रांसलेशन की बुनियाद की वजह से ही मैंने हाई स्कूल, इण्टर मीडिएट व बी०ए० की परीक्षाओं में इंगलिश में प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त किये तथा अधिकतर छात्रों में हिन्दी मीडियम प्रचलित हो जाने के बाद भी मैंने एम०ए० व एलएल०बी० परीक्षाएँ इंगलिश मीडियम से ही पास की। श्यामनारायणजी का सुबोध संस्था एवं उनके छात्रों पर जो उपकार है उसका प्रतिदान शायद हम उन्हें नहीं दे पायें। उस महान् आत्मा

को भी (जो अब इस संसार में नही है) स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मेरा श्रद्धायुक्त नमन ।

एक अन्य अध्यापक, जिन्होने अपना अधिकांश जीवन इसी संस्था की सेवा में खपाया एवं जो सस्था के कण-कण में रम गये थे, वे है श्री लीलाधर जोशी । लीलाधरजी जोशी जैसी व्यवहारकुशलता एवं सादगीपूर्ण जीवनचर्या छात्रो के लिए चरित्र निर्माण हेतु प्रेरणा का कार्य करती थी । वे उन दिनो हमें तकली व चर्खा कताया करते थे । ज्ञान प्रकाश भवन के मुख्य द्वार के बाईं ओर जीने के सहारे वाले कमरे मे एक हाथ करघा लगा हुआ था जिसमे छात्रों को वस्त्र बुनना भी सिखाया जाता था । उस वर्ष मैं पाँचवी कक्षा का विद्यार्थी था—कताई-बुनाई भी एक स्वतत्र विपय था एव उसमे पास होना भी उतना ही आवश्यक था जितना अन्य विषयो मे । साल भर मे छात्रों द्वारा काता गया सूत भी अक प्रदान करने मे मापदण्ड हुआ करता था । मै तकली कातने मे कमजोर था, अतः अधिक सूत नही इकट्ठा हो पाया था । वार्षिक परीक्षा मे अधिक अक प्राप्ति की इच्छानुवश खादी भण्डार से सूत की दो-तीन लच्छियाँ खरीदकर स्वय की अटियो के साथ जोशीजी के समक्ष प्रस्तुत कर दी । जोशीजी की पैनी नजरों ने सूत की बारीकी से फौरन भाँप लिया कि वह मेरा काता हुआ सूत नही था । अतः तड़ाक से एक चाँटा गाल पर रसीद करते हुए बोले, "देखता हूं हरामखोर ! बाजार से खरीदकर लाये सूत से अब कैसे पास होता है ।" पास तो खैर मै हुआ ही, लेकिन कताई विपय मे बहुत कम अक पाने की वजह से कक्षा मे प्रथम की बजाय तृतीय स्थान ही आ पाया । लीलाधरजी के उस थप्पड़ ने भावी विद्यार्थी जीवन मे मुझे सत्य पर चलना सिखाया । जोशीजी अभी हाल मे ही रिटायर हुए है । शिक्षा समिति का उपाध्यक्ष चुने जाने के उपरान्त दो-तीन बार वे मेरे पास अपना सेवाकाल बढ़ाये जाने की प्रार्थना (यद्यपि इस शब्द का उपयोग उनके प्रति धृष्टता है) लेकर आये, किन्तु कुछ तो स्व० बम्ब सा० के कडे रुख एवं कुछ कानूनी बाधाओ के कारण मैं उनकी मदद न कर सका । इस बात का मुझे अभी तक खेद है । जोशीजी ने मुझे जो कुछ दिया उसके लिए उनके प्रति श्रद्धावनत हूँ ।

सुबोध विद्यालय को अपने यौवन के दिनो से लेकर प्रौढावस्था को लगभग पार कर जाने वाली आयु तक अपनी सेवाओ से सिंचित करते रहने वाले अन्य गुरुजनो में श्री राधामोहनलालजी गुप्ता, श्री हरिशकरजी शर्मा एव श्री लक्ष्मण चतुर्वेदी के नामों को हम कैसे भुला सकते है ? उस जमाने मे जबकि कपड़ो के पहनाव के प्रति कोई विशेष ध्यान नही दिया जाता था, हमेशा सूट-बूट मे रहने वाले श्री राधामोहनलालजी विद्यालय मे सर्वाधिक स्मार्ट अध्यापको में गिने जाते थे । स्वभाव से रिजर्व श्री गुप्ता का छात्रो पर अत्यधिक दबदबा था, जो अभी तक कायम है । अपने विषय के माहिर श्री गुप्ता का अपना एक अलग कामर्स रूम हुआ करता था । वह स्टॉफ रूम मे न मिलकर प्रायः कामर्स रूम मे ही मिला करते थे । स्काउट टीचर व गेम्स इन्चार्ज के रूप मे सुबोध विद्यालय को दी गई श्री गुप्ता साहब की सेवाये स्तुत्य है । उनकी प्रेरणा व देखरेख मे वर्षो तक सुबोध विद्यालय ने फुटबाल, वालीबाल व बैडमिंटन एव खेलकूद प्रतियोगिताओ तथा स्काउट जम्बूरियो मे अनेक पुरस्कार प्राप्त किये । आज भी श्री गुप्ता एन०एस०एस० जैसी प्रवृत्तियो मे सलग्न है एव महाविद्यालय का नाम ऊचा करते रहने के लिए प्रयत्नशील हैं । वाणिज्य का विद्यार्थी न होने के कारण यद्यपि मुझे श्री गुप्ता का छात्र रहने का अवसर तो नही मिला किन्तु उनके सौम्य व्यवहार, अनुशासनप्रियता एवं संस्था के प्रति समर्पित सेवा भाव से मै प्रारम्भ से ही अत्यधिक प्रभावित हू एव उनके प्रति श्रद्धावत नमन करता हूं ।

मेरी याददाश्त के अनुसार श्री हरिशकरजी 1948 मे विद्यालय की सेवा मे आये थे और तब

मे लगातार अपनी विद्वतापूर्ण सेवाओं से संस्था को लाभान्वित करते आ रहे हैं। पुस्तक लेखन के क्षेत्र म निरंतर कार्यरत रहकर एवं और जहाँ उन्होंने हजारों छात्रों को लाभप्रद पाठ्यसामग्री प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर स्वय का एव सुबोध महा-विद्यालय का नाम भी गौरवान्वित किया है। इतिहास एव राजनीति विषय मे एम०ए० की डिग्री प्राप्त श्री शर्माजी की स्वष्टवादिता एव वाकपटुता ने उनके छात्रों पर स्थाई प्रभाव छोडा है। आज जब कभी वे मुझे 'आप' कह कर सम्बोधित करते हैं, तब बरबस मेरे मुँह मे निकल पडता है कि 'आप से सम्बोधित कर मेरे गुरु भाव म कमी मत कीजिये, सर।'

वतमान मे सुबोध उ० मा० विद्यालय के प्रधानाध्यापक पद पर काय कर रहे श्री लक्ष्मण चतुर्वेदी के गाँधीवादी रहन-सहन, सरल व सौम्य व्यवहार, निश्छल व्यक्तित्व एव अध्यापन के प्रति ईमानदारी ने इस विद्यालय मे उनके 25 वर्षों के सेवाकाल मे सहस्रों विद्यार्थियों पर जो अमिट प्रभाव छोडा है, उसका मूल्याकन कर पाना कठिन है। श्री चतुर्वेदी मेरे अध्यापक रह हैं और मेरे हृदय मे आज भी उनके प्रति अटर्पाधिक श्रद्धा है, जो हमेशा बनी रहेगी। रिटायरमेन्ट सम्बन्धी कानूनी बाध्यताओं के कारण सम्भवत हमे बहुत अधिक समय तक उनकी सेवायें प्राप्त न हो सकें फिर भी उनका मार्ग-दर्शन विद्यालय को बराबर मिलता रहेगा, यह आशा तो की ही जा सकती है।

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर उल्लिखित गुरुजन तथा उन सभी अध्यापक महानुभावों के प्रति पुन श्रद्धा से शत् शत नमन, जिनकी दीर्घ-कालीन सेवाओं से हमारी शिक्षण संस्थाएँ सिंचित, पोषित एव विकसित होती रही हैं।



परम्परागत नारी जीवन विकास की ओर

—अखिलानन्द शर्मा
व्याख्याता–समाजशास्त्र विभाग

संसार की रचना से आज तक नारी पुरुष के लिए एक समस्या रही है पर आज वह स्वयं के लिए एक समस्या बन गई है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था के इतिहास मे नारी की स्थिति एक लम्बे समय से विवाद का विषय रही है। 'आखिर वह चाहती क्या है ?' प्रश्न आज भी पुरुष के समक्ष केवल प्रश्न चिह्न ही लेकर खड़ा है। फ्राइड की वह नारी जिस पर तीस वर्ष तक शोध कार्य करने के पश्चात् भी फ्राइड का कथन था कि "नारी में न्याय की भावना बहुत कम होती है क्योंकि उसके मस्तिष्क मे ईर्ष्या भरी हुई है।"

सामाजिक परिस्थितियो एवं समस्याओं का अध्ययन करते समय प्रायः हम या तो पूर्व विचार पक्षपात व भावनाओं से प्रभावित हो जाते है या फिर विदेशी सिद्धान्तों, मान्यताओं और मूल्यो से। फलतः समय, स्थान व परिस्थिति में परिवर्तन होने के कारण हमारे निष्कर्ष भी गलत, काल्पनिक और तथ्यों से परे होते है। यहां हमारा प्रयास इस दृष्टिकोण से दूर रहकर वास्तविक स्थिति से ही अपने आपको सम्बन्धित करने का रहा है। इस तथ्य पर आश्चर्य किया जाता है कि एक लम्बे समय तक समाज सुधार आन्दोलनों के दौर से गुजरने के बावजूद आज की भारतीय नारी जहां की तहां ही क्यों कर खड़ी है ? यह आश्चर्य भारतीय सामाजिक संगठन की वैज्ञानिक जाँच के अभाव का ही सूचक है।

वैदिक काल की 'जाया' उत्तर वैदिक काल की 'साध्वी' एवं भिक्षुणी', धर्मशास्त्र काल की 'याचिका' मध्यकाल की 'सेविका' अग्रेजों के आते-आते 'पर्दे की बीवी' आज स्वतन्त्र काल मे अपने अधिकारो के प्रति सजग हो अनावृता के रूप मे अपना स्थान बनाने के लिए प्रयत्नशील दृष्टिगोचर होती है। पौराणिक कथाओ से स्पष्ट हो जाता है कि मध्यकाल मे न केवल उत्तराधिकार मे नारी को प्रतिवादी माना गया है अपितु समूची आक्रमक शक्ति से नारी को समाप्त करने की साजिश की गई है। जन्म लेते ही कन्याओं का वध करने की दुष्प्रवृत्ति कही वे 'कुल कलकिनी' न बन जाय। विधवा होने पर प्राचीन युग ने उन्हे अग्नि की भेंट चढ़ाया और 'डाकनियो' के रूप मे उन पर निर्मम अत्याचार किये। यूरोप जिस समाज संगठन और उसके आर्थिक व धार्मिक आधारों को ईसा से 600 वर्ष पूर्व ही तिलाजलि दे आया, उसे हम आज भी सीने से चिपकाये हुए है। 'आधुनिक समाजवाद' में भी 'आदिम साम्यवाद' की धरोहर आज हमारे पास ज्यों की त्यों सुरक्षित है। परिवर्तित परिस्थितियो से समझौता कर आज भी समाज व सामाजिक प्रथाओ के अस्तित्व व स्थायित्व के नाम पर हम पुरानी लकीर पीट रहे हैं। भारत मे पुनर्जागरण अभियान पुरातनवादी व पोगापन्थी आदर्शो का औचित्य सिद्ध करने का एक प्रयास मात्र ही तो रहा है। रामायण और

महाभारत काल की इस भूमि के समाज का सगठन, रीति रिवाज मान्यताओ और धारणाओ का विश्लेषण तथा उनके बीच खडी मूक नारी की स्थिति का प्रश्न आवश्यक है। सामाजिक सगठन की इस पृष्ठभूमि मे आर्थिक व सामाजिक दृष्टिकोण से यदि हम देखें तो नारी का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व हमे दिखाई ही नही देता। जिस घर व जिस आगन मे पलकर वह बडी होती है वही वहा का अनिवार्य अग न होकर 'पराई' मानी जाती है। ऐसी कितनी 'पराई' पति के घर को अपना बनाने मे सफल हो पाती हैं? यह उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर कम तथा उनके पिता की आर्थिक क्षमता और सम्पन्नता पर अधिक निर्भर करता है। उसका समाप्त प्राय स्वतन्त्र अस्तित्व पिता से पति मे समाहित हो जाता है और फिर भी वह 'पराई' ससुराल मे 'पर' ही समझी जाती है। उसका उस नये घर मे 'समायोजन' मजबूरी के मानस से ही होता है। उस पराई' और 'पर' का किसी घर मे कोई अधिकार नही। अभी हाल के उत्तराधिकार, तलाक और गर्भपात के अधिकारो को सामाजिक मान्यता प्राप्त करने मे और कितना समय लगेगा, कहा नही जा सकता, पर आज तो इन्हे प्रभावहीन ही माना जा सकता है।

भारत की नारी असन्तुष्ट है आज अपनी स्थिति से, और 'नई स्थिति' की खोज म भटक रही है। यह बात पिछडे हुए ग्रामीण क्षेत्र या मध्यम-वर्गीय पारम्परिक परिवारो पर चाहे लागू न हो पर नगरा का चकाचौंध मे पली बुद्धिजीवी कहलाने वाली महिलाओ के सम्बन्ध मे यह निर्विवाद सत्य है। किसी युग मे भारतीय नारी की स्थिति पशु या दासी से बदतर थी। वह एक ऐसा वर्ग था जो श्रम तो करता था पर उसे अपने श्रम के प्रतिफल का उपभोग करने का अधिकार नहीं था। उस समय की धार्मिक व सामाजिक धारणा ही कुछ ऐसी थी। बहुत समय तक शिक्षा नारी के लिए अनावश्यक मानी गई तथा अविवाहित होने पर पिता, युवावस्था मे पति और वृद्धावस्था मे पुत्र ही उसका सरक्षक रहा है। उसका जन्म केवल 'पत्नी' और 'माँ' की भूमिका के लिए हुआ है। विवाह को जाति, वर्ग, वर्ण, अन्य निषेधो एव माता-पिता के अधाधुन्ध अधिकारों के पजे ने ही नहीं जकडे रखा है, आर्थिक स्थिति ने भी इस क्षेत्र मे अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। कही भी और कभी भी, जब भी और जहा भी इन सामाजिक व धार्मिक बन्धनो को तोडने का प्रयास नारी द्वारा किया गया, उसे कलकिनी, पथभ्रष्टा एव कुलटा की उपाधिया से सबोधित किया गया है। विवाह से पूर्व या समकालीन यौन सम्बन्धो की सजा कठोर ही सुनाई गयी है।

परन्तु इधर गत कुछेक वर्षों से इस क्षेत्र मे क्रान्तिकारी परिवर्तन के सकेत हमे दृष्टिगत हो रहे हैं। पश्चिमीकरण, लौकिकीकरण और जातीय गतिशीलता के बढते हुये चरणो ने जहा इस क्रान्ति का मार्ग-दर्शन किया है वहाँ स्त्रियो का शिक्षा की ओर बढता हुआ रुझान, तीव्र नगरीकरण व औद्योगीकरण के साथ स्त्रियो का आर्थिक क्षेत्र मे प्रवेश, सयुक्त परिवार का विघटन, सामाजिक अधिनियम, बाल-विवाह, दहेज–प्रथा निषेध एव अन्तर्जातीय विवाहो को प्रोत्साहन ही नहीं—परिवार नियोजन, गर्भपात आदि के प्रति बदलता हुआ सामाजिक दृष्टिकोण स्त्रियो की स्थिति मे परिवर्तन लाया है। पर यदि खेद का विषय हो सकता है तो वह यह कि इस परिवर्तन की परिधि अतीव सकुचित व सीमित है बाकी का समाज अभी अछूता-सा दूर, मौन खडा-खडा यह सब देख मात्र ही रहा है। परन्तु इस तबके ने दूसरे परम्परावादी वर्ग के लिए एक रास्ता अवश्य खोल दिया है जिस पर भविष्य में वह अग्रसर हो सकता है।

पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित उच्चवर्गीय मिशिन स्कूल या कानवैन्ट शिक्षा पद्धति में पली लडकियां आज एक उच्च स्थिति के चिह्न रूप में खडी है तथा इस पद्धति मे शिक्षित लड़कियां केवल 'व्यक्तिगत अभिव्यक्ति' के रूप मे मानी जा सकती है। जैसे-जैसे ये बडी होती है, पुरानी पीढ़ियों और रूढ़ियों को चेतावनी सी देती प्रतीत होती है। विलम्ब विवाह ने लड़कियों को उच्च शिक्षा की ओर धकेला है जिससे वे आर्थिक आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर हो रही है। पर जरा रुक कर सोचना पड़ेगा कि कॉलेजो की ओर बढ़ता हुआ लडकियों का यह वर्ग कब अपनी मन्जिल तक पहुँच पायेगा और उस समय इनकी संख्या क्या रह जायेगी ? निःसन्देह इस प्रक्रिया ने उन्हें परिवार की परम्पराओं और अमानुपिक नियन्त्रणो के बन्धनों को तोड़ने की प्रेरणा अप्रत्यक्ष रूप से दी है, पर उन्हे इस कसौटी पर अपने को खरा उतरना अभी शेष है। बाल-विवाह के विरुद्ध जन-आन्दोलन तथा आर्थिक व सामाजिक दवाव ने संरक्षको को अपनी कन्याओ को उच्च शिक्षा एवं आर्थिक आत्मनिर्भर बनाने के लिए बाध्य किया है और इस उच्च शिक्षा प्राप्ति की लहर ने कन्याओं में अपने व्यक्तिगत अधिकारों के प्रति जागरूकता व चेतना का उदय किया है जिसका प्रभाव भारतीय सस्कृति पर सीधा पड़ा है।

आधुनिक भारत मे एक नया नारी वर्ग जन्म ले चुका है। वह वर्ग, जो अस्तित्व की नई राह की खोज मे अग्रसर हो रहा है। जहाँ एक ओर नारियों में शिक्षा के प्रसार ने उनमे आर्थिक स्वावलम्बन को जन्म दिया है वहा विवाह का विकल्प भी उनके सामने प्रस्तुत किया है। इस वैज्ञानिक युग मे श्रम बचाने के अनेक विकल्प एवं पति द्वारा घर मे पत्नी के कार्यो मे हाथ बंटाने की प्रवृत्ति ने भी नारी की उन्नति मे सहायता की है, जिससे हमारी संस्कृति में फिर से एक उप-सस्कृति को जन्म मिला है।

आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र मे नारी ने जो कुछ भी प्राप्त किया, विवाह की सस्था पर उसका प्रभाव सीधा पड़ा है। विलम्ब-विवाह, उच्च शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, आदर्श पत्नी और सम्पत्ति एवं तलाक अधिकार और उनके द्वारा नारी की प्रतिष्ठा आदि हमारे विवाह की सस्था को कहां तक प्रभावित कर रहे है, यह एक विचारणीय प्रश्न हमारे समक्ष है। जिनका उत्तर अभी हाल मे किये गये सामाजिक सर्वेक्षणों के निष्कर्षों में हमे प्राप्त होता है।



> श्री जतनमल ढोर इस विद्यालय के भूतपूर्व छात्र हैं। वतमान मे आप जवाहरात का कार्य कर रहे हैं।
>
> —सम्पादक

डाक-टिकट संग्रह

—जतनमल ढोर
भूतपूव छात्र

किसी भी वस्तु विशेष के सग्रह की रुचि एक अच्छा गुण है। रुचि का क्षेत्र बहुत बडा है जैसे—शिकार, चित्रकला, सगीत, खेल, बागवानी, पशु-पालन, वस्तु-सग्रह आदि लाभदायक रुचिया हैं। वस्तु-सग्रह की रुचि आसान व मनोरजक है। सग्रह किसी भी वस्तु का हो सकता है जैसे फोटोग्राफी, चित्रकारी, खिलौने, सिक्के, डाक टिकट, दियासलाई के आवरण आदि। यहा मैं आपको डाक टिकट सग्रह के बारे मे बताऊँगा, क्योकि डाक-टिकट सग्रह मे यह विशेषता है कि इसको निर्धन और धनी, शिक्षित और अशिक्षित बच्चा और वृद्ध सभी कर सकते हैं।

आज छात्रो व युवको मे बढता हुआ असतोष व अनुशासनहीनता का एक मुख्य कारण उनके बेकार समय का रचनात्मक उपयोग करने हेतु साधन जुटा सकना भी है। शिक्षा शास्त्री छात्रो को उनके अध्ययनातिरिक्त व अवकाश के समय मे कार्यानुभव रुचि व रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखने की आवश्यकता पर बल दे रहे हैं। ज्ञान-वर्धन की दृष्टि से डाक टिकट सग्रह की रुचि छात्रो के लिये अत्यन्त उपयोगी व महत्वपूर्ण है।

डाक प्रेषण शुल्क प्राप्ति के प्रतीक मे डाक टिकट रग-बिरगे कागज के टुकडे मात्र ही न होकर प्रचार व ज्ञान प्रसार के उपयोगी साधन बन गये हैं। डाक-टिकट सग्रह के शौक को अग्रेजी में 'फिलेटली' कहते हैं। डाक-टिकटो से विभिन्न देशो की भाषा, कला, पशु-पक्षी, सभ्यता, सस्कृति, इतिहास, भूगोल, विज्ञान व वैज्ञानिक घटनाओ का ज्ञान हमें अनायास ही हो जाता है। इस प्रकार जीवन मे सफलता के लिये जिस सामान्य ज्ञान की आवश्यकता होती है उसको एक डाक-टिकट सग्रहकर्त्ता सहज ही प्राप्त कर लेता है।

प्रारम्भ मे ही आपको डाक-टिकट सग्रह के शौक की ओर प्रेरित होना और सगृहीत प्रत्येक डाक टिकट के पीछे छिपी कहानी को जानने की जिज्ञासा करनी चाहिये। तब आप पायेंगे कि थोडे से समय मे ही देश-विदेश के विषय मे आपने कितना कुछ जान लिया है। उदाहरणार्थ यदि एक किशोर केवल आजादी के बाद निकले भारतीय डाक-टिकटो की ही पूरी जानकारी प्राप्त करले तो उसे देश विदेश के 105 से अधिक महापुरुषो के बारे मे और 85 से अधिक राष्ट्रीय-अतर्राष्ट्रीय महत्त्व के पर्वों, सस्थाओं और सम्मेलनो के बारे मे जानकारी हो जायगी। यदि इस लक्ष्य को ध्यान मे नही रखकर केवल इसे रग-बिरगी चिप्पियो का सग्रह मात्र ही मान लिया जाये तो उम्र बढने के साथ-साथ यह शौक कम होता चला जायेगा और एक स्थिति ऐसी आयेगी जब यह शौक बिल्कुल समाप्त हो जायेगा।

ससार में प्रथम डाक-टिकट ग्रेट ब्रिटेन में 6 मई, 1840 में निकला। भारत में प्रथम डाक-टिकट 1854 में निकला।

डाक-टिकटो को ग्राप ग्रपने मित्रो से, पत्र-मित्र बनाकर, डाक-टिकट विक्रेताग्रों, घर की डाक, व विनिमय (Exchange) द्वारा प्राप्त कर सकते है।

प्रारम्भिक सग्रहकर्त्ता के लिए शुरू मे सभी देशों के डाक-टिकट संग्रह करना उत्तम है। क्योंकि सीमित देश या सीमित प्रकार के डाक-टिकट सग्रह करने से चारो ग्रोर का ज्ञान नही वढ सकता है। बाद में संग्रह वढ़ने पर ग्रपने सग्रह को सीमित किया जा सकता है।

ग्रतः डाक-टिकट दो प्रकार से सग्रह कर सकते है प्रथम सिर्फ एक देश के ग्रथवा कुछ देशो के समूह जैसे—ब्रिटिश कामनवेल्थ, लेटिन ग्रमेरिका, एशियाटिक देश, भारत ग्रौर भूतपूर्व देशी रियासते।

यदि ग्राप भारत देश का संग्रह करना चाहते है तो प्रकाशित टिकटो की सूची प्राप्त कर लेनी चाहिये। उसके पश्चात् खुले पन्नो वाला टिकट एलबम ले जिसमे प्रकाशन की दिनाक से क्रमवार टिकट लगाए जा सके। टिकटो के ऊपर प्रकाशन का ग्रवसर, दिनाक, लिखे जाने चाहिये। एलबम मे टिकट लगाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि टिकट पास-पास न लगे हो, बल्कि दूर-दूर हो। एलबम मे टिकट लगाने के लिए विशेष प्रकार की चिप्पियां (हिन्ज) काम मे ले। इन हिन्जेज के लगाने से यह सरलता रहती है कि डाक-टिकट उखाड़ते समय न तो कोई कठिनाई होती है ग्रौर न टिकट ही खराब होता है। एलबम मे गन्दे, फटे हुए ग्रथवा गहरी मोहर लगे हुए डाक-टिकट नहीं लगाने चाहिये।

डाक-टिकटो के सग्रहण का दूसरा तरीका किसी एक विशेष विषय के डाक-टिकटो का सग्रह करना जैसे—जानवर, चिड़िया, तितली, यातायात के साधन, फूल, मानव की चन्द्रमा यात्रा, रेडक्रॉस, महापुरुष ग्रादि।

कुछ व्यक्ति डाक-टिकट बिना काम मे लिये हुये (Mint Stamps) काम में लिये हुए (Used Stamps), प्रथम दिवस लिफाफा (First day cover) व फोल्डर (जिसमें टिकट के प्रकाशन का ग्रवसर लिखा रहता है) इकट्ठे करते है। पाश्चात्य देशो मे डाक-टिकट सग्रह केवल विद्यार्थी वर्ग के लिए ही उपयोगी नही समझा जाता वल्कि सभी ग्रायु तथा वर्गों के स्त्री-पुरुष इस सग्रह मे दिलचस्पी रखते हैं। ग्रमेरिका मे लगभग 10% जनता टिकट सग्रह करती है। भारत में कुछ वर्षो से लोगो की डाक-टिकट सग्रह मे रुचि बढी है वह भी केवल विद्यार्थी वर्ग मे, इनका क्या प्रतिशत है? कुछ कहा नही जा सकता, लगभग नही के बराबर। इसका सबसे मुख्य कारण यह है कि केवल जन-साधारण ही नही शिक्षित समाज भी इस सग्रह की उपयोगिता से ग्रनभिज्ञ है। ग्राप किसी भी ग्रायु के हो, डाक-टिकट सग्रह ग्राज से ही प्रारम्भ कर दीजिये। डाक-टिकट सकलन मे ग्रायु का कोई बन्धन नही है, क्योंकि इससे समय का सदुपयोग होता है, लगाया हुग्रा पैसा सुरक्षित रहता है ग्रौर सामान्य ज्ञान मे वृद्धि होती है।

ग्रमेरिका के वदीगृहो मे बंदियों को डाक-टिकट सकलन के प्रति उत्साहित किया जाता है, जिससे इनके मनोविज्ञान पर स्वस्थ सस्कार पड सके। छोटे से देश कुवेत की सरकार ने ग्रपने देश-वासियो को नया नारा दिया है जो डाक-टिकट संकलन शिक्षा ग्रौर ग्रल्पबचत को प्रोत्साहित करता है।

डाक-टिकटो का मूल्य केवल उनकी सुन्दरता या उनके वहुत पुराने होने पर या उनकी मूल कीमत पर नही होता वरन् जो डाक-टिकट जितना दुर्लभ होता है, उसकी कीमत टिकट-सग्रहकर्त्ताग्रो की दृष्टि मे उतनी ही वढ जाती है। कभी-कभी छपाई की भूल के कारण कोई एक-ग्राध टिकट गलत छप जाता है तो डाकखाने की दृष्टि मे यह

एक बडा भारी दोष माना जाता है परन्तु टिकट सग्रह के शौकीन ऐसे टिकट के मुँहमागे दाम देन को तैयार हो जाते हैं ।

छात्रो के जेब खर्च के सदुपयोग की भी एक समस्या है । प्राय छात्र ऊटपटाग खर्चे कर अपनी आदतें और पैसा बिगाडते हैं । टिकट सग्रही द्वारा अपने सग्रह पर किया गया खर्च ठोस बचत व लाभदायक विनियोग (इनवेस्टमेंट) है जो बाद मे ब्याज सहित उसको आर्थिक लाभ पहुँचा सकता है । सन् 1948 मे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की स्मृति मे प्रचलित 10 रुपये के टिकट की कीमत आज 150 रुपये हो गई है । इसी प्रकार सन् 1957 मे चले विश्वविद्यालय शृखला के दस-दस पैसे के टिकट आज एक-एक रुपये मे बिक रहे हैं । इस प्रकार कुछ वर्ष व्यतीत हो जाने पर कुछ टिकटो की कीमत इतनी बढ जाती है कि ब्याज तो क्या पूरे सग्रह पर किया गया खर्च एक टिकट ही दिला सकता है ।

विश्व का सबसे अधिक दुर्लभ डाक-टिकट ब्रिटिश गायना द्वारा सन् 1856 मे जारी किया गया 1 सेंट का टिकट है । विश्व मे ऐसा सिर्फ एक ही डाक टिकट उपलब्ध है जो कि 21 लाख रुपयो मे बिका । भारत का सबसे कीमती दुर्लभ त्रुटिपूर्ण टिकट 1854 मे जारी हुआ, चार आने वाला महारानी विक्टोरिया का टिकट है, जिसमें महारानी का सिर उल्टा छप गया था । इस टिकट की कीमत लगभग 25 हजार रुपया है ।

इस शौक से सम्बन्धित बडे बडे महापुरुषो में स्वर्गीय जार्ज पचम, जार्ज षष्ठ, द्वितीय महारानी एलिजाबेथ, अमेरिका के स्वर्गीय प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट, जनरल करिअप्पा प्रमुख हैं । इस शौक के बारे में यह कहावत प्रसिद्ध है "King of all hobbies and hobby of the kings" शौको का सम्राट और सम्राटो का शौक । ●

रजत-जयन्ती के कुछ स्मृति-चित्र

उद्घाटनकर्ता तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का
विद्यालय के बालचरों द्वारा गार्ड ऑफ आनर

शिक्षा समिति के अध्यक्ष स्व० श्री विनयचन्द्र दुर्लभजी स्वागत भाषण करते हुए
मंच पर राज्य के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री टीकाराम पालीवाल, शिक्षा मंत्री श्री नरोत्तमलाल जोशी
एवम् उपकुलपति डॉ० जी० एस० महाजनी विराजमान हैं।

उपराष्ट्रपति प्रदर्शनी-कक्ष मे

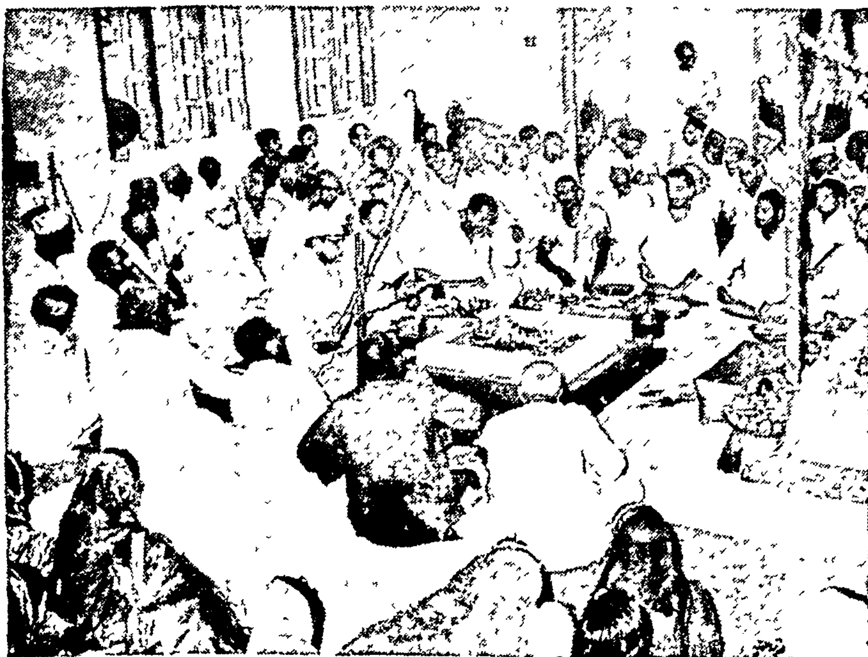


रजत जयन्ती के अवसर पर प्रदर्शनी-कक्ष मे मुख्य अतिथि, तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् छात्र-कृतियो का निरीक्षण करते हुए। साथ मे हैं प्रधानाध्यापक श्री बालचन्द्र वैद्य अव० मंत्री श्री ज्ञानचन्द्र चोरडिया एवम् अध्यक्ष श्री विनयचन्द्र दुगमजी।



सेठ श्री राजमल सुराणा द्वारा ध्वजारोहण

महाविद्यालय के नूतन भवन-प्रवेश के अवसर की कुछ झांकियाँ



भवन प्रवेश से पूर्व हवन-पूजा का एक दृश्य



श्री सुबोध माध्यमिक बालिका ।वद्या।

छात्राएं कलश लिये हुये

नवीन भवन - प्रवेश के अवसर पर

आशीर्वाद समारोह

श्री राजमल सुराणा की अध्यक्षता में

मच पर शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नवलखा,
समाज सघ के अध्यक्ष व मत्री
शिक्षण सस्थाओं के प्रबल पोषक
श्री श्रीचन्द गोलेछा
आशीर्वाद देते हुए





धन्यवाद नवलखाजी !



महाविद्यालय के भूतपूर्व प्राचार्य
श्री बालचन्द वैद्य शिक्षा समिति के अध्यक्ष
श्री सिरहमल नवलखा की तत्परता और
जागरूकतापूर्ण सेवाओं की सफलता
के लिए धन्यवाद देते हुए
पीछे प्रसन्न मुद्रा मे खडे श्री हरिश्चन्द्र वडेर

एक पुरानी याद :—



इण्टर कॉलेज के छात्रों द्वारा
अभिनीत "रण निमन्त्रण"
नाटक का एक दृश्य

प्राथमिक शाला के शैक्षणिक कार्यकलाप :—

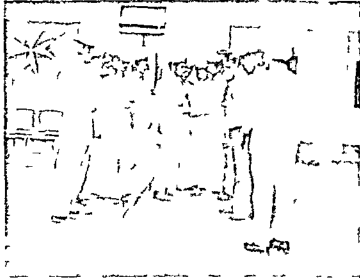


स० अ० सुश्री रेखा माथुर
बालकों को औद्योगिक
प्रशिक्षण देते हुए



माण्टेसरी विभाग के शिशु
शिक्षा भी और खेल-कूद भी
पीछे माण्टेसरी विभाग की
अध्यापिका

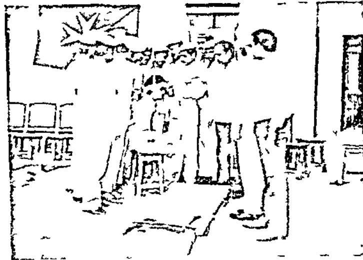
महाविद्यालय रेडक्रास समिति





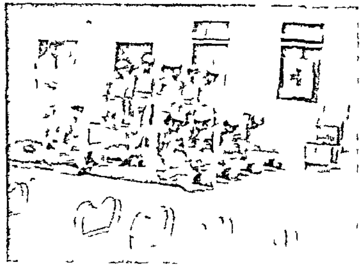
प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए छात्र

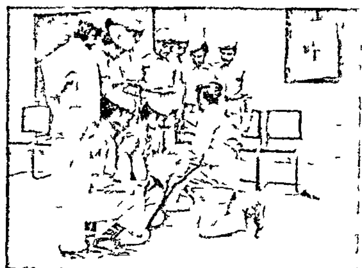


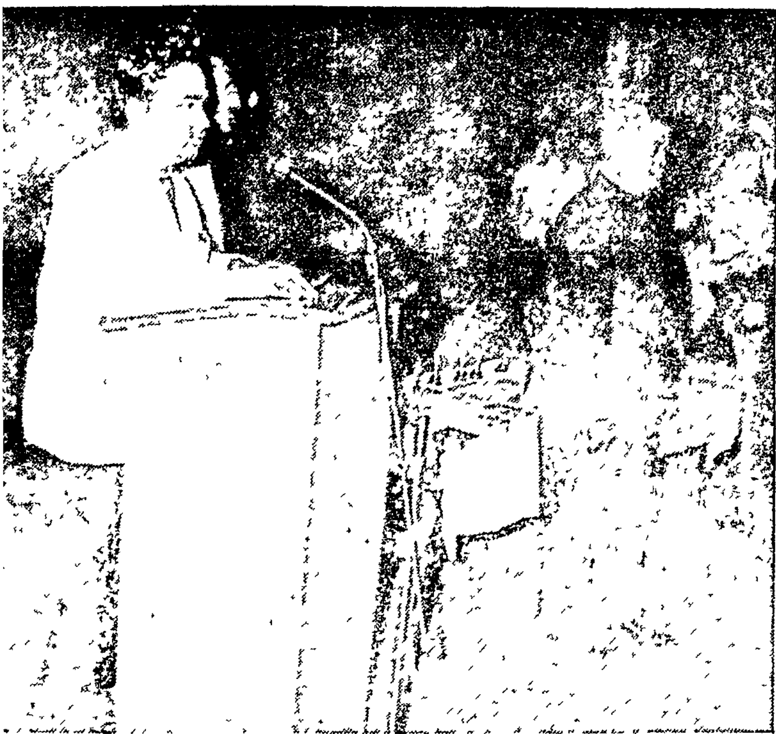


प्राचार्य श्री गोलेछा
व
निदेशक
डॉ० ज्वालादत्त शर्मा
प्रशिक्षणार्थी छात्रों का
निरीक्षण करते हुए

घायलो के तात्कालिक उपचार का अभ्यास करते हुए छात्र







बालिका विद्यालय का वार्षिकोत्सव
रवीन्द्र मंच पर

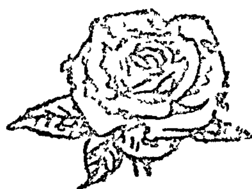


शिक्षा आयुक्त श्री जगन्नाथसिंह मेहता
पुरस्कार वितरित करते हुए



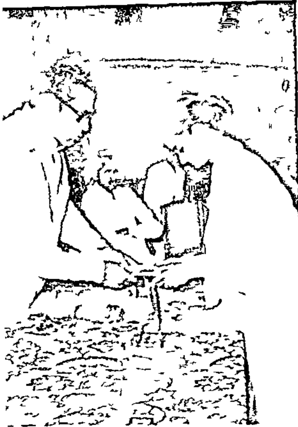


छात्राएँ अभिनय प्रस्तुत
करती हुईं



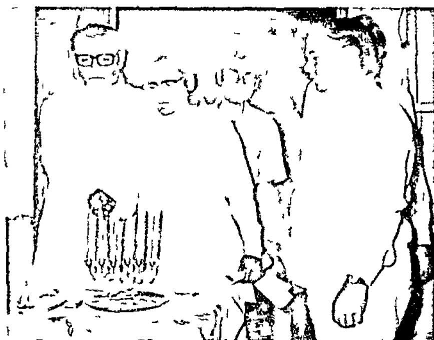


तत्कालीन शिक्षा राज्य मंत्री
श्री जुझारसिंह का
मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत



बालिका मा० विद्यालय के वार्षिकोत्सव की कुछ झलकियाँ

शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नवलखा साहब
से प्रशसनीय कार्यों के लिए पुरस्कार
प्राप्त करती हुई प्रधानाध्यापिका
श्रीमती विजयलक्ष्मी चोरडिया



बालिका विद्यालय द्वारा
लगाई गयी प्रदर्शनी का उदघाटन
करते हुए शिक्षा समिति के
कोषाध्यक्ष
श्री कीर्तिचन्द ढड्ढा



पुरस्कार वितरण समारोह
का एक दृश्य
मंच पर विद्यालय निरीक्षक
श्री नथमल ढड्ढा
श्री घासीलाल शर्मा व शिक्षा
समिति के पदाधिकारीगण

Why Public Schools ?

—R. K. MADAAN
Senior Teacher in English

The other day my niece studying in a Government Primary School returned home jubilantly with a small packet of sweets in her hand. The other children curiously asked her where she had got the packet from. With obvious pride on her face and in an exalted voice she said, "My teacher gave us. Her son has been admitted to St. Xavier School." Later I found that the boy had been admitted two classes lower than the one he was studying in What does this reflect ? Should one call it craze or something else ? Whatever one may term it but the attraction towards public schools and other English medium schools like St. Xavier is a well known fact.

It may be no more than craze for those who can ill-afford to send their children to such a costly school and for those who know little about the school. There are many moneyed people who fall in the second category; for them it is a status symbol. They, in fact, consider it their prerogative. Nevertheless, we cannot ignore a large number of enlightened citizens like doctors, engineers, I.A.S. officers and others of similar cadres in semi-government and private establishments, who not only can afford but also have valid reasons to send their children there; and they send them deliberately.

The attempt to analyse the reasons of attraction reveals an important reason : undoubtedly these schools have quite a high academic standard. The books prescribed, the labour put in by the teachers, the discipline maintained, the facilities provided, efficient administration and general tone of the school—all these factors contribute to the high standard prevailing in most of these schools.

As is expected from a good school, all-round development of the child is the goal of these schools and they strive hard to achieve it. Literary activities, cultural activities and games and sports receive the desired attention and funds from the management and the authorities. Various teachers look after literary and cultural activities while special coaches are appointed for games and sports. Facilities like grassy fields, swimming pools, auditorium, projector, publication of periodical magazines and proper supervision of each group of students playing games and taking part in other activities go a long way towards producing salutary effect on the development of the child. Inter-class competitions

The Approach of Cost Accounting System

—Saini B R
Lecturer in Accountancy & Bus Statistics

The system of Cost Accounting is a boon to the manufacturers, and industries that have to face a cut-throat competition This system guides them in finding ways and means to minimise the cost of their productions The system of Financial Accounting cannot give sufficiently accurate information which is necessary for fixing of prices It is because of the fact that financial accounts deal with the total expenditure and not with the expenditure incurred on each product or unit of service

The terms Costing & 'Cost Accounting are defined by I C W A London as below —

Costing is the technique and processes of ascertaining cost

' Cost Accounting is the process of accounting for cost from the point at which expenditure is incurred or committed to the establishment of its ultimate relationship with cost centres and cost units In its widest usage it embraces the preparation of statistical data the application of cost control methods and the ascertainment of the profitability of activities carried out or planned

The main objects or aims of cost accounting may be summarised as follows —

(1) Ascertaiment of cost,

(2) Cost control i e keeping the costs according to the standards

(3) Collection and representation of such information as is required by the management in making decisions

The main object of costing is to ascertain the cost of goods produced or services rendered For this purpose total cost is divided mainly into three groups viz —

(I) Materials cost (II) Labour cost and (III) Other expenses These are also called the elements of cost and can be defined as follows —

I Material Cost —The cost of raw commodities supplied to and used by a concern

II Labour Cost —The cost of remuneration (wages salaries commissions bonuses etc) of the employees or workers for their works

III Other Expenses —The cost of services provided to a concern and the national cost of the use of its owned

assets. These expenses can be sub-divided into two categories i. e. direct and indirect expenses.

Direct expense is that which can be directly or conveniently allocated to a particular job or product or unit of service. Indirect expenditure is that which can't be directly or easily allocated to a particular job or product or unit of service but which is necessary for the production. For example, when a table is made it can be easily judged how much timber is used and how much money is paid to carpenter i. e. for labour. But in addition to these costs, there are some other expenses you have incurred not only for this purpose but for all the work which is going on. For example the equipments are used, the building is used and the salaries of the clerical and supervisory staff. And this expenditure cannot be allocated easily for a unit of production and service but only on the technical bases. The depreciation of the equipments, rent and depreciation of the building, lighting, salaries etc. can be aportioned. The nature of the direct and indirect expenditure differs from concern to concern.

Direct expenditures are ; (I) Direct materials, (II) Direct labour and (III) Direct expenses or chargeable expenses

Indirect expenditures can be classified according to function as :—

(I) Works or factory expenses;

(II) Office or administrative expenses;

(III) Selling and distribution expenses.

The total direct expenditures (direct materials+Direct labour+Direct expenses) is known as the prime cost or the flat cost.

Prime Cost + Factory expenses = Factory cost or Works Cost.

Factory Cost + Office or administrative expenses = Cost of production.

Cost of production + Selling and distribution expenses = Total cost or cost of sale.

Cost of sale + Desired profit=Selling prices.

Cost Control :—Cost Control means expenses which are incurred on the activity which are kept under check. The Cost Control means not merely that the cost should be low but also that quality of production must be upto the mark.

For this purpose 'Standard Costing' is very useful to the concern. Standard Costing means that the cost of a unit or a number of units is predetermined or forecast for the immediate future period. In this system the cost and quality of materials, labour, and overheads are predetermined with the help of the production engineer, cost accountant, technicians and other experts of production. They decide how much will be paid for materials, labours, & overheads under normal conditions. These standards can be changed in abnormal conditions. After the actual productions these standards are compared with the actuals. If there is a variance in actuals and standards then the cause should be found out i. e. why is it so ? For this purpose the role of cost accountant is more important. He analyses the facts and variances. If the cost is more than the

standard then he should try to know as due to whose mistake it is so If it is due to the workers then they should be penalised if due to supervisors or engi neers, or mismanagement then the proper action should be taken against them If the standard are wrong then these should be revised There are two types of costs —variable and fixed or say controllable and uncontrollable Only the variable cost can be controlled fixed cost cannot be controlled because the nature of fixed cost is payable on the basis of time so it is fixed for a certain period and not for a certain production

Presentation of information and data reguired by the management

Data of the cost of work done is helpful in future planning and decision making So the data of the costs are collected from costing records and provided to the management according to their requirements The decisions made are of various types Some examples are given below —

Fixing of prices under normal or special condition say calculation of tender price Suppose any customer requires the estimated cost of a particular product in that case the costing data are very much helpful From the separate cost classification we can decide as to how much material, labour charges and overheads will be required for that particular product Before calculating estimated prices or tender price the fluctuations in prices of material, labour and overheads should be adjusted i e if the prices of the above elements increase we will also increase the prices in proportion and if the prices have decreased, we will also decrease After calculating estimated cost add the required profit then it gives the estimated price

It is also helpful in determining the priorities of product. Suppose a concern is making two types of products and wants to continue one out of these two, then the question arises which product should be continued In such decision the system of marginal costing is very helpful Under marginal costing system we classify the total cost into two divisions (I) Variable cost and (II) Fixed cost

Variable cost varies with the production while the fixed cost does not vary with the production It is fixed for a certain period or time The variable cost is called the marginal cost If marginal cost is deducted from sales then that becomes the contribution for the fixed costs and profit —

Sales — Variable cost=Contribution
Contribution = Fixed cost + Profit

So out of the two products the one with more cont ibution should be continued because that is profitable But other factors should also be considered viz. supply of materials availability of labour demand of product etc

Make or Buy Decisions —The decision of make is much important For example there are two alternatives for the supply of raw materials before a concern either produce in factory or purchase from market Out of these two alternatives which should be adopted ?

It is natural that the least costing alternative should be adopted. We know how much value we will pay in market and with costing system. We can ascertain that how much cost will be incurred when produced in factory. So if the cost of production is low in comparison to the market price then it should be produced in the factory, otherwise it should be purchased from market.

The system is also helpful in deciding the sale below the cost. For example when you receive any order from a foreign market on a price less than the cost. Ordinarily you can say it is not possible to accept the order, but if the concern has recovered its fixed cost already from the home market, then it can be possible to accept and supply the order below the cost. Again the system of marginal costing will help in such decision.

It is evident now that the system of cost accounting is to help the management in taking many complicated decisions and planning for a bright and prosperous future for their concern.

The above objects cannot be achieved by the system of financial accounts which shows overall profitability of the concern but is unable to supply the information about the particular type of unit or job.

It is not true that costing is helpful to business house only. Costing has a vital role to play in every activity which involves expenditure of money, whether it is in a business house or a charitable concern or a government concern. Costing system plays a vital role in public enterprises also where earning profit is as important as avoiding heavy losses.

Bank Nationalisation —How, Why and What after ?

—MANCHAND JAIN
M Com , M A

In the history of Indian Banking July 19, 1969 was an important landmark On that day 14 major Indian scheduled commercial banks each having aggregate deposits of not less than Rs 50 crores as on the last Friday of June 1969, were taken over by the government of India through an Ordinance called the Banking Companies (Acquisition and transfer of undertaking) Ordinance 1969

These 14 banks were —1 Central Bank of India 2 Punjab National Bank 3 Bank of India, 4 United Bank of India 5 United Commercial Bank, 6 Bank of Baroda, 7 Allahabad Bank 8 Syndicate Bank 9 United Bank of India 10 Indian Overseas Bank 11 Canara Bank 12 Bank of Maharastra 13 Dena Bank and 14 Indian Bank

No foreign bank was included in this list due to their special operational function of foreign exchange

The whole country wholeheartedly welcomed this drastic dicision of the great leader Mrs Indira Gandhi No doubt that it was an economic decision motivated by the politics In that atmosphere the Act was challenged by the interested groups The writ petition was filed by Mr M R Masani M P and leader of the Swatantra Party, Mr Balraj Madhok M P and that time Jana Sangh leader and Dr R C Cooper a shareholder and directors of some banks

Admitting writ petitions challenging the validity of the Ordinance nation alising 14 banks the Supreme Court on July 22 1969 granted an interim stay placing 3 restraints on the government of India (i) that the Union of India will not appoint any board of advisors (ii) that the Union of India will not appoint the Chairman of any bank and (iii) that the Union of India will not give any directions contrary to the provisions of of the Banking Companies Act

The government of India adjusted according to the stay order of the Sup reme Court

In this way with this round of nationalisation almost the entire banking

business came directly in the public sector. The State Bank of India and 7 other banks (now known as subsidiaries of the SBI) had been under government control earlier

Comments on nationalisation : Mr H.V R. Iengar, former governor of R.B.I. said that nationalisation was a "wrong" step which was not going to make a great deal of change in the economic situation in the country

Mr. Ram Nath Poddar, President of the Federation of Indian Chamber of Commerce and Industry called it a "hasty" step.

Dr. C.D. Deshmukh, a former Union Finance Minister said that he favoured social control to nationalisation. He felt that there might not be machinery to give proper direction to the nationalised banks.

Bank employees, depositors, the neglected sector of society, "have nots" and common men backed up this decision.

It is said that it was not an economic decision but political. Sometimes it seems so, particulary because that was the time of internal confrontation inside the Congress Party. But behind this decision, as I think, were so many economic and monetary objectives

The Prime Minister Mrs. Indira Gandhi gave a statement in Parliament on 21st July, 1969. In that statement she cleared the objectives of bank nationalisation.

She said, "Nationalisation of major banks is a significant step in the process of public control over the principal institutions for the mobilisation of people's savings and canalising them towards productive purposes. It is widely recognised that the operation of banking system should be informed by a large social purpose and should be subject to close public regulation".

Mrs. Gandhi emphasised that now the banks would be better placed to serve the farmer and to promote agricultural production and rural development generally.

According to Mrs. Gandhi public ownership will also help in curbing the use of bank credit for speculation and other unproductive purposes.

Other objects of the nationalisation in very brief were :

1. To give banking facilities to common men by geographical spread.

2. To give protection to the interests of bank employees and depositors

3. To provide credit for neglected sector such as : export trade, small scale industries, agriculture and retail traders etc.

4. To develop adequate professional management in the field of banking.

5. To shift the emphasis in granting bank loans from "Credit worthiness of persons" to "Credit Worthiness of purposes".

6. To mobilise deposits in general and from rural areas in particular.

Let us now analyse to what extent the banks have achieved these objectives.

2 Small scale industries	148 45 (8 10)	232 24 (9 69)	262 27 (9 51)	318 63 (10 16)	372 00 (10 79)
3 Road transport operators	6 69 (0 37)	29 34 (1 22)	38 00 (1 38)	48 64 (1 55)	60 00 (1 74)
4 Retail trade and small business	19 22 (1 05)	50 74 (2 12)	59 73 (2 16)	67 11 (2 14)	79 00 (2 29)
5 Professional self employed	0 33 (0 02)	7 79 (0 33)	9 59 (0 35)	14 24 (0 45)	22 00 (0 64)
6 Education	0 46 (0 02)	3 42 (0 14)	4 10 (0 15)	2 93 (0 10)	4 00 (0 12)
TOTAL (1 to 6)	235 58 (12 68)	510 43 (21 30)	595 04 (21 57)	741 71 (23 63)	885 00 (25 68)
Aggregate advances by these banks	1381 60	2325 99	2759 12	3137 11	3446 00

Amounts in bracket is percentage of total credit to neglected sector

Source Commerce July 19 1975

In the case of agriculture and small scale industries not only the amount has increased but the number of borro wers has also increased considerably

On June 1969 the total number of agricultural borrowers was 1,64,481 (1,60 020 direct+4 461 indirect) which rose to 18 38 778 (16 30 127 direct+ 2 08 651 in direct) on July 1974

Except these two very important neglected sectors the banks after nationalisation have shown growth in quantity and quality Before nationalisation we could not even think of it Banks changed their entire credit and investment policy and offered bank credit in different ways to different types of borrowers For example we can list like this —

(a) Consumption loans to small farmers (b) Group loans (c) Financing to Gobar Gas Plants (d) Differential Interest Rate Schemes (e) Credit facilities to Scheduled Castes and Tribes with special concessions (f) Need band consultancy service to exporters (g) Foreign currency loans and (h) Educational loans

(4) Organisation & Management

We see different organisational and managerial changes after nationalisation in banking industry

The job of a branch manager has undergone a change Now he has to combine a variety of skills comprising marketing planning administration communication, personnel and public relations

After nationalisation the active role of economist is increasing and banks

are adopting "Performance Budgeting" as a tool of control.

After the declaration of 20 points economic programme by Prime Minister Mrs Indra Gandhi, the banks are changing their organisation structure by establishing regional rural banks. Separate salary structure for the employees of these banks is also under study.

(5) Social responsibility of banks :

Gone are the days when the banks used to think only about the maximum profit. But now the banks are taking responsibility for the development of society and they are doing for that. After nationalisation banks have changed the orthodox attitude of lending. Banks give credit facilities, nowadays, to beggars, adhivasees, widows, unemployed persons, students for higher studies without security. And banks are taking help from the local authorities for fulfilling their social responsibility.

For assisting persons with meagre means, the banks have set up Multi Service Agencies. Banks now represent a shift from "elite banking" to "mass banking", to promote economic growth with stability so as to ensure social justice, even at the cost of profitability.

Other progressive changes after nationalisation are :—

1. Increasing importance and facilities of training for bank personnels.

2. Development of banking outside India.

3. Increased dealing in government securities.

As regards the negative side of the change the following facts may be listed :—

1. The efficiency of bank employees is decreasing very rapidly.

2. Public dissatisfaction with banks is on increase.

3. Profitability of banks has been decreasing with faster rate because of many reasons, such as :—increasing number of uneconomic branches due to branch expansion policy of banks, decreasing productivity of bank employees, rapid rate of increase of salary of bank employees etc.

4. Unionism in banks is developing in negative side.

5. The salary structure of bank employees has become entirely different from other similar services of state or centre. It is causing dissatisfaction among the employees of other services i.e. Railway, Post Office etc. This change was possible because of the negative approach of sound bank unions and at the same time liberal attitude of bank management.

6. Deposit-credit ratio is becoming higher.

In conclusion we can say, that 6 years are certainly a short period for judging the performance of banks in regard to objectives of bank nationalisation. It takes time to develop new culture, new attitudes and ideas and to reshape policies and programmes

In all these respects banks have done quite a commendable job How ever there are many operational problems and difficulties

Ceratinly we can say that banks are fast undergoing a revolutionary change Banks are fast leaving their traditional roles and are going to new fields of operations In the end I can say that today banks are 'ours' not theirs



A Ray of Love Eludes

You get enough food
To keep you from dying,
You will be hungry all the time
Your life is a long degrdation
Not so poignant as to make you long for death
(Or you have not spirit enough to wish yourself dead)
You will face the life long ignominy everyday of your life
You find enveloping hate in every walk of life,
But a ray of love eludes
While you will undergo the wretchedness of life
In the hope of paradise
which is the world to be
You will embrace the hell
which is the day to day world
On the way to far away redemption
You will shunt between life and death
And
To eventual extinction

—**Ramesh Chandra,** *Lecturer in English*

The Role of Teachers In India Today

—**S. N. Ganguli**
Vishwabharti University

An eminent English writer once said that 'it is easier to tell the truth sometimes than to tell a lie'. As a teacher I find myself in the same situation. How fitting and impressive it could be if one could cook half-truths or even lies about the importance, nobility, and progress in the field of teaching of a developing country like ours. But the reality is too obvious to allow us this innocent pleasure of taking holiday from truth. I have, therefore, no other choice than to state in simple terms the true state of affairs that is persisting in the field of education as a whole. My major emphasis will be on an actual determination of the role of teachers, and especially the university teachers, in relation to the total cultural manifestations of the country during the last twenty years. One does not have to go too deep to come face to face with the menacing character of the truth that we are, perhaps unwittingly, perpetuating through our confusion and confoundment born out ot a total cultural confusion ol the country as a whole. In short, we may dwell on the topic of cultural confusion and the crisis in edu cation.

'Education' as a term has always been very confusing to the experts. Sometimes we emphasize an ideal development of personality, sometimes only a moral development, sometimes as a discipline which should increase our faculty of self-expression, sometimes as a technique and methodology which will give us a free guidance to bring out the originality of ideas and other kinds of creativity and inventiveness lying latent in us, sometimes also as an efficient tool for conditioning people to produce, in bulk, conformist citizens of the country. Whichever of these is true, it is certain that in no case can we realistically think of an ideal education which can be pursued by all *unconditionally* Education has to be relative to the socity and culture to which the members belong. Just as there can be no *universal culture* for all similarly there can be no 'common education' for all. In other words, education cannot significantly be wholly prescriptive, it has to have regard for a lot of descriptive features prevalent in a particular society and culture. An obvious conclusion that follows is, that, if we borrow everything of an educational system of a different society and try to

impose that *in toto* on our country we shall only be perpetuating a fatal schizophrenia bringing upon us the worst kind of human disaster In our country at present education is truly speaking reflecting this stupefying kind of mad ness Any change or reform therefore in the present educational system of India can never be by definition *local* but has to be *global* in character Unless we completely explode the basis of our cultural schizophrenia going in the name of modern education and bring about a thoroughly new outlook, consistent with our cultural tradition there is absolutely no hope of survival By tra dition I do not mean mere historicism or institutionalism but a continuity of the cultural co ordinates of a country[1] It is only on such continuity that the quality and quantity potential of communication largely depends Moreover no education wo th the name can thrive by ignoring this frame of communication The unfortunate history of colonial oppression in India has substantially mutilated this very precondition of our cultural existence apart from other socio economic exploitation The ensuing confusion prevailed so heavily upon us that even after our political independence we encouraged an irrational *Westernization* in the name of modernity Edu cation as has been already pointed out being intimately connected with the culture of the country gradually lost all purpose and significance in the rigmarole of acute cultural confusion prevailing in our country today

No fruitful discussion of the role of teachers can be undertaken without assessing the worth of the prevalent educational system and finally any judg ment on education in its turn can only be understood within the broader perspective of the chaotic conditions reigning in our culture at present Here I shall thus very briefly analyse the nature and origin of our cultural confusion and try to show that imitation of the west has completely alienated the class of teachers from the rest of our country Naturally through the perpetuation of such an alienating machinery of education, the ruthless logic of security did build and still has been buiding an island of educated *elites* constantly and zealously looking after their self interests antagonistic to the broader interests of the country This dangerous defensive has inevitably turned this class of intellectual elites into a set of exploiters feasting merrily on the slender resources of the country as a whole Our educational system is a sad commentary on the dubious origin of the educated class in our country As time went on what was originally a wrong choice of westernization has been turned into an insane clinging to a vicious bureaucracy

Sir Edward Tylor has defined culture as that complex whole which includes knowledge belief, art morals, law custom and any other capabilities and habits acquired by man as a member of the society [2] Professor Horton asserts that ' Culture is everything which is socially learned and shared by the members of a society It is the entire social heritage which the individual receives from the group [3] The two most important factors that stand out in

the above definitions are : (a) that culture depends on a social sharing of ideas and behaviour on the basis of a common heritage, and (b) that learned behaviour plays an important part in sustaining culture. Both these factors again, presuppose a regular communication amongst various members of the society. Any creative stimulation thus depends very much on the possibility of such collective participation. It is singularly human in the animal kingdom that man can integrate his responses and guide his personality into definite patterns. These patterns differ in different cultures. According to E. A. Hoebel, "Each society of men possesses its own distinctive culture, so that the members of one society behave differently in some significant respects from the members of every other society"[4]. In other words, though an individual is moulded by his culture, culture is superindividual in that the participants need a common basis for sustaining a definite culture The most significant role is played by communication in the maintenance and creation of such basis. A culture-pattern, of necessity, presumes an internal integration of all its parts.

Education definitely depends on the available means and manner of communication. Therefore, it is historically impossible and logically absurd to try to impose a scheme of education independent of and separated from the existing culture traits of the country. Yet this was precisely the original sin committed under the banner of the so-called renaissance of the nineteenth century Bengal. One culture, of course, can and does borrow from another culture or cultures it comes in contact with not only the non-material aspects but also more often the material aspects. That is how a culture changes · But only so long as the inner integrating process is not upset the impact can be called borrowing. With the crossing of a certain limit the influence can turn into an imposition and thereby create a complete confusion for the individuals at the receiving end. The term 'confusion' in the context of culture can, therefore, be described as 'the inability *to use given tools* or means to express oneself or produce something as a process of achieving a goal'. In other words, an atmosphere, where an individual loses his sense of direction and all his actions are bereft of proper social perspectives, can be regarded as a clear case of confusion. In our terminology we can say that confusion reigns where communication fails totally due to a lack of content. In psychological terms one can say that confusion and/or frustration may not only come when the goal presents predicaments on the way to its attainment but also when the goal itself is absent.

I have already stressed the point of intimacy between culture and communication. The ideal of such communication is hoped to be realised through the academic channels of the country. Any serious communicator puts before him the image of the educated member of his society. In this way the educated community not only helps improving the standard of communication of a certain

country but also establishes its own connection with the specific culture Any normal process of communication can be upset if somewhere and some how this two way flow and continuity stops The continuity of course is the continuity of a uniform culture--even if at some time or at some place the contrast between these two classes may represent two definite sub cultures In India on the contrary this process has snapped by the very unfortunate choice of a completely foreign language viz English, as the medium of expression inside this *elite* class—the so called intellectuals of our country Unhappily though it never occurred to us that by choosing a language foreign to us we were trying to do the impossible feat of adopting a foreign culture The inevitable followed Soon it became clear that the educated class of the country had been completely alienated from the rest of India Since the culture of a country cannot be changed by *decision* the educated class by their historically and logically wrong decision failed to communicate with the non-educated community of the country The result was an utter confusion for the intellectuals of India who felt neither here nor there Yet the intellectuals instead of being aware of their rootlessness prided themselves on this cultural catastrophe So long as the English rulers were here these people were amply compensated materially speaking This accidental pampering made them more averse to an admission of the hollowness of their cultural existence Instead therefore of rectifying their blunder even afterwards these alienated intellectuals, funnily enough identified the image of India as a whole with their narrow world Naturally in whatever they did no communication or only minimum communication was established with the only culture they could share in The individuals were confused as to their respective roles when seen in the perspective of a larger India which was eventually united at least politically and geographically

The role of an individual is invariably decided by the existing social image unless one is conditioned through the continuous suggestion of these images one can hardly decide one s role, actually the roles are determined in social context by the long standing tradition and heritage sometimes even through myths and legends, of the members of the socity Thus though the role of an *Adhyapaka* is culturally determined the role of a *Teacher* or a *Lecturer* or *Professor* are not so determined in our culture These latter roles are continuous and as such culturally determined where these terms are used as part of their language But when the same terms are used by us here they hardly raise before us a definite image for lack of continuity and cultural content This also means that one will not notice when one is deviating from his role In other words nothing that I do as a Teacher will either be con demned or upheld by the larger society since our culture does not offer any clue to what is expected of me Therefore, the social checks that often put a profession on the right path will be missing

This role confusion brings out the true character of the confusion of *Modern India* and holds true as much of an engineer as of an artist, a scientist and so on. Teachers being the most prominent members of this intellectual class showed maximum confusion as soon as opportunities opened up before them. The scale of this depravity and confusion varied directly with the ratio of rewards promised. The university teachers naturally betrayed greater confusion than teachers of institutions lower in hierarchy. If we go through the happenings of any of the Indian universities we can not help noticing innumerable cases of acute functional and professional confusion. Let us cite only a few of the many. The majority of the teachers look upon their institutions as places where their self-interests somehow have to be more important than the interests and advantages of the students. More opportunities must be given to individual teachers for going abroad, more salary whatever the funds, more leave, etc. But how many of us feel committed to the lot of the students ? When it comes to sharing rewards we are inclined to side with the establishments but whenever there is students' disturbance we lose no time to save our skin by keeping clear of the issues. How many universities have succeeded in building up a teachers' body who will, during the time of disturbances, not merely play the role of the safe negotiators but actively participate in the trouble ? In other words teachers do not feel identified with the so-called seats of learning beyond the scope of their direct and material self-interests. Secondly, the entrenchment of bureaucracy is a patent phenomenon in any of these universities. We have no time to ponder over our lapses and admit our responsibility in the increasing rate of the teachers is making things worse. Any teacher can easily rise up to the highest post in the country. This is a phenomenon only peculiar to a developing country like ours. I am sure in no developed country it is as easy to entertain the idea of getting the best room at the top of the political world. Even our academic aspirations are taking us away from our own country and culture. The highest glory as a teacher today is to get a paper published in a western journal or to be invited from one of the European or American countries. We would rather be a second-rate citizen in the world of our intellectual counterparts in the West than try to work collectively in our country to put forward a fruitful line of intervention here. We really do not know where we belong, though we are very quick in demanding bigger emoluments from native treasury on the ground of being 'internationally known'.

In every country, perhaps, the intellectual class is alienated to a certain extent from the ordinary people of the country. But our alienation is qualitatively different; we are alienated from the major population of the country not merely socially but also culturally. Whereas in other countries the intellectuals use at least the same alphabet though the language constructions may

be different here and there, in our country even our alphabet is different All this evil of confusion is a legacy of our unduly venerated renaissance forefathers who very glibly took the unwise decision of voting for a completely foreign system of education with even their language as our medium of instruction The honest effort of Ballantine to offer a less alien kind of education was vehemently fought even by Vidyasagar as early as 1853 The education thus given at the centres of learning had no connection with the culture to which we existen tially beloged Education which ought to be an inner excellence turned out in our country to be an external display of glamour Undoubtedly this was very paying to the handful of people who enjoyed the patronage of their rulers but mass education of the country had nothing to do with it Some may at this point accuse me of one-sidedness in that I have overem phasised the unholy role of English language as the medium of our instruction As a matter of fact now we are changing over to regional languages even at the university level of education Then why are not things improving ? My answer is that we are even now committing the same kind of blunder that was committed during the nine teenth century Bengal when educational policy was chosen without consideration for the fact that language and culture are intimately connected Language is just not an independent variable which can be abstracted or injected without affecting the rest of the system What we are now doing is to replace the English language by regional languages keeping other things constant This is being possible because of our utter callousness towards any scientific view of communication We just cannot implant an Indian language on an otherwise non Indian system of education

Any modern sociologist will say that language and culture are inseparable A specific language mirrors the culture to which it belongs Even the understanding of a simple word calls for an enormous amount of common cultural participation The meaning of a word as an Oxford philosopher will say today depends on its uses and uses are deter mined by the special surroundings physical and otherwise where it is used This feature has also brought to relief the insuperable difficulties of translation It was not only Russell who said that a common dictionary could solve any of the world problems, Kennedy also noted that the Soviet and ourselves give wholly different meanings to the same words— war peace democracy We have wholly different concepts of where the world is and where it is going [5] An expert in the field of communication writes The full effect of a word upon its hearer may depend not only upon the context but upon the whole physical and psychological environment and on many occasions upon his experience of the culture of which the language forms an integral part [6] All this is said to support my thesis that merely changing the language without changing the entire system (completely alien to the masses

of the country) will be worse than abortive. We must devise a thoroughly new system of education for the country suiting the cultural needs of the place Any sane view of education must, at least, have regard for the following three things :

(a) Motivation and eagerness to learn,

(b) Establishing a harmony and interrelation amongst various subjects and stages of learning.

(c) *Ability to use and apply* what is learnt in real life outside the classroom.

All of them harp on the main theme that education must be connected with the reality. We, in India, on the contrary, have been living in a precariously make-belief tower absolutely cut off from the reality around us. In our confusion, therefore, all the above-mentioned conditions are being systematically flouted in our education due to our initial blunder of choosing an alien system of education When an innocent village youth comes to our colleges and universities he discovers to his painful bewilderment that what is being taught is a set of very unfamiliar information relating to the very different needs of still more different societies. They have no connection whatsoever with the reality he has to live through, whether the subject is Philosophy or Sociology or Economics or Engineering, He is naturally conditioned to believe that education must finally alienate him from his primitive world of reality and consequently from the members of his own society. He is not expected to decipher helpfully the presented slice of local reality in terms of his intelligence and education; as a matter of fact he feels utterly helpless and frustrated in the end when so demanded. He wastes no time in finding out other covenient ways of using his degrees so pompously conferred on him just because he patiently and blindly participated in the farcical ceremony of higher education. What can be more confusing ? The students are being specialized in certain branches of knowledge, but they have no scope to apply their special talent. Even if he is ever called to apply his knowledge he discovers to his dismay that his acquirements do not all correspond with the existing conditions of his surroundings. All that he can do is to look for a job which very often has little to do with what he has learnt. Soon enough he learns to be as smug as his teachers about this esoteric and almost occult process of 'being educated' he knows-not-for-what. It has, that is why, been customary with the Indian intellectuals to see India through the eyes of the western intellectuals What can be a more inglorious paradox ? The teachers who willy nilly are the bedrocks in the maintenance of this rigmarole can obviously have no positive roles in the development of their country. On the contrary his role is antagonistic to the major interests of the country as a whole. Crowning all this is the grim socio-economic reality that even no jobs are forthcoming at present.

But now we have come to the obvious conclusion that unless we immediately change our system of education and re establish vigorous efforts to stop this cultural alienation the teachers can have no positively contributory roles in the country How a new trend in education is to be brought about is of course, a matter of detailed consideration, but one thing is certain that if we seriously want to stop the main evil of alienation in our education we must immediately lessen the number of colleges and universities and increase proportionately the number of primary schools In short, we must make our educational planning more horizontal and less vertical without delay If we quantitatively measure the creative contribution of our university products we must admit that the figure will be too disappointing to justify the present lop sided scheme of university-biased education The U G C also must be less liberal in opening the strings of her purse towards the universities that have grown up more to accommodate the middle class youths than to satisfy the genuine needs of the country

---

References

1 See the author s Tradition and Modernity in *Visva Bharti Journal of Philosophy* Vol V No 2 February 1969

2. *Primitive Culture* London 1871 Vol I p 1

3 P B Horton & C L. Hunt *Sociology* U S A 1964 p 51

4 The Nature of Culture in *Man Culture & Society* Ed H L. Shapiro N Y 1960 p 168

5 Krech Crutchfield and Ballachey *Individual in Society* International Student Edition U S A 1962 p 285

6 C Cherry *On Human Communication* M I T Publication N Y 1959 p 73

Career Planning and Higher Education

—Gerda J. Unnithan*

Greater access to higher education in the past twenty-five years has led to a natural increase in higher aspirations. When these aspirations cannot easily be fulfilled for a large number of graduates and post-graduates, the educational system, the economic system and other extraneous factors are blamed. Although these factors are to a large extent responsible, an individual student can never hope to control them. What all he can do is to take them into account while planning his future career. Unfortunately, the majority of our students do not realise that career planning must start at an early stage, even though a final decision or actual employment in a particular job again depends upon a multiplicity of circumstances The question arises whether young people should be trained and got ready for one particular job cnly–all like nuts that would fit ready-made bolts–or should they be educated and trained in such a way that a number of options in life would remain open to them. The first alternative would pre-suppose a strictly planned society with a scarcity of resources, but a job for everyone according to his training and according to the immediate needs of the country's economy. The latter alternative would mean liberal education, open access and competition in getting jobs according to one's abilities and performance. What is the situation in India at the moment ? While there is much talk of job-oriented education, in actuality we give the young education for its own sake, orient them towards little else than entrance examinations and leave them to fend for themselves in a highly competitive situation of unemployment for which they are ill-prepared.

Programmes of educational and vocational guidance in the schools and colleges in Rajasthan receive a minimum of official support and funds. Education being imparted for its own sake, it is considered unnecessary to take into account the young child and his personal growth and aspirations. His development through school and college is extremely lopsided and defective and when he has passed his higher secondary/college education, he is often unemployable, for he does not have any of the skills required in the world of work. Educational planners are mainly concerned with improvement of systems and teachers, as if their golden liquid of knowledge has to be poured into little pots. They may not realise that, for different reasons, these "little pots" may

not be able to contain it Is it not more sensible to simultaneously improve the quality of these little pots rather than to only continuously improve the golden liquid ?

The State Bureau for Educational & Vocational Guidance at Udaipur needs to be strengthened considerably especially in view of the new school system of ten plus two There is only one full time psychologist and seven full time counsellors for the whole State to give educational & vocational guidance to school children at the high/higher secondary stage This task is more than stupendous it is impossible ! The availability of educational and career advice to college students is extremely limited and is often thought to be a frill of the educational system As far as it is known there are only about 25 colleges in the State which somehow have organised on their own initiative career advising centres and these are almost all looked after by lecturers on a voluntary basis The University of Rajasthan has a Students Advisory Bureau with one full time officer and a University Employment Information & Guidance Bureau also with one full time officer the University of Udaipur s UEIGB is looked after by a professor on a part time basis The funds at the disposal of these bureaux are very meagre and they cannot replenish their reference libraries with up to date material or extend their services as widely as is needed

Planning one s career is planning for life It involves taking the right decisions at the appropriate time during one s education For this we require two things (i) knowledge of self and (ii) knowledge of the opportunities available and preparing for them At present these two requirements exist more as an accidental by-product of the educational process rather than as its central theme From nursery school onwards through college students must be made aware of and instructed in career or life planning Teachers, career counsellors and student advisors should see the following tasks** for their students at different stages

1 **Tasks for the primary years are to**

(a) acquire awareness of self,

(b) gain a sense of control over one s life,

(c) identify with workers

(d) acquire knowledge about workers

(e) acquire interpersonal skills

(f) objectify self before others and

(g) ga n respect for other people and the work they do,

2 **Tasks for the middle school years are to**

(a) develop a positive self concept

(b) acquire the discipline of work

(c) identify with the concept of work as a valued institution,

(d) increase knowledge about workers

(e) increase interpersonal skills

(f) increase objectification of self before others and

(g) value human dignity

3. **Tasks for the secondary year are to :**
   - (a) clarify self-concept,
   - (b) assume responsibility for career planning,
   - (c) formulate tentative career goals,
   - (d) acquire knowledge of occupations, work settings, and life styles,
   - (e) acquire knowledge of educational and occupational resources,
   - (f) develop awareness of the decision-making process, and
   - (g) acquire a sense of independence;

4. **Tasks for the higher secondary year are to :**
   - (a) reality test the self-concept,
   - (b) develop awareness of a preferred life style,
   - (c) reformulate tentative career goals,
   - (d) increase knowledge of and experience in occupations and work settings,
   - (e) acquire knowledge of educational and vocational paths,
   - (f) clarify the decision-making process as related to self, and
   - (g) commit oneself with tentativess within a changing world;

5. **Tasks for the college years are to :**
   - (a) develop interpersonal skills essential to work,
   - (b) develop information processing skills about self and work,
   - (c) reintegrate the self,
   - (d) acquire a sense of community,
   - (e) commit oneself to the concept of career,
   - (f) acquire the determination to participate in change, and
   - (g) creatively apply management skills to life roles.

As stated, these tasks have to be spread out out over a period of 12-16 years. By the time the student comes out of college, he should have a realistic assessment of his own abilities, interests and personality traits Every one is talented in at least one field, but everyone has also limitations in different fields. Guidance personnel can play a great role through testing and advising procedures to help the student know himself. Simultaneously students must be introduced and encouraged to make full use of educational and vocational guidance literature and institutions working in this field. They must be directed towards work experience in their holidays and be alive and aware of what is happening in the world around them In this way, educational institutions will prepare young mature citizens who have faith in their own abilities and who have a keen sense of responsibility in their future role in a developing society.

---

* Mrs. G. J. Unnithan is Director, Students' Advisory Bureau, University of Rajasthan, Jaipur.

** The Personnel and Guidance Journal, Vol. 53, No. 9, May 1975.

My Hand Trembles

Jai Shankar Sharma
Ex Lecturer in English

How much this casket, Granny ?

The old woman raised her eyes The question had been put to her many times that day, more times than she could remember People had come, looked inquiringly at the casket, asked her the price stared at her in amazement, and walked quietly away This one, somehow, seemed different, his simple exterior tried in vain to hide his distinctive personality Could he could he be the man she had been waiting for all the live long day ? Moreover the fair was coming to a close most of the sellers had packed up and left.

Take it O! Prince she said, holding the casket upto him

Prince ? How can you say ? How do you know ?

Disguises don t deceive me, son I m too old for that Take it please, it was meant only for such a one as you

But the price ? The price old mother !

The price ? Oh ! A lac gold coins, she said looking him in the face, and a quarter

One lac and a quarter gold coins ! The voice showed his utter disbelief What does it contain ?

That, I m afraid I can't tell you or won t. You ll know it when you open it in the privacy of your bedroom

How am I to judge then that the thing within is worth the money, that

What can you judge even if I were to tell you ? No, you ll have to take it on trust. Have faith, young man ! Faith to stand upon, to live If you haven t the faith, well and she started folding the carpet she was sitting on, ready to leave

The prince hesitated He stood for some time in indecision then beckoned to an attendant The gold was measured and poured out, the casket purchased

And as soon as he could manage, he retired to his apartment locked himself in and reached for the casket He stood undecided for a few uneasy moments then with shaking and excited hands, untied the lid

Wonder of wonders ! Out from the casket, popped out an old dwarf, a cubit in height but with a beard fully a cubit and a quarter long

He came to the prince and made his obeisance I await your pleasure, Master ! What's it you want ? I hear and obey

The prince took time to recover. What-can-you-do, he asked, falteringly.

Anything. Anything you want done. What can I not do ? Shall I tell you about it or demonstrate ?

What next ? asked Prerna, seeing me stop. What happened then ? What did the dwarf do or the prince ask him ?

I'm sorry, I said, but here the story stops and I can't tell you what followed.

How can that be, she cried in impatience. You can't leave me hanging in mid-air like that, can you. The fellow must surely have done something; brought him a princess, the most beautiful on earth; taken him to a hidden treasure or, or......Give, I say, give.

But I simply couldn't. The story did end here as must all things, somewhere or other; the rest, at best, could only be inference or conjecture.

The story, no doubt, is an old one, but not quite; since I'm older. It's also, I readily admit, hearsay; but that I firmly believe, is no bar to its credibility.Where, I ask,would we be if we were to be guided by what we know and not by what we are told.

Prerna's curiosity was, however, insatiable; unbearably so. Was the prince, she asked, such a minny as to throw so much money down the gutter ?

All princes are, to some extent. They don't have to earn what they spend, you know. Easy come, easy go. Understand ?

But was the old woman too, such an utter imposter ? No fear of being found out and exposed; without any qualms ? No, that doesn't hold water. What did the dwarf do ? She demanded and I had to give in.

As likely as not, said I, he didn't do anything. Anything worth recording, I mean, or it should have come down to us. He probably only bragged, talked about a rope trick of some sort. That must be all there was.

Bragged ? Oh, I see. One of your own kind–the talking conch-shell, not a real one; that's what.

You silly ! I exclaimed, what do you mean ? One of my sort ! What has the damn thing to do with me, with ME ? What on earth makes you think like that, you.........

Only that he was a braggart. Couldn't be unless he belonged to your peculiar species. The twinkle in her eye was taunting, the smile mischievous, the reply provocative; deliberately so, it appeared.

It was too much, even from her I adored and clung to. To compare that–that thin gummy with me. ME, the great creative artist, the moulder of human thought, the wielder of the mighty pen, the heir to Homer, to Kalidas, to Milton, to—. It was preposterous.

You know what you are saying ?

Positively, I'm not off my rocker. Who do you think you are ?

This, surely, was the limit. I ? As if it needs telling. I'm the spark that dispels darkness, the fire that consumes corruption, the power that fights tyranny,

the force that prevails where all else fails the miracle that breathes life into the dead The dumb people s tongue the oppressors doom the justifier of God s ways to man the

Stop this rodomontade she said in a tone that was imperious Cease soaring in imaginary clouds descend from your ivory tower to solid earth the bed of stern and stark reality Justifying God s ways to man ! Pooh ! While what man is doing to man leaves you cold and indifferent ! Justify yourself first–this mantle of greatness you re putting on No alibi no borrowed plumes no past laurels Just your own garments soiled with the dust of your toil, your deeds not your words Look me in the face and tell me what you really are and what you stand for

My deeds ? Is not whatever we have achieved due principally to me ? Must I just to satisfy your idle curiosity conjure visions–create foes where there are none ? Must tilt at windmills Have I to prove my bonafides day in and day out ? Isn t my past a guarantee that I will rise to the occasion when the time comes ?

The time ? Fool Isn t it there, right before you ? What better time can you choose than the present ? But no you have neither eyes to see nor ears to hear nor even a heart to feel nor the will to act Parasite ! You are waiting for the Prince to come and pour you out a lac and a quarter gold coins Your eyes can see only the glitter of gold your ears can hear only the chink of coins your conscience is dead save to the highest bidder your pen mortgaged to filthy lucre You a cubit long pigmy, wielding a pen a cubit and a quarter long! You beast of burden you worthless thing you

Her voice was choking with the intensity of her feelings Abruptly she got up threw a withering scornful glance at me and made for the door

Stop I yelled and ran after her *I caught her by the waist and I turned* her round, You can t go I said not like this and not after this Who I ask is this vile Prince that seeks to purchase my pen, to shut my mouth to prostitute my talents ? Where is he that dares

Open your eyes and see He s there right in front of you marching triumphantly on exulting and shouting with joy See you not his large forces ranged against you, bent upon undermining all that we hold sacred all that is worth preserving all that life would be meaningless without What asked she is holding you now from jumping into the fray and striking a blow for right eousness ?

I stood aghast petrified But these these ? How can they be the enemy They are all familiar friendly faces they who I have been taught to respect love and revere they who I owe unquestioning obedience to They have come not to fight but to woo They are near to me dear to me my own How can I raise my hand against them against my flesh and blood ? How can I

My mind was going blank strength draining fast out of my limbs My hand I cried is trembling my pen falling I

also would have fallen but I was caught, caught in arms loving and tender.

What unseemly weakness is this, I heard Prerna say in my ears, what unmanly exhibition of cowardice ! What if they are your own flesh and blood ! What if they have smiles to scatter, favours to grant, privileges to confer, money to throw away. Their smile is a mask, their velvet gloves conceal the mail fists. How can you be deceived by outward appearances ? You who did not submit to threats, you who were not daunted by numbers, will you now succumb to temptation ?

You can't, she said, sobbing and clinging to me, you shall not. I will not let you compromise with evil, with authority without responsibility, ambition without limits, conscience without scruples. I will not let you pawn your soul, swerve from the path of rectitude, sell your birthright for a mess of pottage.

Look at me, she implored, and decide who is nearest to you and dearest. They or I ? What will you choose–wealth or honour, fame or ignominy, death or disgrace ? Who will you be with–right or wrong, freedom or serfdom, Christ or Antichrist ?

The mists were clearing, the blinkers falling. My choice, said I, hugging her to my breast, is made. Not for the world, not for this world and the next, not for the entire kingdom of Heaven, will I forsake you, my guardian angel.

Be thou my guide, hand me my pen, lead thou me on.

Indian Handicrafts Penetrate Sophisticated Markets

—R L Nolakha
Department of Business Administration

Indian handicrafts have an unbroken history of at least 5000 years As early as 1500 B C a vast body of Indian holy literature such as the 'Rigaveda, the 'Sama Veda, the 'Yajurveda, the 'Atharva Veda and also the 'Upnishadas 'Sutras mention the prodigious production of arts and crafts in India

The ancient civilization which laid stress on tranquility of mind and sublimity of spirit naturally allowed aesthetic sensibility to pervade each and every aspect of life Consequently there has always permeated in man an inner urge to create aesthetic sense around him In moments of peace he has always endeavoured to add colour, gaiety and warmth to his otherwise dull surroundings His creative urges have always manifested themselves in one or the other object howsoever humble and the rich and colourful heritage of handicrafts that a nation has bears testimony to his conscious efforts to sublimate his spirit and perpetuate his sense of perception, the power of perceiving something that is beauteous and artistic In fact in older times arts and crafts were duly appreciated and craftsmen encouraged by the nobles rulers and the gentry of high order This gave the craftsmen an impetus who naturally devoted more and more to the development of their work in quality and finish Consequently, India became famous in all quarters of the world for artistic skill of her craftsmen Indian Industrial Commission 1916 18 very aptly remarked, "At a time when the West Europe, the birth place of modern industrial system was inhabitated by uncivilized tribes India was famous for the wealth of rulers and for high artistic skill of her craftsmen

With the downfall of Mughal Empire and the advent of British rule in India and 'Industrial Revolution in England the Indian handicrafts began to deteriorate The fashionable people of the world motivated by Western culture preferred the well finished products of Lancanshire and Manchester to hand-made products The cut throat competition was a harmful deterrent to the Indian craftmen who could not keep pace with the machine made articles

The Independence came as boon for the arts and crafts. The decaying crafts caught attention of the people's Government. Indian Government has been making all out efforts to achieve the past glory. The sincere and strene-ous efforts in the direction of exports are rebuilding our past image in the foreign countries. The artistic handi-crafts from India are now again making a special impact on the discriminating clientele in the foreign markets. Conse-quently, the exports of handicrafts have increased both in volume and range in the last few years. As against an average export value of Rs. 83.55 millions per annum during the first two Five Year Plans, the Third Five Year Plan period recorded an annual average of Rs. 236 millions, The years that followed witnessed further growth. Exports increased to the tune of Rs. 905.2 millions in the year 1971-72 and Rs. 1306.2 and Rs. 1807.8 millions in the years 1972-73 and 1973-74 respectively.

Table–1

Exports of handicrafts from India

(Amount Rs. in millions)

Year	Export of		Total
	Gem and Jewellery (Amount)	Other handi-crafts (Amount)	
1951-61	—	—	835.5
1961–66	—	—	1,178.1
1966–67	225 6	175.4	404.1
1967–68	321.6	221.8	547.6
1968–69	460.0	292.4	752.4
1969–70	428.4	404.5	832 9
1970–71	427.6	375.4	803 0
1971–72	522.8	382.4	905.2
1972–73	788.2	518.0	1,306.2
1973–74	1082 0	725.8	1,807.8

(Source : Records of All India Handi-crafts Board, New Delhi.)

A view of the table–1 shows that the year 1972–73 and 1973–74 were record years for the exports of handi-crafts. The value of exports touched a new height of Rs, 1,306.2 millions in the year 1972-73 as compared to Rs. 905.2 millions during the year 1971-72 which is almost about 44 per cent increase over the previous year. Simi-larly, the exports rose from Rs. 1,306.2 during the year 1972-73 to Rs. 1,807.8 millions during the year 1973-74. This also reflected an appreciable increase of the order of Rs. 501.6 millions or about 38 per cent.

Composition of Exports; Gem and Jewellery at the Appex :

Exports of handicrafts can be broadly divided into two groups namely, (i) gem and jewellery and (ii) other handicrafts. Among 'other handicrafts' important items are woollen carpets, hand-printed textiles, woodwares, art metalwares, imitation jewellery, ivory and zari products etc.

Table–2

Craftwise exports of handicrafts During 1973–74

(Amount Rs. in lakhs)

Crafts	Amount
1. Gem and jewellery	10,819.98
2. Woollen carpets, rugs dru-ggets with namdas	2,642.25
3. Art metalwares	1,249.04

4 Woodwares	636 78
5 Handprinted textiles	587 66
6 Imitation jewellery	310 58
7 Shawls	18 11
8 Zari	198 54
9 Ivory Products	33 66
10 Carpets rugs and durries of cotton	161 39
11 Embroidered goods	231 74
12 Misce handicrafts	1 188 57
Total	18 078 30

(*Source* Records of AIHB New Delhi)

A careful analysis of the table–1 and table–2 shows that the gem and jewellery constitute a most important part in the total exports of handicraf s Classification of handicrafts export items from India witnesses the fact that this craft alone has been contributing by about 60 per cent to the total exports of handicrafts for the last so many years Our survey reveals that during 1973-74 Hongkong was the principal buyer of gem and jewellery items It imported gem and jewellery from India to the tune of Rs 213 1 millions in the year 1973-74 Hongkong was followed very closely by the U S A whose offtake of gem and jewellery from India during the same year was of the *order of* Rs 213 millions Next in order were Belgium-Luxemabourgh and *Japan* U K Netherlands and Switzerland

Among the exports of other handicrafts the woollen carpets ruggs druggets including namadas have th largest share In the exports of handi crafts during the year 1973-74, the share of these articles was about 16 per cent The U S A which was the second best buyer of the Indian woollen carpets after West Germany during 1972-73 emerged as the principal buyer of this item during the year 1973 74 The U S A imported woollen carpets worth Rs 90 millions followed by West Germany for Rs 64 1 millions during the year 1973-74

Art metalwares, handprinted textiles and woodwares constitute another about 15 per cent In the past few years the demand for handprinted textiles and art metalwares is increasing at a faster rate France was the principal buyer of hand printed textiles Her imports during the year 1973 74 stood at Rs 6 9 millions compared with those of the U S A valued at Rs 6 7 millions U S A, West Germany and U K are the *principal* buyer of art metalwares whose imports of Indian art metalwares were Rs 42 9, Rs 11 2 and Rs 10 7 *millions* respectively during the year 1973-74 For woodware also, the U S A occupied the first position importing this item worth Rs 18 5 millions during the year 1973-74

Germany occupied the first position so far as the imports of *shawls and* Zari products were concerned For *ivory* products the U S A was the principal buyer The imports of cotton carpets, rugs and durries *during* 1973-64 by Saudi Arabia were of the highest

Table–3

Reglonwise exports of handicrafts

(Amount Rs. in millons)

Region	1972–73			1973–74		
	Exports of			Exports of		
	gem and jewellery (Amount)	Other handicrafts (Amount)	Total (Amount)	gem and jewellery (Amount)	Other handicrafts (Amount)	Total (Amount)
1. East Europe	1.6	46.1	47.7	4.0	43.6	47.6
2. West Europe	339.1	204.7	543.8	422.6	268.5	691.1
3. Asia and Ocenia	249.6	82.7	332.3	400.4	132.6	533.0
4. Africa	2.2	11 9	14.1	1.5	12.6	14.1
5. America	166.5	147.0	313.5	215.6	236.1	451.7
6. Others	29.2	16.8	46.0	37.9	22.5	60.4
7. Handicrafts for which countrywise break-up is not available.	—	8.8	8.8	—	9.9	9.9
Total	788.2	518.0	1,306.2	1,082.0	725.8	1,807.8

(Source : Records of All India Handicrafts Board)

value standing at Rs 8 8 millions and for embroidered goods, the imports by the U S A, for Rs 5 9 millions were the highest

Direction of Exports

Out of the total exports of handicrafts during the year 1973 74 West European countries accounted for the maximum share of about 38 per cent followed by the Asia and Ocenia (29 64%) America (25 13%), East European countries (2 65%) and Africa (0 78%)

Further it is also evident from the table 3 that the exports to west European countries increased by 27 09 per cent during the year 1973-74 over 1972 73 This increase in case of exports to Asia and Ocenia region was of the highest order of 60 40 per cent during the year 1973 74 followed by American region (44 12%) In case of exports to East European countries and Africa there was a marginal fall of less than one per cent during 1973 74 as compared to the year 1972-73

Although at present handicrafts are exported to about 90 different countries of the world but it is interesting to note that 21 countries accounted for more than 90 per cent of the exports of handicrafts during the year 1973-74 The U S A occupied the first position as a buyer of Indian handicrafts during the year 1973 74 The off take of handicrafts including gem and jewellery by the U S A during this year amounted to Rs 418 3 millions followed by Hong kong (Rs 214 7 millions) Belgium-Luxembourgh (Rs 199 9 millions), Japan (Rs 147 1 millions), West Germany (Rs 121 1 millions), Netherlands (Rs 67 3 millions), France (Rs 61 2 millions)' Switzerland (Rs 57 2 millions), Singapore (Rs 52 9 millions) Australia (Rs 37 6 millions) and Canada (Rs 32 6 millions)

Prospects

During the last few years several export promotion measures have been taken by the Government of India All India Handicrafts Board and State Governments have also launched various developmental schemes to assist the exporters Consequently the demand for handicrafts products is increasing day by day Our enquiries reveal that gem and jewellery, woollen carpets, art metalwares, woodwares, handprinted textiles are in great demand In the foreign markets Efficient marketing strategy can help to a great extent in capturing markets for these crafts

The success of foreign marketing largely depends on the satisfaction of the foreign buyers and capacity to meet their specific needs in respect of quality design and other features of the product This, all the more, is true with regards to disposal of handicrafts products which require greater promotional efforts

It is significant to note that the consumers in the markets of the developed countries of the world are different than those of developing countries The former are affluent and keen to spend their additional disposable incomes on

novel and exquisite things which could cater to their individual taste. The eye appeal of objects is a guiding factor for their purchases. Therefore, the artisans as well as the businessmen should apply their creativeness more intelligently to the peoples, their wants and needs rather than to products. They must keep the fact in mind 'either innovate or die'. "No business can succeed for long that does not attune its products to the desires of the customers" Therefore, export items should be of high quality with attractive designs to suit the latest requirements of the foreign markets.

Further, in order to know the taste and likings of the people abroad, systematic market studies should be undertaken in the foreign markets. "Market research should precede the entry into an export market and attempt to enter should be made when the exporter is sure that he can satisfy his customer in all respects".

Space Technology and Natural Resources Surveys

—Ravi D Sharma Ph D
Head, Planning and Training Division
National Remote Sensing Agency
Secunderabad A P

It is a well known fact that with the introduction of space era in the late 1950 s automated satellites and manned spacecraft have beem orbiting our globe innumerable times and have been visiting the distant planets many times Before this capability was developed man could operationally and controllably fly about ten km or so high above the ground in a high altitude aircraft The field of view of the eye and the cameras could cover features only across 20 to 50 km along the flight path of the aircraft Typically the present day satellites fly (orbit without any additional need for fuel after being launched) at 500 1000 km above the surface of the earth At these altitudes they stay in a fixed plane when viewed from the sun and the stars but for a point on the earth s surface the satellite rises and sets and the duration of satellite visibility depends on the orbital parameters These low orbiting satellites complete one round typically every one or two hourly If the earth were stationary the same point on the earth would be covered i e observed from the satellite many times in a 24 hour period but due to its rotation different points on the surface of the earth can be viewed by these orbiting satellites In addition typically 1000 km wide image strips can be taken by satellites for meteorological purposes In this discussion geostationary satellites will not be included since these have primarily been used for communications and weather applications Manned spacecraft have proven very useful for earth observations because these have the capability of film retrieval and benefit of the human operator and specialist However for operational long-life systems these require expensive life support and crew change capabilities Gemini–Apollo–Soyuz–Salute–Skylab are some of the manned missions which have carried out earth observation experiments and the Space Shuttle is planned for the 1980 s

What is remote sensing ? It is the technique of observing from distance various objects of interest In the present context only aerial and space

platforms will be discussed. This technology developed primarily from defence considerations but recently it has been applied to study global resources. The physical principles used in remote sensing are wellestablished principles of physics of the materials, both vegetative and non-vegetative, and applied disciplines of technology such as electronics, computer engineering, electro-optical devices and in addition resources disciplines such as agriculture, hydrology, geology etc. The observables include reflectance, emittance, irradiation from natural sources such as the Sun or from the man made devices such as the radar and the laser etc The parameters which are important are the spectral (Wavelength) and temporal aspects and polarisation, and illumination and viewing angles, and atmospheric effects. It is well known that white light can be split into many colours and putting a filter in front of a camera or a detector allows transmission of a particular wavelength range only. These spectral bands allow the surface of the earth to be viewed so that the desired reflectance or emittance properties of resources can be studied. This need not be limited to the visible light but desired resources may sometimes be better studied in the near and far infrared or the microwave part of the electromagnetic spectrum.

The techniques of resources surveys depend on multispectral hypothesis which states that the various objects can be seperated from each other by observing them in different wavelength bands.

If objects are viewed in thermal infrared wavelength bands then colder objects look darker and hotter objects appear brighter. This fact is used to discover surface aspects of geothermal power sources or for monitoring pollution in the rivers. If water bodies are observed they appear darker and vegetation appears brighter in the near infrared bands and these bands are used for separating water and land boundaries and together with other bands for separating various land uses such as bare soils, forests, grazing lands, salinity affected areas, flood plains etc.

It is not only the collection of data from the satellites and aircraft that would yield good results but it is the further analysis which involves often statistical and other quantitative techniques which together with the knowledge of the ground parameters, convert this raw data into information of value to the resource management agencies. Computers and interactive devices are best suited for this purpose. What is it that the satellites can do which cannot be done by aircraft easily ? The satellites can cover the globe in a short time say in a few days under near vertical view with high resolution to get details of surface features. In one system called Landsat satellites, NASA of USA has capability to map the surface features on acre by acre basis. A typical image from the same satellite would cover more than 20 thousand sq. km. and would have 80 lakh dat[illegible]s. Such large quantity of data ca[illegible]e processed by a large compute[illegible]d quantitative natural

resource classification maps with repetitiveness of every few weeks The point to be emphasised in this is that multiplicity of techniques and resources disciplines are involved in effectively analysing and producing results of economic relevance Some of the directions in which this technology could benefit are Land use inventory and update agricultural crop classification floodplains delineation and watershed management geological mapping forest management soil conservation and erosion monitoring etc

The satellites alone do not provide sufficient information but provide a good base The enclosed examples are only illustrative of some of the capabilities which could provide better more often and at a few places the eqvivalent or better information on the management of our resources Even though India is participating in other countries programmes to get maximum benefit from the latest technology available, it is also developing such satellites which in the long range will allow indigenous capabilities in this important techno-economic area for natural resources surveys

---

* *The writer of the above article is an ex student of the institution*

Petroleum and Petrochemicals

—P. D. Chatlangya
Lecturer in Chemistry

The word petroleum is derived from the Latin **petra**-rock, and **oleum**-oil. Thus petroleum means rock-oil, as it is found in rocks. Petroleum is often called liquid gold, because modern civilization has found it more valuable than the precious metal gold. The fortunes of a nation in peace and war are linked up with the possession or lack of petroleum. Agriculture industry, transportation and communicationl argely depend upon the 'liquid gold' in many ways.

Although the first commercial oil well was sunk some 110 years ago in Pennsylvania, North America, there are many indications in history about the earlier use of petroleum by man. In many parts of the world the dark, sticky crude oil managed to seep and ooze out of the surface of the earth through cracks in the rocks. 'Pitch' mentioned in the Bible was probably crude petroleum. The Persian used petroleum as mortar in building and also as glue nearly six thousand years ago. In the Middle East there were a great many seepages which led to many accidental fires, often referred to as 'eternal fires' of the Persian fire-worshippers. Baku is a well-known area on the shores of the Caspian Sea where natural fires have been found from ancient times and fire worship was done in fire temples. The worshippers came from distant places including India. It is now an important centre of oil production in the U. S. S. R.

In India too for centuries people have know petroleum-gas fire in the form of 'Jawalamukhi Ki Agnidevi', but search for oil on a commercial scale commenced after the arrival of the British. There is a popular belief that the credit of finding out the important oil field in Assam goes to an elephant ; but it is difficult to say how far this is true ? Although the first test well was sunk at Nahorpong in 1866, oil could be obtained only on 26 March 1869.

The Assam Railways and Trading Company (ARTC) played an important role in the search for oil-fields. The first impoitant well near Digboi was sunk by Wiley Liowa Lake, an engineer with the ARTC. When railway lines were being laid, this oil-source was accidentally noticed The sinking of the

well was commenced in September 1869 and was completed in November 1890 The depth of the well was about 220 Kilometers Thereafter ARTC established the first oil refinery of our country at Marghrita The Assam Oil Company took possession of oil well that existed at Digboi in 1899 At that time fourteen wells were sunk in this oilfield This Company also established a new oil refinery at Digboi having a daily production capacity of 68 000-80 000 literes As Burma was then an integral part of India, the Burma Oil Company took over the management of the Assam Oil Company This company also took under its control the oil-fields at Badarpur and pumped out 1 86 400 barrels of oil till the source was comp letely exhausted in 1933 The Burma Oil Company promptly took up a programme of finding new oil-fields in Assam and as a result it could locate by 1925-26 oil bearing places in Nahorkatia where availability of a large quantity of oil seemed possible

After Independence in 1947 the Go vernment of India took greater interest in mineral oil resources and planned an all India survey for oil For this purpose our Government sought co operation from various foreign governments and companies and established two organizations namely Oil and Natural Gas Commission and Indian Oil Company As a result of surveys carried out by modern techniques a large number of oil-reserves could be found at such places which were formerly considered as non-oil regions including Rajasthan The geological survey conducted throughout country reveals that about 10 lakh square kilometres of land have oil-reserves existing in various stages

Drilling under water is a special development of the last two decades It is certain that most of the petroleum bearing areas are lying under the seas and the fate of the present civilization in view of the petroleum crisis is closely linked up with the ease of getting petroleum from these reserves India s first drilling platform has struck oil in the Gulf of Cambay and more recently in the Gulf of Bengal

The origin of petroleum in the bowels of the earth has remained a matter of controversy According to a widely accepted theory for many thousands of years tiny sea animals and plants, living near the surface of the sea had died and dropped to the bottom The bed of the sea became covered with them until a thick layer of animal remains was formed This layer in turn was covered over with sand and other rocky materials to some thousands of feet Under the great pressure of this rocky layer the vegetable and animal remains underwent transformation into petroleum and gas (natural gas) The details of this transformation are not quite clear Scientists have found that oil contains many materials which are the remains of sea plants and animals This fact corroborates the theory Some areas in which he above mentioned transformations took place became land when the oceans receded But other areas bearing petroleum—forming rock stil lie under the sea

Most petroleum deposits are found deep underground generally at a depth of about 5000 to 15,000 feet. How could this have happened ? There are some rocks which are porous and sponge-like, e. g. limestone and sandstone. The mud on the sea bed first becomes clay and then shale. The formation of these rocky strata may take millions of years. The oil thus formed flows out through the cracks in the shale and flows in the pores of the porous bed of sandstone. The rocks below this porous bed are very hard and non-porous (impervious rocks) and thus prevent the downward flow of oil.

For the purpose of determining prospective areas which are likely to be petroleum-bearing, surveys are being made and methods of various kinds are being employed. They may include aerial photography, and (a) gravimetric (b) seismic (c) electrical (d) magnetic methods. All these methods are mainly applied on the surface of the earth.

We have seen people boring a well for water and so we might think that the task of boring an oil-well must be equally easy. In reality it is not so. The drilling for an oil requires special equipment and skill. In the beginning, the oil rushes out in the form of fountain due to the pressure of the natural gas present above the surface of the petroleum layer. But after some time the pressure of gas diminishes. In order to have a regular supply of oil from the well proper pressure is maintained by injecting gas or water from the surface through another well drilled near by.

Off shore drilling is pretty costly because special facilities are necessary to be provided. Drilling platforms, suitable for operation far from the shore, and capable of carrying not only the heavy equipments but also of withstanding the stormy seas with provision for living quarters, laboratories, pumps etc., with enough space for a helicopter to land.

The crude oil is stored in huge reservoirs and then sent to refineries located far off from the oil-fields. In India the transportation of crude oil to the refinery is done through pipelines. The flow of oil is not as easy as that of water In oder to transport it from one point to another it is necessary to use powerful pumping sets placed at certain intervals of long pipeline.

The crude oil pumped out of well is a deeply coloured, foul-smelling and viscous liquid. Petroleum from different oil-fields has different compositions However, we can describe the contents in a general way. Crude oil is not a single chemical compound but a mixture of several unsaturated and saturated hydrocarbons (a hydrocarbon is a compound made up of carbon and hydrogen only) and aromatic compounds. Besides hydrocarbons, there are also present certain organic compounds containing oxygen, nitrogen and sulphur. Water and earth particles are also associated with the crude oil. Therefore crude petroleum cannot be used as such and is subjected to repeated fractional distillation to obtain various commercially useful fractions. This process is called

refining In most modern refineries petroleum is refined by continuous distillation in pipe stills The important fractions obtained their boiling ranges compositions and main uses are given below

Main fractions with boiling range	Refractionated products with boiling range	Approximate composition	Uses
1 Petroleum gas or Natural gas (Below 35° C)		C_1—C_5	Fuel making petro chemicals
2 Crude naphtha (35°C—200°C)	(i) Petroleum ether (35°—70°)	C_5—C_6	Solvent for oils fats and varnishes
	(ii) Petrol or Gasoline (70°—90°)	C_6—C_8	Fuel for motors aeroplanes for drycleaning and as solvent
	(iii) Ligroin (90°—120°)	C_7—C_9	Solvent fuel
	(iv) Benzine (120°—150°)	C_8—C_9	Drycleaning solvent
	(v) White spirit (150°—200°)	C_9—C_{13}	Substitute of turpentine oil in paints and varnishes
3 Kerosene or paraffine oil (200°—300°)		C_{13}—C_{16}	Lighting fuel for stoves for making oil gas as insecticide
4 Fuel oil (300°—350°)	(i) Gas oil (ii) Diesel oil (iii) Furnace oil	C_{16}—C_{23}	Fuel in diesel engines cracked to yield more gasoline and as a fuel in furnaces
5 Lubricating oil (350°—400°C)	(i) Motor oil (ii) Grease	C_{20} Upward	Lubrication and sizing paper
6 Residue from evaporator (400° upwards) on fractionation by vacuum distillation is separated into	(i) Petroleum jelly (vaseline)		Ointments
	(ii) Paraffine wax	C_{24} upward	For candles and matches
	(ii) Road asphalt (iv) Petroleum coke		For road surfacing roofing, solid fuel

Crude petroleum contains only a small percentage of highly demanded, low boiling fraction, gasoline (petrol). The refiners increase the yield of gasoline by a process known as Cracking, which simply means 'making of little molecules out of big ones, Originally the heavier oil (Fuel oil etc.) was cracked by simply heating under pressure (thermal cracking). Nowadays cracking is carried out at lower temperatures and pressures in the presence of catalysts, e. g. silica and alumina (catalytic cracking). During the catalytic cracking hydrocarbons with branched chains or with ring structures, e. g. aromatic hydrocarbons are formed in excess, which constitute a better quality petrol. Gasoline is also formed by polymerization of simple hydrocarbons e. g. ethene (C_2H_4), etc., to give molecules of proper size. The process is thus the opposite of cracking. Large amounts of unsaturated hydrocarbons are formed during cracking. These are polymerized by heating with a suitable calalyst e. g. phosphoric acid, to yield liquid gasoline.

Petroleum is not only useful in the form of its various fractions obtained from the refineries but it also provides the basis of our chemical industry. The chemical industry in our country has the proud distinction of being the fastest growing among the different industrial groups in the country. At present the chemical industry ranks fourth after iron & steel, engineering and textiles. This expansion of organic chemical industry to a great extent is based on crude oil.

The term 'Petrochemicals' is applied to a large number of organic and inorganic chemicals directly derived from petroleum sources. One of the major branches of our chemical industry, fertilizers is overwhelmingly dependent on naphtha as a feed stock. Naphtha is a narrow-boiling range fraction of petroleum with volatility between that of gasoline and kerosene. The final boiling-point is 140°C. The process involves the preparation of hydrogen by treating naphtha with superheated steam in presence of a catalyst. Hydrogen so formed is made to react with the nitrogen from the air, under controlled conditions to yield ammonia. Ammonia is the starting material for the preparation of urea and other fertilizers. Nitric acid is also prepared from ammonia, which in turn is used for the preparation of explosives.

Similarly by utilizing natural gas and/or any of the oil products a large number of petro-chemicals are being synthesized. It is not possible here, to give the details of the various processes involved. But to summarize, I give some of the important compounds which are obtained from petroleum and their synthetic uses :

(1) **Methane** :—For the preparation of (i) formaldehyde (for variety of resins and plastics) (ii) methyl chloride (for silicones) (iii) methylene chloride (for freons) (iv) chloroform (used as solvent and anaesthetic) (v) carbontetrachloride (used as drycleaner, fire extinguisher and for preparing fluorocarbons).

(2) **Ethylene** —For the preparation of (i) polyethene (for packaging, film mouldings, wire insulatation pipes, paper coating) (ii) styrene (for the preparation of rubber tiers and rubber goods etc) polystyrene (for housewares refrigeration appliances etc) (iii) glycol (used as antifreeze, humectants and for preparing reinforced plastics) (iv) ethyl alcohol acetaldehyde, acetic acid etc

(3) **Acetylene** —Used for (i) oxyacetylene for welding (ii) preparation of polyvinyl chloride (PVC) used for wire insulation flooring coated fabrics film sheet (iii) for preparation of polyacrylonitrile a synthetic fibre (iv) preparing polyvinylacetate used as adhesive for wood etc (v) for preparing neoprene rubber

(4) **Propylene** —Used for preparing (i) acetone (ii) Phenol (iii) propylene tetramer which in turn is used for preparing Dodecyl benzine (iv) propylene oxide used for preparing resins

(5) **Butadiene** —For the preparation of variety of synthetic rubbers

(6) **Pentene** —For the preparation of (i) amylalcohols (used for the preparation of artificial pearls, extraction of penicilline and for printing and finishing textile fabrics)

(7) **Aromatics** —Widely used for preparing a number of dyes, d ugs explosives, insecticides, detergent alkyds, food preservatives, synthetic fibres etc

---

Electronic Computer— An Introduction

—N. H. SAJNANI
Lecturer in Mathematics

The electronic computers have been in the Mathematics market since 1940 but the idea of the computer is not a new one. A simple form of computer 'abucus' has been in use since about 2000 B. C. The first real calculating machine was devised by Blaise Pascal in 1642. Then Lord Kelvin made a tide predicting machine. The real progress began at the end of nineteenth century. However, it was, during the second war that great developments took place in the computers. During the war the complicated and tedious calculations were needed for aiming guns and bombs. The ordinary methods of calculations failed to cope with the required needs. The mechanical computers, thus, came into being to be used in anti-aircraft guns for predicting the position of the target aircrafts. There is a limit to the speed of operation of the mechanical computers due to its moving parts. This resulted in the introduction of the electronic computers In the electronic computer, moving parts are replaced by the radio valves This makes the computer to work much more quickly—a million times more quickly. Electric signals, carrying the information (fed to the computer), pass with the speed of light.

There are two types of computers— analogue and digital, depending on two basic methods of calculations. The targert computers may possess the elements of both.

In the first type of calculations (analogue calculations) the numbers of the quantities in the problem are represented by some physical magnitudes of some measurable thing (the analogue), which are suitable and which can be conveniently used such as the votage across a resistance. The use of actual numbers or digits is made in the second type of calculations (digital calculations) The basic difference between the two methods of calculations is that the digits are separate and discontinuous whereas the analogues are continuous.

The analogues computers are not as much accurate as the digital computers. Thus the analogue computer is preferred for the problems where cheapness and speed are required instead of digital's accuracy. The problems, which are very

difficult to put into digital form are solved by the analogue computers The analogue computers are mainly used in engineering research and design particularly in the aircraft industry

The digital computers on the other hand are used in problems met in the scientific research factory production banking all kinds of office work and the like

Now a days the digital and analogue computers are electronic machines The digital computers have become faster cheaper to operate and capable of performing complicated problems swifty due to fantastic progress in electronics For these reasons the digital computer is often called as electronic brain Due to the enormous use in different fields I would like to describe the digital computer and its basic operation

The digital computer consists of the following units of

(i) The input unit

The input unit (or reader) in a digital computer is fed with a punched card or a punched paper tape in which the instructions and numbers are represented by a number of holes set in a particular way This unit transforms the holes into electrical pulses which are a sort of code understood by the computer These electrical pulses are ready for feeding through the computer

(ii) Storage Unit

The electrical pulses from the input unit are stored in the storage unit of the computer Generally the main part of this store is a magnetic drum with several recording and reading heads situated on the side which can move up and down the drum The recording head is pulsed electrically and the information placed in a narrow band around drum as it rotates (like the tape recorder records the sound) The reading head plays back the pulses from the appropriate band of information to read off the information

(iii) The Control Units

The work of the control unit is to make sure that all the separate small calculations worked out in the computer are done in the correct way in accordance with the information and instructions received This unit directs the numbers in form of the electrical pulses in the storage unit to appropriate parts of the computer at the appropriate time

(iv) Arithmatic Unit

The arithmatic unit is an essential part of the computer This contains separate elements meant for addition subtraction multiplication division etc This is connected to the store to hold the results of intermediate calculations which may be required in later operations

(v) The output unit

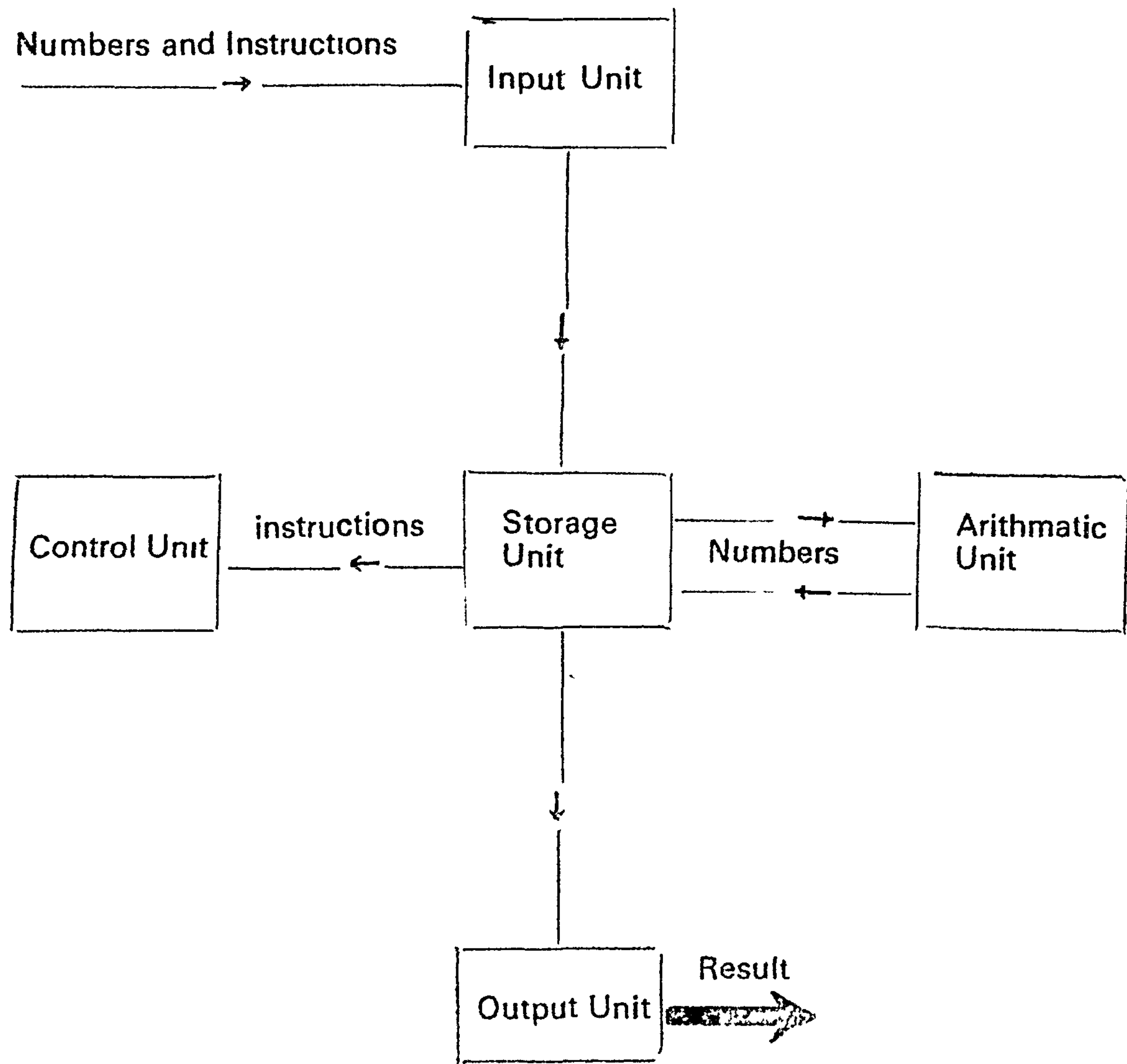
The unit is the slowest part of the electronic digital computer It consists of a teleprinter which receives the electrical impulses corresponding to the

final result of the problem. Now-a-days to increase the speed, the output unit is fitted with line printer to type a whole line at a time instead of distinct letters. The result of the problem may also be punched on a paper tape or a card. The tape is later played back through a machine which will convert the information to printing on a page. The cards are often read directly

Basic operation of the digital computer :

To get a problem solved by a computer, the human operater prepares the problem in a language, the machine can understand. He also decides the method of carrying out the calculations and prepares the instructions for the machine The information, thus prepared, is called the 'programme' of the computer.

The input system (or reader) is fed with the information contained in a punched paper tape or a punched card. The input unit converts the information (numbers and instructions) into code (electrical pulses) which is understood by the computer. Thus inside the computer, various numbers and instructions appear as electrical pulses.



The instructions in the form of electrical pulses pass to the control unit which ensures that required operations are done in correct way and in correct sequences The numbers (in the form of electrical pulses) are sent to the arithmatic unit where they are dealt in accordance with the instructions received from the control unit The result is sent back to the storage unit where it may be retained until used in later operations together with the result of further set of numbers and instructions After the performance of all the operations according to the instructions received the final result of the problem is obtained which is sent to the output unit where it is printed out

Being very expensive equipment, the computer is often run for twenty three hours a day At other time the routine tests are conducted

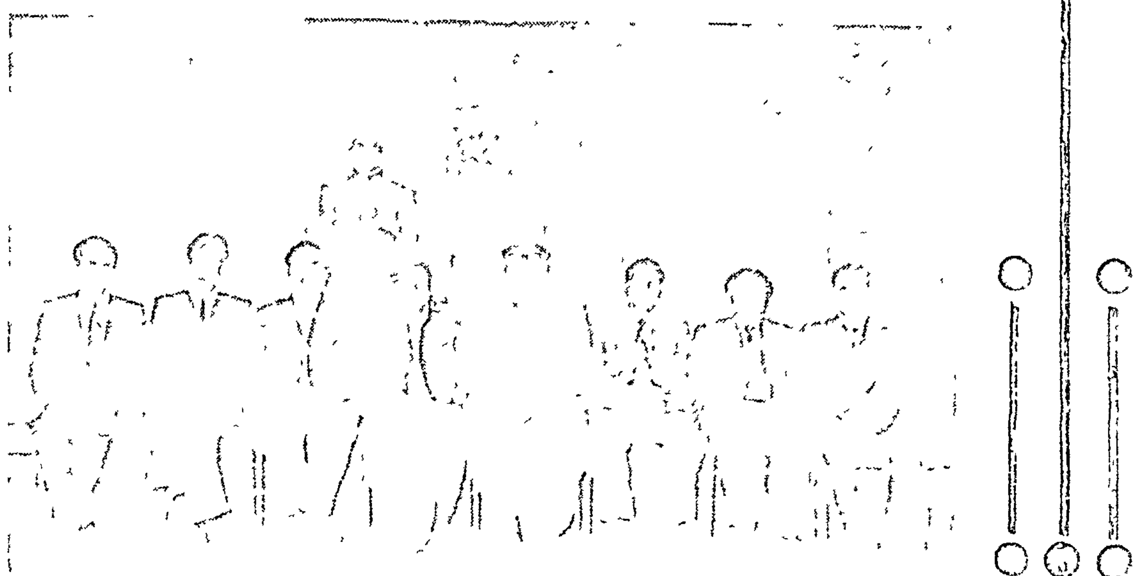
In modern time, the electronic computers play an important role as they are great time and labour savers In a small fraction of a second they can accurately work out tedious and complicated problems if fed with the correct information Calculations which might engage several men for a few days, can be done within hours by the computers At present it has become a must for the factories scientific research institutions banks and big offices where accuracy cheapness and quickness are required

शिक्षा-समिति की कार्यकारिणी



बाएँ से दाएँ : श्रीमती विजयलक्ष्मी चोरड़िया, श्रीमती कमलेश सेठी, कुमारी विमला वैद्य, श्री लक्ष्मण चतुर्वेदी श्री सुमेरसिंह बोथरा, श्री सन्तोषचन्द्र करनावट (उपाध्यक्ष), श्री सिरहमल नवलखा (अध्यक्ष), श्री कीर्तिचन्द्र ढड्ढा (कोषाध्यक्ष), श्री जतनमल करनावट, श्री चन्द्रराज सिंघवी, श्री विनयचन्द वम्ब, श्री उत्तमसिंह करनावट, श्री गोकुलदास आचार्य (संगठन सचिव)

केन्द्रीय-कार्यालय



बाएँ से दाएँ : श्री निहालचन्द मोर्दी, श्री गोपालकृष्ण गौड़, श्री गोकुलदास आचार्य (संगठन सचिव), श्री कीर्तिचन्द्र ढड्ढा (कोषाध्यक्ष), श्री सिरहमल नवलखा (अध्यक्ष) श्री सन्तोषचन्द्र



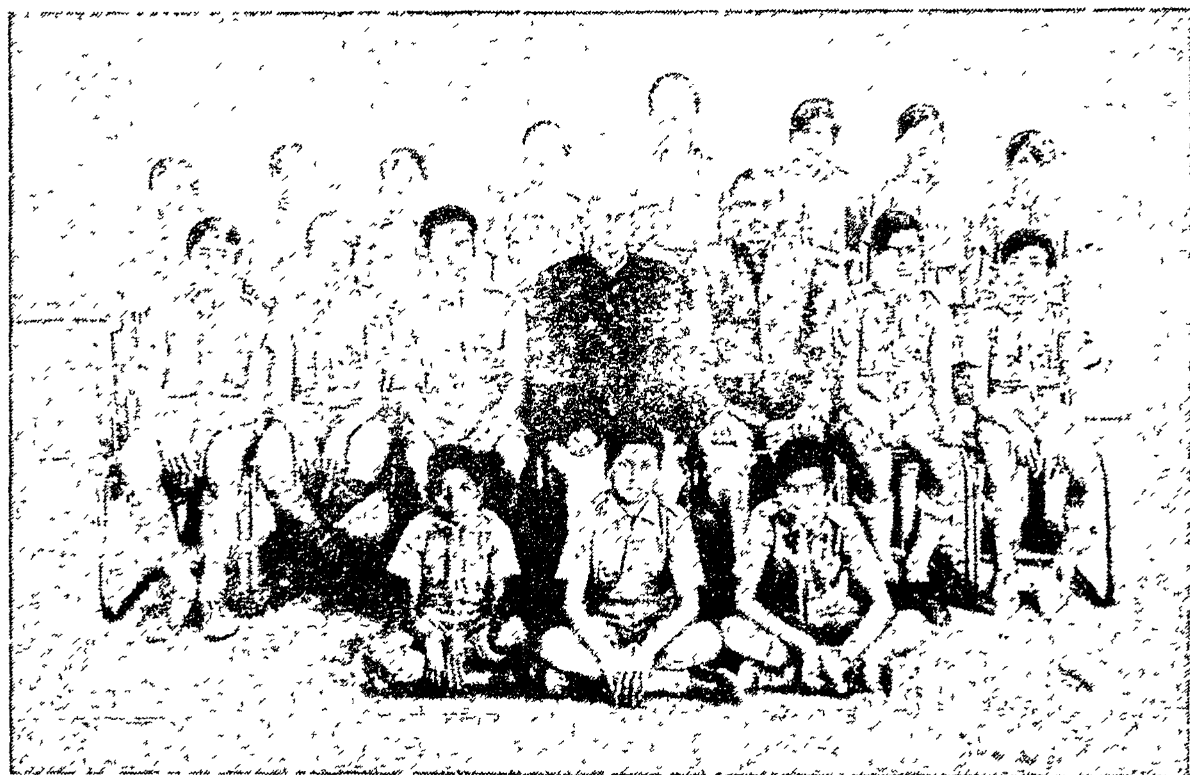
शिक्षक गण व अन्य कर्मचारी, हायर सैकण्डरी विभाग



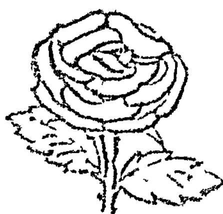


बालिका विद्यालय गाइड की छात्राये

श्रीमती प्रेम झाझरी स० अ०, इचार्ज के साथ



विद्यालय विभाग के बालचर





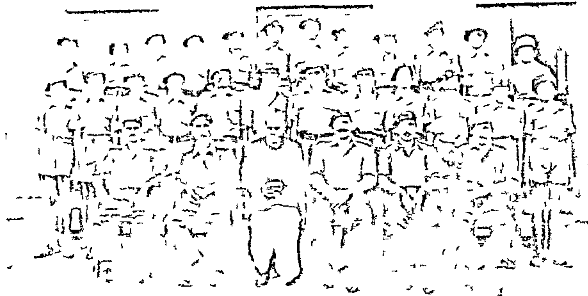
विद्यालय विभाग के विभिन्न खेल-कूदों के कैप्टीन

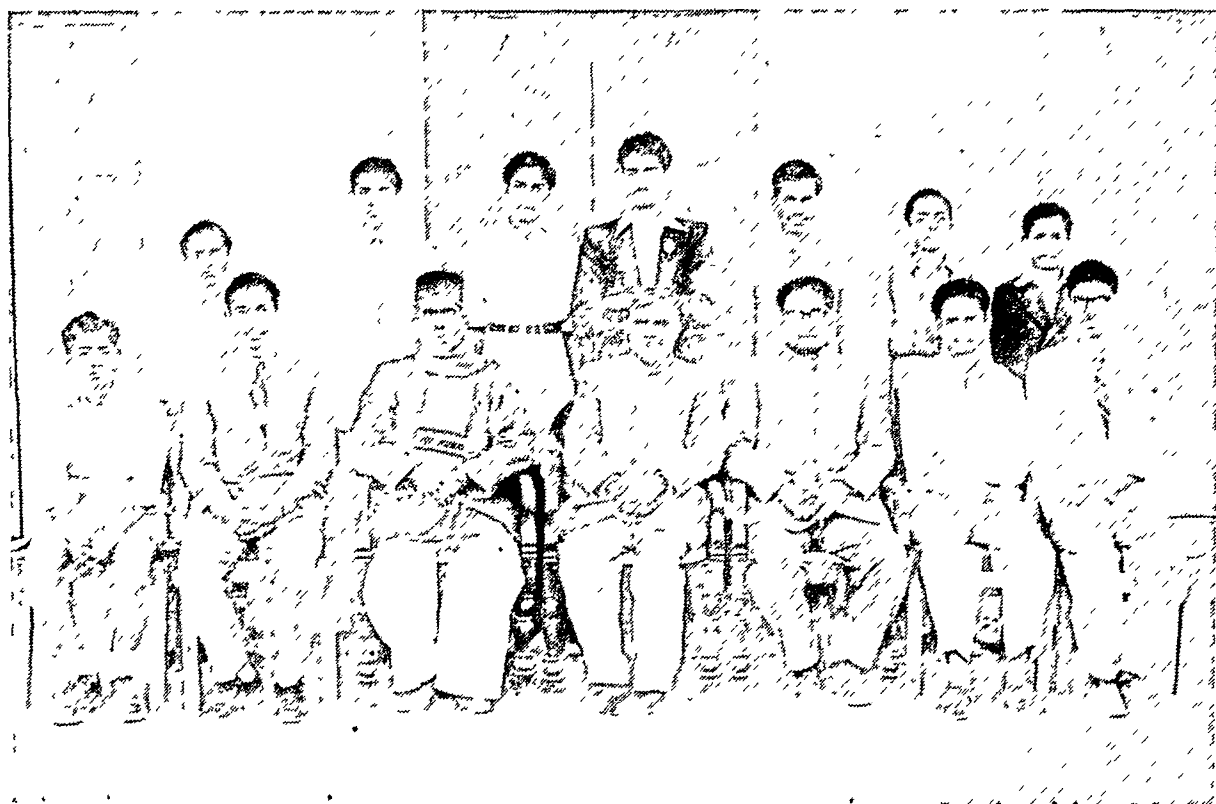
एन० सी० सी० एयर-विंग



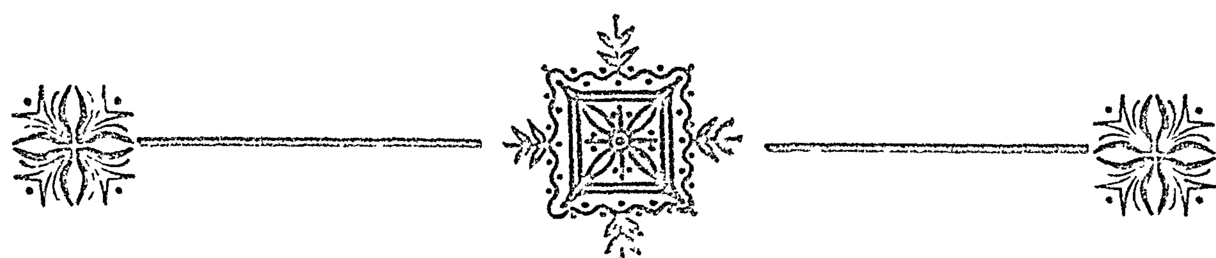
विद्यालय विभाग

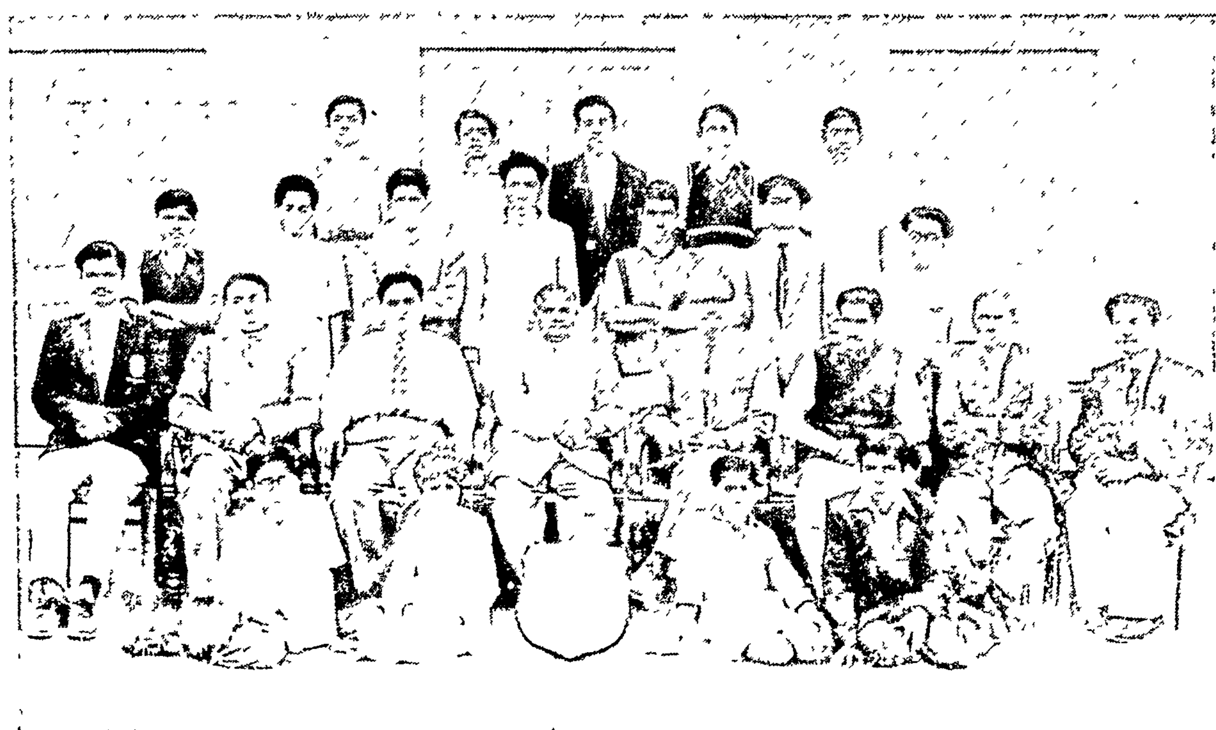
एन० सी० सी० आर्मी-विंग



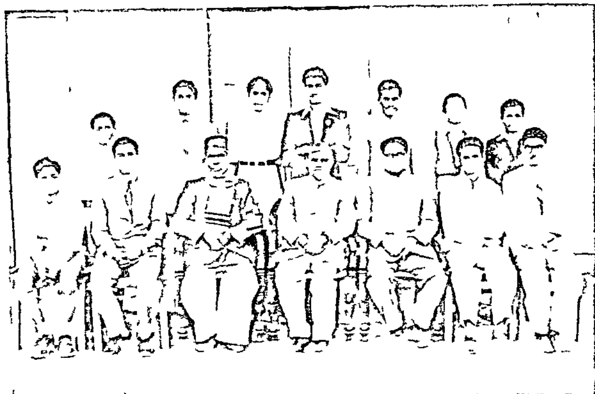


स्व० श्री श्यामनारायण निगम की स्मृति दिलाता हुआ एक ग्रुप-चित्र

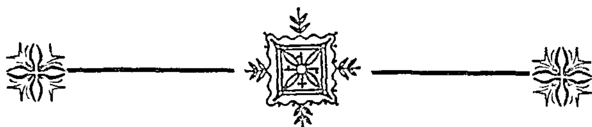


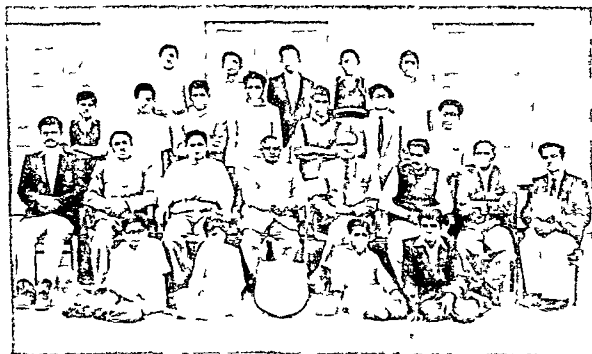


हिन्दी साहित्य समाज (१९६०-६१)



स्व० श्री श्यामनारायण निगम की स्मृति दिलाता हुआ एक ग्रुप-चित्र





हिन्दी साहित्य समाज (१९६०—६१)



श्री कीर्तिचन्द ढढ्ढा



श्री राजमल चोरडिया



श्री विनयचन्द नव.

स्वर्ण-जयन्ती स्मारिका हेतु
विज्ञापन एवं समारोह हेतु

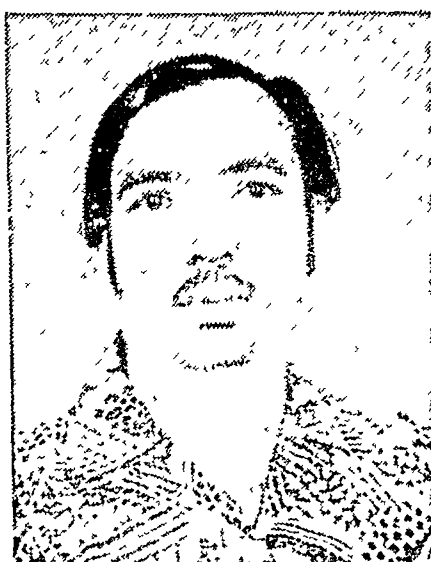


शिक्षा समिति कार्यकारिणी के सदस्य
श्री चन्द्रराज सिंघवी

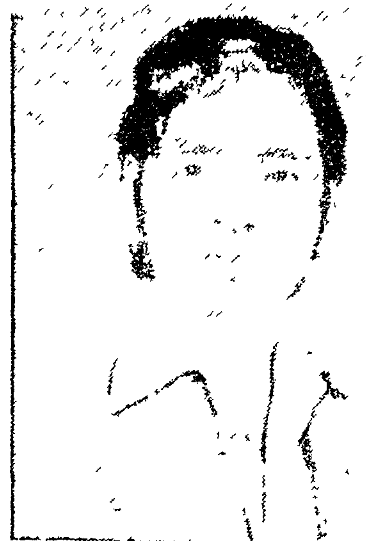
अर्थ-संग्रह में
जिनका उल्लेखनीय
योगदान मिला



श्री विमलचन्द सुखलेचा



श्री सुमेरसिंह बोथरा



श्री रोहितकुमार नाहर

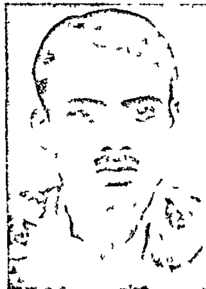
एक स्मृति



राजस्थान के भू पू मुख्य मंत्री स्व श्री जय नारायण व्यास ने इन्टर कालेज के छात्रों का सम्बोधित किया ।

मंच पर स्व विजय चन्द दुलभी व प्रिंसिपल यह







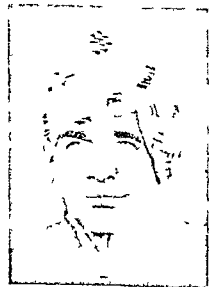
स्व प नवदत्त शर्मा

जिन्हें हम भुला नहीं सकते, विद्यालय परिवार मे जिनकी विद्वता और अकृत्रिम मुस्कान की चर्चा प्राय होती ही रहती है ।



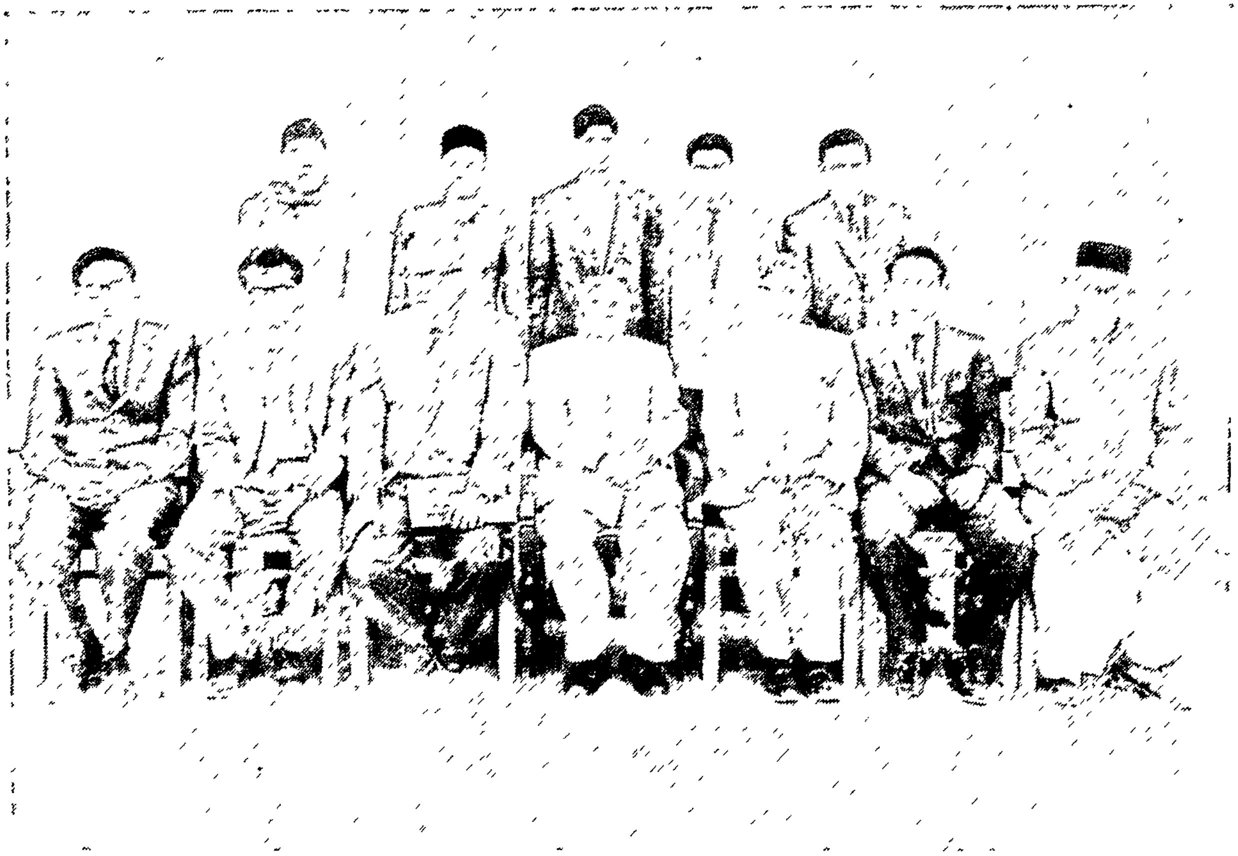
महाविद्यालय के नवीन भवन के निर्माण मे तत्परता से काय करने वाले

श्री रामसिंह



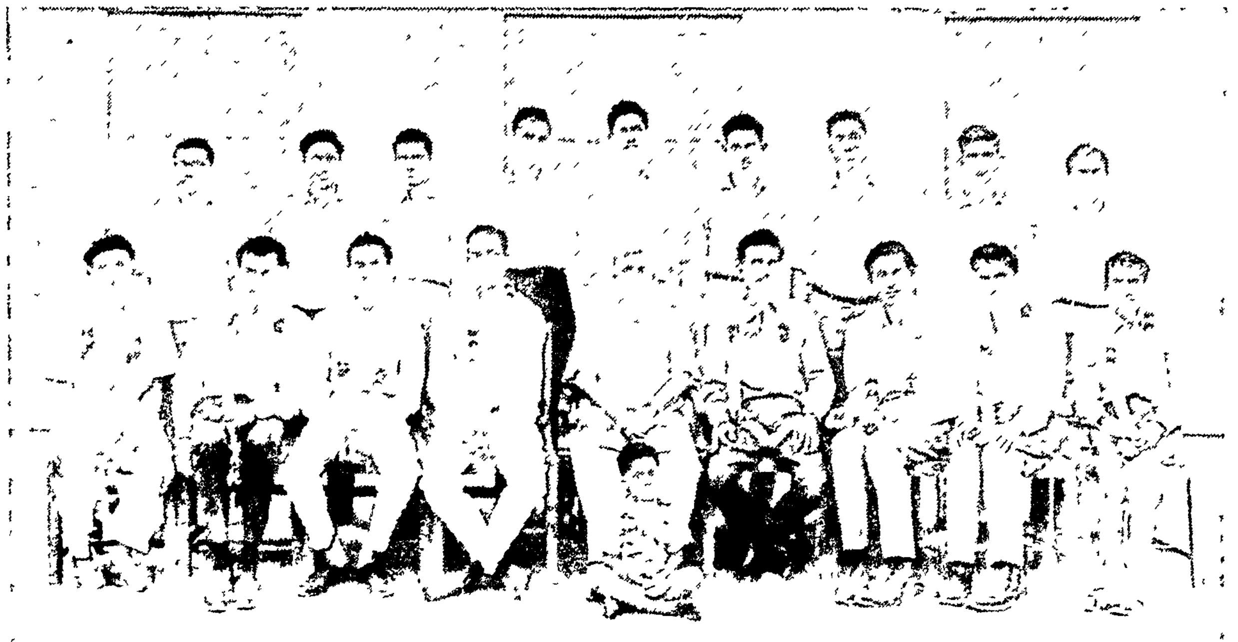
नवीन भवन के मुख्य शिल्पी

श्री रामधन



सुबोध डिग्री कॉलेज (विज्ञान) का प्रथम स्टाफ



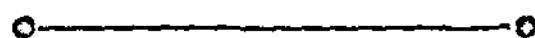


डिग्री कॉलेज (विज्ञान) की बी. एस-सी. फा. का प्रथम छात्र-दल



श्री सुवोध माध्यमिक वालिका विद्यालय का वतमान स्टाफ

(१९७५-७६)





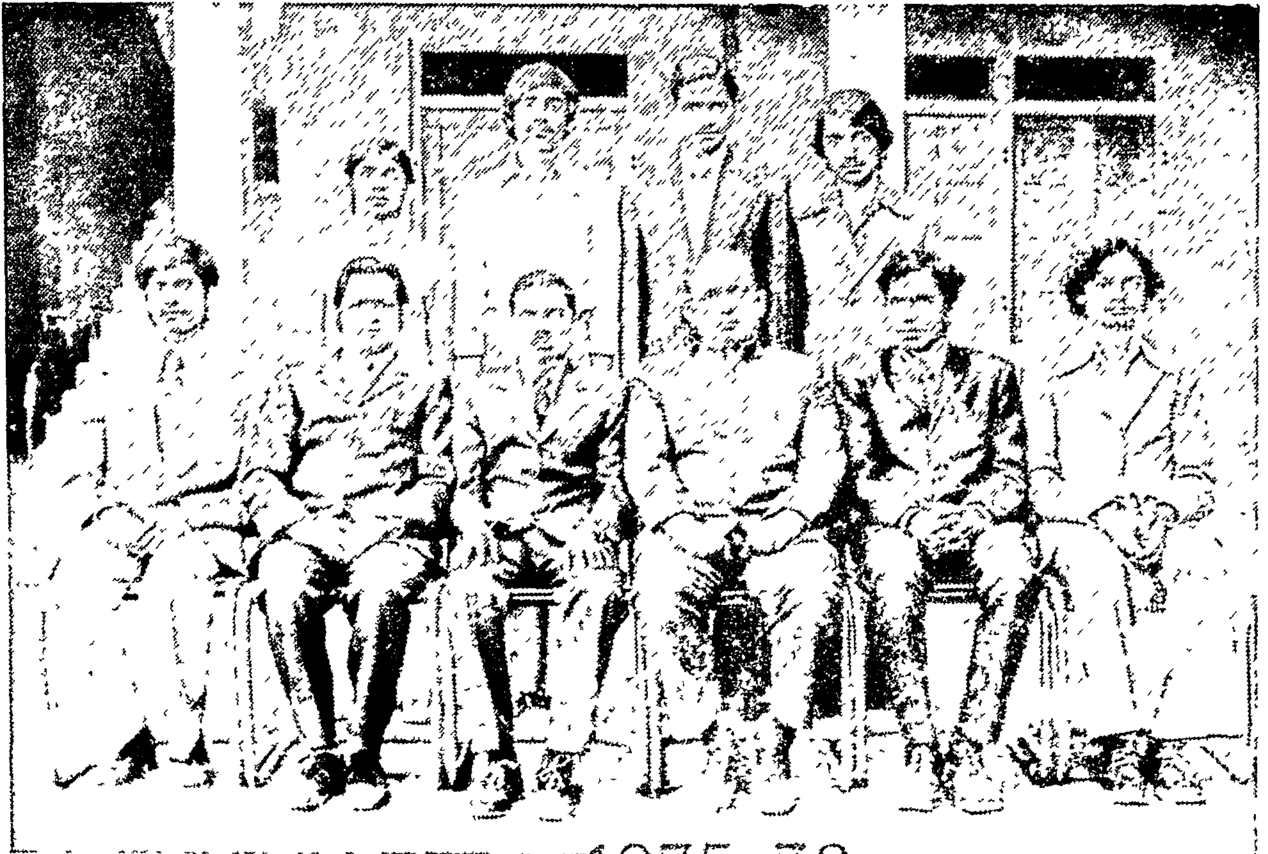
प्राथमिक शाला का वर्तमान स्टाफ

(१९७५-७६)

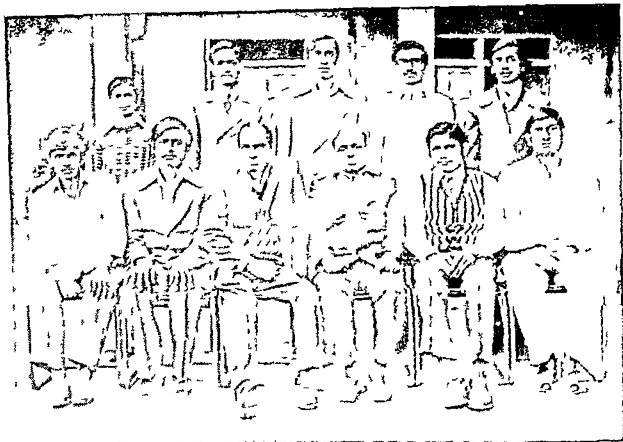
विज्ञान-परिषद् (महाविद्यालय)

1975-76

वाणिज्य-परिषद् (महाविद्यालय)



सत्र 1975-76



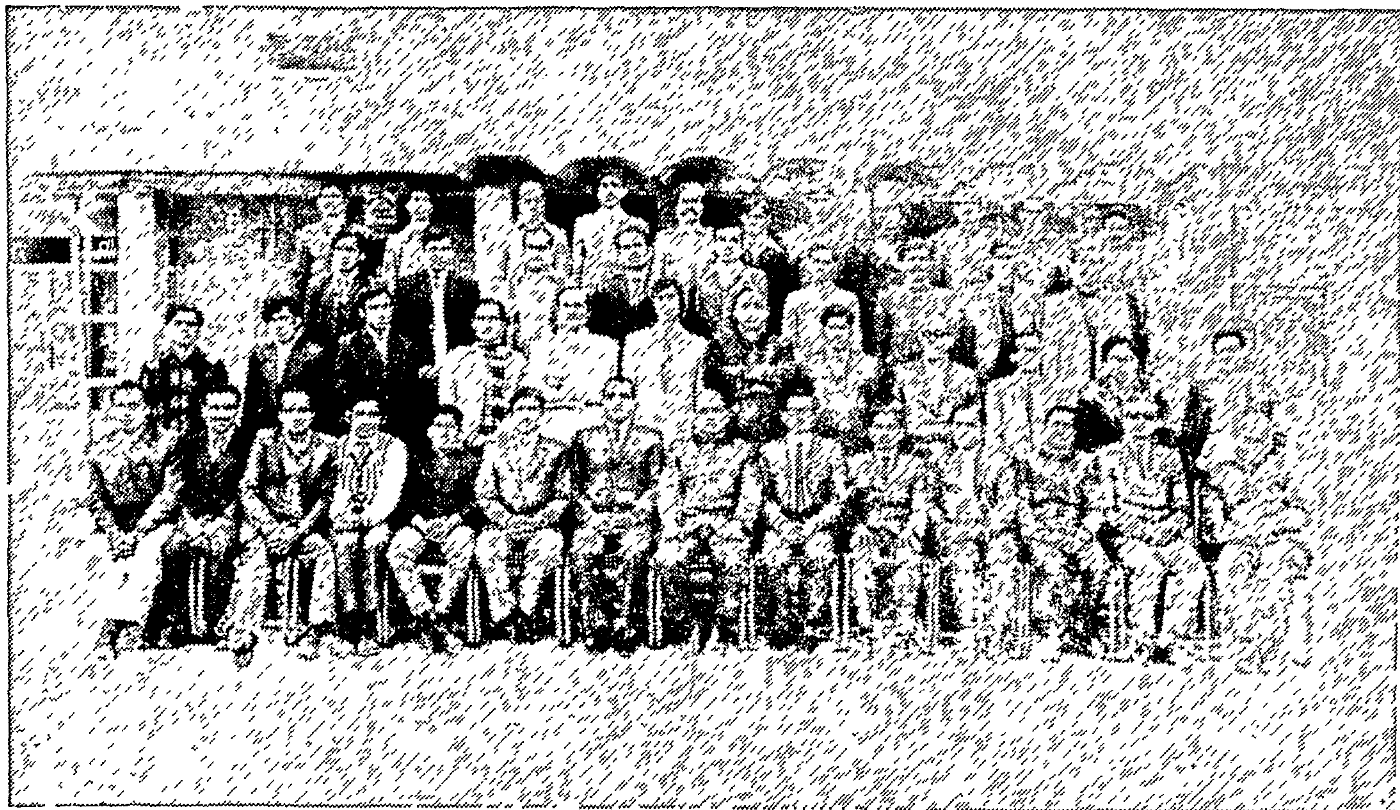
कला परिषद् (१९७५-७६)

रैडक्रॉस दल (१९७५-७६)

एस० एस० जैन सुबोध महाविद्यालय

का

प्राध्यापक समुदाय एवम् स्टाफ के अन्य सदस्य (१९७५-७६)



(बांये से दांये)

कुर्सियों पर बैठे हुये— सर्व श्री एन. के. माथुर, एन. के. भार्गव, एल. सी. जैन, एस. पी. एस. सैनी, एस. पाडे, एस. एस. सक्सैना, एल. के. स्वामी (उप-प्राचार्य), एन. एस. गोलेछा (प्राचार्य), के. पी. माराभाई, पी. एन. सिंह, पी. डी. चितलाग्या, एच. एल. शर्मा, आर. एम. एल. गुप्ता, एच. एम. शर्मा.

खड़े हुए (प्रथम पंक्ति) सर्व श्री आर. सी मलिन्द, एम. सी. जैन, बी. आर. सैनी, ए. ए. शर्मा, आर. सी. चौबे, के. सी शर्मा, एल. सी. सैनी, ओ. पी. वर्मा, एन. सी. चोरडिया, एफ. सी. कचन, के सी कँवर, आर. एल. तौलखा

खड़े हुये (द्वितीय पंक्ति) सर्व श्री एस. पी. गुप्ता, जी. एस. भटनागर, एन एच. साजनानी, डॉ. जे. डी शर्मा, एम के. दीक्षित, ए. के. नाहर, श्यामलाल, रामनारायण, रतन, रामलाल, प्रभूलाल, कल्याण, सुमेरसिह, भैरोसिह, सुरेन्द्र, बाबूलाल, बृजमोहन, रामकिशोर, मदनलाल, किशनलाल,

महाविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना दल

1975-76

योजना सगोष्ठी (महाविद्यालय)

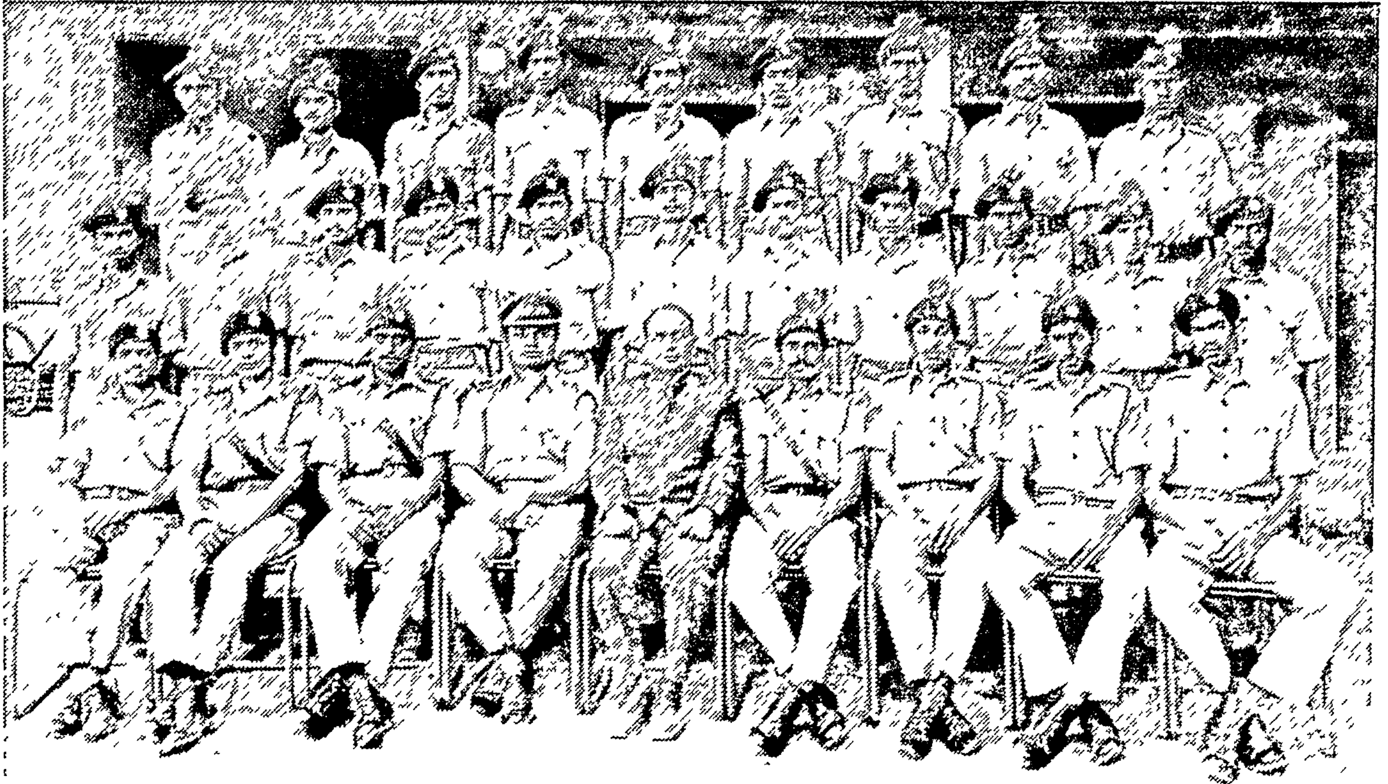


सत्र 1975-76

Senior Division N.C.C., S. S. Jain Subodh College

JAIPUR

Group Photo Session 1975-76

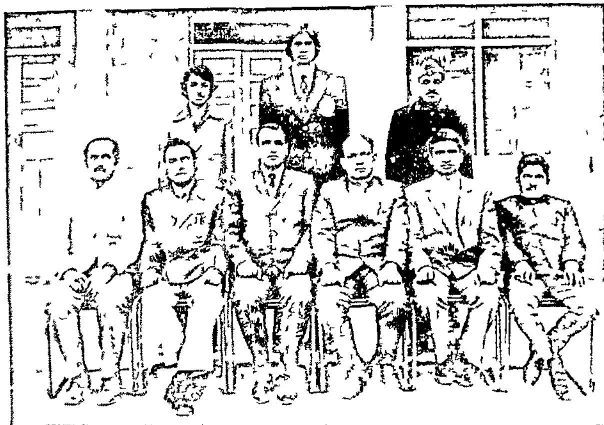


Sitting on Chairs
(Left to Right) —Sgt S. K Verma, U O N. K. Sharma. U. O P. L Vaidya. Lt. M. L Jain Shri N. M. Golechha. (Principal). U. O. G L Sain, Sgt R P. Saxena, Sgt. R K S Chandal. B S. Nathawat

Standing First Row
(Left to Right) — Cpt. R B Saxena. K. Babu. S. K Gangwal, G L. Soni. M. K. Chhabada, M L Sharma, D L Jain, S K Jain R. K. Saini. M. P. Jain, R Lal

Standing Second Row
(Left to Right) — A Saxena. J P. Mathur. S K Sharma, G R Raigar A K. Pareek. Cpt T Vyas, Sgt H L Gurjar. Cpt Y K Shrivastav. O P Thanavi.

महाविद्यालय सतर्कता समिति



बैठे हुए (बाएँ से) —सर्वश्री रमेशचन्द्र चौबे, नरेशकुमार माथुर, लक्ष्मीकान्त स्वामी प्राचार्य श्री नथमल गोलेछा शैलेन्द्रसहाय सक्सेना सन्तोष पाण्डेय।

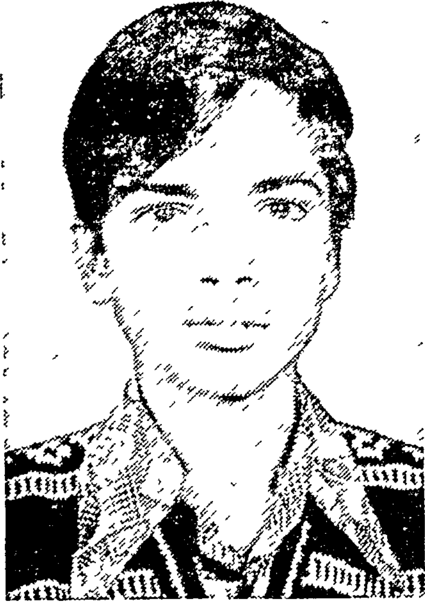
खड़े हुए —श्री भगवानदास ललवानी श्री राजेन्द्र वैद (छात्र), श्री कल्याण (च० क०)

— पत्रकार सम्मेलन —



स्वर्ण जयन्ती के कार्यक्रमों के सम्बन्ध में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में श्री लक्ष्मण चतुर्वेदी, श्री नथमल गोलेछा, श्री सिरहमल नवलखा श्री बालचन्द्र वैद्य, श्री जतनमल कर्णावट तथा सभी प्रसिद्ध पत्रकार।

श्री प्रमोद गोलेछा



द्वि० व० विज्ञान (1975) में
द्वितीय स्थान
प्राप्तांक 82 प्रतिशत

श्री मनमोहन अग्रवाल



प्र० व० विज्ञान (1975) में
द्वितीय स्थान
प्राप्तांक 93 प्रतिशत

श्री भगवानदास ललवानी



प्रथम वर्ष वाणिज्य में
71 प्रतिशत अंक

जिन प्रतिभाओं पर महाविद्यालय को गर्व है

राजस्थान विश्व विद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं में कीर्तिमान कायम करने वाले छा

श्री अमरकुमार जैन



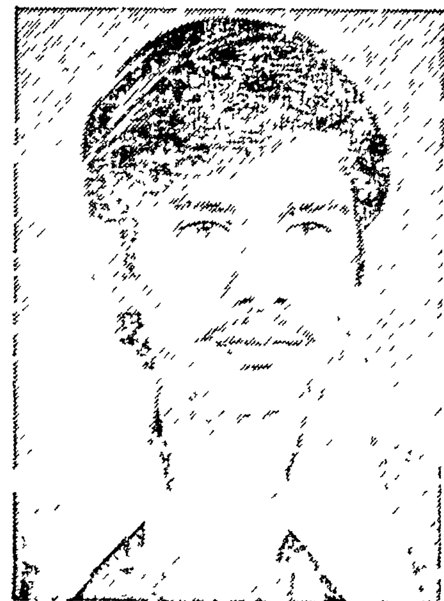
बी. कॉम. (1976) में
द्वितीय स्थान
प्राप्तांक 80 प्रतिशत

श्री पारसचन्द जैन

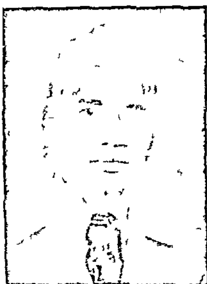


द्वि० वर्ष वाणिज्य (1975) में
द्वितीय स्थान
प्राप्तांक 78 प्रतिशत

श्री हीरासिंह बैद



द्वि० व० वाणिज्य (1975) में
द्वितीय स्थान
प्राप्तांक 77 प्रतिशत



श्री राजेन्द्र बैद

यशस्वी छात्र नेता

जिनके नेतृत्व में छात्रों ने
स्वर्ण जयन्ती समारोह
सफलता पूर्वक मनाया



श्री कैलाशचन्द्र गुप्ता

महाविद्यालय के परम उत्साही छात्र

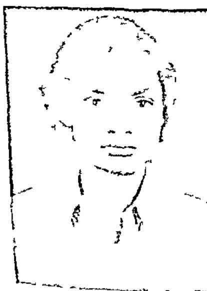


स्वर्ण जयन्ती समारोह के सर्वाधिक टिकट
वितरण करने वाले उत्साही छात्र

← श्री पूनमचन्द गुजरानी
द्वि व वाणिज्य
इन्होंने एक हजार रु० के टिकट वितरित
करके प्रथम स्थान प्राप्त किया

श्री अनिलकुमार बैद →
प्र व वाणिज्य
श्री वद न पाच सौ रु० के टिकट वितरित
करके द्वितीय स्थान प्राप्त किया





श्री श्यामसुन्दर सर्राफ बी कॉम(फा)

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के
उत्साही छात्र



महेश फूलवाल

ग [illegible]तन्त्र की परेड में इस छात्र ने

S. S. JAIN SUBODH COLLEGE, JAIPUR

List of Graduates from 1965 to 1975.

1965

1. Sarvajeet Singh Camboo
   First Graduate IIDiv. B.Sc.

1966

1. Vijai Kumar Chadha IIDiv. B Sc.

967

1. Chuttan Lal Agrawal IIDiv. B Sc.

1968

1 Ashok Kumar Jain IIDiv. B Sc.
2 Girish Chand Jain " "
3 Kanti Lal Porwal IDiv. "
4. Madan Lal Banthia IIDiv. "
5. Ravi Kumar Karva " "
6. Trilok Narain Tikku " "

B. Sc. 1969

1. Kanti Chand Swami IDiv.
2. Padam Chand Golechha "
3. Sewak Raj Gulati IIDiv.
4. Surendra Kumar Jain IDiv.
5. Suresh Chandra Nigam IIIDiv.
6. Suraj Narain Mathur "
7. Vijai Kumar Gupta IDiv.

B. Sc. 1970

1. Anil Kumar Bhargava IDiv.
2. Jugal Kishore Khichi IIDiv.
3. Shital Pd. Mishra "
4. Shiv Dayal Goyal IIIDiv.
5. Vijai Pal Gupta IIDiv.

B. A.

1. Ghan Shyam Gupta IIIDiv.
2. Hari Narain Sharma "
3. Kanhaiya Lal Sharma "
4 Man Mohan Sharma "
5. Manak Chand Dhandia "
6. Mohan Lal Vyas "
7. Nand Kumar Punjabi "
8. Nirmal Kumar Sogani "
9. P. Prakash "
10. Radhey Shyam Sharma "
11 Rajendra Kumar Bansal "
12. Rajendra Kumar Sharma IIDiv.
13. Ramesh Babu Pareek IIIDiv.
14. Samir Mal Chopra "
15 Shanti Lal Kucheria IIDiv.

B. Com. 1970

1. Asha Ram Vijai IIDiv.
2 Arun Kumar Kala IIIDiv.
3. Bhanwar Lal Khandelwal IIDiv.
4. Dharam Pal Singh Vaid IIIDiv.
5. Gautam Chand Lodha IIDiv.
6. Ghan Shyam Das Gupta "
7. Harak Chand Sogani "
8. Kailash Chand Gupta IIIDiv.
9. Man Chand Jain IIDiv.
10. Padam Chand Dhandia "
11. Satyendra Kumar Baid IIIDiv.
12. Suresh Chand Luharia "
13. Vashu Ahuja "

B. Sc. 1971

1. Anil Sharma IIDiv.
2. Brij Bhushan "

1971

No.	Name	Division
3	Guru Dutt Sharma	„
4	Gopal Mathur	„
5	Gopal Lal Agarwal	„
6	Hanuman Sahai Sharma	IIIDiv
7	Kishore Kumar Kakkar	IDiv
8	Man Prakash Sharma	„
9	Ramesh Chand Mathur	IIDiv
10	Ram Gopal Meena	IIIDiv
11	Ravindra Kumar Arora	IIDiv
12	Shanti Chand Jargar	„
13	Surat Pal Singh	„
14	Sudhir Kumar Arora	„
15	Vishambhar Dayal	„

B A

No.	Name	Division
1	Ashok Kumar Jain	IIIDiv
2	Ganga Narain Mathur	„
3	Ghan Shyam Vyas	„
4	Jag Mohan Yadav	„
5	Kailash Chand Sharma	„
6	Mahendra Mal Mehta	„
7	Purshottam Lal Gupta	„
8	Rajendra Mal Lodha	„
9	Ram Kishore Nagpal	„
10	Ram Kishore Meena	„
11	Suresh Chand Sharma	„
12	Sushil Kumar Patni	„
13	Suresh Kumar Mishra	IIDiv
14	Mahesh Chand Gupta	„
15	Mata Deen Gupta	IIIDiv
16	Mathureshwar Gupta	IIDiv
17	Mihir Kumar Jha	„
18	Narain Singh	IIIDiv
19	Purshottam Dixit	„

B Com 1971

No.	Name	Division
1	Anand Kumar	IIDiv
2	Arun Kumar Godha	IIIDiv
3	Ashok Kumar Hirawat	„
4	Baldev Ram Gupta	IIDiv
5	Beni Gopal Kabra	„
6	Chandra Prakash Gupta	IIIDiv
7	Hanuman Mal Sharma	IIDiv

B Com 1971

No.	Name	Division
8	Hanuman Mal Bhutoria	IIDiv
9	Hemant Kumar Sogani	IIIDiv
10	Kailash Chand Chhabra	IIDiv
11	Mahendra Kumar Jain	IIIDiv
12	Manak Chand Jain	IIDiv
13	Narendra Kumar Snehi	IIIDiv
14	Nirmal Chand Dhadda	„
15	Nirmal Kumar Chhabra	„
16	Nirmal Kumar Maloo	IIDiv
17	Om Prakash Porwal	„
18	Om Prakash Tailor	„
19	Prem Chand Sogani	„
20	Rai Chand Hirawat	IIIDiv
21	Rajiv Kumar Singhi	„
22	Ram Charan Maheshwari	IIDiv
23	Ragvendra Agrawal	IIIDiv
24	Ramanuj Agrawal	IIDiv
25	Ranjeet Singh Baid	IIIDiv
26	Sardar Singh Bothra	„
27	Satya Narain Gupta	IIDiv
28	Sharad Shah	IIIDiv
29	Vijai Kumar Sancheti	IIDiv
30	Vinay Kumar Tholia	IIIDiv

B Sc 1972

No.	Name	Division
1	Hari Prakash Gupta	IIDiv
2	Kailash Chand Natani	IIIDiv
3	Krishna Bihari Sharma	IIDiv
4	Man Mohan Barathi	IIIDiv
5	Mohan Lal Khandelwal	„
6	Nawal Kishore Awasthi	„
7	Pawan Kumar Jain	IDiv
8	Rakesh Kumar Sharma	„
9	Rajiv Lochan Pareek	IIDiv
10	Shiva Ram	IIIDiv
11	Sita Ram Sharma	„
12	Trilok Chand Jain	IIDiv
13	Vijai Kumar Jain	„
14	Surendra Kumar Singhi	IIIDiv

B A 1972

No.	Name	Division
1	Govind Narain Sharma	IIIDiv
2	Lalit Pd Gupta	„
3	Mali Ram Verma	„

B. A. 1972

4. Ramji Lal Gupta ,,
5. Sudhir Shrivastava ,,
6. Ashok Kumar Todwal ,,

B. Com. 1972

1. Babu Lal Maheshwari IIDiv.
2. Balwant Singh IIIDiv.
3. Banshi Dhar Tambi IIDiv.
4. Hans Raj Pagaria ,,
5. Jitendra Kumar Jain IIIDiv.
6. Mahesh Kumar IIDiv.
7. Narendra Kumar Karnawat ,,
8. Navratan Mal Jain IIIDiv.
9. Nirmal Kumar Godha ,,
10. Pramod Kumar Kothari IIDiv.
11. Pradeep Kumar Jain IIIDiv.
12. Pradeep Kumar Sharma ,,
13. Radhey Shyam Gupta IIDiv.
14. Rajendra Kumar Ajmera ,,
15. Rajendra Kumar Bardia IIIDiv.
16. Rajendra Kumer Suklecha ,,
17. Ram Gopal Shrimal IIDiv.
18. Ram Prakasn Agrawal ,,
19. Siya Sharan Garg ,,
20. Sukh Mal Jain IIIDiv.
21. Surya Prakash Jain ,,
22. Vinay Chand Daga IDiv.
23. Vinay Chand Dhandia IIDiv.
24. Vinod Kumar Desai IIIDiv.
25. Virendra Kumar Shrimal IIDiv.
26. Yogesh Kumar Singhi ,,

B. Sc. 1973

1. Brij Mohan Thathera IIIDiv.
2. Bharat Raj Bhandari IIDiv.
3. Babu Hari Das Gupta IDiv.
4. Harish Chand Jain IIDiv.
5. Nemi Chand Jain ,,
6. Om Prakash Vijai ,,
7. Ram Babu Maheshwari IIIDiv.
8. Satyendra Kumar Maheshwari IIDiv.
9. Shanker Lal Sharma IIIDiv.
10. Vimal Kumar Sharma IDiv.

B. A.

1. Amar Singh Kirodiwal IIIDiv.
2. Ashok Kumar Jain ,,
3. Dhruv Kumar Gupta ,,
4. Dayal Ramnani ,,
5. Damodar Pd. Sharma ,,
6. Erikson S. Samson ,,
7. Hari Narain Meena ,,
8. Kalyan Sahai Sharma IIDiv.
9. Lallu Ram Sharma IIIDiv.
10. Om Prakash Gupta ,,
11. Ramavtar Sharma ,,
12. Ravindra Kumar Tank ,,
13. Satya Narain Sharma ,,

B. Com. 1973

1. Abhay Kumar Chordia IIDiv.
2. Arun Kumar Raizada ,,
3. Damodar Prasad Sharma ,,
4. Govind Sharan Garg IIIDiv.
5. Jeet Mal Bothra IIDiv.
6. Jitendra Kumar Lakhotia IIIDiv.
7. Krishna Behari Kedia ,,
8. Kailash Chand Agrawal ,,
9. Kushal Kumar Lunawat ,,
10. Krishan Das Patwari ,,
11. Lalit Kumar Patni ,,
12. Mahendra Kumar Bohra IIDiv.
13. Madhusudan Jalan ,,
14. Mahesh Kumar Gaur IIIDiv.
15. Mahavir Pd. Gupta ,,
16. Om Prakash Bang ,,
17. Praveen Chand Jain ,,
18. Rajendra Kumar Chordia ,,
19. Ramesh Chand Gopalia ,,
20. Ram Swaroop Khandelwal ,,
21. Rajendra Kumar Arora IIDiv.
22. Ranjeet Singh Bhandari ,,
23. Ratan Kumar Maloo ,,
24. Rajendra Kumar Somani IIIDiv.
25. Subhash Chand Lodha ,,
26. Surendra Singh Karnawat IIDiv.
27. Surendra Kumar Jain ,,
28. Shriyan Kumar Patolia ,,

B Com 1973

No.	Name	Division
29	Shyam Lal Gupta	IIDiv
30	Sadu Ram Gupta	"
31	Sri Bhagwan Phalod	"
32	Tara Chand Birani	IIIDiv
33	Vinod Kumar Seth	"
34	Vimal Chand Dhadda	IIDiv
35	Virendra Singh Bapna	IIIDiv
36	Yas Pal Jain	"
37	Yogendra Singh Baid	"

B Sc 1974

No.	Name	Division
1	Amolak Chand Kothari	IDiv
2	Ashok Kumar Godha	IIDiv
3	Ashok Kumar Nawalkha	"
4	Ashok Kumar Porwal	"
5	Beni Madhav Pareek	"
6	Bhag Chand Jain	"
7	Bhagwan Das Soni	"
8	Daya Ram Dhariwal	IIIDiv
9	Dharam Chand Golechha	IIDiv
10	Dinesh Kumar Pareek	IDiv
11	Dinesh Kumar Sharma	IIDiv
12	Girish Kumar Kakkar	IIIDiv
13	Nirmal Kumar Goyal	IIDiv
14	Om Prakash Gupta	"
15	Prem Chand Jain	"
16	Rakesh Pareek	
17	Ramavtar Maheshwari	"
18	Satish Chhabra	"
19	Sita Ram Sharma	"
20	Subhash Chand Jain	"
21	Sudhakar Sharma	"
22	Sudhir Golechha	"
23	Suresh Chand Gupta	"

B A 1974

No.	Name	Division
1	Abdul Raouf	IIDiv
2	Ajit Kumar Saxena	IIIDiv
3	Anoop Kumar Sharma	"
4	Alladin	"
5	Arun Kumar Sharma	"
6	Bhawani Singh Shekhawat	"
7	Devi Sahai Sharma	"

B A 1974

No.	Name	Division
8	Durga Das Shekhawat	IIIDiv
9	Girraj Pd Verma	"
10	Jogendra Nath	"
11	Kanhaiya Lal Gupta	IIDiv
12	Kanta Pd	IIIDiv
13	Ram Bahadur Mathur	"
14	Lal Chand Mehtani	"
15	Lalit Kishore Shukla	"
16	Lalit Mohan Arya	"
17	Madan Mohan Sharma	"
18	Mahendra Kumar Sharme	"
19	Mahesh Chand Jain	"
20	Mahesh Kumar Swami	"
21	Mangej Singh	"
22	Parmeshwar Agrawal	"
23	Ram Kalyan Sharma	"
24	Rameshwar Pd Verma	"
25	Ramsi Lal Meena	"
26	Satya Narain Gupta	"
27	Shailendra Kumar Sharma	"
28	Shakti Kumar Gangwal	"
29	Sita Ram Jat	"
30	Sita Ram Sharma	IIDiv
31	Subhash Chand Gupta	IIIDiv
32	Subodh Kumar Tewari	"
33	Surendra Pd Khadgata	"
34	Vijai Kumar Gandhi	"
35	Vinay Chand Daga	IIDiv
36	Vipin Kumar Dava	"
37	Virendra Kumar Nangia	"

B Com 1974

No.	Name	Division
1	Abhay Kumar Shah	IIDiv
2	Akhileshwar Kumar Dusad	IIIDiv
3	Ashok Kumar Agrawal	IIDiv
4	Ashok Kumar Chordia	"
5	Ashok Kumar Dhadda	"
6	Ashok Kumar Phophalia	"
7	Ashok Kumar Sancheti	"
8	Ashok Kumar Saxena	IIIDiv
9,	Ashok Kumar Seth	"
10	Bal Kishan Sharma	"
11	Bhagwat Swaroop	"
12	Bhanwar Lal Nawandhar	IIDiv

B. Com. 1974	
13. Bhawani Shankar Maheshwari	IIIDiv.
14. Bhupendra Rai Saxena	"
15. Brij Singh Rathore	"
16. Braham Naresh Sehgal	"
17. Brij Mohan Agrawal	IIDiv.
18. Chandra Prakash Gupta	"
19. Devendra Singh	IIIDiv
20. Dharmendra Kumar Paliwal	IIDiv.
21. Dilip Singhvi	"
22. Dinesh Kumar Jain	IIIDiv.
23. Gend Mal Jain	"
24. Goverdhan Das Jhanwar	"
25. Gauri Shanker Rawat	IIDiv.
26. Goverdhan Lal Gupta	IDiv.
27. Gyan Chand Jargar	IIIDiv.
28. Hari Kishan Khichar	IIDiv.
29 Ishwar Lal Sankhala	IIIDiv.
30. Jagdish Pd. Saraf	"
31. Jugal Kishore Lohia	IIDiv.
32. Kailash Chand Sharma	IIIDiv.
33. Kailash Chand Vaid	"
34 Kamal Chand Daga	"
35. Kamal Kumar Bhotra	IIDiv.
36 Kamal Kumar Jain	"
37. Kamal Singh Buchha	"
38 Kamal Kumar Jain	IIIDiv.
39. Kanwal Jeet Singh	"
40. Koushal Kishore Dhamani	"
41. Kiran Mohan Mathur	"
42 Kishan Chand Daga	IIDiv.
43. Kumar Chandnani	IIIDiv.
44. Lalit Kumar Mundra	IIDiv.
45. Laxmi Narain Gagar	IIIDiv.
46. Lokender Kumar Mohta	"
47 Mahaveer Lal Jain	IIDiv.
48. Mahendra Kumar Jain	IIIDiv.
49. Mahesh Chander Gupta	"
50. Mahesh Kumar Dixit	"
51. Mahesh Kumar Vanjani	"
52. Man Mohan Das Khandelwal	IIDiv.
53. Metha Ram	IIIDiv.
54. Mool Chand Meena	"
55. Mukand Narain Paliwal	"
56. Nand Kishore Maheshwari	"

B. Com. 1974	
57 Nanu Lal Sharma	IIIDiv.
58 Narender Kumar Baid	"
59. Narender Kumar Jain	IIDiv.
60. Naresh Jagwani	IIIDiv.
61. Naresh Kumar Bhargawa	IIDiv.
62. Naveen Kumar Bilala	IIIDiv.
63 Naveen Kumar Jain	"
64. Nirenjan Pd. Tiwari	"
65 Om Prakash Gupta	"
66. Om Prakash Innani	"
67. Om Prakash Vijai	"
68. Padam Chand Jain	IIDiv.
69 Paras Chand Jargad	"
70. Paras Mal Kotecha	IIDiv.
71. Phool Chand Tinker	IIDiv.
72. Paras Chand Poddar	"
73. Prem Kumar Surana	"
74 Prem Prakash Agrawal	"
75. Prem Ratan Kothari	"
76. Poonam Chand Kedia	"
77. Purushottam Das Agrawal	IIIDiv.
78. Raghu Nath Mittal	IIDiv.
79. Raj Kumar Gangwal	"
80. Rajendra Kumar Paliwal	IIIDiv.
81. Ram Sharan Khandelwal	IIDiv.
82. Ramesh Kumar Somani	IIIDiv,
83. Rasik Das Gattani	"
84. Sampat Raj Kothari	IIDiv.
85. Sanwar Mal Sunar	IIIDiv.
86. Satish Chand Jain	"
87. Satish Kumar Jaju	"
88. Satya Prakash Gupta	IIDiv.
89. Shanker Lal Agrawal	IIIDiv.
90. Shanti Kumar Golechha	"
91. Shyam Behari Lal	"
92. Shyam Sunder Sharma	"
93. Sobhag Mal Shrimal	IIDiv.
94. Subhash Chand Surana	"
95. Sudhir Kumar Bohra	IIIDiv.
96. Surender Singh Mehta	"
97. Surender Kumar Jain	"
98. Sushil Kumar Kala	"
99. Vijai Kumar Ajemera	"
100. Vijai Kumar Ajemera	IDiv.

B Com 1974

101	Vimal Chand Borar	IIDiv
102	Vinod Kumar Baid	IIIDiv
103	Vinod Kumar Lodha	IIDiv
104	Vishnu Kumar Ajitsaria	IIDiv
105	Yesh Pal	IIIDiv

B Sc 1975

1	Anil Kumar Pareek	IIDiv
2	Ashok Kumar Jain	IDiv
3	Bhanwar Lal Yadav	IIDiv
4	Chander Kant Malani	"
5	Devendera Kumar Panjabi	"
6	Shiv Kumar Sharma	"
7	Shyam Lal Vijai	IDiv
8	Suresh Kumar Daga	IIDiv
9	Vimal Chand Chabra	"
10	Vinod Kumar Gupta	IDiv
11	Alok Sharma	IIDiv
12	Anil Raheja	IDiv
13	Dhan Raj Shachdeva	IIDiv
14	Ratan Behari Sharma	IIIDiv
15	Sita Ram Sharma	IIDiv

B A 1975

1	Anil Kumar Bhargava	IIIDiv
2	Anil Kumar Jain	"
3	Ashok Kumar Sharma	"
4	Babu Lal Pareek	"
5	Chandra Prakash Shrivastva	"
6	Chander Bhan Singhi	"
7	Chittar Mal Yadav	"
8	Chiman Lal Taneja	"
9	Desh Raj	"
10	Dinesh Chand	"
11	Dwarika Prasad	"
12	Gajendra Kumar Tak	"
13	Guru Das	"
14	Janesh Saraswat	"
15	Kailash Chand Meena	"
16	Kedar Nath Sharma	"
17	Lallu Ram Narolia	"
18	Mahesh Chand Jain	"
19	Manik Chand Jain	"
20	Manohar Lal	"

B A 1975

21	Mansukh Das Agrawal	IIIDiv
22	Mitthan Lal Jain	"
23	Manohar Lal Paliwal	"
24	Narendra Kishore	"
25	Naresh Kumar Sharma	"
26	Pramod Kumar Agrawal	"
27	Rajendra Kumar Mishra	"
28	Ram Swaroop	"
29	Ramesh Chand Pareek	"
30	Ramesh Chand	IIDiv
31	Ramesh Chand Gupta	IIIDiv
32	Revati Raman Tiwari	"
33	Shiv Kumar Pareek	"
34	Shiv Kishan Chand Sharma	"
35	Suraj Mal Jain	"
36	Suresh Chand Gupta	"
37	Suresh Kumar Sharma	IIDiv
38	Sushil Kumar Goutam	IIIDiv
39	Vijai Kumar Agrawal	"
40	Vijai Singh Rawat	"
41	Vinod Kumar Rajoria	"
42	Joor Singh Rajawat	"
43	Deen Dayal Gupta	"
44	Deepak Sardana	"
45	Govind Ram Haritwal	"
46	Rajesh Gour	"
47	Ram Rai Sharma	"
48	Sampat Lal Purohit	"

B Com 1975

1	Amar Kumar Jain	IDiv
2	Arjun Lal Sindhi	IIDiv
3	Babu Lal Meena	IIIDiv
4	Banshi Lal Bohra	IIDiv
5	Bhagwati Sahai Sharma	"
6	Vishnu Kumar Sharma	IIIDiv
7	Brij Kishore Pitalia	IIDiv
8	Chetan Kumar Jain	"
9	Chunni Lal Punjabi	IIIDiv
10	Deepak Koolwal	IIDiv
11	Denesh Kumar H Bothra	IIIDiv
12	Denesh Kumar Methta	"
13	Giriraj Kumar Khunteta	IIDiv
14	Goverdhan Das Agrawal	IIIDiv

B. Com. 1975

15. Goutam Chand Lodha ,,
16. Heera Chand Jain ,,
17. Inder Singh Jain ,,
18. Jai Kumar Jain ,,
19. Jai Kumar Juniwal IIDiv.
20. Jai Singh Manhot IIIDiv.
21. Jinendra Kumar Jain IIDiv.
22. Kailash Chandra Jain IIIDiv.
23. Kailash Chand Agrawal IIDiv.
24. Kamal Kumar Luhadia IIIDiv.
25. Kapil Deo Gupta ,,
26. Koushal Kumar Sharma ,,
27. Kishan Lal Sindhi IIDiv.
28. Lal Chand Lahoti ,,
29. Laxman Das Shevkani IIIDiv.
30. Madan Singh Babel ,,
31. Mahaveer Pd. Jain IIDiv.
32. Mahendra Kumar Badjatiya ,,
33. Mahendra Kumar Gandhi IIIDiv.
34. Mahendra Singh Karnawat ,,
35. Mahesh Pd. Sharma IIDiv.
36. Mohan C. Vasu IIIDiv.
37. Mohan Lal Gupta IIDiv.
38. Mukesh Chand Jain IIIDiv.
39. Nalin Kumar Shrimal ,,
40. Narendra Kumar Hirawat IIDiv.
41. Narendra Kumar Hirawat IIIDiv.
42. Narendra Raj Singhvi ,,
43. Narendra Singh Mehta IDiv.
44 Nihal Chand Jargar IIIDiv.
45 Nawal Kishore Agrawal IIDiv.
46. Om Prakash Gupta IIIDiv.
47. Padam Chand Kasliwal IIDiv.
48. Pradeep Bhandari ,,
49. Pradeep Kumar Jain IIIDiv.
50. Pradeep Kumar Singh IIDiv.
51. Rajendra Kumar Ajmera ,,
52. Rajendra Pd. Sharma IIIDiv.
53. Rakesh Kumar Jain ,,
54. Rakesh Kumar Pandey ,,
55. Ram Kishore Koolwal IIDiv.
56. Ramji Lal Jhanwar IIIDiv.
57. Satish Kumar Tambi IIDiv.
58. Shanker Lal Tailor IIIDiv.

B. Com. 1975

59. Shanti Kumar Jain IIIDiv.
60. Shanti Lal Sharma IIDiv.
61. Shanti Pd. Jain IDiv.
62. Sharad Mehta IIDiv.
63. Shiv Charan Gupta IIIDiv.
64. Shri Chand Bardia ,,
65. Shri Chand Sindhi ,,
66. Shyam Sunder Maheshwari IIDiv.
67. Sita Ram Malhotra IIIDiv.
68. Subhash Khandelwal IIDiv.
69. Sunil Kumar Hirawat IDiv.
70. Surendra Kumar Oswal IIIDiv.
71. Suresh Chand Hirawat IIDiv.
72. Suresh Chand Hirawat IIIDiv.
73. Sushil Kumar Bohra IIDiv.
74. Shashi Kumar Jain IIIDiv.
75. Tikam Chand Jain IIDiv.
76. Uma Shanker Khandelwal ,,
77. Umesh Chand Sharma IIIDiv.
78. Ved Prakash Gupta IIDiv.
79. Vijai Kumar Jain IIIDiv.
80. Vinod Kumar Patni ,,
81. Vinod Kumar Patni IIDiv.
82. Yogendra Kumar Sharma IIIDiv.
83. Abdul Salim ,,
84. Madan Gopal Gattani ,,
85. Prakash Chand Kulakarni ,,
86. Pushpendra Kumar Agrawal ,,
87. Rameshwar Pd. Maheshwari ,,
88. Subhash Chand Kasliwal ,,
89. Suresh Pd. Shrivastva ,,
90. Vinai Kumar Agrawal ,,
91. Abhay Ajmera ,,
92. Abhay Jain IIDiv.
93. Ashok Kumar Baid IIIDiv.
94. Ashok Kumar Jain ,,
95. Babu Lal Gupta ,,
96. Bajrang Lal IIDiv.
97. Bharat Bhuushan Sharma IIIDiv.
98. Devendra Kumar Jhalani ,,
99. Dhanpat Karnawat ,,
100. Dharam Kumar Patni ,,
101. Doulat Tanwani ,,
102. Gyan Chand ,,

B Com	1975	
103	Hira Chand Bardia	IIIDiv
104	Kishan Lal Thathera	"
105	Laxman Kumar Motwani	"
106	Mahendra Kumar Soni	IIDiv
107	Mahesh Kumar Kukreja	IIIDiv
108	Manik Chand Sharma	IIDiv
109	Nawal Kishore Purohit	IIIDiv
110	Om Prakash Soni	"

B Com	1975	
111	Prabhu Dayal Jhalani	"
112	Radhey Shyam Gupta	"
113	Rajendra Kumar Mehta	"
114	Rang Nath Agrawal	IIDiv
115	Roop Kumar Jhalani	"
116	Sampat Kumar Chordia	IIIDiv
117	Tara Chand Jasnani	"



HIGHER SECONDARY

The List of Students who secured Ist Division in Higher Secondary Examination From 1965 to 1975

(The distinction obtained by them is shown against their names)

1965-66

CLASS XI A

1. Padam Chand Golechha

CLASS XI B

1. Kishore Kumar Shah — Phy & Maths.
2. Suresh Kumar Dadlani — Phy. & Maths.

CLASS XI C

1. Ashok Kumar Kala — B. K.
2. Shyam Sunder Kalani — B. K.
3. Vikash Kumar Jain — B. K.

1966-67

CLASS XI A

1. Indra Raj Singh
2. Naveen Kumar Nag
3. Navin Prakash Shrivastava — Maths.

CLASS XI B

1. Om Prakash Khandelwal
2. Prakash Chandra — Phy. & Maths.

CLASS XI C 1

1. Ashu Ram Vijai
2. Bhanwer Lal Jain — B. K.

CLASS XI C 2

1. Megh Kumar Luniya — Type

1967-68

CLASS XI A

1. Ashok Kumar Bhargawa — Maths
2. Dhan Raj Kumar Lalla — Maths.
3. Nav Ratan Mal Jain — Chy.
4. Rajendra Prasad Chaudhari — Maths. & Chy.
5. Subhash Chand Goyal — Phy., Chy. & Maths.
6. Surendra Kumar Jindal
7. Surendra Kumar Surana — Maths.
8. Surendra Kumar Patwa — Chy. Maths.
9. Ramavatar Gupta — —

CLASS XI D

1. Anand Kumar — Type

2 Ashok Chand Mehta B K
3 Baldev Raj Gupta B K Type E & H
4 Prakash Chand Jain B K
5 Satya Narain Gupta

1968 69

CLASS XI A

1 Ashok Kumar Nawalkha
2 Kishori Mal Bhandari Chy Maths
3 Sudhir Ajmera

CLASS XI B

1 Mahendra Golechha Chy Maths

CLASS XI C

1 Kanti Kumar Singhi

1969-70

CLASS XI A

1 Ajai Bhargava Maths
2 Bharat Raj Bhandari Maths
3 Prabhu Dayal Maheshwari Maths
4 Rakesh Kumar Bhatt
5 Suresh Kumar Jain Phy Chy Maths
6 Jagdish Narain Sharma

CLASS XI B

1 Kalyan Sahay Sharma
2 Rajendra Kumar Jain Maths

CLASS XI C

1 Budhi Prakash Godha
2 Jeet Mal Bothara B K
3 Vimal Chand Dhadda Type H & E.

1970-71

CLASS XI A

1 Prakash Chand Dhandia

CLASS XI C

1 Kamalesh Kumar Singhal B K
2 Nand Kishore Khatri

CLASS XI D

1 Goverdhan Lal Gupta B K
2 Vijay Kumar Ajmera B K

1971-72

CLASS XI SCIENCE

1 Ashok Kumar Jain Chem
2. Shri Ram Badaya —

CLASS XI COMMERCE

1 Dinesh Kumar Mehta Type
2 Giri Raj Kumar Khunteta
3 Hari Krishna Agrawal
4 Narendra Kumar Heerawat Type
5 Narendra Singh Mehta B K Type
6 Raj Kumar Nahar B K
7 Ram Awtar Gupta B K Type
8 Ram Ratan Gupta Type
9 Sunil Kumar Heerawat B K Type
10 Tara Chand Kanoogo Type
11 Tikam Chand Jain
12 Vinod Kumar Patni Type
13 Ashok Kumar Likhyani
14 Ram Sahai Shrimal
15 Ramesh Kumar Vaidya B K,
16 Mohamood Yakil B K
17 Vinod Kumar Gupta B K

1972-73

XI SCIENCE

1. Pradeep Kumar Golechha Maths.
2. Pramod Kumar Golechha Maths. Chy.
3. Shyam Sunder Sarraf

CLASS XI ARTS

Nil

CLASS XI COMMERCE

1. Anil Kumar Jain
2. Anil Kumar Lodha
3. Ashok Kumar Juniwal
4. Mohan Lal Buchcha
5. Prem Chand Sindhi
6. Suresh Chand Chhabra
7. Tara Chand Agarwal
8. Vinod Kumar Barodiya
9. Jagdish Prasad Gupta
10. Amrit Keswani
11. Anil Kumar Kernawat
12. Heera Singh Vaidya
13. Jainendra Kumar Ranka
14. Kishan Chand Alwani
15. Mukesh Chandra
16. Nand Kishore
17. Paras Chand Jain
18. Ravindra Nath Sharma
19. Rajendra Kumar Dhandiya
20. Subhash Chand Khandelwal
21. Surendra Kumar Sharma
22. Vijai Chand Banthia
23. Virendra Kumar Shah
24. Deepak Jain
25. Nawal Kishore Pitaliya
26. Om Prakash Agarwal Ist
27. Pradeep Kumar Gupta
28. Satish Kumar Sharma IInd

1973-74

CLASS XI A

1. Anoop Kumar Parekh
2. Ashok Kumar Jasotani
3. Ghanshyam Makhija
4. Manak Chand Taleda
5. Man Mohan Agrawal **2nd position**
6. Tara Chand Agrawal
7. Kul Bhushan Sodhi

CLASS XI B

1. Giri Raj Singh

CLASS XI C

1. Hari Das Maheshwari
2. Mayur Kumar Bardia
3. Raj Prakash Saxena
4. Rajender Singh Karnawat
5. Sunil Kumar Daga
6. Suresh Chand Jain

CLASS XI D

1. Bhagwan Das Lalwani B. K., C. P. & Type **2nd position**
2. Davendra Kumar

3 Hanuman Das Sharma
4 Harish Kant Pareek
5 Inder Pal Singh Chawala
6 Jugal Kishore Agrawal
7 Kailash Chand Shrimal

CLASS XI E

Nil

1974-75

CLASS XI A SCIENCE

1 Devendra Kumar Sharma
2 Dinesh Kumar Goyal
3 Shyam Prakash Saxena
4 Sunil Kumar Goyal
5 Surender Singh

CLASS XI B ARTS

Nil

CLASS XI C COMMERCE

1 Anil Kumar Jain
2 Arun Kumar Phophaliya
3 Jugal Kishore Temani
4 Krishan Kumar Maheshwari
5 Padam Kumar Nirkhi
6 Radha Mohan Parwal
7 Ram Charan Lakhotia
8 Vinod Kumar Shrimal

CLASS XI D COMMERCE

1 Anil Kumar Jain
2 Anjani Kumar Joshi
3 Babu Lal Goyal
4 Chander Shekhar Chodhari 7th Position
5 Ghanshyam Das Rathi
6 *Rajendra Pd Gupta*
7 Tikam Chand Jain

CLASS XI E COMMERCE

1 Mahavir Chand
2 Pareemal Das



SECONDARY

The list of students who secured Ist division in Secondary Exam. from 1964-65 to 1974-75

(The distinction obtained by them is shown against their name)

1964-65—

CLASS X A—

1. Naveen Kumar Nag, Maths
2. Padam Chand Golechha, Maths.
3. Shanti Chand Jargar, Maths.
4. Uttam Chand Nahar, Maths.

CLASS X B—

1. Chandra Gopal Bohara, Phy. Chy.
2. Jugal Kishore, Maths. Chy.
3. Kishore Kumar Sah, Maths. Chy.
4. Naveen Prakash Srivastava, Maths.
5. Prakash Chand Sogani, Chy.
6. Raghu Vanshi Sharma, Maths.
7. Ram Swaroop Agrawal, Maths.
8. Suresh Kumar Dhallani, Maths. Chy.

CLASS X D—

1. Shyam Sunder Kalani, B.K.C.P.

1965-66—

1. Anil Kumar Sharma,
2. Har Bhajan Singh, Maths.
3. Shiv Prasad Sharma, Maths.
4. Ashok Kumar Bhargava, Maths.
5. Dhan Raj Kumar Lala, Maths.
6. Girish Kumar Sharma, Maths.
7. Guru Sharan Singh, Maths.
8. Kamal Chand Bakiwal, Maths.
9. Kuldeep Singh, Maths.
10. Madan Juneja, Maths.
11. Radhey Shyam Agarwal, Maths.
12. Radhey Shyam Gupta, Maths. & Chy.
13. Shiv Kumar Gupta, Maths.
14. Surgyani Lal Bakliwal, Maths.
15. Purushottam Varyani, Maths.
16. Ganga Vishnu, Maths.
17. Padam Chand Dhadda, Book Keeping
18. Anant Raj Kotecha, Book Keeping
19. Govind Ram, Book Keeping
20. Govind Kriplani, Hindi, English Type
21. Megh Kumar Lunia, Hindi, Eng. Type

1966-67—

CLASS X A—

1. Babu Lal Gupta, Phy.
2. Dharam Chand Mehta
3. Gaindi Lal
4. Ganesh Lal
5. Nav Ratan Mal Jain, Phy. Maths.

6 Naveen Kumar Mahamwal

7 Naval Kishore Sharma

8 Ram Awtar Gupta, Maths

9 Ramesh Chand Sharma

10 Rajendra Prasad Choudhry Maths

11 Santosh Kumar Varma

12 Subhash Chand Goyal, Chem Maths

13 Surendra Kumar Jindal, Phy Chy

14 Surendra Kumar Surana Phy Maths

CLASS X C—

1 Govind Narain Jain, B K

CLASS X D—

1 Sunder Lal, Type

1968 69—

CLASS X A—

1 Ashok Kumar Porwal

2 Ashok Kumar Purohit

3 Prabhu Dayal Maheshwari

4 Suresh Kumar Jain Chy

5 Jai Krishan Sharma

1969-70—

CLASS X A—

1 Dharam Chand Golechha, Chy

2 Prakash Chand Dhandhia, Phy Chy Maths

3 Jayanti Lal Porwal

CLASS X C—

1 Jai Kumar Jain, B K

2 Kamlesh Kumar Singhal, B K, Type Hindi Eng

3 Manohar Lal, B K

4 Om Prakash Jain B K

CLASS X D—

1 Govardhan Lal Gupta, B K Type Hindi Eng

2 Vijay Kumar Ajmera, B K

1970-71—

CLASS X A—

1 Arun Kumar Bhargava, Phy

2 Ashok Kumar Jain Phy Chy

3 Kamal Chand Patni Chy

CLASS X C—

1 Giriraj Kumar Khunteta B K & Type

2 Hari Krishan Agarwal Type

3 Mohammad Yakil B K

4 Mahendra Kumar Hirawat, B K Type

5 Narendra Singh Mehta, Type

6 Raj Kumar Nahar

7 Ramawta Gupta

8 Sunil Kumar Hirawat Type

9 Tara Chand Kanogo B K Type

10 Vinod Kumar Gupta

1971-72—

Class X Science—

1 Arvind Kumar Lunia

Class X Commerce—

1 Anil Kumar Jain

2 Ashok Kumar Juriwal B K

3 Dev Raj Soni B K

4 Prem Chand Khatri B K

5 Suresh Kumar Chhabra, B K

6 Amrit Keswani, Type

7 Heera Singh Vaidya, B K C P Type

8 Paras Chand Jain, B K.

9 Pardeep Kumar Gupta

10 Satish Kumar Sharma, B K

1972-73—

Class X Science—

1. Anoop Kumar Parakh
2. Man Mohan Agarwal
3. Pramod Kumar Chowdhary
4. Ram Prasad Maheshwari

Class X Arts—

1. Giriraj Singh

Class X Commerce—

1. Brij Kishore Agarwal
2. Buddhi Prakash Jain
3. Hari Das Maheshwari
4. Kamal Singh Jamed
5. Kanhaiya Lal Jain
6. Mayur Kumar Baradiya
7. Pravin Kumar Sethi
8. Raj Prakash Saxena
9. Ramesh Chand Patel
10. Sunil Kumar Daga
11. Sunil Kumar Jain
12. Sobhag Mal Golechha
13. Shanti Kumar Jain
14. Subhash Chand Bardia
15. Anil Kumar Bharkatia
16. Bhagwan Das Lalwani
17. Indra Pal Singh
18. Kailash Chand Shrimal
19. Mahesh Kumar Chhabra
20 Om Prakash Gupta
21. Purshotam Lal Somani
22. Shripat Singh Gokharu

1973-74—

Class X A Science—

1. Shyam Prakash Saxena
2. Sunil Kumar Goyal

Class X B—

1. Arun Kumar Jain
2. Jugal Kishore Temani
3. Krishan Kumar Karwa
4. Sunil Kumar Jain

Class X C—

1. Ghanshyam Das Rathi
2. Paras Chand Bhansali
3. Rajender Prasad Gupta
4. Subhash Chand Gangwal

Class X D—

1. Jai Kumar Ajmera
2. Raju Tirath Das
3. Shikher Chand Jain

1974-75—

Class X A Science—

1. Chandra Prakash Jain
2. Nirmal Kumar Jain

Class X B Commerce—

1. Narendra Kumar Jain

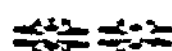
Class X C Commerce—

1. Ashok Kumar Dangayach
2. Rajendra Kumar Patni
3. Rajesk Kumer Maheshwari
4. Ram Prasad Agarwal
5. Shyam Sunder Mittal
6. Surender Kumar Sethi
7. Suresh Kumar Gupta
8. Vinod Kumar Sharma



S S Jain Subodh Girls Secondary School, Jaipur

SECONDARY SCHOOL EXAMINATION RESULT, 1974-75



Miss	*Chandra Kanta Agrawal*	*II*
„	*Kusum Lata Jain*	*II*
„	*Madhu Goel*	*Pass*
„	*Manju Kastia*	*III*
„	*Maya Gupta*	*III*
„	*Nagina Chordia*	*Pass*
„	*Neelam Jain*	*Pass*
„	*Nirmala Jain*	*II*
„	*Pramila Golechha*	*I*
„	*Pushpa Poddar*	*II*
„	*Radha Maheshwari*	*II*
„	*Rajesh Agarwal*	*II*
„	*Rupa Jain*	*Pass*
„	*Shakuntala Agrawal*	*I* (*Distinction in Civics and Home Science*)
„	*Sushila Bumb*	*II*
„	*Urmila Mehta*	*Pass*



छात्र रचनायें



विद्यार्थी और अनुशासन

• अनिल नवलखा
तृतीय वर्ष 'वाणिज्य' अ

मनुष्य की सरसता एवं सौम्यता अनुशासन पर आधारित है। मानव अपनी जीवनोन्नति के लिए उच्चादर्शों का निर्माण व उन पर चलने के अपूर्व साधन अनुशासन से प्राप्त करता है। अनुशासन चरित्र निर्माण की एकमात्र सीढ़ी है। अनुशासित व्यक्ति 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का पुजारी बनकर वास्तविक मूल्यों में एक नागरिक कहलाने के अधिकारी हो जाते हैं। अनुशासन जीवन का प्राण है, उसी प्रकार जिस प्रकार प्रासाद की चिर-स्थायिता आधारशिला की दृढ़ता पर निर्भर है। 'अनुशासन ईश्वर प्रदत्त गुण नही है।' बल्कि अनुशासन के भाव गुरुजनो एवं पथ-प्रदर्शकों के सान्निध्य में ही प्राप्त होते है। गुरुजनों एवं पथ-प्रदर्शकों के नियंत्रण में रहकर नियमबद्ध जीवन-यापन करना ही अनुशासन कहा जा सकता है।

आज राष्ट्र जिस दौर से गुजर रहा है, उस दौर मे अनुशासित जीवन की भारी आवश्यकता है। आज सारा राष्ट्र अनुशासनहीनता के ऐसे दौर से गुजर रहा है कि तुरन्त प्रभावी कदम उठाने होंगे अन्यथा राष्ट्र ऐसे पतन के गर्त मे जा गिरेगा कि युगों तक उठ न सकेगा। राष्ट्र का सारा जीवन बिखर गया है। अनुशासन व नैतिक मूल्यों के बल पर राष्ट्र को अब भी बचाया जा सकता है।

अनुशासित जीवन मे अनुशासनहीनता का जहर जिस तेजी से बढ़ा है, उसी तेजी से अब उसे घटाने का काम युवा वर्ग, विशेपकर छात्र वर्ग, पर है। परन्तु खेद है कि युवा वर्ग गलत नेतृत्व के कारण गलत रास्तों पर चला गया है। आज युवा वर्ग जितना अनुशासनहीन है, उतना दूसरा वर्ग नही। आज का युवा गलत संस्कारों मे जकड़ चुका है। कॉलेज की चहारदीवारी मे अनुशासन नाम की कोई चीज बची ही नही है। कक्षा में पढ़ायी हो रही है, आप बाहर गेट पर खड़े है, पनवाडी की दुकान पर सिगरेट फूँक रहे है। जब मन मे आया कक्षा मे आ बैठे अथवा जब मन में आया उठ के चल दिये। अध्यापक ने कुछ कहा तो बिना उचित, अनुचित का विचार किये जो मन मे आया कह दिया। बसो मे अथवा रेलवे में टिकिट न लेना एक गौरव की बात, इस युवा वर्ग की बन गयी है। अनुशासनहीनता का नग्न नृत्य उस समय स्पष्ट देख सकते हैं जब कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम हो रहा हो। मेलो मे, उत्सवों मे युवाओं की चरित्रहीनता स्पष्ट देखी जा सकती है। विद्यार्थियो की उद्दण्डता एवं चरित्रहीनता तो इतनी बढ़ गयी है कि वे प्रौढ़ महिलाओं तक को छेड़ने में शर्म नही करते, जो उनकी मां तुल्य होती है। नव युवतियों को छेड़ना तो साधारण सी बात हो गयी है। परीक्षा मे नकल करना अपना परम कर्त्तव्य समझते है। नकल के लिए ना नहीं कही कि हाथापाई को तैयार हो जाते हैं। कहाँ गया गुरु व शिक्षार्थी का

वह मधुर एव पवित्र सम्बन्ध ? कहाँ गयी वह सच्चरित्रता, जिस पर भारतीय संस्कृति को नाज था ?

अब अनुशासनहीनता के कारणो पर कुछ विचार करना होगा । अनुशासनहीनता का प्रमुख कारण है, 'मन पर नियन्त्रण न होना' । प्रारम्भ मे ही माता पिता के लाड-प्यार से रखने के चक्कर मे छात्र बुरी सगतियो मे फस जाता है, उनकी उचित, अनुचित मागो की पूर्ति बिना सोचे समझे कर दी जाती है और जब हाथी के दात बाहर निकल आते हैं, तब उन्हें चिंता सताने लगती है । दूसरा प्रमुख कारण शिक्षा प्रणाली है । आज की शिक्षा मात्र किताबी शिक्षा रह गयी है, छात्रो को व्यावहारिक एव नैतिक शिक्षा दी ही नहीं जाती । आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र डिग्रिया लेने का रह गया है और आज हालात यह हैं कि इन डिग्रियो को कोई पूछता भी नही है । आज युवा आक्रोश भी अपनी चरम सीमा पर है । लाखो शिक्षित बेरोजगार युवा गलियो मे भीख मागते हुए मिल जाएँगे । शिक्षा पर लाखो रुपये खर्च कर बने युवक डॉक्टर इजीनियरो को कोई काम नही मिल रहा तो युवा आक्रोश का बढना स्वाभाविक है । कॉलेजो मे विद्यार्थियो पर व्यक्तिगत ध्यान नही दिया जाता है । एक-एक कक्षा मे 100-100 छात्र बैठते हैं, स्वाभाविक है, ऐसी दशा मे न अध्ययन ही सकता है और न अध्यापन । इस प्रकार हमारी शिक्षा प्रणाली भी विद्यार्थियो मे अनुशासनहीनता का सचार करती है । अनुशासनहीनता का एक और प्रमुख कारण शिक्षालयो मे राजनीति का प्रवेश है । आज शिक्षण केन्द्र राजनीति के अखाडे बन गये हैं । यदा-कदा उद्दण्ड विरोधी राजनीतिक तत्त्व विद्यार्थियो को भडका कर नगरो और कॉलेजो मे उपद्रव करवा देते हैं । नैतिक मूल्यो मे इतना ह्रास हो गया है जिसकी कल्पना मात्र से सिहरन पैदा हो जाती है । गलत नेतृत्व में पडकर छात्र समूह निकम्मा बन गया है ।

फैलती अशान्ति, अनुशासनहीनता, कानून को बचाने एव भूले भटके लोगो को रास्ते पर लाने के लिए तुरन्त प्रभावी एव कठोर कदम उठाने होंगे । राष्ट्र ने चाहे वैज्ञानिक या भौतिक क्षेत्रों मे उन्नति के झण्डे गाड दिये हो परन्तु दूसरे अन्य क्षेत्रो मे पिछडता जा रहा है । राष्ट्र को पुन शक्तिशाली बनाने मे आज छात्रो को बहुत बडी आहुति देने की जरूरत है । राष्ट्र को पुन अपनी जगह प्रति-स्थापित करने के लिए हमे अनुशासित जीवन मे लौटना होगा और अनुशासन के लिए हमे अपनी शिक्षा प्रणाली मे सुधार करना होगा । शिक्षा में व्यावहारिक एव नैतिक शिक्षा को सम्मिलित करना होगा । सरक्षक अपने सरक्षितो पर कठोर नियन्त्रण रखें । शिक्षा प्रणाली की विकृतियों को दूर कर व्यावसायिक शिक्षा प्रारम्भ कर देनी होगी, उद्योग धन्धों के सचालन की शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए । छात्रों को सही नेतृत्व की तलाश करनी चाहिए । शिक्षण केन्द्रो को शिक्षण केन्द्र ही रहने देना होगा, राजनीति का अखाडा नही । परीक्षा प्रणाली मे आमूलचूल परिवर्तन होने चाहिए, 'गैस पेपर' व अन्य दूसरी अवाछित सामग्रियो पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए । इससे विद्यार्थी शिक्षको को अधिक आदर भाव से देखेंगे ।

सक्षेप मे, देश के विद्यार्थियो मे अनुशासन स्थापित किये बिना देश का कल्याण सम्भव नही है, अब भी समय है, जबकि राष्ट्र को और डूबने से बचाया जा सकता है । राष्ट्र के लिए हर समय अपने को समर्पित करने का प्रण करें । आइये, प्रण करें कि हम अनुशासन मे रहकर राष्ट्रीय जीवनधारा मे मिलेंगे और राष्ट्र को एक गर्वीला स्थान प्रदान करवाने मे शासको को सहयोग प्रदान करेंगे ।

आपातकालीन स्थिति और देश का विकास

—रमेशचन्द्र गुप्ता, द्वितीय वर्ष 'वाणिज्य'

हमारा देश एक विशाल देश है। इस विशाल देश का शासन, यहाँ की गतिविधियो को देखते हुए एक दूरदर्शक व बुद्धिमान व्यक्ति ही कर सकता है। देश में कब क्या होने वाला है इस पर पहले से ही विचार करके शासन किया जा सकता है। हमारे देश की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने जो दूरदर्शिता इस वर्ष अपनायी है वह प्रशसनीय है।

ऐसे समय मे जबकि देश की हालत बिगड़ती जा रही थी। हर क्षेत्र में असंतोष फैलने लगा था। देश-विरोधी शक्तियाँ अपना प्रभुत्व जमा रही थी। देश में काला धंधा, तस्करी, मुनाफाखोरी, मिलावट, रिश्वतखोरी अपनी चरम सीमा पर पहुँचने लगे थे। स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाई न होकर हड़तालें अधिक होती थी। शिक्षको का कोई सम्मान नही था। सार्वजनिक सम्पत्ति की कोई कद्र नही थी। वस्तुओं की कीमतें आशा से अधिक बढ़ गई थी। सरकारी कार्यालयों में काम ठप्प था।

ऐसी स्थिति में भारत के भविष्य को देखते हुए प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने 26 जून, 1975 को देश मे आपातकालीन स्थिति की घोषणा की। शुरू मे आपातकालीन स्थिति की घोषणा को सभी ने उचित नही समझा। इसके साथ ही श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने देश के आर्थिक विकास के लिए 21 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम की घोषणा की। यह आर्थिक कार्यक्रम देश के आर्थिक विकास में सहायक है।

अब जबकि आपातकालीन स्थिति के सुखद परिणाम सामने आ रहे हैं सभी ओर से आपातकालीन स्थिति को समर्थन प्राप्त हो रहा है। अब सभी लोग समझने लगे है कि श्रीमती इंदिरा गाँधी का यह कदम वास्तव मे दूरदर्शिता पूर्ण कदम था। आपातकालीन स्थिति के बाद से अब तक देश का सुधार हुआ है वह अवर्णनीय है। देश एक भावी संकट से बच गया है। इसका सबसे बड़ा प्रभाव है अनुशासन का प्रभाव। आपातकालीन स्थिति के बाद देश मे अनुशासन की एक नई लहर आयी है। देश मे हड़तालें, तालाबन्दियाँ समाप्त हो गई है। स्कूलों और कॉलेजों मे हड़ताले व लड़ाई-झगड़ा बन्द होकर, व्यवस्थित ढग से पढ़ाई शुरू हो गयी है। स्कूलों और कॉलेजों मे चुनाव बन्द होने से समय व धन की बचत होने के साथ ही साथ अनावश्यक लड़ाई-झगड़े भी बन्द हो गये है। अब शिक्षको का सम्मान होने लगा है। पढाई व्यवस्थित ढग से होने लगी है। अब सभी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जा रही है। थोड़ी भी त्रुटि होने पर कई सरकारी कर्मचारियो को अनिवार्य सेवा निवृत्त कर दिया गया है। कई तस्कर, काला बाजारी करने वाले तथा मिलावट करने वाले गिरफ्तार कर लिये गये है और उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जा रही है।

अब आवश्यकता की सभी वस्तुओं के दामों मे भारी कमी हो गई है। चढी हुई कीमते वापस गिर रही है। जहाँ राशन की दुकानों पर लम्बी

लाइनें नजर आती थी वे अब दिखाई नहीं देती। जनता को प्रत्येक वस्तु सस्ते दामो पर सुलभ हो रही है। देश में प्रत्येक क्षेत्र मे उत्पादन बढा है। खनिज उत्पादन, कृषि उत्पादन तथा अन्य वस्तुओ का उत्पादन काफी बढ गया है। जिन सरकारी कार्यालयो मे बीसो चक्कर लगाने पर भी काय नही होता था वह कार्य अब मिनटो मे होने लगा है। सभी कर्मचारी सही समय पर ऑफिस पहुँच कर दिनभर काय मे व्यस्त रहते हैं तथा शाम को उचित समय पर वापस लौटते हैं। पहले के रुके हुए काम भी अब पूरे होने लगे हैं।

आपातकालीन स्थिति के बाद से अब तक कई भूमिहीनो को भूमि के पट्टे वितरित किये जा चुके हैं। निवास के लिए भी कई पट्टे निम्न आय वालो को मिल चुके हैं।

इस प्रकार आपातकालीन स्थिति के बाद से अब तक देश का बहुत विकास हो चुका है और विकास जारी है। अब देश मे प्रत्येक कार्य शाति-पूर्ण ढग से हो रहा है। ऐसी स्थिति मे देश का चहुँमुखी विकास सम्भव है। ❖

मेरी अछूती सी कल्पना

मेरी अछूती सी कल्पना
लडखडाती रही, लडखडाती रही,
असीम सागर की लहरो पर
दूर कही फडफडाती रही,
पवन के परो पर उडती हुई
तट से कही दूर
श्यामल घन मे चमकती कडकडाती रही,
मरु भूमि की तप्त धरा पर
जल हीन मीन की तरह
पडी छटपटाती रही, छटपटाती रही,
वृक्षो के सघन झुरमुटो के तले
आलोक बिन्दु सी भटकती रही
प्रभात के नव विकसित पुष्प पर
ओस कण सी चमकती रही,
मेरी अछूती सी कल्पना
लडखडाती रही, फडफडाती रही। ❖

—अमर किशोर शर्मा, तृतीय वर्ष वाणिज्य 'अ'

असत्य और उसके दुष्परिणाम

—अरुणकुमार फोफलिया
प्रथम वर्ष वाणिज्य 'अ'

असत्य को ससार के सभी धर्मों, सम्प्रदायो मे बुरा कहा गया है । तथा सभी महापुरुषो ने असत्य को छोड़ देने का उपदेश दिया है । किसी वास्तविक तथ्य को, सही बात को छुपाकर उसके बदले दूसरी ही मनगढन्त बात कहना वैसा ही करना असत्य का अनुसरण करना है । वाचिक दोषो को असत्य भाषण मे बहुत बडा दोष माना गया है । प्राय: लोग अपने दोषो को छिपाने के लिये, अथवा दण्ड से बचने के लिये अथवा लाभ की प्राप्ति के लिये झूठ बोलते है । बिना कारण दूसरों को दोष देना, अनाप-शनाप बकना, निन्दा करना आदि असत्य भाषण का आधार प्रलोभन, राग, द्वेष, लोभ आदि होते है ।

असत्य का अनुसरण किसी भी हालत मे सदोष व गड़बडी उत्पन्न करता है । असत्य भाषण व आचरण मनुष्य के आन्तरिक व बाह्य जीवन मे अनेको विषमतायें पैदा कर देता है । असत्य के त्याग की शिक्षा कोई रूढि परम्परा पर आधारित नही है वरन् वह उन वैज्ञानिक सिद्धान्तो पर आधारित है जिसकी जाच जीवन विद्या विशारदो ने की है ।

किसी भी कारण झूठ बोलते रहने पर धीरे-धीरे वह अभ्यास मे बदल जाता है फिर मनुष्य जाने अनजाने मे हर समय झूठ बोलता रहता है । इसका उसके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है । वास्तविक प्रसग छिपाकर कृत्रिम प्रसग गढने मे मस्तिष्क को सातगुना कार्य करना पडता है । पहला तो स्वाभाविक प्रवाह को दबाना पडता है और दूसरी ओर नई बात प्रस्तुत करते समय यह डर रहता है कि असत्य का पर्दा न खुल जावे । असत्य वक्ता को दिमाग से असाधारण सतर्कता से काम करना पडता है जिमसे उसके मानसिक सस्थान दुर्बल हो जाते है ।

मानसिक सस्थान की दुर्बलता के साथ ही मनुष्य मे 'दो व्यक्तित्व' पोषण होने लगते है एक असली दूसरा नकली । असली व्यक्ति सही बात को जानता है उसी से आस्था रखता है, उसे ही प्रकट करना चाहता है और दूसरा इससे विषम नकली व्यक्तित्व सही बात को छिपाता है, सत्य की आवाज को कुचलता है, वह मनगढ़न्त कहानी बना सत्य को प्रकट नही होने देता । असली व्यक्तित्व नकली व्यक्तित्व के इन कृत्य से घृणा करता है उससे परेशान एवं दु खी रहता है दोनो मे द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है । इससे असत्यवक्ता की मनोभूमि अन्तर्विरोधी, अन्तरद्वन्द्वो से भर जाती है । मनोविज्ञान शास्त्रानुसार ऐसी स्थिति मे कई मानसिक रोग जैसे पागलपन, मूर्च्छा, अनिद्रा, स्मरणशक्ति का ह्रास, सिरदर्द, दुस्वप्न, रक्तचाप, धडकन, मधुमेह आदि रोग उत्पन्न हो जाते है ।

वैज्ञानिक शोधो से यह सिद्ध हो गया है कि मनुष्य की असतुलित, अन्तरद्वन्द्व भरी मनोभूमि उसके शारीरिक व मानसिक रूप का कारण बन जाती है । कपटी छली, कुचक्री, असत्यवादी प्रकृति के लोग धीरे-धीरे अपने मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य को नष्ट कर लेते है ।

असत्य मनुष्य के बाह्य जीवन को भी इसी तरह प्रभावित करता है, मित्र-मित्र के बीच, मालिक नौकर या स्वजनो के बीच अविश्वास, घृणा और द्वेष, दुर्भावना के बीज बोने मे असत्य आचरण व भाषण का ही हाथ होता है। कोई भी व्यक्ति दूसरो के साथ धोखेबाजी भरा व्यवहार कर लेगा किन्तु वह नही चाहेगा कि कोई उसके साथ धोखेबाजी करे, जब वह अपने साथ इस प्रकार का व्यवहार देखता है तो उसमे बडा क्रोध व रोष पैदा होता है। उसके प्रति घृणा और प्रतिहिंसा की भावना बन पकडती है बदला लेने के लिये, दण्ड देने, अपमान करने आदि जो सम्भव होगा प्रयत्न करगा। अत असत्य हर जगह विष के बीज बो देगा। परस्पर के दोष, घृणा क्रोध, प्रतिशोध मे समाज मे गन्दगी फैलती है।

असत्य से किसी स्थाई लाभ की प्राप्ति नही होती। एक दो बार भले ही असत्य मे कुछ भौतिक लाभ प्राप्त कर लिया जाय किन्तु फिर सदा के लिये ऐसे व्यक्ति से दूसरे लोग सतर्क और होशियार रहते हैं। असत्यभाषी को लोकनिन्दा का पात्र बन कर समाज से परित्यक्त जीवन बिताना पडता है।

किसी भी तथ्य की असलियत को छिपाने, किसी दण्ड से बचने, किसी लाभ की प्राप्ति करने, निन्दा आलोचना करने, अनर्गल प्रलाप के रूप मे जिस किसी भी कारण झूठ बोलने की असत्याचरण की आदत को छोड देना ही श्रेयस्कर है। किसी भी कारण से जीवन मे असत्य को स्थान देना अपनी बर्बादी का द्वार खोलना है। वस्तुत प्रारम्भ मे लाभ को प्राप्त करने के लिये असत्य बोलना प्रसन्नतादायक लगता है लेकिन सदा के लिए समाज की नजरो से गिरकर हेय, परित्यक्त, जीवन बिताना पडेगा। असत्य, धोखेबाजी, चालाकी सदैव घाटे का सौदा है।

सत्य ही हमारे लिये उपासनीय है। सत्य के मार्ग मे प्रारम्भ मे कठिनाई आती है किन्तु यह जीवन को उत्कृष्ट और महान् बनाने का राजमार्ग है। एक बार सत्यनिष्ठा की प्रमाणिकता सिद्ध होने पर मनुष्य की स्थिति शुद्ध सोने जैसी हो जाती है। सत्य का मार्ग सरल, सहज और स्वाभाविक है ऐसे मगलमय पथ पर चल कर लोक और परलोक को शान्तिमय बनायें। झूठ की नही, सत्य की ही जीत होती है। झूठ केवल सत्य से असामजस्य ही नही है अपितु वे आपस मे भी वैभिन्य प्रकट करते हैं।

हमदर्द हवाओ के नाम

"दोस्त! दोस्ती को तराजू पर मत रखना
अपने किये एहसानो का बोझ।
मैं तो वैसे ही दब चुका हूँ
तुम्हारे मन के गुबार तले।
मैं असहाय बीमार पक्षी सा
फिर भी अपनी टूटती पसलियो की आवाज
साफ सुन रहा हूँ।
फिर भला क्या हुआ ऐसा कि
मेरे हमराज, मेरे हमदर्द
गम ठण्डी हवाओ के साथी।
तुमने हवा को आग दिखादी?
गलियो मे ही इन्सान पैदा होता है
और इन्सानियत की साँस लेता है।
मैं एक इन्सान की जिन्दगी जीना चाहता हू।
तुम्हारे एहसानो का बोझ उठाकर भी
खुली हवा मे सास लेना चाहता हूँ
मुझे अकेला छोड दो मगर
एकाकीपन का एहसास न होने देना"

—राजकुमार चन्दनानी XI 'A'

जापान और भारत

• योगेशकुमार चतुर्वेदी
अन्तिम वर्ष 'वाणिज्य'

एशिया महाद्वीप के दो शीर्षस्थ देश जापान और भारत आपस मे समानताओ और विभिन्नताओं मे सामंजस्य बनाये हुये है। भारत जहाँ गुट निरपेक्ष देशों का पथ-प्रदर्शक है वही जापान विकासशील देशों का मार्ग-दर्शक। दोनों ही देश आर्य सभ्यता के केन्द्र देश है। भारत की प्रभुता उसकी विशालता मानव-शक्ति मे निहित है वहीं जापान अपने औद्योगिक विकास के प्रकाश से विश्व की आँखों में चकाचौंध कर रहा है। विश्व और उसकी सम्पन्नता धीरे-धीरे जापान की ओर खिसक रही है। जापान की मुद्रा येन दुलर्भ मुद्रा बनती जा रही है। विश्व के विकसित राष्ट्र अमेरिका और रूस अपनी 5% की विकास की दर को देखते हुये जापान की 10% की गति को कौतुहल से देख रहे है। जापान अपने गुरु अमेरिका को गुड़ ही बनाकर स्वयं शक्कर बनने की ओर निरन्तर अग्रसर हो रहा है।

भारत को विचित्रताओं के देश के रूप मे पुकारा जाता है तो जापान को यन्त्रो के देश के रूप मे परिभापित किया जाने लगा है। जापान और भारत दोनो ही बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ में कृपि प्रधान देश थे। जापान अब औद्योगिक देश बन चुका है, परन्तु भारत अब भी वही है। राजतन्त्र के उत्थान और पतन को दोनों देशो के इतिहास ने करीब से देखा है। भारत के राजा महाराजाओं की विलासिता से जापान का तोकूगावा राज परिवार किसी भी तरह पीछे नही था।

चौथे दशक में जापान और भारत एक ही जगह खड़े थे। भारत जहाँ नव प्राप्त स्वतन्त्रता से आह्लादित था, जापान अपने युद्धोन्माद के फल-स्वरूप प्राप्त पराजय के विपाद मे डूबा था। दोनों को ही अनन्त विकास–पथ पर चलना था, सम्पन्नता और वैभव की यात्रा प्रारम्भ करनी थी। इस यात्रा के लिए भारत जहाँ आशा और उत्साह से तैयार प्रतीत होता था, जापान पराजय के अपमान से आहत युद्ध की विभीषिका से सहमा सा यात्री था। भविष्य की शंकाओं से उसे अमेरिका की मुक्त हृदय से दी गई आर्थिक सहायता ने मुक्त किया। जापान ने देशवासियों के राष्ट्र-प्रेम को सजोकर विकास की मशाल जलाई, वही भारत राष्ट्र-प्रेम को विश्व-प्रेम और पंचशील के नारों में वितरित कर स्वयं पीछे रह गया। भारतवासियो का राष्ट्र-प्रेम उनके व्यक्तिगत हितों के अनुरूप परिवर्तनशील बन गया।

जापान ने अपनी विकास यात्रा मित्र देशों के सर्वोच्च सैनिक नेतृत्व द्वारा नियंत्रित और व्यव-स्थित रूप से प्रारम्भ की, वही भारत ने स्वतन्त्र किन्तु नियोजित विकास का मार्ग चुना। यही दोनों सहयात्रियो के यात्रा पथ अलग-अलग हो गये। स्वतन्त्रता के मादक नशे ने भारत की

अनुशासनप्रियता को निगल लिया। जापान का अनियोजित विकास सफलता को चूमता रहा वहीं भारत का नियोजित विकास भी अधिक लाभकारी सिद्ध नहीं हुआ।

जापान ने पूँजीवाद की वास्तविकता और व्यावहारिकता को समझा व स्वीकारा, वहीं भारत समाजवाद के सुखद स्वप्न में खोता गया। समाजवाद के इस रूप को उन्होंने स्वीकारा "स्वयं पहले समाजवाद में"। जापान में पूँजीवादी संगठन जहाँ वस्तु एकाधिकार के द्वारा जापानियों को सम्पन्नता की सौगात लाया वहीं भारत की करोड़ों नजरें टाटा-बिरला की तिजोरियों को भेदने लगीं। निजी क्षेत्र भारत में सिमटता गया।

इस प्रकार जापान निरन्तर सहयात्री को पीछे छोड़ आगे बढ़ता रहा। उसने न केवल भारत का विकास यात्रा पर काफी पीछे छोड़ दिया बल्कि बहुत दूर निकल चुके यात्रियों को भी जा पकड़ा। यद्यपि स्थिति ने भारत के विकास की चाल की तेजी की है परन्तु सहयात्री काफी आगे निकल चुका है।

आशा है, जापान अपने सहयात्री को आगे बढ़ाने में सहायता व मार्ग दर्शन देगा। पीछे मुँह घुमाकर सहयात्री को आवाज देकर उसे भी गति तीव्र करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

महानतम नारी

• प्रदीपकुमार गगवाल
बी कॉम द्वितीय वर्ष

जब महान् व्यक्ति मरता है,
सब जगह शोक छा जाता है।
प्राचीन से आ रही यह परम्परा, कितनी प्यारी है।
प्रकृति की यह शोभा बड़ी निराली है।।
सूरज बैठा मुँह छिपाये,
बादलों ने आँसू बहाये।
नदियों ने शान्ति से अपने को बहाया है,
तूफानों ने देश में कोलाहल मचाया है।
वृक्षों ने अपने को नीचे झुकाया है।।
पश्चिम से मरुस्थल भी जा रहे हैं, शोक लेकर बंगाल को।
चले हैं, पुष्पाजलि अर्पित करने स्व० कुमारी नायडू को।।
जिधर देखो उधर यह आवाज गूंजी है।
कितनी महानतम थी वह भारतीय नारी,
जिसने सर्वस्व लुटा दिया अपनी मातृभूमि को।
'गगवाल' श्रद्धा अर्पित कर रहा है उस महानतम् नारी को।



An Alphabet of Quotes

Compiled by
ASHOK KUMAR MANGHNANI, XI C

1. A thing of beauty is a joy for ever.

—Keats

2. Brevity is the soul of wit.

—Shakespeare

3. Culture is "to know the best that has been said and thought in the world."

—Mathew Arnold

4. Democracy is a government of the people by the people and for the people.

—A. Lincon

5. Experience is the child of thought and thought is the child of action. We cannot learn them from books.

—Disraeli

6. Faith only begins where reason falters.

—Mahatma Gandhi

7. Great men are the guide posts and landmarks in the state.

—Burke

8. Health without wealth is half a sickness.

—Saneca

9. If you don't know suffering you will not know happiness.

—A Russian Proverb

10. Justice delayed is justice denied.

—An English Proverb

11. Kindness is the world's greatest unused capital.

—T. L. Vaswani

12. Life is an incurable disease.

—Abraham Cowley

13. Mental discipline comes from parents and teachers.

—C. Coolidge

14. Necessity is the mother of invention.

—An English Proverb

15. Only a life lived for others is a life worth while.

—Einstein

16. Politics is the last refuge of a scoundrel. —Dr. Johnson.

17. Quest for knowledge must continue from cradle to grave.

—The Holy Quran

18. Religion is not a theory of God. It is spiritual consciousness.

—S. V. Radhakrishnan

19 Silence is like sleep, it refreshes wisdom. —Bacon

20 Time is like money Never waste any and you will always have plenty

—Due de Lewis

21 Unto you your religion unto me my religion —The Bible

22 Virtue is the denial of self and response to what is right and proper

—Confucius

23 War is the negation of truth and humanity —Jawaharlal Nehru

24 X mas is the day of dedication and devotion

—Horton Davils

25 Youth is a blunder, manhood a struggle oldage a regret

—Disraeli

26 Zoo is the only place where birds and beasts lament over their loss of liberty at the hands of man

—Anon



My Native Town Jaipur

NARENDRA KUMAR PUROHIT, X B

Jaipur is my native town It was founded by Sawai Jaisinghji II in November 1727 It is one of the most beautiful cities of India It is almost in the centre of Rajasthan

The city is surrounded by a protec tion wall which is 18ft high & 14ft wide There are eight gates on all sides of the city Surajpol Ghat Gate Sanganeri Gate Ajmeri Gate Chand Pole, Dhruvapole Gangapole and Motikatla Gates The shops houses and buildings on the main roads are all pink coloured

Jaipur is one of the biggest cities in Rajasthan The people are mostly in the service of the State Hawa Mahal Isar Lat or Sargasuli and State Obser vatory are important buildings in the city The Hawa Mahal or wind palace has a nice lattice work and is famous for its architectural beauty Isar Lat is eight storyed tower in the main market Among important places worth visiting are Galta and Amber Galta is a sacred place in the mountains Amber is the old capital of Jaipur State Ram Niwas Garden is another important place worth visiting in Jaipur

In the city there are a number of temples which have big buildings of their own Gobind Deoji s temple is an important one There are big forts on the hills surrounding the city The University of Rajasthan is also located in Jaipur There are many dipensaries and a big hospital called the Sawai Man-Singh Hospital opposite to which is S M S Medical College

Jaipur is famous for Sanganeri paper Sanganeri printing on cloth enamel work and brass work Jaipur is the capital of Rajasthan 

Students and Politics

MAHESH KOOLWAL, XI C

Student life is the most important period of one's life Hence all students should try to enjoy their student life and make good use of every moment of it

Students have some duties to perform. The performance of these duties makes their life noble and virtuous and gives them the real enjoyment of their life. Hence they must not shrink from their duties.

Now the question arises whether the students have any duty in the field of politics. As far as school students are concerned, this question is insignificant but for the students studying in colleges and universities this question is an important one.

On this question some say that students should enter the field of politics, while others say "No".

But sensible solution of this question is that students are the future citizens and teachers of the country. They are in the period of life when they prepare and learn for their future life. The training they receive all determine the kind of life they will lead. In order to make them able to play their role well in the field of politics later on, they should be given political education in colleges, through debates, discussions and lectures. They should be given all possible facilities for acquring an accurate knowledge of political matters and for forming sound views in regard to them. The role of students in the field of politics should be limited only to their academic interest in it and to understand the political problems. They should not go beyond this, otherwise it will be injurious for them and for the society.

The age of the student is not sufficient for any political work. He is not matured enough at this age. It requires a great deal of understanding to learn the political problems and without understanding he can't do anything for the solution of the problems. So the students should remain far away from the field of politics.

Simple Living and High Thinking

—YASHWANT JAIN X B

There is no end to the wants of a man They go on multiplying The entire effort of man therefore is directed towards the satisfaction of these wants The result of that is that the common man remains Common and has no time no energy for higher pursuits which make the world better and happier He takes more out of the world than he gives

It is not these common men pre-occupied with their daily routine of existence who have changed the face of the earth The credit for this goes to men like Socrates Christ, Gandhi St Augustine, Newton Lincon and Einstien etc who believed in simple living and high thinking These people reduced their wants to the minimum so that they should devote themselves better to the noble task in hand Dressed in a loose flowing simple garment Socrates would go about the streets of Athens questioning young men on the problems of the day and in so doing influencing their views and judgements But this simple looking noble man became a terror to the government of the day His dialogues were so forceful that the government of the day manoeuvred his death Socrates died but his thoughts still live and influence us ☐

Riddles

—ASHOK KOHLI XI C

Riddle—What is lighter than a feather and harder to hold ?

Answer—Your breath

Riddle—What breaks but never falls and what falls but never breaks ?

Answer—Day breaks and night falls

Riddle—What is the difference between a guard and a teacher ?

Answer—Guard minds the train and teacher trains the mind

Riddle—What grows larger the more you take from it

Answer—A hole

Riddle—What is broken before it is used ?

Answer— An egg

विज्ञान का मानव सभ्यता पर प्रभाव

—दिनेश पोद्दार
कक्षा X 'C'

ज्ञान के नाना रूपो की भाति विज्ञान भी विशिष्ट प्रकार का ज्ञान है। मानव की जिज्ञासा वृत्ति और चिन्तन शक्ति ने विज्ञान रूपी ज्ञान को जन्म दिया। आदि काल की कुछ घटनाओं को अगर याद करे, जैसे भगवान राम का रावण को मार कर पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या लौटना, सजय का राजभवन मे बैठे-बैठे ही महाभारत की घटनाओ को धृतराष्ट्र को सुनाना आदि। अतीत काल की इन आश्चर्य-जनक बातो मे मानव को विश्वास न था, पर विज्ञान ने इन तथ्यो को सही साबित कर दिया है। आदि मानव के जीवन की सीमित आवश्यकताये थी और वह प्रकृति के रहस्यो को आश्चर्य और कौतुहल की दृष्टि से देखता था। सभ्यता के विकास के साथ-साथ धीरे-धीरे उसकी आवश्यकताए भी बढी। इन्ही आवश्यकताओ ने उसे अनुसधान के लिए प्रेरित किया। कहा भी जाता है कि "आवश्यकता आविष्कार की जननी है।" इसी के कारण आज मानव सभ्यता का सर्वोतोमुखी विकास हो रहा है। इसका श्रेय विज्ञान को ही दिया जाना उचित है। मानव सभ्यता के प्रत्येक क्षेत्र मे विज्ञान का प्रभाव दिखाई देता है। दूरी पर विजय, आकाश पर विजय, चन्द्रलोक पर विजय अर्थात् मानव का चन्द्रमा पर चरण, मानव सभ्यता के इतिहास में एक अद्भुत एव अभूतपूर्व घटना है। यह सब विज्ञान की सहायता से ही सभव हुआ है। अब तो मानव दूसरे ग्रहो पर भी जाने की कोशिश कर रहा है।

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान की सहायता से मनुष्य ने वाष्प, विद्युत गैस, एटम जैसी शक्तियों पर विजय प्राप्त करली है। साथ ही रेल, हवाई जहाज, मोटर, तार, टेलीफोन, रेडियो, परमाणु एव हाईड्रोजन बम तक बना डाले है। यातायात के साधनो एव दूर सचार के साधनो से सभ्यता का विकास अत्यधिक हुआ है। विश्व के सभी मनुष्यो मे भ्रातृत्व की भावना पैदा हुई है।

मनोरजन के क्षेत्र मे चलचित्र, रेडियो, टेलिविजन आदि से विस्मयकारी प्रगति की है। प्रेस सुविधाओ के प्रसार ने ज्ञान की सीमाओ के क्षेत्र मे अत्यधिक विस्तार कर दिया है।

कृषि के क्षेत्र मे ट्रेक्टर आदि असख्य कृषि यन्त्रो और उपकरणो के आविष्कार ने भी न केवल कृषको को सुविधा प्रदान की है, वरन् उत्पादन मे कई गुनी वृद्धि की है।

आज विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र मे भी अपरिमित उन्नति की है। इस क्षेत्र मे इजेक्शन, एक्सरे, प्लास्टिक सर्जरी एव अनेक असाध्य रोगो के लिए दवाइयां खोज डाली है और तो क्या विज्ञान ने हृदय परिवर्तन की क्रिया मे बहुत आश्चर्य जनक उन्नति की है। अधो के लिए ऐसे यन्त्र बनाए है कि वे आसानी से सड़क पार कर सकते है।

युद्ध के क्षेत्र मे भी आश्चर्य-जनक उन्नति की है। बन्दूक, मशीनगन, स्टेनगन, नेपाम बम, एटम बम, हाईड्रोजन बम, दूरमापक यन्त्र आदि भयकर

श्रम का गौरव

—अशोककुमार कपूर
तृतीय वर्ष विज्ञान'

मनुष्य भूमि खोद रहा था। पसीना बह चला। वह पसीना पोंछता, श्रम करता रहा। थकान बढ चली। वह सुस्ताने के लिए पेड की छाया में बैठ गया। उसने अपनी ओर देखा, सारा शरीर थकान से चूर था। हाथ-पैर मिट्टी से भरे थे। कपडे भी धूल भरे थे। उसका गुस्सा बढ गया।

मनुष्य ने धरती से कहा—"धरती ! सुना था, तू बडी उदार है। मगर मैं देख रहा हूँ, तू बडी ही कृपण है। हम अन्न, फल-फूल, जल देती है, किन्तु बदले में बडा परिश्रम कराती है। तुझे अगर देना है तो वैसे ही दे दे। माथे का पसीना पैरों तले नाकर फिर क्या देना ? बिना परिश्रम किये, हमें सब कुछ मिल जावे, तो तेरा गौरव भी बढ जाए और हमें भी आराम मिल जावे।"

धरती मुस्कराकर बोली—"बेटे ! तूने ठीक कहा। अगर मैं तुझे बिना मेहनत कराये, सब कुछ दे दूँ, तो सचमुच मेरा गौरव बढ जाएगा, मगर तेरा गौरव तो मर जाएगा। मुझे अपने गौरव की नहीं, तेरे गौरव की चिन्ता है।"

यह सुनकर मनुष्य में नया उत्साह जाग उठा। वह उठकर फिर परिश्रम करने लगा। □

शिक्षक ने कहा

कहते हैं गुरुजी
फॉर्म कराना है, क्या देंगे
फेल हो जाओ तो
कोई चिन्ता नहीं
अगले वर्ष पढा देंगे,
जब किया विरोध मैंने
तो वे बोले,
पढ लेना, इसमें क्या है हर्ज
नींव पक्की ही कराना
तो हमारा है फर्ज !

—पुरुषोत्तम सोमानी
द्वितीय वर्ष वाणिज्य 'ब'

भारत का पहला उपग्रह "आर्यभट्ट" पृथ्वी की कक्षा में

—नवनीत अग्रवाल
कक्षा IX A. Sc

भारत के लिए 19 अप्रैल, 1975 का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस दिन 360 किलोग्राम के वजन वाला उपग्रह एक सोवियत अन्तरिक्ष केन्द्र से करीब 600 किलोमीटर की ऊँचाई के लिए सफलता-पूर्वक छोड़ा गया। इसके साथ ही भारत विश्व के उन दस राष्ट्रों के बराबर हो गया है जो उपग्रह छोड़ चुके है। यह उपग्रह सोवियत "इन्टर कास्मस" राकेट के जरिए भारतीय समय के अनुसार दिन के 1 बजे छोड़ा गया।

इस वैज्ञानिक उपग्रह का नाम पाँचवी शताब्दी के महान् भारतीय ज्योतिर्विज्ञ तथा गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया। इसका निर्माण सोवियत वैज्ञानिको की सहायता से भारतीय वैज्ञानिको ने बैंगलोर के भारतीय उपग्रह केन्द्र मे किया।

उपग्रह मे लगे उपकरणो के जरिए सूर्य की किरणो का हर पहलू से चित्र लिया जाएगा। उसकी बिजली की जरूरत उसमे लगे हुए सैल से पूरी होगी जो सूर्य के प्रकाश को बिजली मे परिवर्तित कर देगा लेकिन जब उपग्रह पृथ्वी की परछाईं मे से गुजरेगा तब उसके 'सोलर सैल' बिजली पैदा नही कर सकेगे, क्योकि तब उन्हे सूर्य का प्रकाश नही मिलेगा। ऐसी हालत मे बैटरियाँ काम करने लगेगी। ज्योंही उपग्रह सूर्य के प्रकाश में पुनः आयेगा त्योंही बैटरियाँ अपनी खोई हुई उर्जा को पुनः प्राप्त कर लेंगी।

[सबसे भारी]

यह उपग्रह 8 km. प्रति सैकिंड की गति से पूरे ब्रह्माण्ड का एक चक्कर 96 मिनिट में पूरा कर लेता है। यह उपग्रह अब तक किसी भी देश द्वारा छोड़े गए उपग्रहो मे सबसे भारी है और इसका भार 360 kg. है। सोवियत रूस द्वारा छोड़े गए पहले उपग्रह का भार 83 kg. तथा अमेरिका द्वारा छोडे गए उपग्रह का कुल भार 13 kg. था। उपग्रह का भारी होना ही कोई विशेषता नही है। सफल उपग्रह में उसके डिजाइन तथा उसकी बनावट महत्वपूर्ण होती है। इसमे सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उपग्रह डगमगाए नही। इसमे यह नही हुआ क्योकि जैसे ही उपग्रह अपने कक्ष मे प्रविष्ट हुआ पूर्वानुमान के अनुसार नाइट्रोजन गैस छोड दी गई। गैस छूटने से तत्काल ही उपग्रह 90 चक्र प्रति मिनिट की गति से घूमने लगा। इसको रोकने के लिए टिटेनियम की बनी गैस की छः बोतले लगी हैं जो उपग्रह को छः महीने तक भली प्रकार घूमाने मे सहायक होगी।

[शक्ति वापस]

आपको यह अचम्भा होगा कि उपग्रह प्रत्येक कक्ष मे से गुजरते हुए अपनी शक्ति प्राप्त करता है। इसमे सौर सैल लगे हैं जो सूर्य के प्रकाश को बिजली मे बदल देते है। उसी समय इसमें लगी 'निकल काडमियम बैटरियाँ' फिर से चालू हो जाती है और जब उपग्रह अंधेरे मे होता है तो बिजली की सप्लाई चालू रहती है।

[सफल सकेत]

यद्यपि कुछ देशो के उपग्रह सफलता पूर्वक कक्ष मे प्रेषित किए गए लेकिन अपने सकेत भेजने मे असफल रहे परन्तु आर्यभट्ट ने इसमें भी सफलता प्राप्त की है। इसके सकेत मद्रास के उत्तर मे 100 km., आंध्र प्रदेश के श्री हरिकोटा तथा मास्को के निकट लेक मे साफ और ऊंची आवाज मे सुनाई पड़ रहे हैं। इसके अतिरिक्त भूमि पर आँकड़े प्रेषित

इस तरह एकाकी जीवन बिताने पर कोई किसी को भला पूछेगा भी क्यो ? आज जब जमाना रफ्तार से बढ रहा है। शानशौकत का रिवाज है, हर व्यक्ति पाश्चात्य जिन्दगी जीना चाहता है। ऐसे मे भला ये इतने दकियानूसी से क्यो रहते हैं ? यह मैं न जान पाई।

मुझे अच्छी तरह याद है, ये कॉलेज मे हमेशा अपने दोस्तो मे सबसे ज्यादा प्रिय थे। दोस्तो को लेकर रोजाना रेस्तराओ मे जाना, घूमना-फिरना इनके लिये साधारण बात थी। मैं भी इनके कॉलेज म थी, लेकिन ये मुझसे एक वर्ष सीनियर थे। अत मिलने का मौका ही न था। फिर भी मैं इनके बारे मे काफी कुछ जानती थी। सोचा करती थी, जिसके साथ इनकी शादी होगी वह कितनी खुश-किस्मत होगी। रोजाना रेस्तराओ मे जायेगी, अपने हर शौक पूरे कर सकेगी। इनका स्वभाव भी कितना अच्छा है, हमेशा मुस्कराते रहते हैं। गुस्सा तो आता ही नही। वक्त का तमाशा कहिये या इत्तेफाक, मैं ही इनकी पत्नी बनी। शादी के बाद सिर्फ इनके मित्रो द्वारा दी गई पार्टिया मे हम सम्मिलित हुए। ये सिलसिला शादी के करीब महीने भर बाद तक चला और उसके बाद जैसे इन्होने कसम ही ले ली हो पार्टियो मे जाने की।

मेरी समझ मे नही आया कि यकायक इनमे यह परिवर्तन कैसे आया ? मैं सोचने की कोशिश करती, लेकिन मेरा सोचना वक्त की बर्बादी के सिवाय कुछ न था। इस बारे म इनसे कई बार पूछा भी लेकिन हमेशा ये इस बात को टाल जाते। अधिक से अधिक एक ही जवाब देते कुछ सवाल, सवाल ही रहे तो अच्छा है। वक्त आने पर तुम स्वय जान जाओगी। इसके बाद मैंने इस बारे मे पूछना छोड दिया। इनमे एक बात जरूर है, इन्होंने मुझे कभी किसी पार्टी मे जाने से रोका नही।

अपनी शादी की पहली वर्षगाठ पर हमने एक पार्टी भी दी थी। वो भी मेरे प्रस्ताव पर। एक दिन सवेरे हम गार्डन में बैठे सुबह की चाय ले रहे थे। मैंने सोचा आज इस बात को मालूम करके ही रहूगी कि आखिर ये पार्टियों से कतराते क्यो है ? वे हमेशा की तरह मेरे प्रश्न को टालने की कोशिश करने लगे। लेकिन आज मैं भी जैसे दृढ प्रतिज्ञ थी। मैं भी जैसे ढीठ बन गई थी। रोज रोज के बहानेबाजी से तग आ गई थी।

अच्छा तो तुम्हे पार्टी मे जाना इतना पसन्द है ? कल शाम मिस्टर शर्मा का फोन आया था। आज उनकी लडकी का जन्म दिन है, हम दोनो को बुलाया है। शाम को तैयार रहना। नही, मैं नही चलूगी। पहले मेरे सवाल का जवाब दो। आज भला तुम्हे पार्टी मे जाने की क्यो सूझी ? क्या कोई दफ्तर मे काम नही है ? व्यग्य बाणो का प्रहार शुरू हुआ। अरे भई सुबह-सुबह लडाई की बात छोडो। अच्छा आज शाम को मैं तुम्हारे सवाल का जवाब जरूर दे दूगा। अब तो खुश।

अरे ! तुम अभी तक तैयार नही हुई ? क्या कही जाना है ? अरे सुबह बताया था ना कि शर्मा साहब के यहा पार्टी मे चलना है। अच्छा अब जल्दी तैयार हो जाओ। लेकिन तुम भी तो तैयार कहाँ हो ? क्या ? मैं तो तैयार हूँ। क्या, इन्ही कपडो मे चलोगे ? ये क्या बुरे है ? अच्छा तुम कहती हो तो दूसरे पहन लेता हूँ। लेकिन तुम भी जल्दी तैयार हो जाओ।

कार शर्मा साहब के घर पर रुकती है। कार मे उतरते ही एक लडका करीब 5–6 साल का गिडगिडा उठता है—बाबूजी आप इस पार्टी मे जा रहे है। मुझे भी साथ ले चलो, लडका सजय के पैर पकड लेता है। बाबूजी मैं भूखा हूँ, दो दिन से मुँह मे कुछ नही गया। तो हम क्या करें ? अरे इस तरह नही डाटते। अच्छा फिर गिड-गिडा उठता है—बाबूजी मैं भी चलूँगा, ले चलोगे ना आप मुझे ? इसे दूर क्यो नही करते, इस भीखमगे का मुँह मत लगाओ। विभा, यह बच्चा भी अपने

साथ जायेगा। यह और अपने साथ ? क्या कह रहे है आप ? यह बच्चा नही जायेगा तो मै भी नही जाऊँगा। आप छोटी-छोटी बातो को बहुत ऊँचा सोचते है। यह छोटी बात नही, मेरा पेट भरा है, यह भूखा है। यह पार्टी मे जरूर जायेगा। विभा, इसके पास अच्छे कपड़े नही है, इसके पास पैसे नही है, यह गरीब है, क्या इसीलिये यह पार्टी मे नही जायेगा ? आज इसके पास कार होती, अच्छे कपडे होते और मै इसकी जगह होता तो यह पार्टी मे जाता और मै बाहर रहता।

यह चलेगा और इन्ही कपड़ो मे चलेगा। वह लड़के को लिये दरवाजे तक जाते है लेकिन दरबान रोक देता है—साहब यह बच्चा नही जा सकता। सजय—अच्छा ??? बस उसी समय बच्चे को कार मे बिठाकर ले जाते है, अच्छे कपडे पहना कर वापस साथ ले आते है। फिर दरबान उसे नही रोकता। विभा, आज इन्सान की कद्र नही, कपड़े की कद्र है, तड़क-भडक की कद्र है। इन्सान की नही, पैसे की इज्जत है। देश मे इस तरह भूखे नगे लोगो की कमी नहीं है जिन्हे दो वक्त की रोटी भी नसीब नही होती। दूसरी तरफ पार्टी के नाम पर हजारों रुपये पानी की तरह बहाये जाते है। ये पार्टियाँ सिर्फ दिखावे के लिये होती है, झूठी शानशौकत के लिये होती है। कुछ नही रखा ऐसी शानशौकत में।

विभा ! आज तुम्हे मेरा जवाब मिल गया होगा। यही कारण है मेरा पार्टियों से कतराने का। जब मैं इन भूखे नंगे लोगो को देखता हूँ तो मेरा मन रो उठता है। इस जवाब को पाकर मैंने भी पार्टियो मे जाने की कसम खा ली।





साहसी बालक

—सुरेन्द्रकुमार राका
दशम 'स' वाणिज्य

अजमेर जिले में एक कस्बा है ब्यावर। वहीं की बात है। एक दिन बारिश का समय था, जगह-जगह कीचड़ हो रहा था। दो बालक साइकिल पर विद्यालय जा रहे थे। सड़क के किनारे पर एक नाला था, जो तेजी से बह रहा था। दोनों बालक बातें करते करते जा रहे थे कि अचानक एक की साइकिल फिसल गई और वह नाले में जा गिरा। वहां भगदड़ सी मच गई। कोई कुछ बोलने लगा, कोई कुछ। दूसरा साथी घबरा कर आग बुझाने वाली दमकल बुलाने दौड़ा।

नाले के आसपास भीड़ बढ़ती जा रही थी। सब तमाशा देख रहे थे, तथा इन्तजार कर रहे थे दमकल का। तभी एक ओर से 'छपाक' की आवाज आई। कोई तालाब में कूद गया था, पर वह था कौन, यह किसी को पता नहीं था।

लोगों में फिर भगदड़ मच गई, कोई कहता—अरे एक और पानी में गिर गया है, दूसरा कहता—नहीं कोई बचाने के लिए कूदा है।

जितने मुँह, उतनी ही बातें थीं पर बचाने की फिक्र किसी को भी नहीं थी। सब इन्तजार कर रहे थे कि देखें इन्हें कौन बचाता है।

नाले में एक ओर बुलबुले उठ रहे थे। वहां जिन्दगी और मौत का संघर्ष चल रहा था, सभी की नजरें उधर थीं।

कुछ ही क्षण बाद में एक बालक निकला जिसकी बगल में गिरा हुआ बालक था। वह बेहोश था। नाले से निकल कर उस साहसी बालक ने उसे जमीन पर लिटाया। उसके पेट में पानी भर गया था। सारी भीड़ वहां जमा हो गई। इसी बीच बालक ने उसे औंधा लिटाया और उस पर बैठकर धीरे-धीरे दबाव डालने लगा। इस प्रकार से उसका सारा पानी बाहर निकल गया और उसे सांस आने लगी।

तभी दमकल भी वहां आ गई। उस बालक का तुरंत उपचार किया गया और वह होश में आ गया। लोग उस बचाने वाले बालक की प्रशंसा करने लगे। उस बालक को जिलाधीश द्वारा पुरस्कृत किया गया और उसका नाम सभी में फैल गया।

सच है, बड़ा काम करने के लिए ताकत ही आवश्यक नहीं है बल्कि साहस और सूझबूझ की भी आवश्यकता है।



राष्ट्र निर्माण में विद्यार्थियों का योगदान

—कुमारी मंजु जैन, X

राष्ट्रीय जीवन मे विद्यार्थियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज का विद्यार्थी ही कल का नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण के कार्य मे महत्त्वपूर्ण योगदान करेगा। राष्ट्रोत्थान के विभिन्न कार्यक्रमो और योजनाओ के सफल सचालन के लिये आर्थिक साधनो एव जनशक्ति के साथ विद्यार्थी के अदम्य उत्साह की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय जीवन मे श्रमिक और कृषक के समान ही बुद्धिजीवी वर्ग का भी महत्त्व होता है। जिस प्रकार अच्छे भवन का निर्माण सुदृढ़ नीव पर होता है। उसी प्रकार अच्छे राष्ट्र का निर्माण देशभक्त, चरित्रवान, कर्त्तव्यपरायण और सयमी विद्यार्थियो की समाजरूपी आधार भूमि पर होता है। राष्ट्र निर्माण मे विद्यार्थी का महत्त्व नितात स्पष्ट है।

भारत के स्वाधीनता-आन्दोलन मे विद्यार्थी का योगदान अविस्मरणीय है। इस आन्दोलन मे सामान्य नागरिको के साथ-साथ विद्यार्थियों ने बहुत बडी सख्या मे भाग लेकर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया। आज स्वाधीन भारत मे विद्यार्थियों के योगदान के असख्य क्षेत्र है। सर्वप्रथम तो अपने अध्ययनकाल मे उन्हे अध्ययन के प्रति निष्ठावान् रहते हुये अपने चरित्र मे अनुशासनप्रियता आदि गुणो, कर्त्तव्यपरायणता, श्रमशीलता, उच्च विचार, स्वदेश-प्रेम आदि गुणो का विकास करना चाहिये। इन्ही गुणो का विकास उनके भावी जीवन को सुखद बनाने मे सहायक सिद्ध होगा। आज हमारे देश के समक्ष असख्य समस्यायें है जिनके समाधान मे विद्यार्थी अपने अध्ययन काल मे ही उल्लेखनीय योगदान कर सकते है। उदाहरण के लिये प्रोढ शिक्षा, समाज सेवा, श्रमदान, कुप्रथाओ का अन्त, भ्रष्टाचार-निरोध आदि वे कार्यक्षेत्र है जिनमे विद्यार्थी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। हमारे राष्ट्रीय एव सामाजिक जीवन के पिछड़ेपन का मूल कारण शिक्षा का अभाव है। विद्यार्थी अपने अतिरिक्त समय या ग्रीष्मावकाश मे अपने गाँव, नगर या मुहल्ले मे प्रोढ शिक्षण या साक्षरता अभियान मे भाग लेकर देश की महान् सेवा कर सकते है। इसी प्रकार श्रमदान अभियान द्वारा वे गाँवो व नगरो मे छोटे-छोटे असख्य कार्य कर सकते है। हमारे ग्रामीण समाज मे अनेक रूढिया अन्धविश्वास व कुप्रथाएँ शताब्दियो से व्याप्त है। इनके उन्मूलन हेतु विद्यार्थी एक वातावरण तैयार कर सकते है।

भ्रष्टाचार उन्मूलन मे विद्यार्थियो का योगदान सम्पूर्ण राष्ट्र के लिये वरदान सिद्ध हो सकता है। पिछले दिनो दिल्ली एव बीकानेर के छात्रो ने इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण कार्य किये। दिल्ली के छात्रो ने स्टेशन पर बिना टिकिट यात्रा करने वाले सैकड़ों यात्रियो को पकड़ कर हजारो रुपयो की राशि एकत्र कर रेल्वे अधिकारियो को दी। राजस्थान के अनेक सीमात प्रदेशो मे अकाल की काली घटा मडराई थी। छात्रो ने घर-घर जाकर अन्न वस्त्रादि एकत्रित कर अकाल की काली छाया मे राहत कार्यो मे अभूतपूर्व योग दिया।

अपने कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर होते हुये छात्रों को क्रियात्मक राजनीति, दलबन्दी, गुटबन्दी, अनुशासन-हीनता आदि कुप्रभावो से दूर रहना

चाहिये। कहने का अभिप्राय यह है कि राजनीतिक दलबन्दी से विद्यार्थियों को सदैव मुक्त रहना चाहिये।

हमारे देश का विद्यार्थी वर्ग आज जहाँ अनेक रचनात्मक कार्यक्रमों और निर्माण कार्यों में भाग लेकर राष्ट्रोत्थान में योगदान कर रहा है। वहीं उसमें कुछ दूषित प्रवृत्तियाँ भी विकसित हो रही हैं जो चिंता का विषय है। देश की शिक्षण संस्थाओं में आये दिन छात्र छोटी छोटी बातों को लेकर आंदोलन, नारेबाजी और हड़ताल करते हैं। उनमें अनुशासनहीनता, फैशन, गुटबन्दी, साम्प्रदायिकता और मादक पदार्थों के सेवन की प्रवृत्तियां भी देखने में आती हैं। ये प्रवृत्तियां देश के प्रगति पथ की बाधक हैं। अतः इनके लिये जागरूक बन कर हमारे विद्यार्थियों को इनसे दूर रहना चाहिये।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों को "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" के आदर्श को सामने रखकर राष्ट्र निर्माण के कार्यों में पूरी निष्ठा के साथ योगदान करना चाहिये। विद्यार्थी राष्ट्र की अमूल्य निधि हैं। देशवासियों की आशायें और विश्वास उनकी कर्तव्यनिष्ठा, कार्यक्षमता और त्याग-भावना पर निर्भर है। उन्नत विचार लेकर हमारे छात्रों को राष्ट्रोत्थान के कार्यक्रमों में जुट कर देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना चाहिये।

फोटोग्राफी का महत्व

—रमेशचन्द्र आचार्य, एकादश 'विज्ञान'

"फोटोग्राफी वह कला अथवा प्रक्रिया है जिसके माध्यम से रासायनिक रूप से तैयार की गयी फिल्म की सतह पर किसी आकृति को प्रकाश की क्रिया से प्राप्त किया जाता है।"

इसका मुख्य रूप से उपयोग प्रचार के रूप में होता है। प्रचार कार्य में जितना समाचार का महत्त्व है उससे भी कहीं अधिक महत्त्व चित्रमय समाचारों का है। चित्रमय समाचार अधिक आकर्षक, बोधगम्य और अधिक संवेदना-ग्राहक होते हैं। उनका जनमानस पर प्रभाव भी अधिक स्थायी होता है। जो बात हम समाचारों के एक कालम में लिखकर पाठक तक पहुंचाना चाहते हैं, कभी-कभी तो उससे भी अधिक केवल एक चित्र के माध्यम से दर्शक या पाठक तक पहुंचा सकते हैं। उदाहरण के लिये जयपुर में "अतिक्रमण हटाओ" अभियान द्वारा जन-जीवन में क्या परिवर्तन आया है, यह बताना चाहते हैं तो शब्दों के बजाय चित्रों के द्वारा अधिक प्रभावशाली ढंग से बताया जा सकता है। इसके लिए अभियान से पूर्व का एक चित्र तथा दूसरा अभियान के बाद का चित्र दे दीजिये, बस पाठक इतने से ही समझ जायेगा कि जयपुर में इस अभियान से कितना परिवर्तन आया है।

समाचार और साहित्य केवल पढ़े-लिखे व्यक्तियों को ही प्रभावित कर सकते हैं लेकिन हमारे राजस्थान में पढ़े-लिखे व्यक्ति कम हैं और उनमें भी अधिकांश लोग ऐसे हैं जो पठन लिखने के ज्यादा अभ्यस्त नहीं हैं। अतः जो निरक्षर या कम पढ़े-लिखे हैं उनको चित्रों के माध्यम से हम विकास का सन्देश पहुँचा सकते हैं। □



सच्चा-प्रेम

—अशोककुमार जैन
तृतीय वर्ष 'वाणिज्य'

सूर्य अपनी लाल-लाल किरणें फैलाकर आज के लिये संसार से विदा ले रहा था। कुछ समय पूर्व पक्षियों का ची-ची का जो शोर हो रहा था, अब वह बन्द हो चुका था। पशु-पक्षी अपने घोंसलों मे जा चुके थे। शहर की सड़कों पर भी आदमियो, मोटर-गाड़ियों, साइकिलों आदि की चहल-पहल कम हो गई थी। चारों तरफ रात्रि का हल्का-सा अंधकार छाने लगा था। होटलो, नाइट-क्लवो आदि मे भीड़ जमा होने लगी थी। प्रेमियों के जोड़े गुड-नाइट कहकर अपने-अपने घरों के लिए प्रस्थान कर रहे थे। मैंने अपनी मित्र-मंडली से अन्तिम विदा लेकर अपने कदम तेजी से कमरे की ओर वढाये। मुझे आज ही दिल्ली जाना था। मेरी परीक्षा समाप्त हो चुकी थी।

पूरे रास्ते मेरे हृदय में पिताजी के पत्र को पाने की अभिलापा थी। मुझे पूर्ण विश्वास था कि पिताजी अपने पत्र में मुझे अपनी इच्छानुसार विवाह करने की स्वीकृति दे देगे। और जव यह खुशखवरी मैं अंजलि को सुनाऊंगा तो वह न मालूम कितनी देर तक खुश होती रहेगी। वही अजलि जिसकी सुन्दर आँखें, पतली नाक, लम्वे-लम्वे वाल, होठों पर छायी लालिमा एवं गोरा रंग देखकर किसी भी पुरुप का हृदय मोहित हो सकता था। ईश्वर ने अंजलि को एक नारी की समस्त विशेपताएं प्रदान की थी। कॉलेज में प्रवेश लेते ही जव मैंने पहली वार अजलि को देखा था, शायद उसके रूप ने उसी समय मेरे हृदय को जीत लिया था। कॉलेज की सहपाठिन होने के साथ-साथ हम दोनों में मित्रता वढ़ने लगी। धीरे-धीरे हमारी यह मित्रता प्रेमी-प्रेमिका के रूप मे वदल गयी। मैं यह तो नही जान सका कि सुन्दर, सुशील, शर्मीली अंजलि ने मुझसे ही प्रेम क्यों किया? लेकिन इतना अवश्य जानता हूँ कि हम दोनो ने हमेशा एक-दूसरे को दिल-खोलकर प्यार किया। यद्यपि अंजलि एक गैर-जातीय लड़की है, यह जानते हुए भी मैं उसके प्रेम से इतना प्रभावित हो गया कि मैंने उसे अपना जीवन-साथी वनाने का निश्चय कर लिया था। इसी के सम्वन्ध में मैंने पिताजी को पत्र लिखा था जिसका उत्तर आज मुझे प्राप्त होने वाला था।

अंजलि जिसके साथ मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की थी और जिसको पाने की मेरी अन्तिम इच्छा थी। इसी इच्छा के साथ मेरे कदम अपने कमरे तक पहुँच चुके थे। आज मेरा मन वड़ा प्रसन्न था। जैसे ही मैंने कमरे का दरवाजा खोला तो सामने पिताजी का पत्र पड़ा था। मैंने उस पत्र को शीघ्रता से खोला और पढ़ने लगा।

प्रिय राजेश,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह जानकर वहुत दु:ख हुआ कि तुम एक गैर-जातीय लड़की से प्रेम करते हो और उससे शादी करना चाहते हो।

लेकिन शायद तुम भूल गये हो कि तुमने एक उच्च खानदान मे जन्म लिया है। यहाँ केवल सजातीय स्त्री के साथ ही विवाह किया जाता है। तुमने जो कुछ किया है वह न केवल तुम्हारे लिये ही बल्कि सारे खानदान एव समाज के लिए भी बेइज्जती है। यदि तुम अपने परिवार की इज्जत बनाये रखना चाहते हो तो आज ही अपनी भूल का प्रायश्चित कर उस लडकी के साथ अपने सम्बन्ध तोड देना। परीक्षा समाप्त होते ही घर चले आना। तुम्हारे किये गये कार्यों से सारा परिवार दुखी है। यहा पर हम तुम्हारी इच्छानुसार किसी सजातीय लडकी से विवाह कर देंगे। शेष कुशल है।

—तुम्हारा पिता

मैंने जैसे ही पत्र पढकर समाप्त किया, तो आँखो मे आसू गिरने लगे। जिस पल का मैं बेचैनी से इतजार कर रहा था, उसी ने मेरे दिल पर आज जोरो से धक्का मारा था। मुझे आज यह महसूस हुआ कि हमारे सामाजिक बधन कितने कठोर हैं कि ये हम अपना जीवन-साथी चुनने की भी छूट नही देते। क्या भगवान की यह सतान सिर्फ जाति-बधन के कारण कभी एक न हो सकेगी? क्या हमेशा मनुष्यो के प्रेम मे केवल सामाजिक बधन के कारण दरारें पडती रहेंगी। इसी प्रकार के सैंकडो प्रश्न मेरे मन मे चक्कर काट रहे थे। मेरा हृदय बडा बेचैन हो रहा था। एक तो मैं पिताजी की इकलौती सतान होने के कारण उनकी इस इच्छा को तोडना नही चाहता था, तो दूसरी तरफ अजलि के सच्चे-प्रेम को ठुकरा कर उसके स्वप्न भी तोडना नही चाहता था।

अजलि जिसके साथ मेरा चार वर्ष का सबध था, क्या वह आज सदा सदा के लिये टूट जायेगा? मैंने उसको हमेशा निकट से देखा था आज उससे बिछुडते हुये मैं उसकी कोमल भावनाओ को ठेस नही पहुचाना चाहता था।

मैं बार-बार यह सोच रहा था कि वह आज आयेगी तो मैं उसको क्या जवाब दूगा? अगर वह आवेश मे आकर रो पडी तो मैं उसके आँसूओ को किस प्रकार रोक पाऊँगा। इस प्रकार के हजारो प्रश्न मेरे मन में टकरा रहे थे। जिनका मैं शीघ्रता मे समाधान नही कर पा रहा था। सामान बाधते हुए भी मेरे हाथो मे जोरो से कम्पन हो रहा था।

अचानक बाहर से किसी ने दरवाजा खट-खटाया। मैंने दबे पाव धडकते दिल से दरवाजा खोल दिया। सामने अजलि खडी थी। बहुत उदास, चुपचाप। अजलि शात होकर पास पडी कुर्सी पर बैठ गयी। उसकी आखो से निरन्तर अश्रुधारा बह रही थी। वह मुझसे कुछ न बोली। इधर मेरी मजबूरिया उसकी उलझन बनी हुई थी। मैंने साहस बटोरकर कहा, "अजलि चुप क्यो हो? क्या कुछ बोलोगी नही?"

अजलि "क्या बोलूँ?"

"मैं आज जा रहा हूँ।"

"वह मुझे भी मालूम है" अजलि ने आवेश मे आकर कहा। 'यदि मुझे पहले ही यह मालूम होता कि तुम मेरे प्रेम को इस प्रकार ठुकरा कर बिना मिले ही चले जाओगे तो मैं तुम्हारे साथ कभी जीवन के स्वप्न नही देखती। यह तो अच्छा हुआ कि मैं इधर आ गयी, नहीं तो तुम मेरा दिल तोडकर चले जाते। शायद तुमने सच्चा प्रेम करना अभी नही सीखा। चुप क्यो हो? बोलो न!"

उसकी दर्द भरी आवाज को सुनकर उत्तर मे मेरे हृदय से एक शब्द भी नही निकल सका। एक तरफ मैं अपने पिताजी की उन इच्छाओ को नही तोडना चाहता था जो उन्होंने अपने इकलौते बेटे के सम्बन्ध मे सोची थी तो दूसरी तरफ अजलि के सच्चे प्रेम को ठुकरा कर उसमे विष घोलना भी

नही चाहता था। किन्तु मजबूरियो के कारण मैं अपने हृदय को कठोर बनाते हुये अंजलि से सिर्फ यही कह पाया कि ये सामाजिक बन्धन कभी भी हमारे प्रेम को जीवन-साथी के रूप मे परिवर्तित नहीं होने देगे।

अजलि ने जैसे ही मेरे वाक्यों को सुना तो अपने नेत्रो मे आँसूओ को रोक न सकी। मैंने सात्वना देते हुए कहा, रोती क्यो हो ? मन की बात मैंने कह दी तो तुम बुरा मान गयी। अजलि तुम सोचो, मेरे साथ इस समय बहुत सी मजबूरिया हैं।

अचानक अजलि अपने आँसूओ को रोकते हुए आवेश मे बोली, "मुझे क्या पता था, तुम अपने सिद्धान्तों के लिये इतने कठोर हो। चार वर्ष से तुमने मुझसे कुछ भी नही कहा। मैं भी सन्तोष का दामन पकडे बैठी रही। लेकिन मैं नारी हूँ। मेरी भावनायें तुमसे बहुत कोमल है। मैं मनुष्य हूँ देवता नही।"

अजलि ने कुर्सी से उठते हुये कहा, "अच्छा ! अब मैं चलती हूँ।" मैंने अजलि की साडी का आचल पकडते हुए कहा, "नही, अंजलि नही, अभी मत जाओ। मैं आज तुम्हारे हृदय मे शका की बात उत्पन्न नही करना चाहता, मैंने तुमसे बिना सोचे प्रेम किया, उसके बदले मे मैंने तुमसे कुछ नही चाहा और न परिणाम ही सोचा। मैं बस इतना जानता हूँ कि तुमसे अलग होकर मुझे बहुत ज्यादा दु:ख होगा। इसे चाहे तुम मेरी दुर्बलता समझो। यदि मै पिताजी की इकलौती सन्तान न होता तो सारे सामाजिक बन्धन तोड़कर हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हे अपना लेता, चाहे फिर परिवार को कितनी ही ठेस पहुँचती।"

अजलि ने आँसूओ को रोकते हुए कहा, "जीवन मे सुख-दु:ख दो पहलू है। परछाई की तरह ये तो हमारे साथ लगे ही रहते है। तुम तो शायद भूल भी जाओ लेकिन मेरे......" मैंने बात काटते हुए कहा, "यहाँ दिल में जो घाव हो गया है, वह अब जीवन भर नही भर सकेगा। पहले कोई गम न था, अब गम भी साथ लग गया है।"

मैंने घडी की तरफ देखा, गाडी आने मे सिर्फ एक घण्टा बाकी रह गया था। अजलि मुझसे विदा लेकर जा चुकी थी। मैंने शीघ्र ही सामान बाधा और जयपुर शहर को अन्तिम विदाई देता हुआ स्टेशन जा पहुँचा। गाड़ी प्लेटफार्म पर पहुँच चुकी थी। मैंने कुली से जल्दी ही सामान चढवाया। सौभाग्य से मुझे गाडी मे जगह मिल गयी थी। गाड़ी मे बैठे-बैठे भी मेरा दिल बेचैन हो रहा था। मेरा हृदय मुझे बार-बार धिक्कार रहा था कि तुमने आज एक मासूम और बेबस लडकी का दिल तोड दिया है। मैं अपनी मजबूरियों से लाचार था। अचानक अजलि मुझे सामने खड़ी दिखाई दी। शायद इस समय वह मुझे प्रसन्नचित्त मन से अन्तिम विदाई देने आयी थी। वह धीरे से बोली, "राजेश तुम जहाँ भी रहो, सुखी रहना। मेरी तुमसे अन्तिम कामना है कि तुम जहाँ भी रहो वहाँ इन सामाजिक बन्धनो को समाप्त करने का प्रयास करना ताकि हजारो कन्याओ के जीवन को बर्बाद होने से बचाया जा सके।"

अजलि को न अपनाने के लिये मेरा दिल बार-बार मुझे धिक्कार रहा था किन्तु तभी गाड़ी ने रवाना होने की सीटी बजाई। गाडी ने धीरे-धीरे अपनी रफ्तार बढ़ायी। अजलि का आचल हवा में उड रहा था। वह अपने एक हाथ को हिलाते हुए मुझे अन्तिम विदाई देती हुई शीघ्र ही मेरी आँखो से ओझल हो गयी। गाडी तेज रफ्तार से चली जा रही थी। किन्तु अंजलि के अन्तिम शब्द मेरे दिल मे बार-बार चुभन पैदा कर रहे थे।

वर्ष पर वर्ष बीत गये। दिल्ली मे मुझे पिताजी के कारनामे उस समय मालूम हुए जबकि उन्होंने दहेज के लालच मे आकर मेरी शादी एक

अनपढ, गवार, बदसूरत लडकी से करदी। जो कभी मुझे मेरा मनचाहा प्रेम न दे सकी। और इसीलिये मैंने शादी के एक वर्ष मे ही इस लडकी से तलाक ले लिया। मैं अजलि को पुन पाना चाहता था, किन्तु मेरा दिल ऐसा करने के लिए नही माना। मैंने अजलि की अंतिम इच्छा को पूरा करने के लिए एक समाज-सुधारक सगठन बनाया और देश मे जाति प्रथा, दहेज प्रथा आदि को समाप्त करने के लिए आदोलन चला दिया। ठीक पाच वर्ष बाद अजलि का पत्र मिला जो इस प्रकार था।

मेरे राजेश,

मेरी शादी मे तुम आशीर्वाद देने अवश्य आओगे, ऐसा मेरा विश्वास है। शेष कुछ और नही, बस।

—अजलि

अजलि का पत्र पढकर एक बार तो मेरा दिल वहाँ जाने के लिये नही माना किन्तु दूसरी तरफ मैंने शीघ्र ही अपनी भूल को स्वीकार लिया। अगले दिन मैं जयपुर पहुच गया। अजलि आज दुल्हन के रूप मे बहुत सुदर लग रही थी। अन्तिम क्षणो मे जब वह मेरे पास आशीर्वाद लेने आयी तो मेरे चरण छूने लगी। किन्तु मैं एक तरफ हटकर केवल इतना ही कह पाया कि नही अजलि पैर तो आज मुझे तुम्हारे छूने चाहिए क्योकि तुम हमेशा मेरे लिये आदर्श रही हो। तुम सच्चे हृदय से एक बार मुझे माफ कर दो। मेरी शुभकामनाए हमेशा तुम्हारे साथ हैं।



बाल की खाल

—अशोक डगायच

एकादश स 'वाणिज्य'

1 "बच्चो को प्रेस करके कपडे पहिनाने चाहिए।"

अर्थात् पहिले बच्चो को प्रेस करदो, फिर कपडे पहिनाने चाहिये।

2 "मा रोते हुए बिट्टु से कह रही है कि बेटा, मेरी बात मान जा।"

अर्थात् माँ स्वय रोकर कह रही है कि बेटा मेरी बात मान जा।

3 'भगवान को लड्डू का भोग लगाकर खाना।"

अर्थात लड्डू का भोग लगाकर भगवान को खाना है।

4 नौकर (दुकानदार से)—"जल्दी से बैंगन देदो, साहब का भुर्ता बनाना है।"

अर्थात् नौकर को साहब का ही भुर्ता बनाने की जल्दी है।

बुझती शमा

—नीरा जैन, X

आज शमा का नीला शव भूमि पर पड़ा सुशोभित हो रहा था, हजारों की संख्या में लोग आ-जा रहे थे व घरवालों से पूछताछ कर रहे थे। परन्तु शव का मुस्कराता मूक-चेहरा अपनी वेदना की दास्तान सुना रहा था। सभी को अपनी इस मृत्यु का दोषी ठहराकर उन पर मूक-शर का प्रयोग कर मानो कह रहा था कि झूठी सहानुभूति किसी काम की नहीं, जब समय बीत चुका हो। और मैं? मैं, शमा के जीवन-चित्रपट मे खो गई। पुरानी यादो ने मेरी सारी रात छीन ली। मैं शमा के जीवन की छोटी-सी कड़ियों को जोड़ने मे लग गई....

शमा मेरी अत्यन्त प्रिय सहेली थी। उसके तीन भाई-बहिन थे। गरीब परिवार मे रहते हुए भी कभी उसने गरीबी का एहसास न किया। माँ-बाप का प्यार सदैव गरीबी की धूप से छायादार पेड की तरह उनकी रक्षा करता और ऐसे मे शमा की तीव्र बुद्धि ने माता-पिता के जीवन मे एक नये आलोक का प्रभात जगा दिया। माँ-बाप का सारा प्यार पाकर उसकी बुद्धि तीव्र होती गई। शुरू से ही शर्मीली व शान्त शमा पढ़ाई मे जुटी रहती। माँ-बाप ने अपने ही लोगो के ताने सहे परन्तु बच्चो को इनका एहसास न हुआ और चारो बच्चे ही पढ़ाई मे तेज निकले। माता-पिता के सजोये स्वप्नो को साकारता का रूप देने का मानो उन्होने निश्चय कर लिया था परन्तु अचानक उनके भाग्य ने पलटा खाया। नौकरी छूट गई और पिता ने व्यवसाय आरम्भ किया। परन्तु यही परिवर्तन शायद शमा की जिन्दगी को तहस-नहस करने की शुरुआत थी। उसके तीनों भाई-बहिन बड़े होते गये। अब शमा भी कुछ अधिक बोलने लगी थी परन्तु उसकी बुद्धि का कमल मुरझाया नही था। धीरे-धीरे माँ की अस्वस्थता, स्कूल की उच्च कक्षा की पढ़ाई व घर पर आने वाले अध्यापक के कार्यो के बीच उसका जीवन उलझने लगा। वह जिस भी सहेली से मित्रता का हाथ आगे बढाती, नई आशाओ के बीज बोती व कल्पनाएँ सजोती, वे पूर्ण होने से पूर्व ही वैमनस्य व धन की आँधियों से क्षण-भर में तहस-नहस हो जाती। कोपलें फूट भी न पातीं कि अविश्वास रूपी गज उन्हे रौंद डालता। धीरे-धीरे वह स्वयं को कैद के पछी की तरह महसूस करने लगी। तीनों ओर के कार्यो की किसी त्रुटि का शिकार वह रोज-रोज होने लगी। बचपन का शर्मीला स्वभाव उसकी जिन्दगी को घुटन से भरने लगा। अब उसकी हँसी नाटकीय मात्र होती थी। सहेली से दोस्ती करने से पूर्व उसका घर का मकान होना जरूरी था परन्तु जब कभी वह किन्हीं दो सहेलियों को हँसते-मुस्कराते देखती, उसे अपनी तन्हाई खलने लगती। परन्तु अब? वह सिर्फ घुटन भरी जिन्दगी जी रही थी। अपमान के घूँट पी रही थी और अपनी बेबसी व निस्सहायता पर रात के वक्त आँसू बहाया करती थी। ऐसे ही क्षणो मे मैं ही थी जो उसके जीवन मे आई और फिर एक दिन इसी प्रकार रोते-रोते उसने अपनी

(शेष पृष्ठ 32 पर)

मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या यही स्वतन्त्रता है, क्या वह यह इच्छा नही रखती कि उसका भी समाज मे, घर मे कुछ आदर हो, कुछ सम्मान हो।

हमारे समाज मे स्त्री पुरुष के मिलने पर जितना प्रतिबन्ध है वह किसी और समाज मे देखने को नहीं मिलता। नारी को अगर किसी विभाग मे जिसमे वह काय करती है अगर किसी से बात करती हुई देखली जाए तो उस पर भी एक अर्थ थोपा जाता है।

अन्त मे, मैं यही कहना चाहूँगी कि यह जो भारतीय नारी स्वतन्त्रता है, वह केवल मात्र औपचारिकता है। नारी को ऊपरी अधिकार तो दे दिए गए हैं लेकिन व्यावहारिक रूप मे उनके परिणाम सन्तोपजनक नही निकलते हैं। उपर्युक्त वणन से नारी के जीवन की दयनीय स्थिति का पता चलता है। ❖

(पृष्ठ 29 का शेष)

कहानी सुनाई। आज उसकी मौत का कारण उसकी तन्हाई व घुटन भरी जिन्दगी ही थी, जिससे उकताकर उसने मौत को चुना और बाजार से कुछ जहर मँगवाकर अपनी मृत्यु का ऐलान कर दिया। पिंजरे म बन्द एक पछी उन्मुक्त जीवन न पा सकने के गम मे पिंजरे से सिर टकरा-टकराकर सदा के लिये इस बन्दी जीवन से मुक्त हो गया।

शमा की लाश जलाई जा चुकी है और मैं इसी उधेडबुन मे हूँ कि शमा ने मृत्यु को बुलाकर अच्छा किया या बुरा, इतना अवश्य है कि उसने आज के धनी वग के ऊपर इतना बडा प्रहार किया है जो एक शिक्षा है। धन रूपी राक्षस के भयकर रूप का गरीब जनता पर क्या प्रभाव पडता है इसका सजीव उदाहरण देकर उस मूक आत्मा ने धनी वग को एक सन्देश दिया है। अपना बलिदान करने के बाद उसने यह बता देना चाहा है कि अब कभी ऐसा नही होना चाहिये अन्यथा ऐसी अनेक मूक, निर्दोष शमाएँ भीतर ही भीतर घुटकर अपने को धन की बलिवेदी पर चढा देंगी। ❖

प्रधानमन्त्री का २० सूत्री आर्थिक कार्यक्रम और राजस्थान

—प्रभात शर्मा
बी. ए. फाइनल 'कला'

"राज्य सरकार और मैं तहेदिल से आर्थिक कार्यक्रम को लागू करने की सौगध खाकर बैठे हैं।"

—हरिदेवजोशी
मुख्यमन्त्री 'राजस्थान'

आर्थिक क्राति के सूत्रपात के लिये राष्ट्र के स्वर में स्वर मिलाते हुए राजस्थान ने तत्काल जो कदम उठाकर प्रशासनिक तन्त्र को सही किया तथा आर्थिक कार्यक्रमो के सुधार के लिये प्रभावशाली कदम उठाये है, इस वातावरण से आवश्यक वस्तुओं के भावों मे गिरावट की प्रवृत्ति देखने को मिली वही व्यापार तथा अन्य क्षेत्रो मे भी अनुशासन की भावना पैदा हुई है। जिस युवा वर्ग को पिछले कई वर्षो से गुमराह किया जाता रहा है, इस साल उसकी स्थिति भिन्न है। स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयो मे छात्रों ने विधिवत् पढ़ना प्रारम्भ कर दिया है। उन्हें गुमराह करने वाले तत्त्वों पर भी सरकार की कड़ी नजर है।

श्रमिको और कर्मचारी संगठनों ने भी हडताल तथा तोड़फोड़ का मार्ग छोड दिया है, इससे औद्योगिक क्षेत्र मे हानि नही हुई, जबकि गत वर्ष 2.5 लाख मानव दिनों की हानि हुआ करती थी। राज्य सरकार के कार्यालयों मे समय की पाबन्दी और कर्त्तव्यपरायणता नजर आने लगी है। क्योकि राज्य सरकार ने तत्काल अयोग्य व भ्रष्ट कर्मचारियों तथा अधिकारियो को सेवा-मुक्त करके सारे प्रशासन को सतर्क कर दिया है।

इस क्रान्तिकारी कार्यक्रम को तेजी से लागू करने के लिये मुख्यमन्त्री सचिवालय के अन्तर्गत विशेष **आर्थिक कार्यक्रम समन्वय व क्रियान्वयन विभाग** की स्थापना मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी की अध्यक्षता में की गई है। श्री रामप्रसाद लड्ढा इसके उपाध्यक्ष हैं, जिन्हे केबिनेट स्तर का मन्त्रि पद प्रदान किया गया है।

21 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम की प्रगति का विवरण:—

(1) **आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट, उत्पादन की गति तेज व आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि व वितरण व्यवस्था को प्रभावशाली बनाना:**—उपभोक्ता वस्तुओ की वितरण प्रणाली मे सुधारो के अन्तर्गत प्रत्येक उचित मूल्य की दुकान से लगभग 1000 राशनकार्डो पर राशन वितरण किया जाता है। समय-समय पर कार्डो की चैकिंग भी होती है ताकि फर्जी राशन कार्ड न रहे। केन्द्रीय सरकार से अधिकाधिक मात्रा मे गेहूँ, शक्कर, मिट्टी का तेल, कोयला व कपड़ा प्राप्त करने के प्रयत्न जारी है। उत्पादन मे वृद्धि के लिये चालू वर्ष मे उत्पादन के निम्न लक्ष्य रखे गये है।

	खाद्यान्न लाख टन	तिलहन लाख टन	कपास लाख टन	गन्ना लाख टन
1. खरीफ	32.85	2.30	3.35	13.00
2. रबी	42.15	2.05	,,	,,

आवश्यक वस्तुओ की जमाखोरी व कालाबाजारी करने तथा मूल्यसूची प्रदर्शित नही करने वालो के लिये आवश्यक वस्तु अधिनियम के अन्तर्गत अब तक 961 अभियोग, 174 गिरफ्तारियाँ व 43 16 लाख के लगभग रुपये की लागत की आवश्यक वस्तुएँ जब्त की गई हैं।

(2) कृषि भूमि की सीमा निर्धारण कानूनों को लागू करना व अतिरिक्त भूमि का भूमिहीनो मे वितरण व भूमि सम्बन्धी अभिलेख पूर्ण करना — 21 सूत्री आर्थिक कायक्रम की घोषणा से पहले लगभग 8 22 लाख एकड भूमि पर खातेदारी अधिकार दिये जा चुके हैं, 9 48 लाख से अधिक भूमिहीन किसानो को लगभग 61 15 लाख सरकारी भूमि नि शुल्क आवटित की गई है। अनुसूचित जाति के 2,65,282 व्यक्तियो को 16,31,446 एकड भूमि अनुसूचित जनजाति के 1,95,623 व्यक्तियो को 8,64,183 एकड भूमि आवटित की गई है। 5 लाख एकड भूमि सिंचित साधारण निर्धारित दरो पर सुविधाजनक किश्तो पर भूमिहीनो, किसानो व समाज के कमजोर वग को आवटित की जा चुकी है।

(3) भूमिहीनो व समाज के कमजोर वग को आवासीय भूखण्डों को तेजी से आवटित करना — अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन जाति व भूमिहीन लोगो के करीब $5\frac{1}{2}$ लाख परिवारो को नि शुल्क भूमि पहिले ही आवटित की जा चुकी है, ग्रामीण दस्तकारो व समाज के अन्य पिछडे वग व लघु व सीमान्त कृषको को नि शुल्क आवासीय भू खण्ड देने की योजना लागू की जा रही है। भूमि पर भवन निर्माण हेतु वित्तीय सहायता के लिये राजस्थान स्टेट कोआपरेटिव व हाउसिग फाइनेन्सर सोसाइटी का गठन हुआ है। अब तक 21 476 हरिजनो को 8 59 करोड की राशि और न्यून आय के 1315 व्यक्तियो को 1 करोड 35 लाख की राशि प्राप्त हो चुकी है। और 2,553 मकान बनकर तयार भी हो चुके हैं।

(4) मजदूरों से जबरन काम लेने को तत्काल गैर कानूनी घोषित किया जायेगा —राज्य मे सागडी प्रथा को समाप्त करने हेतु 1961 मे कानून बना था, उसमे सशोधन करके सागडी प्रथा को अपराध पुलिस हस्तक्षेप योग्य घोषित कर दिया गया है। इस अभियोग की सक्षिप्त सुनवाई होगी व 500 रुपये तक जुर्माना व 1 वर्ष तक जेल की व्यवस्था है। पचायत समितियो को अधिकार सौंपकर उन पर दायित्व डाला है कि सागडी प्रथा से पीडित व्यक्तियो को कानूनी कायवाही की व्यवस्था करावें।

(5) ग्रामीण पर कज का बोझ समाप्त, ग्रामीण क्षेत्रो मे भूमिहीनों, मजदूरों, दस्तकारों, व छोटे किसानो से ऋण वसूली पर रोक लगाने का कानून बनाकर प्रतिबन्ध लगाये जायेंगे —ग्रामीण कृषकों भूमिहीनो व दस्तकारो के ऊपर गाव के बोहरा का जितना भी कर्जा निकलता है, उसकी वसूली या कज से सम्बन्धित दावो को एक वप के लिये स्थगित कर दिया है। केवल राज्य सरकार, बैंक, सहकारी सस्थाओ व जीवन बीमा के ऋणो को छोडकर, गिरवी रखी जमीन जिसको गिरवी रखे 5 साल हो चुके हो, कजदार की स्वत हो जायेगी। राजस्थान साहूकार अधिनियम मे सशोधन करके बिना लाइसेन्स रखे गये कज देने वालो के या जिनने धारा 22 व 23 का विवरण पत्र प्रस्तुत नही किया हो उनके द्वारा दायर सभी दावो को खारिज कर दिया जायेगा।

(6) खेतिहर मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी सम्बन्धी कानून मे सशोधन —बडी सिंचाई योजना क्षेत्रो मे खेतिहर मजदूरो की न्यूनतम दैनिक मजदूरी 5 रुपये से बढाकर 6 रु कर दी गई है राज० नहर, गगनहर, कनाल, भाकडा व चम्बल को छोडकर, सिंचित भूमि पर खेतिहर मजदूरो की न्यूनतम मजदूरी 4 25 पसे निर्धारित की जा चुकी है। पचायत के अधिकारियो को निर्देश है कि मजदूरो को वेतन सही नहीं मिलता, इसके लिये उनको कानूनी अधिकार प्रदान किया गया है।

(7) **50 लाख हैक्टर भूमि में सिंचाई व्यवस्था व भूमिगत जल के अधिकाधिक उपयोग के राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाना:**—केन्द्र सरकार ने सूचित किया है कि इस कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य सरकार को वृहत् एवं मध्यम सिंचाई परियोजना के अन्तर्गत 3.80 लाख हैक्टर अतिरिक्त भूमि को सिंचाई में पाचवी योजना के शेष चार वर्ष की अवधि मे लाना, इसके अतिरिक्त शेष 1.20 लाख हैक्टर भूमि को लघु सिचाई योजनाओ तथा भूमि जल के स्रोतो द्वारा सिंचित करने की योजना है। भू-जल भण्डार से 268 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी पेयजल की योजनाओ के लिये सुरक्षित रखा गया है। इससे 92 लोग लाभान्वित होगे।

(8) **विद्युत उत्पादन के कार्यक्रमों में तेजी लाई जायेगी व केन्द्रीय सरकार के नियन्त्रण में सुरताप बिजली घरों की स्थापना की जायेगी:**—लघु व सीमान्त कृपको को विद्युत् की सुविधा प्राप्त करने मे अब तक कुछ कठिनाई थी, इसे अब दूर कर दिया गया है। इन व्यक्तियों को बिजली के लिये कनेक्शन के सम्बन्ध में दिये गये प्रार्थनापत्रो की तिथियो पर भी ध्यान दिये बिना ही बिजली की सुविधा दी जायेगी। कूँओ पर बिजली पहुँचाने के लिये खम्बों तथा तार का खर्च बोर्ड उठायेगा। अब तक विशेष दस्तो ने 38 लाख यूनिट् की बिजली की चोरी राज्य भर में पकड़ी है।

(9) **हाथ करघा उद्योग के विकास की भी योजना बनाई जायेगी:**—हाथ करघा उद्योग का कार्य उद्योग विभाग को सौप दिया है, उद्योग विभाग हाथ करघा उद्योग के सर्वाधिक विकास हेतु निगम की स्थापना पर विचार कर रहा है।

(10) **जनता-कपड़े की किस्म में सुधार किया जायेगा तथा वितरण की समुचित व्यवस्था की जायेगी:**—राज्य मे इस समय जनता कपड़े की उपलब्धि के सम्बन्ध मे कोई कठिनाई नहीं हैं। उचित मूल्यों की दुकानों पर कपड़े का वितरण किया जा रहा है। किस्मो के बारे मे केन्द्रीय सरकार उचित व्यवस्था कर रही है।

(11) **शहरी भूमि तथा शहरी काम में लाने योग्य भूमि का समाजीकरण करना व खाली छोड़ी हुई भूमि तथा नये मकानो के क्षेत्रफल की सीमा निर्धारित की जायेगी**—इस सम्बन्ध मे केन्द्रीय सरकार से नीति निर्देशो की प्रतीक्षा है।

(12) **शहरी सम्पत्ति के मूल्यांकन हेतु विशेष दस्तों का गठन व करचोरी व गलत मूल्यांकन करने वालों के विरुद्ध त्वरित मुकदमें चलाकर कड़ी सजायें दी जायेंगी:**—राज्य मे भूमि व भवन विभाग स्थापित है। जो शहरी सम्पत्ति का मूल्यांकन कर 50 हजार से अधिक मूल्य के भवनो व शहरी भूमि पर आधे प्रतिशत की दर से कर वसूल करता है। इस कार्य को और अधिक व्यवस्थित किया जा रहा है।

(13) **तस्करों की सम्पत्ति जब्त करने के लिये विशेष कानून बनाना:**—इस सम्बन्ध मे केन्द्रीय सरकार आवश्यक कार्यवाही कर रही है। राज्य सरकार भी इसमे पूर्ण सहयोग देने को तैयार है।

(14) **पूंजीनियोजन की प्रक्रिया को आसान बनाया जाना व आयात लाइसेन्सों के दुरुपयोग करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करना:**—इस सम्बन्ध मे केन्द्रीय सरकार द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। वित्त निगम ने यह फैसला किया है कि जिन लोगों या संस्थानों के विरुद्ध आर्थिक अपराध के मामले हैं, उनके ऋण स्वीकृत नही किये जायेंगे।

(15) **उद्योगों के प्रबन्ध में मजदूरों को साथ लेने की योजना:**—राज्य सरकार की यह नीति है कि प्रबन्ध में भी सभी स्तरों पर यथा उत्पादन, व्यवस्था आदि में मजदूरों को सम्मिलित किया जाये। राज्य सरकार इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार से नीति निर्देशो की प्रतीक्षा में है।

(16) **सड़क परिवहन हेतु राष्ट्रीय परमिट व्यवस्था की जायेगी**—इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार द्वारा कार्यवाही की जा रही है।

(17) **मध्यम आय वर्ग को आयकर में राहत देने के लिए आयकर में छूट की सीमा 6 हजार से बढ़ाकर 8 हजार कर दी गई है**—इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

(18) **छात्रावासों में रहने वाले छात्रों के लिए नियंत्रित मूल्य पर आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था की जायेगी**—सरकार राजकीय व निजी छात्रावासों में रहने वाले छात्रों के लिये प्रति विद्यार्थी के हिसाब से प्रतिमाह 8 किलो गेहूँ 1 किलो शक्कर व आवश्यकतानुसार मिट्टी का तेल व कोयला देने की व्यवस्था है। कुछ कॉलेजों व स्कूलों में सहकारी उपभोक्ता भण्डार स्थापित किये जा रहे हैं। जिसमें पाठ्य पुस्तकें, कापियाँ व स्टेशनरी आदि बेचने की व्यवस्था है। इसमें राशन से मिलने वाली वस्तुओं को भी बेचा जाय ऐसी व्यवस्था की जा रही है।

(19) **पाठ्य पुस्तकें व स्टेशनरी नियंत्रित मूल्यों पर उपलब्ध की जायेंगी**—वर्तमान में 1 से 8 कक्षा तक की सभी 52 पुस्तकें राष्ट्रीयकृत हैं। इन 52 पुस्तकों में से 37 के मूल्यों में कमी कर दी गई है। कक्षा 9 से 11 तक कोई पुस्तक राष्ट्रीयकृत नहीं है। विश्वविद्यालयों में भी ऐसी व्यवस्था की जा रही है कि वे भी पाठ्य पुस्तकें अपने प्रेस में ही सस्ते कागजों में छपवाने की शीघ्रातिशीघ्र व्यवस्था की जाये। सरकार से प्राप्त सस्ते कागज की $2\frac{1}{2}$ करोड़ की कापियाँ बनाकर डिपोज, स्कूलों, सरकारी समितियों व अधिकृत दुकानदारों के माध्यम से वितरित की गई। पाठ्य-पुस्तकों की कालाबाजारी न हो इसके लिए "विजीलेंस-स्क्वॉड" बनाये गये हैं। इन्होंने कई स्थानों पर छापे मारे व उनके विरुद्ध कार्यवाही की है। इस समय 20 डिपोज व 1100 से अधिक वितरकों द्वारा पाठ्य पुस्तकों व कापियों का वितरण किया गया। निर्धन छात्रों को पुस्तकें उपलब्ध कराने में 38 कॉलेजों में बुक-बैंक की स्थापना की जा चुकी है।

(20) **रोजगार व प्रशिक्षण के अधिक अवसर बढ़ाने के लिए ऐप्रेंटिसशिप की नई योजना शुरू की जायेगी व योजनाओं में समाज के कमजोर वर्गों को प्राथमिकता प्रदान की जायेगी**—रोजगार व प्रशिक्षण के अधिक अवसर बढ़ाने के लिए ऐप्रेंटिसशिप की योजना पर राज्य में पहले से ही कार्य हो रहा है, इस समय विभिन्न उद्योगों में 645 ऐप्रेंटिस प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। 21 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत इसको और तेजी से क्रियान्वित किया जा रहा है। सितम्बर 75 में 645 एप्रेंटिस प्रशिक्षणार्थियों से बढ़ाकर 1200 की संख्या कर दी गई है। प्रशिक्षण में अन्य लोगों के साथ साथ विकलांगों व अल्प संख्यकों को भी अवसर प्रदान किया जायेगा। राजकीय प्रतिष्ठानों, सरकारी विभागों व स्वास्थ्य संस्थाओं व अभियान्त्रिक स्नातकों व डिप्लोमा प्राप्त व्यक्तियों के जितने भी पद हैं उनका 10% भाग ऐप्रेंटिस, अभियान्त्रिक स्नातकों व डिप्लोमा प्राप्त व्यक्तियों के लिए सुरक्षित रखा जायेगा व वजीफे में मिलने वाली राशि का 50% दिन के द्वारा प्राविधित किया जायेगा, नई नियुक्तियों में 75% स्थान एप्रेंटिसों के लिए सुरक्षित रखने के प्रश्न पर भी विचार किया जा रहा है।

(21) **सरकारी खर्च में सख्ती से कमी की जायेगी**—राज्य सरकार ने वित्तीय वर्ष में प्रशासनिक खर्च से लगभग 10% कमी करने का निर्णय लिया गया है। यह कमी किन-किन मदों में, किस प्रकार की जायेगी इसकी विस्तृत रूप रेखा सरकार तैयार कर रही है।

Age of Advertisement

—MAHENDRA KUMAR SETHIA, X D

It is scientific age, as well as commercial age, and advertisement is necessary for trade.

It is only the advertisement through which a company can do a good business of its products. At the same time it can produce new things and can attract the consumer. Consumers are attracted to buy things with the help of advertisements and a company can even sell its inferior goods for a handsome price.

Today advertisement has become a good means to popularise the things.

If we switch on the radio, we hear advertisements. The moment any item of a programme is over, advertisement starts.

Advertisement is every where. Both sides of roads are full of advertisements In hotels the posters are on the wall and walls of the city are seen painted with different types of advertisement. Even some school advertisements are seen painted here and there.

A small thing worth 5 paise as well as one of high cost is popularised by advertisement. To maintain the demand of a thing it is necessary to advertise it. Advertisement is very important for a business or a trade.

No doubt, advertisement is a good method of selling and popularising any thing. Do you also need advertisement ? □

Failures are the pillars of success.

—Welsh Proverb

No great deed is done by those who ask for certainty. **—George Eliot**

All philosophy lies in two words sustain and obtain.

—Epiclatus

Value of Games and Sports

—RAMPRASAD AGARWAL XI C

There are different kinds of games and sports Cards carom, ludo and chess etc are indoor games Cricket, Hockey, Football, Basket ball etc are outdoor games which are very popular Games and sports are important means of entertainment The students prefer to play outdoor games to regain their lost energy They are also useful from the point of view of health The sports not only refresh the mind but also improve digestion

Games and sports teach students to live with co operation Every player has to play for the team which also teaches him to work for the common good in life The sense of sacrifice can also be learnt from them

They also provide an outlet for the surplus energy of youth If there are no games they will express it in the from of mischief

Games and sports are very useful for students, provided they do not come in the way of their studies These should not be played at the cost of studies In that case it will not be a blessing but shall prove a curse for the students as excess of every thing is bad On the whole we can say that games and sports are necessary for the integrated development of a student s versatile personality □

Life and Death

—SUNIL CHAND DAGA, XI C

1 Life is a journey to death and death is a passport to life

—Colton

2 When life is woe
And hope is dumb
The world says 'Go !
The grave says, Come !'

—Unknown

3 Life is not victory but battle
Ever keep a brave and happy heart

—Unknown

5 Death is the liberator of him whom freedom cannot release, the physician of him whom medicine cannot cure the comforter of him whom time cannot console

—Colton

Raja Durga in the year 2000 A. D.

—RAJA DURGA
B. Sc. Part II

My mind is still hazy with the drugs of sleep and seeing the beautiful dawn outside. I realise that the spring has come. Then the mists of sleep clear away and I realise that 'Gandhinagar' the capital of India is enjoying eternal spring because the atmosphere inside the plastic bubble enclosing the city is carefully regulated to suit human requirments.

I think of the over mechanised life in the twenty-first century. I soon get up, shave with my auto shaver, punch a button and get my breakfast, dress up and climb into my zip suit, use my portable jet pack, which will convey me to the Nehru space launching centre.

At the space launching centre, I am working on the Pluto Mission. Today two astronauts Mr. Raja Durga—Mission Commander and Miss Asha Rani—Commander landing module will blast off in the space ship "Taj Mahal VII" on the sixteen days mission to land on the planet Pluto.

I see the giant hele-tankers which will carry fuel on our mission. After the blast off we have a lovely ride through the galary of stars, passing through the vast ocean of heavenly bodies and finally we reach planet Neptune.

Myself and my comrade get into the landing module which will land on the surface of the planet Pluto.

Miss Asha Rani commands the landing module and I place myself in the state of suspension aboard the landing module and will remain so until I reach Pluto.

When I enter the gravitational field of Pluto, I find a satellite racing towards me. I inform the commander of landing module which in turn takes advice from ground control on Earth. Miss Asha Rani then tries to handle the situation and tries to avoid the collision. I try to save myself, but at the whip of moment the satellite collides the spaceship with a force of millions of megatons and......

I get up, oh ! ! find that my brother is trying to put a pillow under my head.



democracy can survive only when certain basic rules are observed and freedom does not mean walking on the wrong side of the road

During the state of emergency people in general are feeling happier and healthier Its purpose is to bring more self discipline It aims at increasing production which will bring about greater employment and better distribution of wealth This is time for activity and discipline Each day the situation is improving and the country is gathering more strength

We the people of India have to remember that the present time in the history of the nation is not a time for any agitation, go slow or strike In the words of Smt Gandhi 'The country is passing through a very difficult period and it is only through hard work perseverance and discipline that this crisis can be faced In life there is no miracle for anything there is no magic remedy The magic is in each one of you The magic is of hard work with sincerity, discipline and dedication Smt Gandhi has introduced a 20 point economic programme for the prosperity of the nation and it is our solemn duty to co operate in this May God help us □

(*Continued from page 42*)

These are the qualities needed in times of peace as well as in times of war If we are not true to our studies, we would fail If our leaders are not fit, they would lead us to ruin If the people are indisciplined our nation will be doomed If a general is coward and dishonest, he can never command his soldiers If an army loses patience it is bound to give way to the enemy An indisciplined and demoralised army can never protect our frontiers Only 100 soldiers, who are fit in every respect can teach a lesson to a big army of 1 000 soldiers

Thus Fitness is the key to success In peace and war fitness wins It makes a man great Let us strive for that

दहेज प्रथा एक सामाजिक अभिशाप !

—शैलबाला, X

आदिकाल से ही जबसे मानव ने सुखी दाम्पत्य जीवन की आवश्यकता महसूस की है, उसी समय से विवाह के अवसर पर दहेज अर्थात् कन्या को माता-पिता एवं परिवार के लोगो द्वारा कुछ न कुछ सामान देने की परम्परा अनवरत चली आ रही है। अपने प्रारम्भिक रूप मे शायद यह प्रथा बहुत अच्छी रही हो और उसके परिणाम भी सम्भवतः अच्छे ही रहे हो, किन्तु कालान्तर मे अर्थात् मध्य-काल के आते-आते इस प्रथा ने विकृत रूप धारण कर लिया। परिणामतः राजपूतो मे कन्या के जन्म लेने के साथ ही मार देने की परम्परा बन गई जो काफी लम्बे समय तक चलती रही। इससे स्पष्ट होता है कि मध्य काल से ही इस प्रथा मे विकार उत्पन्न होने लगे, जिसका पल्लवित रूप आज भी हमे साक्षात् दृष्टिगोचर हो रहा है। वर्तमान समय मे दहेज-प्रथा न केवल विकृत रूप से हमारे समक्ष आती है वरन् इसके परिणाम भी अत्यन्त भयंकर होते है। आजकल के शर्तो पर आधारित विवाह इसके ज्वलत उदाहरण है।

जहाँ तक मेरा दृष्टिकोण है प्रचलित दहेज प्रणाली ने कन्या को माँ-बाप के लिए एक अभि-शाप बना दिया है क्योकि बढ़ती हुई दहेज की माँग लडकी के परिवार वालो की चिन्ता का कारण बन जाती है। परिणामतः उन्हे संदैव चिन्ता रूपी अग्नि में जलना पडता है जो उन्हे भीतर ही भीतर खोखला बना देती है। रहीमदास ने ठीक ही लिखा है—

"रहिमन कठिन चितान ते,
चिंता को चित चेत।
चिता दहत निर्जीव को,
चिंता जीव समेत॥"

समाज मे हजारों की सख्या मे शिक्षित युवक एव युवतियाँ हैं जो खुले रूप में दहेज के विरुद्ध अपना वक्तव्य देते रहते हैं किन्तु जब उनके स्वय के विवाह का वक्त आता है वे अपने आदर्शों की बलि देकर खुले आम हजारों रुपयो के दहेज की माग करते हैं। मेरे दृष्टिकोण मे तो ऐसे विवाह को विवाह की सज्ञा न देकर लडके के विक्रय की सज्ञा देना ही अधिक उपयुक्त रहेगा। शर्त रखने से पूर्व लडके के माँ-बाप एवं स्वय लडका भी यह नही सोचते कि इसका परिणाम क्या होगा और लडकी एव उसके घरवालो पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा ?

उपर्युक्त बातो को देखने के पश्चात् मेरे मस्तिष्क मे एक प्रश्न उभर आता है और वह है, क्या शर्त पर आधारित विवाह के पश्चात् लडकी उस घर मे भलीभाँति सामञ्जस्य स्थापित कर सकती है; सदेहास्पद है। कारण स्पष्ट है, इच्छा मुताबिक धन न मिलने पर ससुराल मे लड़की की उपेक्षा की जाती है। परिवार के सदस्यो द्वारा उसे व्यग्य-बाणों का शिकार बनना पडता है, जिसका परिणाम सामने है—बढ़ती हुई तलाको की संख्या। लड़की की शादी के पश्चात् माँ-बाप प्राय: स्वय को जिम्मेदारी से मुक्त समझते है क्या उनकी जिम्मेदारी आरक्षित है, नही, कदापि नही ! क्योकि ऐसे अनेक उदाहरण हमारे समक्ष है, जिसमे लड़की को शादी के पश्चात् भी अपनी बाकी

जिन्दगी अपने संरक्षकों के संरक्षण में ही, व्यतीत करनी पड़ती है।

दहेज-प्रथा का सर्वाधिक प्रभाव मध्यम वर्ग पर पड़ रहा है। एक मध्यम वर्गीय परिवार का औसतन व्यय उसकी आय के बराबर होता है। ऐसी स्थिति में उस परिवार से यह अपेक्षा करना कि दहेज के रूप में हजारों रुपयों की प्राप्ति हो, उसी प्रकार असम्भव है जैसे मरु भूमि में जल की अपेक्षा करना। किन्तु मरता क्या नहीं करता ? इसी प्रकार एक विवश पिता भी अपनी लड़की की शादी के लिए लड़के वालों के हाथ की कठपुतली बन कर हजारों रुपयों के कर्ज का बोझ अपने सर पर रख लेता है और सारी जिन्दगी उस बोझ से दबा रहता है। ऐसी स्थिति में लड़की उनके लिए अभिशाप बनकर रह जाती है।

यद्यपि मैं दहेज-प्रथा के पूर्णतः विपक्ष में नहीं हूं जैसा कि पहले भी कहा गया है कि प्राचीन काल में अपनी विशेषताओं के कारण यह प्रथा अवश्य ही लोकप्रिय रही होगी किन्तु मध्य काल में और तदन्तर वर्तमान समय में भी इसका वही रूप रहता तो यह एक लोकप्रिय प्रथा सिद्ध हो सकती थी। इसके लिए आवश्यक है, शादी शर्तों के बन्धन से पूर्णतः स्वतन्त्र हो। तभी दोनों परिवारों में प्रेम एवं सामञ्जस्य बना रह सकेगा और सामान्य घर की लड़की को भी अच्छे जीवनसाथी की प्राप्ति हो सकेगी। इससे बहुत सीमा तक वर्ग भेद की समाप्ति होगी।

वैसे कोई भी प्रथा अपने आप में दूषित नहीं होती है क्योंकि इनके द्वारा हमारे सामाजिक सम्बन्ध और अधिक प्रगाढ़ बनते हैं। सामाजिक रीति रिवाज एवं धारणाएँ ही किसी भी प्रथा को अच्छाई और बुराई की ओर अग्रसर करने में अपना महत्त्वपूर्ण योग देती है। यदि समस्त जन इस प्रथा के दोषों की ओर दृष्टिपात करें और उसके निराकरण के उपाय करें तो इस प्रथा में शीघ्रातिशीघ्र सुधार कर इसे लोकप्रिय प्रथा बनाया जा सकता है।



दीर्घायु के लिए शाकाहारी होना लाभप्रद

—अशोककुमार लोढा
तृतीय वर्ष वाणिज्य 'अ'

भारतीय एवं विदेशी वैज्ञानिको द्वारा किये गये सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि दीर्घ आयु एवं स्वस्थ जीवन के लिए मनुष्य को पूर्ण शाकाहारी होना लाभप्रद है। इसके पक्ष में डॉ० एलन, डॉ० रास आदि अमेरिकी वैज्ञानिक, कोलाम्बर् विश्वविद्यालय; एव डॉ० स्वलिन स्वीडन आदि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिको ने अपना मत दिया है। इनके अनुसार मास का सेवन करने से हृदय-रोग एव केन्सर जैसी भयकर बीमारिया हो जाती है।

इस बात की पुष्टि राष्ट्रीय केन्सर सस्थान मेरीलैंड के कुछ महीनो पूर्व निकले बुलेटिन से कर सकते हैं। जिसमे लिखा गया है कि 1973 मे 47 हजार व्यक्ति कोलन एवं बाउल केन्सर मे कालग्रस्त हो गये, जिसके होने का मुख्य कारण गाय के मास का भक्षण था। इसी प्रकार अमेरिकी डॉक्टरो के अनुसार 90% तक हृदय रोग से शाकाहारी बनकर बचा जा सकता है।

प्रतिवर्ष लगभग 10 लाख व्यक्ति भोजन के रूप मे मुर्गी के मास का सेवन करने से कालग्रस्त हो जाते हैं, क्योंकि उनका भोजन जहरीला हो जाता है, इसका मुख्य कारण मुर्गी के मास मे सोभानिला नामक कीटाणु का पाया जाना है।

ब्रिटेन के डॉ० डेनिस और चिकित्सा अनुसधान परिषद् के सदस्यो का तो यहाँ तक कहना है कि सास रोग, अलसर, गुर्दे की बीमारी, कब्ज रोग आदि अधिकतर मांस के सेवन से होती है।

वैज्ञानिको की मान्यता है कि शाकाहारी भोजन करने पर मनुष्य मासाहारियो की तुलना में औसत $6\frac{1}{2}$ वर्ष तक अधिक जीवित रहता है जिसका मुख्य कारण शाकाहारियो का शारीरिक विकास धीरे-धीरे होना एव मासाहारियों का विकास तीव्र गति से होना है। इसके लिए एक प्रयोग किया गया, जिसमे कि चूहो को भोजन के साथ प्रोटीन की अधिक मात्रा देने के लिए मास अधिक दिया गया। जिसका परिणाम यह निकला कि वे जल्दी-जल्दी विकसित होने लगे एव अपनी औसतन आयु से काफी पूर्व ही मर गये।

इन सबके अलावा प्रोटीन की मात्रा, विज्ञान की दृष्टि से मास मे अधिक होती है, किन्तु इस रूप मे प्रोटीन (मांस) को पचाने मे शरीर की अधिक टूट-फूट होती है एव शक्ति भी देरी से प्राप्त होती है। जबकि अनाज, सभी प्रकारो की दालो, तेल, घी आदि का प्रयोग किया जाये तो उसको पचाने के लिए शरीर को कार्य भी कम करना पड़ता है एव शक्ति भी शीघ्र एव ज्यादा प्राप्त होती है। इसका मुख्य कारण चावल का शीघ्र पच जाना, अनाज का 2–3 घटे मे पच जाना एवं मास का 5–6 घटे मे पचना है।

इसकी सत्यता की जाँच के लिए 1900 मे बेल्जियम के वैज्ञानिको ने दोना प्रकार के भोजन करन वाला की आपस मे तुलना की तो पाया कि स्प्रिंग दबाने वाले काट मे शाकाहारी 69 यूनिट व मासहारी 68 यूनिट तक काटा चढ़ा पाया।

इसी तथ्य को अधिक सत्य करने के लिए एक एसा ही प्रयोग मनुष्य पर किया गया जिसमे कि एक व्यक्ति को शाकाहारी एव मासाहारी मिश्रित भोजन 7 दिन तक करवा कर एक साइकिल चलवाई गई, तो वह 114 मिनट तक साइकिल चलाकर थक गया। तत्पश्चात् ही उसे तीन दिन तक भोजन के रूप मे मास, मछली एव अडा खिलाया गया और फिर उससे साइकिल चलवाई गई तो वह 57 मिनट मे ही साइकिल चलाकर थक गया। इसके बाद उसी व्यक्ति को तीन दिन तक अनाज, फल एव सब्जियो को भोजन के रूप म दिया गया एव फिर उससे साइकिल चलवाई गई तो वह 165 मिनट अर्थात् 3–4 घट तक लगातार साइकिल चलाता रहा। यही कारण है कि यूनान एव रोम के खिलाडी मास का सेवन नहीं करते।

कुछ व्यक्तियो का कहना है कि प्रोटीन की मात्रा अधिक प्राप्त करन के लिए माम खाना आवश्यक है, जिससे शरीर को अधिक शक्ति प्राप्त हो। किन्तु भारत के सुप्रसिद्ध पहलवान राममूर्ति का उदाहरण लीजिए वे पूर्णतया शाकाहारी थे, फिर भी लोहे का सकिल तोडन की क्षमता रखते थे। इसी प्रकार वतमान हिंद केसरी मास्टर चन्दगीराम एव गुरु हनुमान पूर्णतया शाकाहारी हैं, फिर भी कितन शक्तिशाली हैं।

अब तक हम विज्ञान के दृष्टिकोण से मनुष्य को शाकाहारी होना चाहिये इस विषय पर बात कर रहे थे। अब नीचे कुछ जन साधारण सत्य बातें लिखी जा रही हैं, जिनके आधार पर "मनुष्य का शाकाहारी होना चाहिए" मानय की पुष्टि होती है।

(1) हम देखते हैं कि मासहारी जीवो के आग के दात तेज, नुकीले एव बडे होते हैं, जिससे उन्हे मास खाने मे सुविधा रहती है एव वे जानवरों को आराम से शिकार कर सकते हैं। जबकि हमारे (मनुष्य) के समस्त दात लगभग समान होते हैं।

(2) हम शरीर की गदगी को अपनी चमडी द्वारा पसीने के रूप में निकालत है तथा साथ ही आवश्यकता से अधिक तापमान हमारे शरीर म नहीं रह पाता जबकि मासाहारियों को पसीना तो आता नही, किन्तु वे मूत्राशय द्वारा शरीर की गदगी को बाहर निकालते हैं।

(3) मासाहारी जीवो की भोजन नली छोटी होती है, अत शीघ्र ही भोजन (मास) पेट मे पहुँच जाता है। किन्तु शाकाहारियो (मनुष्यो) की भोजन नली लम्बी होती है। अत मास का सेवन करन से वह उन नलियों म थोडी देर भी चिपके रहन से विभिन्न प्रकार की बीमारिया जिगर का रोग, कब्ज, सास रोग उत्पन्न कर देता है। चूकि मास जल्दी सड जाता है, जबकि फल एव सब्जियाँ देरी से सडती है एव बीमारियाँ भी देरी से उत्पन्न होती हैं।

(4) सबसे बडी बात तो यह है कि हम जिस जानवर का मास ग्रहण करन जा रहे हैं, वह पूर्णतया स्वस्थ है, इस बात की क्या गारटी है? और यदि वह पूर्णतया स्वस्थ्य नहीं है, तो उस जानवर के मास का सेवन करन स हानिकारक कीटाणु हमारे शरीर मे पहुँचकर विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न कर देंगे।

प्रयोगो से ज्ञात होता है कि विभिन्न प्रकार के जानवरो के मास मे लगभग 160 से भी ज्यादा

जीवाणु ऐसे हैं, जो कि मनुष्य के स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है।

(5) ससार का सबसे शक्तिशाली जीव मानव है और वह मानसिक दृष्टि से दयावान व सरल स्वभावी होता है। जबतक कि उसमे विपरीत भावनाएं न डाली जाय। यही कारण है कि बच्चा बचपन मे चाहे कितना भयकर जानवर पास क्यो न आ जाय उसे निर्दोष भाव से प्यार करता है एव उसके साथ खेलने लगता है। यदि वही इन्सान उनको (जीवो) को संरक्षता न देकर उनका वध करे तो वह मासाहारी जीवों से बचने के लिए किसके पास जायेगा ?

(6) मांस मे दो भयानक विष यूरिया एवं यूरिक पाये जाते हैं। पाँच सौ ग्राम मांस मे इनकी मात्रा 7 से 19 ग्रेन तक होती है, जबकि वनस्पति पदार्थों मे इसकी मात्रा 4–5 ग्रेन से भी कम होती है।

(7) कृषि अनुसंधान द्वारा 17 एकड़ भूमि मे पाले गये जीवो से उतनी ही प्रोटीन की मात्रा मिलेगी, जितनी की एक एकड़ मे सोयाबीन की फसल उगाने से।

(8) डेढ़ किलोग्राम अनाज पैदा करने के लिए लगभग 300 गैलन जल की आवश्यकता होती है। जब कि एक किलो अनाज एवं आधा किलो मांस का उत्पादन करने में 2500 गैलन जल की आवश्यकता होती है।

अन्त में सबसे मुख्य बात यह है कि जिस किसी भी जानवर का मांस हम खाना चाहेंगे, उस जानवर की जीवनलीला को समाप्त करना पड़ेगा। अत. यदि किसी जीव को जीवित करने की शक्ति हममे नहीं है, तो किसी जीव का प्राण लेने का हमें क्या अधिकार है ?

आइये, हम सब मिलकर मासाहारियों को प्रेरणा द्वारा शाकाहारी बनाने का प्रयत्न करें एवं स्वयं भी मांस का सेवन न करने का व्रत लेलें। साथ ही अधिक से अधिक अनाज का उत्पादन कर देश की खाद्य समस्या को हल करने का प्रयास करें। साथ ही भगवान् महावीर द्वारा दिये गये "अहिंसा परमो धर्म:" एवं "जीवो और जीने दो" के सिद्धांतों को सबल बनाये एवं समस्त जीवों के प्रति दया का भाव रखें। यही भगवान् महावीर के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा होगी।

"किसी भी जीवित प्राणी की हत्या न की जाये; उसे तनिक भी चोट न पहुँचाई जाये; न तो उसे डराया जाये और न ही उसे बल पूर्वक अधीन या दास बनाया जाये। अहिंसा का यह धर्म ध्रुव, सनातन, परम और ईश्वर प्रदत्त है।"

—भगवान् महावीर

भारत के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान

—प्रकाशचन्द गोलेछा
कक्षा दशम 'ब'

भारत की स्वतन्त्रता के सुख-स्वप्न साकार भी नही हुये थे कि 3 जून, 1947 को भारत के वायसराय लार्ड माउन्ट बेटन ने यह घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार औपनिवेशिक दर्जे के आधार पर दो सरकारों—भारत व पाकिस्तान को सत्ता सौंपने के लिए तैयार है । इस घोषणा के सुनते ही भारत की 562 देशी रियासतो म उटपल-बाजियाँ शुरू हो गई । वायसराय की घोषणा का भिन्न-भिन्न अर्थ लगाया जाने लगा । कुछ शासक जैसे त्रावणकोर, हैदराबाद, जम्मू-कश्मीर के ऐसे थे, जो भारत मे स्वतन्त्र रूप से शासक बनने के स्वप्न देख रहे थे । इधर जूनागढ, भोपाल और राजस्थान के कुछ राज्य पाकिस्तान से सौदेबाजी करने की ताक मे थे ।

ऐसी विडम्बनापूर्ण स्थिति म जब देश के समक्ष एकीकरण की जटिल समस्या थी, भारत को एक ऐसे नौ जवान की आवश्यकता थी, जो इस समस्या को सुलझा सके और भारत के सूखे वृक्ष को फिर स हरा-भरा बना सके । जो व्यक्ति भारत को मिला, वह था—सरदार वल्लभ भाई पटेल । सरदार पटेल ने उन नवाबो और राजाओं के स्वतन्त्र रहने के सुख-स्वप्न साकार नही होन दिये । उन्होंने एकीकरण की समस्या को जिस प्रकार सुलझाया, वह निम्नलिखित प्रकार म है ।

श्री पटेल न एकीकरण की दिशा मे पहला कदम पूर्वी भारत की रियासतो के सम्बन्ध मे उठाया । उडीसा और छत्तीसगढ के शासको की निरंकुश सत्ता के विरुद्ध व्यापक आन्दोलन उठ खडा हुआ । अत श्री पटेल ने राजाओ को मनाने के लिए मैत्रीपूर्ण तरीको को अपनाया तथा साम दाम, दण्ड और भेद-नीति से काम लिया । फलस्वरूप दिसम्बर, 1947 के मध्य उडीसा की सारी रियासतें उडीसा मे विलीन हो गयी ।

वर्तमान मध्य प्रदेश के विलासपुर जिले तथा उत्तर प्रदेश म इलाहबाद व झांसी जिलो के बीच रियासतो का एक समूह था जो बुन्देल खण्ड व बघेल खण्ड कहलाता था ।

भारत के ठीक मध्य मे 25 रियासतें थी । जिनमे ग्वालियर, इन्दौर प्रमुख थी । सरदार पटेल के प्रभावी वचनो, दूरदर्शितापूर्ण कार्यों एव सूक्ष्म दृष्टि से मध्य प्रदेश की व भारत के मध्य की सभी रियासतें अलग-अलग राज्यो मे सगठित कर दी गई ।

काठियावाड की रियासतो की स्थिति कुछ भिन्न थी । यह देशी रियासतो का अविभाज्य खण्ड था । कुल 222 रियासतें थी जिनमे भावनगर, जूनागढ, राजकोट व नवानगर प्रमुख थी । श्री वी० पी० मेनन ने भी एकीकरण मे सरदार पटेल का साथ दिया । श्री मेनन ने एक योजना बनाई जिसके अन्तर्गत छोटी मोटी सभी रियासतो को मिलाकर एक सघ बनाया जाय । काठियावाड के समस्त शासको ने उस पर हस्ताक्षर कर दिये ।

उत्तर मे काठियावाड तथा वम्वई के मध्य 17 अविकार क्षेत्रीय तथा 127 अर्ध अधिकार क्षेत्रीय एककों का एक और समूह था। वड़ौदा की वड़ी रियासत भी इसी में सम्मिलित थी। श्री मेनन के प्रभावों व श्री पटेल की वारीक चालो से फरवरी, 1948 में सारी रियासतें वम्वई मे विलीन कर दी गयी।

जुलाई, 1948 में पूर्वी पंजाव की रियासतो को मिलाकर पटियाला की रचना की गयी।

हिमालय की 25 पहाड़ी रियासतों को मिलाकर हिमाचल प्रदेश का गठन किया गया।

सरदार पटल को राजपूताना की रियासतों मे जितना ध्यान व सावधानी से काम लेना पड़ा, उतना अन्य किसी रियासत समूह के गठन मे नही। इसका एक मात्र कारण लोगों का दृष्टि-कोण संकीर्ण होना था। ये अपनी रियासत को ही राष्ट्र मानते थे और उसके लिए कुर्वानी देने को तैयार थे। उन्हें शांतिपूर्ण ढंग से समझाना व सघ वनवाना, किसी भी व्यक्ति के लिए वड़ा ही कठिन कार्य था, फिर भी जैसे-तैसे इसे भी सरदार पटेल ने 5 अवस्थाओ मे पूरा किया।

वड़ौदा का महाराजा प्रतापसिंह अपनी रियासत को वम्वई मे मिलाना स्वीकार नही कर रहा था। उसने श्री पटेल को वचन दिया पर फिर मुकर गया। विशुद्ध परिणाम यह हुआ कि वडौदा को वम्वई मे मिला लिया गया।

हैदरावाद की समस्या वड़ी ही जटिल थी। यह भारत की एक प्रमुख रियासत थी। निजाम सर्व प्रभुत्व सम्पन्न शासक वनने के सुख-स्वप्न देख रहा था। इतिहाद-ए-मुसिलमन जैसी सस्थाएँ उसका हौसला वढ़ा रही थी। इस संस्था की एक सेना थी जो रजाकार कहलाती थी। निजाम ने पाकिस्तान को 20 करोड़ रुपये का ऋण देकर हैदरावाद मे भारतीय मुद्रा के प्रचलन पर रोक लगा दी। इधर रजाकारों ने हिन्दुओं पर आक्रमण किये जिससे सारे राज्य मे अराजकता व अव्यवस्था फैल गयी। इसके जवाव में भारत सरकार ने हैदरावाद की आर्थिक नाकेवन्दी कर दी। श्री पटेल ने चेतावनी दी कि निजाम रजाकारो की गतिविधि पर अकुश लगाये। जब नवाव ने इस पर कोई ध्यान नही दिया तो श्री पटेल की योजनानुसार 13 सितम्वर, 1948 को भारतीय सेना ने हैदरावाद को तीन ओर से घेर लिया। 26 सितम्वर को रियासती सेना ने हथियार डाल दिये और विना शर्त आत्म-समर्पण कर दिया। यह "सैनिक कार्यवाही" थी।

इस प्रकार सरदार पटेल ने भारत की रियासतो के एकीकरण में अपना अपूर्व योग दिया है। उन्होंने "शक्ति व शांति" के माध्यम को अपनाया। आज हम गर्व से कहते है कि भारत विशाल देश है पर यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि इसकी नींव तो सरदार पटेल ने ही वनाई है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक भारत को एकता प्रदान की है तो सरदार पटेल ने ही की है। जिस तरह स्वतन्त्रता से पूर्व अनेक व्यक्ति देश हित उत्सर्ग हुए ठीक उसी प्रकार सरदार वल्लभ भाई पटेल ने स्वतन्त्रता के पश्चात् अपनी वुद्धिमता, दूरदर्शिता व अद्भुत साहसिकता का परिचय देकर इतिहास मे नाम कमाया है।



छात्र-अध्यापक सम्बन्ध और शिक्षाविदो के विचार

भेंटकर्त्ता

—सुरेशचन्द्र शर्मा
B Sc Final

—प्रमोद गोलेछा
B Sc Final

—प्रभातकुमार शर्मा
B A Final

—प्रदीप गोलेछा
B Sc Final

वतमान समय मे शिक्षा सम्बन्धी वातावरण पहले की अपेक्षा बहुत बदल गया है। जब हम प्राचीन समय पर दृष्टिपात करते हैं तो प्रतीत होता है कि उस समय छात्र और अध्यापक एक दूसरे के अधिक निकट थे। गुरुकुल प्रणाली थी। प्रकृति का खुला-स्वच्छ वातावरण था। सीमित जीवन और उसकी सीमित आवश्यकताएँ थी। अध्ययन करने वालो की सख्या भी कम थी और पाठ्य सामग्री भी गठी बधी थी, परन्तु आज वैज्ञानिक युग है। दुनिया ही बदल गई है। मानवीय दृष्टिकोण, जीवन और विचारशैली मे आमूलचूल परिवर्तन हो गये हैं। दिन पर दिन शिक्षा जगत मे भी उथल-पुथल हुई है। देश लोकतन्त्र प्रणाली पर चल रहा है। प्रत्येक नागरिक को कत्तव्य तथा अधिकार के प्रति सजग-सतक होना आवश्यक प्रतीत हो रहा है। ऐसी दशा मे बुद्धिजीवी वग का विस्तार तेजी से हो रहा है, जहा चिन्तन, विवेक और तकपूर्ण शैली की नितान्त आवश्यकता है, जिसका माध्यम है शिक्षा। अध्यापक ज्ञान का अक्षय भण्डार है और छात्र उसका नियमित उपभोक्ता। अब प्रश्न यह है कि आज छात्र व अध्यापक के पारस्परिक सम्बन्ध किस प्रकार के हैं? इस सम्बन्ध मे कुछ आवश्यक प्रश्न लेकर जयपुर नगर के कुछ ख्याति प्राप्त शिक्षाशास्त्रियो से जो विचार-विनिमय किया गया वह इस प्रकार रहा —

सव प्रथम हम मिले उनसे, जिनका नागरिक अभिनन्दन 22 फरवरी, 1975 को श्री महावीर दि० जै० उ० माध्यमिक विद्यालय के आडीटोरियम हाल मे हुआ था और जिन्होंने अपने जीवन मे एक शिक्षक तथा प्रशासक के रूप मे उल्लेखनीय काय किया है—ये है शिक्षा-जगत् के जानेमाने शिक्षा शास्त्री श्री तेजकरण डडिया—हम आपके बारे मे श्री महावीर दि० जै० उ० मा० विद्यालय के प्रधानाध्यापक के रूप मे तथा राजस्थान, माध्यमिक शिक्षा वोड के सचिव के रूप मे बहुत कुछ सुन चुके थे। जब हम उनके निवास पर कुछ सकोच के साथ पहुचे तो उन्होंने स्नेह पूर्वक हमे बैठाया, परिचय ज्ञात किया और गहरी आत्मीयता के साथ आने का कारण जानना चाहा।

यद्यपि डडिया का प्रथम परिचय ही हमारे अधिकाश प्रश्नो का उत्तर बन चुका था, किन्तु उनके शानदार व्यक्तित्व से प्रभावित उनके बहुत

लम्बे समय तक शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने के अनुभवो से हम और भी बहुत कुछ जानकारी लेना चाहते थे, हमारा पहला प्रश्न था—



• आप वर्तमान छात्र-अध्यापक सम्बन्धो से संतुष्ट है ?

इस पर उन्होने किंचित मुस्कराते हुये उत्तर दिया कि समाज पर एक विहगम दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि आज आम जनता को इन सम्बन्धो के बारे मे कतिपय शिकायत है। लेकिन ये सम्बन्ध एक दम गलत या खराब ही हो, ऐसी बात नही। मैं कम से कम ऐसा नहीं मानता। छात्रो और अध्यापकों के आपसी सम्बन्ध हर शिक्षण सस्था मे अलग-अलग तरह के होते है। इनमें वातावरण का भी प्रमुख हाथ रहता है। यह सस्थागत और व्यक्तिगत प्रश्न है। मैंने स्वय देखा है, जाना है कि जिस संस्था मे अध्यापक अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग एवं जागरूक है, वहां छात्रो के सम्बन्ध उनके प्रति अच्छे सम्मानित रहते है। यह तो ध्रुव सत्य है कि जिन अध्यापको के हृदय मे छात्रों के प्रति पुत्रवत् भाव रहता है, एक दर्द पलता है, वहाँ बालक स्वत: ही अध्यापको के प्रति आदरभाव से झुके रहते है। आज के युग मे ज्ञान अर्जन का कार्य केवल पाठ्य-पुस्तको तक ही सीमित नही रहता। इसके लिये रेडियो, टी० वी०, पत्र-पत्रिकाएँ आदि और भी कितने ही साधन है। विद्यार्थी आज ज्ञान-पिपासा के लिये मात्र अध्यापक अथवा पाठ्य-सामग्री पर ही निर्भर नही रहता। अत: अध्यापक केवल पुस्तको, शारीरिक श्रम या खेल-कूद-व्यायाम आदि से ही बालको का मन नही जीत सकता। याद रखने वाली बात है कि किसी भी हृदय से तभी भावनाएँ प्राप्त की जा सकती है, जब खुद अपनी भावनाएँ प्रेषित होती हैं। मन को जीतना मन से ही होता है। इसलिये सीधी सी बात है कि जहाँ कही भी जितनी मात्रा मे यह मन की कमी अध्यापको मे आ गई है, वही....और उतनी ही मात्रा मे अध्यापक और छात्र के मधुर सम्बन्धो मे भी कमी आ गई है। यही वजह है कि कई स्थानो पर न छात्र—छात्र है और न अध्यापक—अध्यापक ही रहा है। विद्यार्थी अपने गुरु से आज नजर चुराता है। पहले मिलने मे गर्व अनुभव करता था....मेरे विचार से शायद आज अध्यापक के मन मे धर्म (कर्त्तव्य) और ईश्वर (कर्म) के प्रति आस्था भी नही रह गई है। कही-कही कुछ आपसी स्वार्थ तन्तु भी इन सम्बन्धो को कुतर डालते है। छात्र को दिशा देना अध्यापक का कर्त्तव्य है। सही अर्थो मे अध्यापक बालक के भविष्य का 'आकाश-दीप' होता है। अंधेरे में उजाला फैलाने वाला दिशादीप, लेकिन क्या वह है ?....यह एक प्रश्न चिह्न बन गया है। कोई भी पद प्राप्त कर लेना बहुत आसान होता है....लेकिन उसका 'प्रतिपालन करना अत्यधिक कठिन होता है, क्योकि प्रतिपादन करने का माध्यम त्याग, तपस्या, साधना और लगन होती है। अध्यापक वर्ग की सफलता का मुख्य क्षेत्र उसकी अपरिमित योग्यता पर भी निर्भर होता है। जो अपने विषय की हर

समाज समुदाय अधिक समय तक नही कर सकता– परिश्रमी, लगनशील, विमर्गतियो से दूर, अपने ही उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक, नि स्वार्थ भाव रखने वाले प्रसन्नचित्त अध्यापक को प्रत्येक छात्र व समाज अवश्य आदर दता है। आदर है सम्मान भी है लेने वाला चाहिये जहस-नक से आदर नही मिलता मागने से नही मिलता।

• क्या स्कूल यूनियनो का छात्र अध्यापक सबन्धो पर सीधा प्रभाव पडता है ?

अवश्य पडता है। देखा जाये तो 'यूनियन नाम ही स्कूल कालेजो की सस्थाओ के लिए गलत है। शिक्षार्थियो का लोकतान्त्रिक शासन पद्धति का व्यावहारिक ज्ञान कराने के उद्देश्य से ही छात्र ससद् की स्थापना हुई थी ताकि छात्र दोष रहित मतदान प्रणाली सीख सकें और अपने भावी जीवन म व्यवहार रूप मे उस ला सकें परन्तु *राजनीतिक दलो के प्रभाव मे आ जाने से इसमे* अनेक विकार और विवाद जडे हैं। छात्र-ससद् की स्थापना मे कल्पना यह की गई थी कि चुने हुए सदस्यो द्वारा प्रधानमन्त्री का चुनाव होगा और वह अपनी केबिनेट के साथ स्कूल एव कालेज की आन्तरिक सुव्यवस्था देखेगा। गलत गतिविधियो पर रोक लगायेगा। सस्था के प्रधानाचार्य व *प्रिंसिपल का सहयोगी बनेगा। कालान्तर मे* हुआ उसके बिल्कुल विपरीत कि स्वय छात्र *प्रधानमन्त्री ही प्रधानाचार्य के* विरुद्ध विद्रोह का झण्डा लेकर खडा हो गया। विपक्षी छात्र भी इस काय म अग्नि लगाने का काय करने लगे। इसका परिणाम यही अधिक रहा कि छात्र-ससद् के प्रति भी अच्छी कल्पना नही रही। यह भी छात्र अध्यापक के आपसी मधुर सम्बन्धो की कैंची रही।

आवश्यक यह है कि चुने हुए ससद् सदस्यो को लोकतान्त्रिक प्रणाली मे अपने अधिकारो व कर्त्तव्यो का ज्ञान कराने तथा शिक्षण सस्थाओ की सुव्यवस्था कायम रखने के लिए छात्र को व्यावहारिक ज्ञान भी देना चाहिये।

श्री डण्डिया जी के विचार जानने के अनन्तर हम लोग महारानी कॉलेज की डाइरेक्टर श्रीमती गायत्री वैश्य के विचार जानने हेतु महारानी कॉलेज पहुँचे। हम लोग इस बात से बहुत प्रभावित हुए कि वहा के शिक्षक शिक्षिकाएँ ही नही अपितु प्रत्यक कर्मचारी भी सजग होकर अपने उत्तरदायित्व का निवहण कर रहे थे। उनमें प्रत्येक मे हमे एक नये कमचारी का रूप दिखाई दिया जो आज के सरकारी कमचारियो से भिन्न था।

कुछ समय पश्चात् हमे श्रीमती वैश्य से उनके विचार जानने का अवसर मिला, उनके विचार अधोलिखित थे।



श्रीमती वैश्य ने छात्र अध्यापक सम्बन्धो के विषय मे कहा कि आज छात्र व अध्यापको म वह सम्बन्ध नही रह गय हैं, जो पहिले थे। इसका कारण बतलाते हुए उन्होने कहा कि आज छात्रो

की सख्या पूर्व से द्विगुणित, त्रिगुणित हो गई है और यह सम्भव नही कि एक अध्यापक कक्षा के 60–70 छात्रो को व्यक्तिगत रूप से जान सके। व्यक्तिगत रूप से जानने के लिए छात्रो की संख्या कम होनी अनिवार्य है। अध्यापक वर्ग के बारे में आपने बताया कि आज अध्यापक केवल कक्षा मे आकर अपना लेक्चर देकर चले जाते हैं, वे व्यावहारिक ज्ञान की तरफ ध्यान नही देते हैं। आपने बताया कि छात्र-छात्राओ की आकाक्षा इस बात की होती है कि उन्हे व्यावहारिक ज्ञान अधिक से अधिक मिले, लेकिन अध्यापकगण व्यावहारिक ज्ञान नही दे पाते, क्योकि वे भी इन बातो से अनभिज्ञ होते है और इस प्रकार जब अध्यापक छात्रो को सन्तुष्ट नही कर पाता है तो छात्र-छात्राएँ उनसे कतराने लगते है। अध्यापको के साथ-साथ छात्र छात्राओ को भी श्रीमती वैश्य ने दोषी बतलाया। आपने कहा कि छात्र छात्राएँ अकारण ही कक्षाएँ छोड़ देते है। किसी सगोष्ठी व वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा अन्य शैक्षणिक गतिविधियो में भाग लेने के बजाय कालेज ग्राउन्ड मे जाकर बैठ जाते है। छात्र छात्राएँ अपने अध्यापकों की आवश्यकता नही समझते तथा नोट्स मे विश्वास करते हैं, अपने गुरु की इज्जत नही करते हैं।

छात्र छात्राओ को हमेशा अपने गुरु को प्रणाम करना चाहिए तथा विनम्र रहना चाहिए। विनम्र छात्र छात्राओ के प्रति हर अध्यापक का व्यवहार अच्छा रहता है। छात्रों को अतिरिक्त गतिविधियो मे अधिक से अधिक भाग लेना चाहिए, जिससे छात्र अधिक से अधिक अध्यापको के सम्पर्क मे आ सके। आपने बतलाया कि यदि गोष्ठी, खेल-कूद, वाद-विवाद, नाटक व अन्य अतिरिक्त गतिविधियों मे अध्यापकगण भी उस प्रकार योग-दान दे तो अवश्य ही छात्र-अध्यापक सम्बन्ध मधुर होगे। निर्धन मेधावी छात्र छात्राओ को अतिरिक्त सुविधा देने के लिए श्रीमती वैश्य ने सलाह दी। छात्राओं के बारे में आपने बतलाया कि उन्हें पढ़ लिखकर कुर्सी पर बैठकर क्लर्की के बारे मे नही सोचना चाहिए बल्कि अपनी शिक्षा का उपयोग घर गृहस्थी मे कर अपने जीवन को सफल बनाने मे करना चाहिये।

श्रीमती गायत्री वैश्य के विचार जानने के पश्चात् हम लोग राजस्थान विश्वविद्यालय के राजनीति विषय के विभागाध्यक्ष डॉ० पी० डी० शर्मा से उनके विचार जानने हेतु पहुंचे। उन्होने बड़े स्नेह से हमें अपने पास बिठलाया और अपनी मधुर वाणी मे जो बतलाया वह इस प्रकार है—

डॉ० शर्मा ने आज के छात्र-अध्यापक सम्बन्धो को ठीक नही बतलाया। इसके लिए उन्होने शिक्षक को दोषी ठहराया। उन्होने कहा कि जब



छात्र स्कूल मे प्रविष्ट होता है तो अध्यापक को उसे अपने पुत्र के समान समझना चाहिए या अपने को बड़ा भाई समझ कर छात्रों को छोटे

भाई की तरह जानकर उन्हें सही दिशा देनी चाहिए तथा उनके हितों की रक्षा करनी चाहिए। आपने बतलाया कि छात्रों के हृदय में भी अध्यापकों के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए तथा उन्हें ऐसा मानना चाहिए कि अध्यापक मेरे लिए जो भी कर रहे हैं मेरी भलाई के लिए कर रहे हैं। शिक्षकगण को दोषी बतलाते हुए आपने कहा कि शिक्षकगण सिर्फ अपना काम कक्षा में लेक्चर देकर आना ही समझते हैं। डॉ० शर्मा ने कहा कि आजकल शिक्षा क्षेत्र में गलत व्यक्तियों का प्रवेश हो गया है जो किताबी ज्ञान प्राप्त करके इसमें प्रवेश कर गये हैं। किन्तु उन्हें व्यावहारिक ज्ञान का पता भी नहीं है।

डॉ० शर्मा ने बतलाया कि आधुनिक शिक्षकों की चयन पद्धति भी गलत है, जिन्हें अन्य किसी विभाग में नौकरी नहीं मिलती वे इस क्षेत्र में आ जाते हैं जबकि चयन सिर्फ उनका ही होना चाहिए जो शिक्षक बनने के योग्य हों। शिक्षकों व छात्रों की निकटता व मधुर सम्बन्धों के विषय में आपने कहा कि अध्यापकगण युवा छात्रों की पीढ़ी को समझकर चलें, क्योंकि ऐसी बातें होती हैं जिन्हें अध्यापक गलत समझता है लेकिन छात्र सही, तथा कुछ ऐसी बातें होती हैं जिन्हें अध्यापक सही समझता है किन्तु छात्र गलत।

यदि छात्र अपनी बात समझकर उसे अपनावें परन्तु उसके साथ साथ अध्यापक का सम्मान भी करते रहें तथा अध्यापक विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु छात्रों में बैठकर उनका उचित समाधान निकालें तो निश्चय ही छात्र अध्यापक सम्बन्ध मधुर होंगे। अध्यापकों व छात्रों में विचारों की भिन्नता को आपने स्वाभाविक बतलाया।

आपने विद्यार्थियों को शिक्षा सम्बन्धी सुविधाएँ देने के विषय में बतलाते हुए कहा कि विद्यार्थियों का हॉस्टल में रहकर पढ़ना अनिवार्य करना चाहिए जिससे वे आपस में एक अच्छा सम्बन्ध स्थापित कर सकें तथा पढ़ाई का वातावरण बना सकें।

आपने बताया कि हॉस्टल में छात्रों को सस्ते मूल्य पर भोजन उपलब्ध होना चाहिए तथा कॉलेजों में पुस्तकालयों की उचित सुविधाएँ होनी चाहिए। आपने सिनेमा में छात्रों को कन्सेशन देना भी गलत बतलाया।

अन्त में शिक्षकों के विषय में आपने कहा कि छात्र अध्यापक सम्बन्ध शिक्षकों के ऊपर विशेष निर्भर करते हैं। इसके लिए आवश्यक है—उचित शिक्षकों का चयन। आज समाज शिक्षक का सम्मान नहीं करता। शिक्षक के प्रति आज अन्याय हो रहा है, उसके पढ़ाए छात्र कलक्टर बनकर उससे अधिक वेतन पाते हैं, शिक्षक से अधिक सुविधाएँ उन्हें उपलब्ध होती हैं जबकि अध्यापक मात्र अध्यापक रहता है जिसे अधिक सुविधा भी प्राप्त नहीं होती। आपने बताया कि अध्यापक के प्रति अन्याय होते हुए भी उससे यह आशा की जाती है कि वह अपना काम सही ढंग से करे तथा छात्रों को तेजस्वी व परिश्रमी बनाकर देश के नवनिर्माण में सहायक हो।

अन्त में हम अपने कॉलेज के प्राचार्य श्री नथमल गोलेछा के विचार इस विषय में जानने हेतु पहुँचे। उस समय प्राचार्य महोदय विद्यालय की स्वर्णजयन्ती के विविध कार्यों में अत्यन्त व्यस्त थे, फिर भी उन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर हमें अपने विचारों से अवगत कराया। श्री गोलेछा साहब को हम कभी नहीं भूल सकेंगे, वे एक तेजस्वी, मृदुभाषी और सरल स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। छात्रों की वे तन, मन, धन से सदा सेवा करने को तत्पर रहते हैं। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे छात्रों को अत्यन्त प्रिय हैं।

श्री गोलेछा साहव ने छात्र अध्यापक सम्वन्ध मे सुधार की अपेक्षा वतलाई, आज के सम्बन्धो से वे सन्तुष्ट नही प्रतीत हुए। सम्वन्ध सुधार हेतु कक्षा मे 40 छात्रो से अधिक छात्रो का न रहना वतलाया। छात्रो को विविध समूह मे बाँट कर प्रत्येक समूह का सरक्षक अध्यापक होना चाहिए जो कि प्रति सप्ताह 3 दिन छात्रों से सम्पर्क करके उनकी कठिनाइयों का विश्लेषण कर समाधान ढूंढे। इस कार्य को अध्यापक के कार्य मे सम्मिलित करना चाहिये।

वर्त्तमान छात्र समुदाय मे क्या क्या सुधार अपेक्षित है ? यह पूछने पर आपने वतलाया कि छात्रो को अनुशासन मे रहना चाहिए, छात्रो को पाठ्येतर प्रवृत्तियों की ओर ध्यान देना चाहिए और कर्त्तव्यपरायण होना चाहिए।

नये महाविद्यालय प्राङ्गण मे आपकी क्या-क्या अपेक्षाएँ है ? यह पूछे जाने पर आपने कहा कि महाविद्यालय में खेलकूद की सुविधाएँ मिलने पर छात्र इस क्षेत्र मे राजस्थान स्तर पर कीर्तिमान स्थापित कर सकेंगे तथा "Work-Shop" की स्थापना कर विद्यार्थी को शिक्षा के साथ-साथ कमाने के साधन उपलब्ध होंगे तथा वे जीवन में उन्नति के शिखर पर पहुंच कर महाविद्यालय का नाम उज्ज्वल करेंगे।

अन्त मे हमने उनसे पूछा कि आपकी दृष्टि से आपात स्थिति मे छात्रों में अनुशासन कैसा है ? पूछे जाने पर आचार्य महोदय ने वतलाया कि आपात स्थिति के पश्चात् छात्रो के अनुशासन और अध्ययन मे सुधार आया है, हड़तालें वन्द हो गई है तथा वास्तव में जो 5% उद्दण्ड छात्र 95% छात्रों की हानि करते थे—उनके अध्ययन मे वाधा उपस्थित करते थे, उनका नामोनिशान भी नही रहा।

निष्कर्ष यह है कि हम छात्रो को अपने गुरुओ के प्रति नम्र रहना चाहिए और उनकी हर वतायी हुई नयी दिशा पर चलना चाहिए। यदि हम गुरु का सम्मान करे और विनम्र रहें तो निश्चय ही उनके साथ हमारे सम्वन्ध मधुर होंगे।

वे छात्र निस्सन्देह भाग्यशाली है, जिन पर गुरु की कृपा रहती है।

———

आज के वातावरण में मेरी कामना :—

वन जाऊं "फिल्मी हीरो"

—गिर्राजप्रसाद गुप्ता
प्रथम वर्ष 'कला'

पढ़ते-पढ़ते ऊब गये, रहे फेल के फेल।
कॉलिज तो लगता है, अव जैसे सैन्ट्रल जेल।।
जैसे सैन्ट्रल जेल, नम्वरों को देख भय खाते।
देख कापियाँ, आँखों में आँसू आ जाते।।
इम्तिहान मे सदा, मार्क मिलता है जीरो।
सोच रहा हूँ ? मैं वन जाऊँ "फिल्मी हीरो"।।

Students
and
Social Service

RAJESH BABU SAXENA
Third Year 'Commerce

Man is selfish by nature Whatever he does he does with an eye to his own interest But there are selfless men too

Mahatma Gandhi was one of them Binoba Bhave is another He does not work for gain He has no thought for self He works for the welfare of society He stands for social service We are all social animals We live and move in society We have our being in society Our wellbeing depends on the help and co operation of our fellows We sink or swim with society A writer has rightly said Man in society is like a flower blown in its native bed It is there only that his faculties expand in full bloom

Indeed mutual help is a door to the welfare of every member of society

India is a land of villages and farmers But poverty stares them in the face They are illiterate These evils stand in the way to national progress They must be fought

But the fight needs money and our country is extremely poor We bank on the financial help of other countries for the execution of Five Year Plans Therefore the country badly needs the service of selfless men

No doubt students main duty is to study They have to attend classes and do their lessons But they do not study all the while Besides they have plenty of push and go They have lofty ideals They itch for name So they are the fittest persons to serve society

They can serve in a hundred ways They can keep their home and street clean and thus set a good example to others They can join N C C N S S etc Illiteracy is the greatest evil It is the root of many other evils It breeds superstition In vacations students can go to villages and start night schools for adults They can run day schools for small children Thus they can strike at the root of evils that hinder national progress There is a lot to do in the field of health and sanitation

The United Nations Organisation

—MAHESH KOOLWAL, XI C

The World War II came to its end in 1945. People in great number died in that war. Others became homeless and many more began to starve. In short, misery was the result of war. Hence the people of the whole world longed for lasting peace and better conditions of life. Consequently there was held a great conference at San Francisco in the spring of 1945 and the U. N. O. came into existence in order to deal with the quarrels among nations that might lead to war and to help the member-nations in the age—long fight against human misery, injustice and oppression.

The U. N. O. is not a world Government It is a world meeting to talk over the pressing dangers of time and to find out the ways leading to prosperity and world peace.

It has its secretariat with head office at New York, with the Secretary-General as its head. The membership of Organisation is open to all the peace loving countries which are willing to abide by the obligations contained in its Charter. At present over one hundred countries are its members.

The U. N. O. has certain organs to carry on its work. They are General Assembly, Security Council, Economic and Social Council, Trusteeship Council, International Court of Justice and Secretariat. The mission of the U.N.O. is the maintenance of world peace and settlement of the disputes of nations. It is the world forum for discussions, through which all nations can voice their grievance and put suggestions. In case of need, the member-countries are always at the disposal of the U. N. O. to depute their armed forces for restoring peace anywhere. The U.N.O. is meant for the welfare and benefit of all Nations. Good things done by it cannot be overlooked.

☐

My strength is as strength of ten because my heart is pure.

—Tennyson

Home makes the man.

—Samuel Jhonson

"राष्ट्र निर्माण मे छात्रो का योगदान"

—अनिल कासलीवाल
एकादश 'इ' वाणिज्य

भूमि, जन तथा सस्कृति इन तीनो के समूह को राष्ट्र का स्वरूप कहा जाता है। राष्ट्र के निर्माण मे मनुष्य का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है और उसमे भी छात्रो का महत्त्वपूर्ण स्थान है। राष्ट्र निर्माण मे छात्र सर्वाधिक योगदान दे सकते हैं, वे अपनी कार्यशीलता स्फूर्ति, लगन, गति, उत्साह आदि मे किसी वग से कम नही हैं। इन गुणो के कारण ही छात्र राष्ट्र निर्माण मे बहुत कुछ योगदान दे सकते हैं।

विद्यार्थी जीवन वह जीवन है जब विद्यार्थी अपनी सम्पूर्ण शक्ति-लगन व पूर्ण रुचि के साथ पढाई की ओर ध्यान केन्द्रित कर देता है। जो आज विद्यार्थी हैं, वे ही कल के देश के कर्णधार हैं उनके कन्धो पर देश का भार आने वाला है। अत उन्हें मनोयोग पूवक अपने अध्ययन मे लीन रहना चाहिये तभी वे राष्ट्र निर्माण म सहयोग दे सकेंगे। यदि वे निष्ठा पूवक अध्ययन नही करेंगे तो राष्ट्र का निर्माण ठीक प्रकार मे नही हो सकेगा।

दूसरे, यदि छात्र अपने विद्यार्थी जीवन को निष्ठा पूवक व्यतीत करते हैं एव धम व छात्रोचित व्यवहार का पालन करते हैं तो वे राष्ट्र निर्माण मे सहयोग देते हैं। अनुशासन, कत्तव्य-परायणता, समय का सदुपयोग, अध्ययन-शीलता, गुरु-जनों के प्रति आदर, सयम इत्यादि गुणो को अपनाकर विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण मे सहयोग देते हैं।

यह तो छात्र जीवन को सफल व सार्थक बनाकर राष्ट्र निर्माण में सहयोग देने की बात हुयी इसके अतिरिक्त भी विद्यार्थी राष्ट्र के निर्माण मे योगदान दे सकता है वह इस प्रकार है —

राष्ट्र निर्माण केवल राजनैतिक तत्वों द्वारा नही होता। राष्ट्र का निर्माण भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक व नैतिक सभी प्रकार के अगो से मिलकर होता है। इसके लिए राष्ट्र के लोगों को शिक्षित करना राष्ट्र निर्माण मे महान योगदान होगा। जब तक राष्ट्र के निवासी शिक्षित नही होगे तब तक वे राष्ट्र निर्माण मे सहायक नही हो सकते। अत छात्र वग अशिक्षित देश-वासियो को शिक्षित बनाकर उन्हे भी राष्ट्र निर्माण म सहायक बनाने मे योगदान दे सकता है। छात्र अपने सहज गुणो को समाज की उन्नति मे लगा सकते हैं। वर्षों से चली आ रही दोषपूर्ण परम्पराओ एव रूढियो को समाप्त करने मे सहायता दे सकते हैं। कई बार राजनैतिक दल छात्रो को अपना साधन बना लेते हैं तथा उनके कधो पर हडतालो की बन्दूकें रखकर अव्यवस्था व असतोष की गोलियाँ चलवाते हैं। इसका निवारण छात्र उन दलो की बातो एव राजनैतिक मामलो मे न उलझकर अध्ययन को ही अपना लक्ष्य मानकर कर सकते हैं। वास्तव मे छात्र जीवन को सफल बनाकर ही वे राष्ट्र निर्माण मे अपना योगदान दे सकते हैं।

छात्र वर्ग राष्ट्र का सर्वाधिक गतिशील वर्ग है। अतः स्वाभाविक है कि उसके कार्य, जिम्मेदारियाँ अन्य वर्गो से अधिक होगी। जिस कार्य को करने में अन्य कोई भी वर्ग जितना समय लगाता है उसी कार्य को युवा-वर्ग कम समय में सुचारू रूप से सम्पादित कर सकता है। अतः यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि राष्ट्र का उपकार जितना छात्र-वर्ग कर सकता है उतना अन्य कोई वर्ग नही कर सकता।

आज देश मे सर्वत्र अव्यवस्था, अशाति व असतोप ही दृष्टि गोचर होता है। देश के कुछ चुने हुये व्यक्ति या एक वर्ग-विशेप अनैतिकता का सहारा लेकर स्वय को परिपुष्ट किये चला जा रहा है। इससे दलित-वर्ग और भीं दलित होता जा रहा है। जमाखोरी, काला-बाजारी, रिश्वत, आयकर की चोरी इत्यादि घुन कीट हैं, जो हमारी राष्ट्र की नीव को और खोखली किये जा रहे हैं, उसे भ्रष्टाचार और पतन की ओर ले जा रहे है। आज आवश्यकता है इन दोषो का दृढ़ता-पूर्वक सामना करने की व इनको पूरी तरह से जड़ से उखाड़ने की। इस कार्य मे भी छात्र योगदान दे सकते है। सच तो यह है कि कार्य या तो उनके द्वारा समाप्त हो सकता है या सरकार द्वारा कदम उठाकर। अभी थोड़े दिनो पहले छात्रों ने ऐसे ही कार्य जमाखोरी के विरुद्ध किये थे, जिनमे उन्हे अत्यधिक सफलता मिली थी।

यदि छात्र राष्ट्र-निर्माण में अपना योगदान देना चाहते है तो पहले उन्हे राष्ट्र के निर्माण मे उपस्थित होने वाली समस्याओं से अवगत होना होगा क्योकि जब तक वे राष्ट्र की समस्याएँ नही जान पायेगे तब तक वे उनका समाधान कैसे कर सकेंगे? अतः छात्रों का कर्तव्य है कि वे उन समस्याओ से परिचित हो और उन्हे दूर करने में तत्पर हो जाये।

इनके अतिरिक्त छात्र राष्ट्र-निर्माण मे अपना योगदान दे सकते है—यह उनकी रुचि, सुविधा एवं कार्य-क्षमता पर निर्भर करता है। छात्रों को दलीय राजनीति मे न फंसकर राष्ट्र सेवा को ही अपना लक्ष्य मानना चाहिये। वे समाज-सेवा दल में सम्मिलित होकर समाज सेवा कर सकते है। छात्रों को मुख्य रूप से चरित्र-निर्माण मे लगना चाहिये क्योकि दृढ़ व चारुचरित्र से सम्पन्न छात्र ही परोपकार कर सकते है। इससे एक न एक दिन छात्र-वर्ग-समाज और फिर राष्ट्र, आदर्श-चरित्र सम्पन्न हो जायेगा।



विद्यालय के प्रांगण में
आयोजित सह-शैक्षिक प्रवृत्तियाँ

विद्यार्थी जीवन मानव के सर्वांगीण विकास का मूल स्रोत है। इस स्वर्ण अवसर का सदुपयोग करने वाला श्रेष्ठ छात्र ज्ञानार्जन और चरित्र-निर्माण कर भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर, अपने कुल का दीपक, राष्ट्र की आशा एवम् विश्व का भाग्य-विधाता बनता है। शिक्षार्थियो मे अन्तर्निहित प्रतिभा का विकास के समुचित अवसर प्रदान करने के लिए इस विद्यालय मे विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके लिए शिक्षा के साथ साथ ही सह शैक्षिक प्रवृत्तियो का सत्रारम्भ से ही प्रारम्भ कर दिया जाता है। इस सत्र मे सह-शैक्षिक प्रवृत्तियो के संचालन के लिए जिन समितिया का गठन किया गया और उनके द्वारा जो कार्य सम्पन्न हुए, उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित प्रकार से है।

सुबोध छात्र संसद् —

छात्रो को प्रजातान्त्रिक पद्धति का प्रत्यक्ष ज्ञान कराने के लिए इस विद्यालय मे छात्रो की एक संसद् का गठन निर्वाचन प्रणाली द्वारा किया जाता है। इसके द्वारा यह आशा की जाति है कि आज के छात्र, जो कल के नागरिक हैं, तथा जिनके कंधो पर देश के शासन का भार आने वाला है, सुनागरिक तथा अनुशासन प्रिय बन सकें और प्रजातन्त्र की परम्परा को अक्षुण्ण रखें। इसके लिए सर्व प्रथम कक्षा प्रतिनिधियो का चुनाव किया जाता है और निर्वाचित प्रतिनिधियो मे से अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा प्रधानमन्त्री के चुनाव किये जाते हैं। प्रधानमन्त्री स्वेच्छा से अपने मन्त्रिमण्डल का गठन निर्वाचित सदस्यो मे से करता है। मन्त्रिमण्डल के कार्यों पर नियन्त्रण रखने हेतु एक विरोधी दल का नेता भी होता है जो अपने दल के अन्य सदस्यो की सहायता से मन्त्र मे प्रश्नोत्तर करता है तथा उसके कार्यों की प्रशंसा एव आलोचना करता है।

वाणिज्य-परिषद् —

विद्यालय मे इस परिषद् का कार्य वरिष्ठ अध्यापक श्री चिरंजीलाल जैन की देख रेख मे सफलता पूर्वक चल रहा है। इस परिषद् के लिए प्रत्येक कक्षा के हर वर्ग से एक प्रतिनिधि मनोनीत किया गया जिससे इस परिषद् का गठन निम्नलिखित प्रकार से हुआ।

अशोक कुमार कोहली—अध्यक्ष, विनोदकुमार शर्मा—उपाध्यक्ष, यशवन्त जैन—सचिव, महेन्द्र सुखलेचा—कोषाध्यक्ष, अरुण बाकीवाला—संयुक्त सचिव, महावीरकुमार जैन, अभय परमार, गिरधारीलाल अग्रवाल और हरेश तनवानी सदस्य मनोनीत किये गये। कार्यकारिणी की सभा मे स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मानचित्र, निबन्ध और वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ आयोजित करने और संचयिका मे बचत के रुपये जमा करने का निर्णय लिया गया। वाणिज्य भूगोल के 30 छात्रो ने विश्व, भारत और राजस्थान के विविध मानचित्र निर्मित किये। श्री रतिरामजी यादव के पास विभिन्न देशो की मुद्रा जमा कराई गई और श्री पूरणमलजी राजोरिया ने संचयिका का कार्य भार सम्भाला।

संचयिका (छात्रों का अपना बैंक)—

राष्ट्रीय बचत संगठन द्वारा प्रतिपादित योजना

के संदर्भ मे इस विद्यालय मे सचयिका का कार्य 4 दिसम्बर, 75 से आरम्भ किया गया। 15 दिसम्बर से 21 दिसम्बर, 75 के आर्थिक कार्यक्रम सप्ताह में सचयिका के 94 खाते खोले गये जिनमे 1585.00 रु. जमा हुए।

विज्ञान-क्लब:—

इस सत्र मे विज्ञान-परिषद् के स्थान पर विज्ञान क्लब की स्थापना की गई। इस क्लब का सचालन वरिष्ठ अध्यापक श्री हरीशचन्द्र गुप्ता सफलता पूर्वक कर रहे है। इस सत्र मे रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र व गणित विषय से सम्बन्धित 30 मॉडलो का निर्माण किया गया, जिन्हे जिला स्तरीय विज्ञान मेले मे भी प्रदर्शन के लिए भेजा गया। रसायन शास्त्र के मॉडल को प्रतियोगिता मे तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इण्डियन काउन्सिल फार इण्टरनेशनल एकिटि' के तत्वावधान मे दिनाक 25 सितम्बर, 1975 को हुई सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता मे इस विद्यालय के 14 छात्र सम्मिलित हुए जिनमे से 11 छात्रो को सफल घोषित किया गया।

कला-परिषद्:—

कला वर्ग के छात्रों को प्रजातान्त्रिक पद्धति से कार्य करने की प्रेरणा देने के लिए प्रतिवर्ष एक कला-परिषद् का गठन किया जाता है। इस परिषद् के तत्वावधान मे विविध साहित्यिक एव सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। स्वर्ण जयती के अवसर पर कला वर्ग के छात्रो ने 15 ऐतिहासिक चार्ट और मानचित्र निर्मित किये।

आंतरिक मूल्यांकन योजना:—

बोर्ड द्वारा सचालित आन्तरिक मूल्याकन योजना का इस विद्यालय मे सफल क्रियान्वयन किया गया है, जिसके द्वारा छात्रों की विविध रुचियों के विकास की ओर पूर्ण ध्यान दिया जाता है। अन्तर्विद्यालय प्रवृत्तियो के अन्तर्गत वाद-विवाद, रचनात्मक लेखन, पद्य-पाठ, नाटक और खेल-कूद आदि तथा वाह्य प्रवृत्तियो के अन्तर्गत फुटवाल, वॉलीवाल, क्रिकेट, स्पोर्टस्, कवड्डी, समाज सेवा, एन. सी. सी. आर्मी व एयरविंग तथा वालचर्य की व्यवस्था है। इस वर्ष इस प्रवृत्ति का सचालन वरिष्ठ अध्यापक श्री सुभाप चन्द्र पारीक कर रहे है। योजना की सफल क्रियान्विति के लिए प्रत्येक प्रवृत्ति के लिए अलग-अलग अध्यापको को प्रभारी नियुक्त किया गया है।

योजना के अन्तर्गत प्रवृत्तियो मे राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित **क्षेत्रीय हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में इस विद्यालय के छात्र हेमन्तकुमार जैन IX A ने प्रथम स्थान प्राप्त किया** तथा गुजरात समाज द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता मे XI B का छात्र अनिलकुमार शर्मा पुरस्कृत हुआ। **क्षेत्रीय अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता में इस विद्यालय के छात्र महेश कूलवाल XI C (पक्ष) और अशोक कोहली XI C (विपक्ष) ने भाग लिया। दोनों के अंको के आधार पर इस प्रतियोगिता में विद्यालय का दूसरा स्थान रहा। इस विद्यालय के छात्रों ने क्षेत्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत श्री डी. एन. शैली के निर्देशन में चार कार्यक्रमों में भाग लिया जिनमें से तीन में–राष्ट्रीय गान, एकल गान व समूह गान में प्रथम तथा सामूहिक नृत्य (भांगड़ा) में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। रोटरी क्लब, जयपुर के तत्वावधान मे आयोजित फैंशी ड्रेस प्रतियोगिता में इस विद्यालय के छात्र महेश कूलवाल XI C, अशोक कोहली XI C और प्रभात औदित्य XI D ने भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया।**

खेल-कूद.—

विद्यालय मे खेल-कूद की नियमित व्यवस्था है। इस वर्ष श्री इन्दरसिंहजी शारीरिक व्यायाम शिक्षक के आ जाने से इस क्षेत्र मे पर्याप्त उन्नति हुई। खेल-कूद से सम्बन्धित पर्याप्त सामान इस सत्र

मे क्रय किया गया। बास्केट बॉल तथा बैडमिन्टन खेल के लिए नये मैदान बनाये गये। कक्षा 5, 6, 7 और 8 के छात्रों को पी टी के प्रदर्शन की शिक्षा दी गई। हॉकी, बास्केट बॉल, टेबिल टेनिस और बैडमिंटन खेलों के कोचिंग की विशेष व्यवस्था की गई। सेवा दल की स्थापना इस सत्र की विशेष उपलब्धि है। इसमे 105 छात्र स्वेच्छा से भाग ले रहे हैं। इस सत्र मे इस विद्यालय के दो छात्र राजस्थान स्कूल क्रिकेट के लिए चुने गये। इस विद्यालय के छात्र बनवारीलाल चौधरी XI A ने क्षेत्रीय तिक्डी-कूद प्रतियोगिता मे भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा इसी छात्र ने क्षेत्रीय तथा जिला स्तर पर कुश्ती प्रतियोगिताओ मे प्रथम स्थान प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया।

राष्ट्रीय कैडेट कोर-एयरविंग —

विद्यालय मे इस प्रवृत्ति का काय प्रथम ऑफिसर श्री डी एन शैली की देख रेख मे सफलता पूवक चल रहा है। इसमे 100 कैडेट्स, स्क्वाड्रन लीडर श्री वी एम छावडा ओ सी फस्ट राज एयर स्क्वाड्रन एन सी सी के निर्देशन मे ड्रिल, एरो-मॉडलिंग, प्रिंसीपल ऑफ फ्लाइट, ऐयर रेंकी, ऐरो इन्जिन और जनरल सर्विस नॉलिज की शिक्षा प्राप्त कर रह हैं। इस वष सागानेर मे हुए वार्षिक प्रशिक्षण शिविर मे 10 छात्रो न फ्लाइट सार्जेन्ट छात्र महश कूलवाल XI C के नतृत्व मे भाग लिया। 26 जनवरी, 1975 को हुई दिल्ली की गणतन्त्र दिवस परेड मे हमारे विद्यालय के छात्र फ्लाइट सार्जेन्ट महेश कूलवाल ने राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया और उस अवसर पर शिविर मे आयोजित सगीत प्रतियोगिता मे भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

राष्ट्रीय कैडेट कोर अवर प्रभाग-थल —

इस प्रभाग का कार्य प्रथम ऑफिसर श्री जे पी सिह चन्देल की देख-रेख मे सुचारु रूप से चल रहा है। इस प्रवृत्ति मे 100 कैडेट्स स्वेच्छा पूवक भाग लेकर शास्त्र शिक्षा, फिल्ड क्राफ्ट, मैप रीडिंग, पद-कवायत, प्राथमिक चिकित्सा आदि की शिक्षा पा रहे हैं। इस वष एन सी सी डे पर आयोजित 'शूटिंग कम्पीटिशन' मे इस विद्यालय के छात्र महेन्द्र प्रतापसिंह XI D ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

बालचय —

इस विद्यालम मे बालचर्य प्रवृत्ति का सचालन वरिष्ठ अध्यापक श्री लाभचन्द माहेश्वरी कर रहे हैं। इसम 32 बालचर स्वेच्छा से भाग ले रहे हैं जो चार टोलियो मे विभाजित ह। टोली-नायक पट्रोल लीडर कहलाता है। इस वर्ष चार छात्रो को पट्रोल लीडर का प्रशिक्षण दिलाया गया, जिससे वे अपनी-अपनी टोली का काय सफलता पूर्वक कर सकें। हमारे बालचरो म एक बालचर 'प्रसीडेन्ट स्काउट' भी है इस वष हमारे बालचर स्काउट हैड क्वाटर के काय क्रमानुसार विविध कार्यक्रमो मे भाग लेते रहे हैं।

कार्यानुभव योजना —

विद्यालय मे यह योजना पिछले 5 वर्षों मे श्री सीताराम शर्मा की देख-रेख मे सफलता पूवक चल रही है। इस सत्र मे विद्यार्थियो ने विविध प्रकार की वस्तुएँ जैसे डस्टर, ब्लेक-बोड, लेटर-बक्स, पेपर-ट्रे, की बोड, कैरम बोड, चायना चैकर, वेस्ट पेपर बास्केट, तौलिया स्टैण्ड और फर्नीचर रिपेयर आदि का काय किया। इस सत्र मे जिला शिक्षा अधिकारी श्री राजदान जब विद्यालय मे पधारे तो उन्होने छात्रो द्वारा निर्मित सामान का भी निरीक्षण किया और उसकी सराहना की।

पुस्तकालय एव वाचनालय

वतमान मे विद्यालय पुस्तकालय मे विभिन्न विषयों की 8813 पुस्तकें हैं, जिनका छात्र तथा अध्यापक नियमित रूप से उपयोग करते हैं। इस वर्ष पुस्तकालय मे 1480 80 रु० की 301 पुस्तकें

क्रय की गई। विद्यालय के वाचनालय मे आने वाली 28 दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकायें छात्रों व अध्यापकों के लिए सुलभ है। इस सत्र में दिनाक 16-12-75 तक 6487 पुस्तके विद्यार्थियो को पुस्तकालय से निर्गमित की गई।

पुस्तक-बैंक :

इस विद्यालय के पुस्तक-बैंक मे 1883 पुस्तके है, जो साधनहीन और निर्धन छात्रो को सत्र भर के लिए अध्ययन हेतु दी जाती है। इस सत्र में इस बैंक के द्वारा 66 विद्यार्थियो को 393 पुस्तके दी गई तथा लगभग 300.00 रुपये की नवीन पुस्तके क्रय की गई।

छात्र सहायता कोष :

निर्धन एव साधनहीन छात्रो के लिए इस विद्यालय मे एक छात्र सहायता कोष की भी स्थापना की गई है। इस कोष के अन्तर्गत इस सत्र मे 15 छात्रो को ऊनी वस्त्र तथा 7 छात्रो को बोर्ड के परीक्षा शुल्क की सहायता दी गई।

कक्षा-नायक परिषद् :

विद्यालय की अनुशासन व्यवस्था मे छात्रो का प्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष एक कक्षानायक परिषद् का निर्माण किया जाता है। यह परिषद् विद्यालय का अनुशासन बनाये रखने के लिए शिक्षको के समान ही कार्य करती है।

विद्यालय-बैण्ड :

इस वर्ष विद्यालय मे 'विद्यालय-बैण्ड' की स्थापना एक नवीन और महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसके लिए पर्याप्त सख्या मे वाद्य-यत्रो को क्रय किया गया है। इस प्रवृत्ति मे 25 छात्र बैण्ड-मास्टर श्री गोपाल कृष्ण पवार के कुशल निर्देशन मे बैण्ड कार्य की शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

अध्यापक-अभिभावक सम्पर्क :

घर व स्कूल के परस्पर सहयोग व सामजस्य से ही बालक को पूर्ण शिक्षा प्रदान कर एक उपयोगी नागरिक बनाया जा सकता है, इस दृष्टि से अध्यापक-अभिभावक सम्पर्क का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इस सत्र मे परीक्षा परिणाम समुन्नयन तथा छात्रो की प्रगति पर विचार-विमर्श करने हेतु तीन बार अध्यापक-अभिभावक-सम्पर्क किया गया, जिसके परिणाम बहुत ही आशाप्रद रहे।

अल्प बचत-योजना :

छात्रो मे बचत की आदत डालने तथा जमा राशि को राष्ट्रीय कार्यो मे लगाने की दृष्टि से इस विद्यालय मे अल्प बचत-योजना का सफल क्रियान्वयन किया गया है। योजना के अन्तर्गत इस सत्र मे लगभग 250 छात्रों ने बैंक आफ जयपुर एण्ड बीकानेर मे अपने खाते खुलवाये।

अन्य कार्यक्रम—(आर्थिक सप्ताह) :

दिनाक 15-12-75 से 21-12-75 तक विद्यालय मे आर्थिक सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 17-12-75 को राज० उ० मा० विद्यालय मोती कटला, जयपुर के प्राचार्य श्री गर्ग साहब, राज० पौद्दार उ० मा० विद्यालय, जयपुर के प्राचार्य श्री राव साहब और शैक्षणिक एव व्यावसायिक निर्देशन केन्द्र के विद्यालय-परामर्शक श्री गोयल साहब ने आर्थिक सप्ताह के विविध कार्यक्रमो पर अपने विचार प्रकट किये। श्री गर्ग साहब ने कार्यानुभव योजना की प्रगति विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए कार्यानुभव योजना की शिक्षा को व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी बतलाया। आपने 10+2+3 की शिक्षा नीति पर भी अपने विचार प्रकट किये। श्री राव साहब ने व्यावसायिक शिक्षा को जीवन के लिए अपरिहार्य मानते हुए आने वाली नवीन शिक्षा के प्रति आस्था प्रकट की। श्री गोयल साहब ने जीवन मे निर्देशन के महत्व पर प्रकाश डाला। सभा की समाप्ति पर आगन्तुक अतिथियो ने विद्यालय स्टाफ से साक्षात्कार किया और उन्हे नवीन नीति के

पाठनेतर प्रवृत्तियां

विकासोन्मुख बालिका विद्यालय

—विजयलक्ष्मी चोरडिया

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति की विशेष उपलब्धियो मे एम० एस० जैन सुबोध बालिका माध्यमिक विद्यालय भी एक है। यह जयपुर नगर की जानीमानी बालिका सस्थाओ म अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। इसकी स्थापना 1918 की पावन प्रभात बेला म जयपुर के *स्थानकवासी श्वेताम्बर जैन समाज* के शिक्षा प्रेमी महानुभावो द्वारा की गई थी। आज से करीब 57 वष पूव बालिकाओ की शिक्षा का काय आरम्भ करना अपने आप मे अभूतपूव एव सराहनीय काय था।

प्राथमिक स्तर पर प्रारम्भ की गई इस शाला का 1949 मे शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्रदान की गई। 1958 तक *शाला का समस्त व्यय भार* स्थानकवासी जैन समाज द्वारा वहन किया गया। 1959 60 मे राज्य सरकार ने अनुदान देना स्वीकार किया, जो अनवरत रूप से अब तक मिलता आ रहा है। 1965 मे शाला का स्तर उन्नत हुआ तथा इसे उच्च प्राथमिक स्तर की मान्यता राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गई। जुलाई सन् 1973 मे विद्यालय को माध्यमिक शाला के रूप मे क्रमोन्नत होने का गौरव प्राप्त हुआ। आज शाला मे करीब 500 बालिकायें शिक्षा ले रही हैं। राज्य सरकार द्वारा वर्गीकृत सस्थाओ मे इसका स्थान 'ब' श्रेणी मे है जो अपने आप मे विशिष्टता का द्योतक है।

विद्यालय के विकास मे समाज के अनेक महान् शिक्षा प्रेमियों का योगदान निरन्तर मिलता रहा है। आज हम उन्हें अपनी ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित कर उनके प्रति आभार प्रदर्शित करते हैं।

शिक्षा के प्रचार एव प्रसार करने मे जो योग स्व० श्री मुन्नीलाल जी सुवलेचा, स्व० श्री केसरी-चन्द जी चोरडिया, स्व० दुलभ जी त्रिभुवन जी, पद्म श्री केलशकर दुलभ जी, स्व० श्री मूलचन्द जी कोठ्यारी, स्व० श्री सागरमल जी डागा, श्री उमरावमल जी चोरडिया, श्री सिरहमल जी, नवलखा, श्री सिरहमल जी कोठ्यारी, श्री ज्ञानचद जी कोठ्यारी एव स्व० श्री सिरहमल जी बम्ब ने दिया तथा हमारा माग-दशन कर सस्था को उन्नत स्वरूप प्रदान किया, उसके लिए विगत तथा भावी पीढिया सदैव उनकी कृतज्ञ रहेंगी।

शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना न रहकर बालक बालिकाओ का सर्वांगीण विकास माना जाता है। शिक्षा के इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अनेक प्रकार की प्रवृत्तियो एव शिक्षा के माध्यम से उन्हें भावी आदश गृहिणियो का स्वरूप प्रदान करने हेतु हम कृत सकल्प हैं तथा इस कृत्य के लिए अपनाये गये माध्यम मे हम बालिकाओ का विकास कर रहे हैं।

सुलेख एव गणित प्रशिक्षण शिविर

सुलेख भी शिक्षा का मुख्य अग है, इसके

अभाव में ज्ञान भी पंगु दृष्टिगत होने लगता है। दिनांक 12 अगस्त से 23 अगस्त तक श्री तेजकरण जी डण्डिया के निर्देशन में प्रशिक्षण शिविर लगाया गया जिसमे प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाली सभी अध्यापिकाओ ने भाग लेकर विद्यालय की कक्षाओ का शैक्षणिक स्तर उन्नत करने में सलग्न है। सुलेख के साथ ही 25 अगस्त से 28 अगस्त तक गणित प्रशिक्षण भी अध्यापिकाओं ने लिया तथा अब निरन्तर उससे छात्राओं को लाभान्वित कर रही है।

समाचार प्रसारण :

विद्यालय के प्रत्येक कक्ष में माइक लगे हुए है तथा कक्ष-नियत्रण यंत्र के द्वारा प्रातः वालिकाओ को समाचार सुनाये जाते हैं। समय-समय पर आकाशवाणी से प्रसारित विशेष शिक्षा-प्रद कार्यक्रम भी वालिकाओ को सुनाये जाते है। समाचारों के साथ-साथ ही सामान्य ज्ञान की वृद्धि हेतु भी जानकारी प्रार्थना-स्थल पर अध्यापिकाओ द्वारा दी जाती है।

दल विभाजन :

सहपाठ्य प्रवृत्तियों के सचालन हेतु छात्रा-ससद् के अभाव मे वालिकाओं को Houses में विभाजित किया गया है। प्रत्येक House मे एक अध्यापिका संचालिका एवं एक वालिका का उप-सचालिका के रूप मे चयन किया गया। इस प्रकार पूरे विद्यालय की वालिकाओ के पांच Houses वनाकर विभाजित कर साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामान्य ज्ञान मे वृद्धि की जाती है। प्रार्थना सभा में प्रत्येक दिन वारी-वारी से प्रत्येक House की सचालिका एवं अन्य वालिकाये विचार विन्दु एवं लघु भाषण द्वारा विचार व्यक्त करती है।

बचत वैंक खाता :

वालिकाओं में वचत करने की आदत को वढ़ाने हेतु बचत वैंक खाते खुलवाये गये है। अक्टूबर माह में करीव 60 वालिकाओं ने स्टेट वैंक ऑफ वीकानेर एण्ड जयपुर, जौहरी वाजार शाखा मे खोले है। आगे भी अधिक वालिकायें बचत खाते खुलवायें, इसके लिए सभी अध्यापिकायें उन्हे प्रेरित करती है।

निर्देशन कार्य :

शिक्षण कार्य पूरा होने पर क्या किया जाय अथवा उच्च कक्षाओं में कौन से विपय लिये जायँ जिससे शिक्षा जीवनोपयोगी हो सके, इसके लिये वालिकाओं को पूर्ण निर्देशन दिया जाता है। इस गतिविधि हेतु एक अलग कक्ष की व्यवस्था की गई है जिसमें विभिन्न प्रकार के साहित्य एवं व्यवसाय हेतु सामग्री उपलब्ध है। Guidance Newspaper भी वालिकाओ के लिए मंगवाया जाता है।

पुस्तकालय :

वालिकाओ की सर्वांगीण उन्नति के लिए विद्यालय के पुस्तकालय में करीव 2,000 पुस्तके है तथा प्रमुख पत्र-पत्रिकाये भी उपलब्ध करायी जाती है। कार्ड द्वारा Issue करने के अलावा कक्षा पुस्तकालय की भी व्यवस्था की गई है, जिससे सभी वालिकाये पुस्तके आवश्यक रूप से पढ़े तथा उसका कुछ विवरण भी लिखे है। इस व्यवस्था से अधिक से अधिक लाभ हुआ है और सामान्य ज्ञान मे भी वृद्धि हुई है।

वुक-बैंक :

पुस्तकालय के अलावा विद्यालय मे इस वर्ष से एक Book Bank भी चालू किया गया है जिसमे छात्राओ एव अभिभावको द्वारा करीव 150 पुस्तके प्राप्त हुई है तथा जरूरतमन्द छात्राओ को इसमे से पुस्तके वर्ष भर के अध्ययन करने हेतु दी गई है भविष्य मे अधिक संख्या वढ़ने की आशा है।

कार्यानुभव योजना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यही है कि भविष्य में वे कुछ न कुछ कार्य अवश्य सीखकर अपना जीवनयापन कर सकें। 10 + 2 + 3 शिक्षा पद्धति में भी व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जायेगा। अतः विद्यालय में कार्यानुभव योजना के अन्तर्गत गृहोपयोगी वस्तुयें, जैसे विविध प्रकार के अचार, जैम, सॉस एवं कलात्मक अभिरुचि उत्पन्न करने के लिये मोतिया का काम, कशीदाकारी तथा विभिन्न वेशभूषा वाली गुड़िया व अन्य सजावट सामग्री सिखाई जाती हैं।

रैडक्रास

बालिकाओं में सेवा सुश्रूषा की भावना भरने के लिए प्राथमिक उपचार की शिक्षा भी दी जाती है। इसके लिए समय-समय पर रैडक्रास सोसाइटी द्वारा होने वाली परीक्षाओं में बालिकाओं को बैठाया जाता है। ग्रीष्मावकाश में श्रीमती निर्मला भारद्वाज, जो काउंसलर भी हैं, के साथ चार छात्रायें तारादेवी (शिमला) शिविर में सम्मिलित हुईं और उन्होंने वहाँ नृत्य एवं डायरी वाचन में द्वितीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

बालिकाओं में साहित्यिक रुचि जागृत करने हेतु प्रत्येक शनिवार को पद्यपाठ, नाट्यकला, वाद-विवाद एवं निबन्ध की प्रवृत्ति रखी जाती है जिसमें Housewise भाग लेकर सम्पन्न करती हैं। दिनांक 15 मार्च, 1975 को बालिकाओं द्वारा एक नाटक रेडियो पर भी रेकार्ड करवाया गया जो 24 मार्च, 75 को प्रसारित किया गया। सांस्कृतिक क्षेत्र में भी बालिकाओं ने समय-समय पर अपने वार्षिकोत्सवादि पर रंगारंग कार्यक्रम रवीन्द्रमंच पर प्रस्तुत कर अपने उत्साह एवं कला का परिचय दिया है।

परीक्षा केन्द्र स्वीकृत

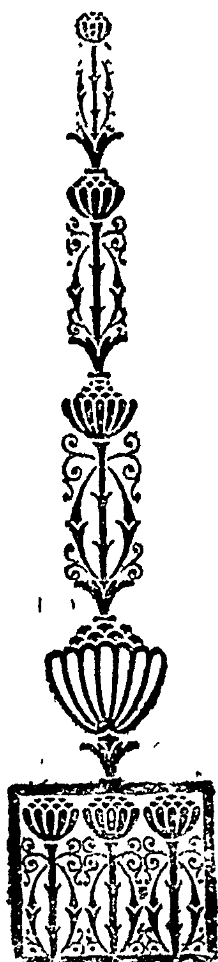
यह प्रसन्नता की बात है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान ने इस विद्यालय को सैकण्डरी परीक्षा का केन्द्र होने की स्वीकृति प्रदान की है।

卐

"विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम समझा जाना चाहिये, जो विद्यार्थियों के जीवन का सर्वांगीण विकास करे तथा समायोजित व्यक्तित्व के विकास में सहायता दे। इससे तात्पर्य यह है कि विद्यालय की हर प्रकार की क्रिया को पाठ्यक्रम की संज्ञा देनी चाहिये क्योंकि व्यक्तित्व के विकास में केवल कक्षा शिक्षण ही महत्त्वपूर्ण नहीं है।

—*माध्यमिक शिक्षा आयोग*

With Best Compliments From



Kirti Chand Prakash Chand

JAIPUR

श्री फूलचन्द भागचन्द लोढ़ा

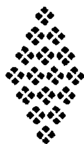
ज
य
पु
र

की ओर से

स्वर्ण जयन्ती

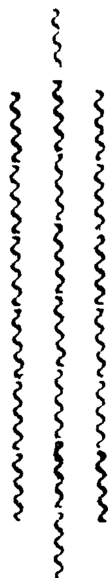
के

अवसर पर



हार्दिक बधाई

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर



रतन प्रकाशन मन्दिर

हास्पिटल रोड़

आगरा




की




ओर से






हार्दिक शुभकामनाएँ

स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष

में

श्री हजारीलाल केसरीचन्द ज्वेलर्स

1421, चाँदनी चौक, देहली-6

की

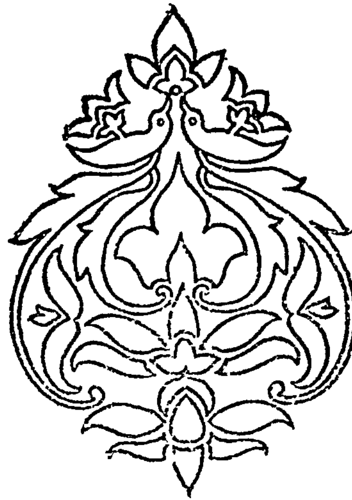
ओर से

हार्दिक शुभ कामनाएँ

स्वर्ण जयन्ती के अवसर

पर

शुभकामनाओं सहित :



केवलचन्द हीरावत

जयपुर

पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

जयपुर द्वारा सचालित

प्रवृत्तिया

उद्देश्य —सरल, सुबोध भाषा और वैज्ञानिक पद्धति मे सर्व साधारण को तत्वज्ञान से परिचित कराना ।

श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड —जिसके माध्यम से सम्पूर्ण भारत मे जैन तत्त्वज्ञान की शिक्षा दी जाती है । प्रति वर्ष (20,000) बीस हजार से अधिक सख्या में परीक्षार्थी भाग लेते हैं । इसकी गुजरात शाखा का सचालन अहमदाबाद तथा महाराष्ट्र शाखा का सचालन शिरपुर मे होता है ।

श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला समिति —इसके अन्तर्गत ऐसे क्षेत्र में जहा धर्म शिक्षा का समुचित साधन न था उस जगह अपने प्रभाव, प्रेरणा व यथायोग्य सुविधायें प्रदान कर वीतराग विज्ञान पाठशालायें स्थापित करना । अभी तक लगभग 300 स्थानो पर धर्म शिक्षा के केन्द्र स्थापित किये हैं ।

प्रकाशन विभाग —'पडित टोडरमल ग्रन्थमाला" इस नाम से कार्य रत इस विभाग द्वारा हिन्दी, गुजराती व मराठी भाषा मे अब तक 37 पुष्प प्रकाशित हुए है जिनकी सख्या लाख से अधिक है ।

शोधकार्य विभाग —महापडित टोडरमलजी के साहित्य का गहन अध्ययन कर "पडित टोडरमल व्यक्तित्व और कर्तव्य" नामक शोध प्रबन्ध इस विभाग की ही देन है । यह विभाग जैनाचार्यों, विद्वानो तथा जैन साहित्य पर होने वाले शोध-खोजपूर्ण अध्ययन मे हर सम्भव प्रयत्नशील हैं ।

प्रचार विभाग —अपने तत्व प्रचार सम्बन्धी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सस्था के सयुक्त मन्त्री सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रात श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन बडा मदिर तेरापथियान तथा सायकाल पडित टोडरमल स्मारक भवन मे तात्त्विक प्रवचन होता है । तथा देश के हर कोने से उन्हें प्रवचनार्थ आमन्त्रण आते हैं । उनके आमन्त्रणो पर बाहर भी शिक्षण प्रशिक्षण के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं । जयपुर, आगरा, विदिशा, मलकापुर, छिंदवाडा, कोटा, सोलापुर आदि स्थानो पर इस प्रकार के शिविर सम्पन्न हुए हैं ।

पुस्तकालय —अध्ययन व स्वाध्याय के लिये सब प्रकार का साहित्य उपलब्ध हो सके इस दृष्टि से इसमे सभी प्रकार का हिन्दी, सस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी भाषा मे जैन व जैनेतर साहित्य सगृहीत किया है ।

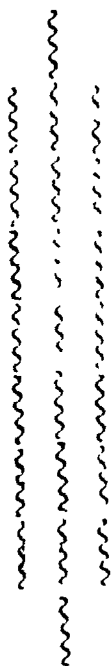
वाचनालय —लौकिक व पारलौकिक ज्ञान मे वृद्धि हेतु धार्मिक सामाजिक, लौकिक सभी प्रकार की दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, व मासिक पत्र पत्रिकाए मगाई जाती हैं ।

इस प्रकार के सुनियोजित तत्त्व प्रचार प्रसार सम्बन्धी आवश्यक कार्यवाही के लिये सस्था सदा सन्नद्ध है ।

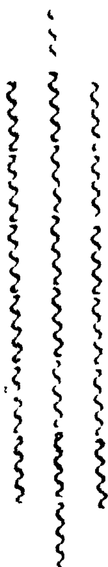
पूरणचन्द गोदिका
अध्यक्ष

नेमीचन्द पाटनी
मन्त्री

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर



शुभकामनाओं के साथ :



पदमचन्द प्रेमचन्द हीरावत

जौहरी बाजार,
जयपुर-3

With best compliments from :



GAUTAM SERVICE STATION

Dealers in

ESSO STANDARD EASTERN I N C

Tumkur Road Yaswanthpur,

BANGALORE-22

Phone 3331

With best compliments from



Gems Trading Corporation

Dealers in

Precious Stones

TEDKIA BUILDING
Johari Bazar
JAIPUR-302003

Gram REAL

Tel 74028
66189

288, YUSUF MEHERALI
Road Tayeb Manzil
BOMBAY-400003

Tel 322921

With best compliments

from :



Hari Krishna Gems

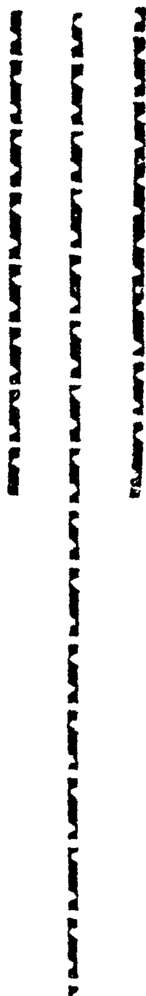
IMPORT / EXPORT PRECIOUS STONES

POST BOX NO. 179

JAIPUR - 302001

With best compliments

from :



Indian Trading Corporation

Mani Ram ji ki Kothi,

JAIPUR

Gram : DIAMOND

Phone : 61981

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति, जयपुर

द्वारा संचालित

सुबोध शिक्षण संस्थाओं

की

स्वर्ण जयन्ती

पर

हार्दिक शुभकामनाएँ



अमीचन्द बोरड़

जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी शिक्षा समिति, जयपुर

द्वारा संचालित

सुबोध शिक्षण संस्थाओं

की

स्वर्ण जयन्ती

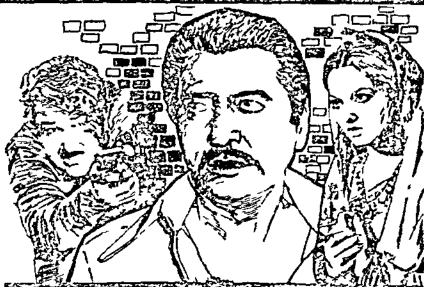
पर

हार्दिक शुभकामनाएँ



अमीचन्द बोरड़

जयपुर



BEST COMPLIMENTS TO :



SHREE JAIN SHWETAMBER STHANAKWASI SHIKSHA SAMITI

on the happy occasion of their

GOLDEN JUBILEE



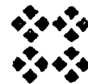
PAAPI : Sunil Dutt, Sanjeev Kumar, Zeenat Aman, Reena Roy, Prem Chopra & Danny

SANKOCH : Jeetendra, Sulakshna Pandit, Aruna Irani, Vikram etc.

DON : Amitabh Bachan, Zeenat Aman & Pran

AMAR AKBAR ANTHONY : Amitabh Bachan, Rishi Kapoor, Vinod Khanna, Praveen Babi, Neetu Singh, Shabana & Pran

SUHAG . Amitabh Bachan, Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Rekha & Amjad



TREPECHY FILMS

2070, Rasta Bara Gangore, JAIPUR

Phone : 65219

With best compliments from :



Sushil Kumar & Company

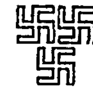
E-76, M.G D. Market,
Tripolia Bazar, Jaipur-2

Phone : 65371

Parry Sanitary Wares, 'Rahul' Water Meters, 'Shakti' Cement, G I. Pipes & Fittings, C I. & S.W. Pipes, 'Leader' Valves & Cocks and Other Sanitary Materials

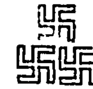
---

हार्दिक कामनाओं सहित :



सबकी पसन्द

हीरा बनियान व चड्डियाँ



निर्माता :

राजस्थान निटिंग इण्डस्ट्रीज

श्यामगढ हाउस, चाँदपोल बाजार, जयपुर-1

Gram : Rajknit *Phone* : 76569

"केवल शरीर से मानव नही,
अपितु व्यवहार से मानव बनें।"



यह ज्ञान देने वाली शिक्षा ही
हमारे लिये उपयोगी है।



स्थान प्रदाता :

हीराचन्द बैद, जयपुर

Gram : Jaidiamond *Phone* : 62210

J. K. & Sons

Jewellers

Importers & Exporters

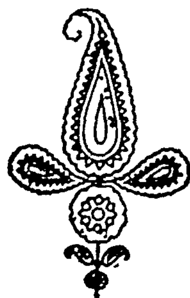
Emerald, Rubies, Sapphires, Mysore Stars, Garnet and Garnet Beads and Mfrs. of Precious Diamond Tools & Engraving Stamps



Factory .
Rasta
Barah Gangore,
Jaipur-3

Export Office :
S.M.S.
Highway,
Jaipur-3

शुभकामनाओं सहित :



श्री
शांतीलाल कालीदास शाह

जयपुर

शुभकामनाओं सहित :



राजेन्द्रकुमार जैन

जयपुर

दो विचार



भगवान हममें विश्वास करता है इसलिये हम जहाँ तहाँ पैदा हुऐ हैं व उपस्थित हैं ।
हमारा कर्तव्य है कि प्रतिदिन का लेखा जोखा बिना पूछे प्रति दिन उसे दे दें ।

हमें भगवान में विश्वास करना चाहिए और अपना कर्तव्य करना चाहिए...
...मोक्ष प्राप्त करना चाहिए
... आदि आदि...
(सदियो से चली आ रहीं दुनिया भर की बातें)

कौन सही कौन गलत

स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर

पर

मंगल कामनाओं के साथ :



कमलचन्द धाँधिया